महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री प्रकाश

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री प्रकास

(गुजराती)

कांई एणी पेरे कीधो रास, रमीने जागिया ।
कांई आपण आ अवसर, फरीने मांगिया ॥ १

इन्द्रावती कहती है कि जिसका वर्णन रास ग्रन्थमें हो चुका है वही अखण्ड रासकी लीलाएँ (ब्रह्मात्माओंने) कुछ इस प्रकार कीं. रास खेलकर परमधाममें (क्षणमात्रके लिए) जागृत हुईं. (हमारी मनोकामनाएँ अपूर्ण रहनेके कारण) हम (ब्रह्मात्माओं) ने पुनः मायावी खेल देखनेका अवसर (धामधनीसे) माँगा.

कांई तेणी घडी ततकाल, आपण आंहीं आवियां ।
पहेला फेराना लवलेस, आपण आंहीं ल्यावियां ॥२

उसी समय, उसी क्षण हम सब इस तीसरे ब्रह्माण्डके खेलमें आ गईं. प्रथम अवतरण (व्रज तथा रास) का थोड़ा प्रेम, स्मृति रूपमें हम अपने साथ लेती आईं.

वालेजीए तेणी ताल, सुन्दरबाई मोकल्यां ।
सखी तमे लई चालो आवेस, म मूको एकलां ॥३

श्री राजजीने उसी समय श्रीश्यामाजीकी अभिन्न शक्ति सुन्दरबाई सखीको यहाँ सद्गुरुके रूपमें भेजा और कहा, हे सुन्दरबाई ! मेरे आवेश-बलको लेकर जागनीके ब्रह्माण्डमें जाओ. ब्रह्मात्माओंको संसारमें अकेले मत छोड़ो.

इन्द्रावती लागे पाय, सुणो तमे साथजी ।
कांई आपणने अवसर, आव्यो छे हाथजी ॥४

इन्द्रावती चरण पकड़कर कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! मेरे वचन सुनो. हमें इस मानव जीवनमें जागनीका सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ है.

प्रकरण १ चौपाई ४

श्रीसाथनो प्रबोध-राग धन्यासरी

संभारो साथ, अवसर आव्यो छे हाथजी ।
आप नाख्या जेम पहेले फेरे, वली नाखजो एम निघातजी ॥१

इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथ जी ! स्मरण करो, हमें तीसरे ब्रह्माण्डमें पहुँचनेका सुअवसर प्राप्त हुआ है. हमने जिस प्रकार प्रथम बार (व्रजसे रासमें जाते समय) अपनी आत्माको धामधनी श्री कृष्णके चरणोंमें समर्पित किया था उसी प्रकार जागनीके इस ब्रह्माण्डसे परमधाममें जागृत होनेके लिए भी अपनी आत्माको निश्चित रूपसे समर्पित करो.

सुन्दरबाई आपण माटे, आव्यां छे आणी वारजी ।
ए आपणने अलगां नव करे, कांई मोकल्यां छे प्राण आधारजी ॥२

सुन्दरबाई अर्थात् सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराज हमारे लिए इस जागनीके ब्रह्माण्डमें आए हैं. वे हमें स्वयंसे अलग नहीं करेंगे क्योंकि धामधनीने उन्हें परमधामसे भेजा है.

सुपनातरमां खिण न मूके, तो साख्यात अलगां केम थाएजी ।
कृपा वालाजीनी केही कहुं, जो जुए जीव रुदया मांहेजी ॥३

स्वप्नवत् लीला-व्रज और रासके ब्रह्माण्डमें (परमधाम तथा धामधनीका पूरा परिचय प्राप्त न होनेपर उसे स्वप्नवत् कहा है) भी प्रियतम धनी श्रीकृष्णने ब्रह्मात्माओंको क्षणमात्रके लिए भी अलग नहीं किया, तो इस जागनीके ब्रह्माण्डमें साक्षात् सद्गुरुके रूपमें पधारे हुए हमारे धनी श्री श्यामाश्याम हमसे अलग कैसे होंगे ? इसलिए उनकी कृपाका वर्णन किस प्रकार करूँ ? यदि जीव हृदयपूर्वक विचार कर देखे तो उसे अनुभव होगा कि प्रियतमकी दयाका वर्णन नहीं हो सकता है.

एवडी वात वालो करे रे आपणसुं, पण नथी कांई साथने सारजी ।
भरम उडाडी जो आपण जोइए, तो बेठा छे आपणमां आधारजी ॥४

प्रियतम धनी ऐसी महत्त्वपूर्ण बात हमसे कहते हैं, परन्तु सुन्दरसाथको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं है. यदि हम अपने भ्रमको दूर कर देखें तो निश्चित कर पाएँगे कि प्रियतम धनी हमारे अन्दर ही विराजमान हैं.

सुपनातरमां मनोरथ कीधां, तो तिहां पण वालोजी साथजी ।
सुन्दरबाई लई आवेस धणीनो, नव मूके आपणो हाथजी ॥५

स्वप्नवत् ब्रह्माण्ड-व्रज तथा रासमें हम लोगोंने जो इच्छाएँ व्यक्त की थीं वहाँ भी प्रियतम श्रीकृष्ण हमारे साथ रहे. इस तीसरे ब्रह्माण्डमें सुन्दरबाई श्री राजजीका आवेश लेकर सद्गुरुके रूपमें आई हैं. अब वे हमारा हाथ नहीं छोड़ेंगी.

तिलमात्र दुख नव दिए रे आपणने, जो जोइए वचन विचारीजी ।
दुख आपणने तो ज थाय छे, जो संसार कीजे छे भारीजी ॥६

धामधनीने हमें थोड़ा-सा भी दुःख नहीं दिया. हम उनके वचनों पर विचार करें तो हमें ऐसा अनुभव होगा कि हम तो सांसारिक सुखोंको ही महत्त्व

देकर उन्हींमें मग्न रहते हैं इसलिए हमें दुःखका अनुभव होता है.

अंतरध्यान समे दुख दीधां, ए आसंका मन मांहेजी ।
एणे समे संसार भारी नव कीधो, साथे दुख दीठां एम कांएजी ॥७

रासलीलाके समय जब श्रीकृष्ण अन्तर्धान हुए तो हम ब्रह्मात्माओंको दुःखका अनुभव हुआ. अब मनमें यह आशंका उठती है कि उस समय हमने संसारकी ममता एवं आसक्तिको महत्त्व नहीं दिया था फिर भी हमें इस प्रकारका दुःख क्यों देखना पड़ा ?

दुख तां केमे न दिए रे वालोजी, ए तां विचारीने जोइएजी ।
सांभरे वचन तो ज रे सखियो, जो माया मूकतां घणुं रोईएजी ॥८

इन्द्रावती कहती है, प्रियतम धनी किसी भी प्रकारका दुःख नहीं देते हैं. इस वास्तविकताको तारतम ज्ञान द्वारा विचार करके देखो. हे सखियो ! मायाको छोड़ते हुए हमें बड़ा दुःख लगता है. अतः परमधामके वचनोंका स्मरण करानेके लिए ही रासके समय श्रीकृष्ण अन्तर्धान हुए हैं.

वचन संभारवाने काजे मारे वाले, दुख दीधां अति घणांजी ।
आपण मनोरथ एहज कीधां, वाले राख्यां मन आपणांजी ॥९

मूल वचन (मायावी दुःख देखनेकी इच्छा) का स्मरण करानेके लिए ही हमारे प्रियतम धनीने हमें अन्तर्धानके समय दुःख दिया है. कारण यह है कि हमलोगोंने परमधाममें यही (दुःखरूपी खेल देखनेकी) इच्छा की थी. इसलिए प्रियतम धनीने हमारी मनोकामनाएँ पूरी की.

आपण मायानी होंस ज कीधी, अने माया तो दुख निधानजी ।
ते संभारवाने काजे रे सखियो, वालो पाम्यां ते अंतरधानजी ॥१०

हे सुन्दरसाथजी ! हमने माया देखनेकी इच्छा व्यक्त की थी. निश्चय ही यह माया तो दुःखरूप ही है. इन वचनोंका स्मरण करानेके लिए प्रियतम श्रीकृष्णजी अन्तर्धान हुए थे.

नहीं तो अधखिण ए रे आपणो, नव सहे विछोहजी ।
ए तां विचारीने जोइए रे सखियो, तो तारतम भाजे संदेहजी ॥११

अन्यथा प्रियतम श्रीकृष्ण आधे क्षणके लिए भी हमारा वियोग सहन नहीं

कर सकते. इन वचनों पर विचार करके देखोगी तो हे सखियो ! तारतम ज्ञान सभी सन्देह मिटा देता है.

एणे समे तारतमनी समझण, ते में केम कहेवायजी ।
अनेक विधनुं तारतम इहां, तेणे घर लीला प्रगट थायजी ॥१२

अब इस समय तारतम ज्ञानकी समझ हमें प्राप्त हो चुकी है. मैं किस प्रकार इसके गुणगान करूँ ? इस जागनीके ब्रह्माण्डमें तो तारतम ज्ञानके अखण्ड प्रकाश द्वारा विभिन्न लीलाएँ (परमधाम, व्रज, रास और जागनी) स्पष्ट होतीं हैं.

ओलखवाने धणी आपणो, कहुं तारतम विचारजी ।
साथ सकल तमे ग्रहजो चितसुं, नहीं राखुं संदेह लगारजी ॥१३

अपने धामधनी और मूल घर परमधामका परिचय देनेके लिए तारतम ज्ञानका विवेचन कर रही हूँ. हे सुन्दरसाथजी ! तुम सब एकाग्र चित्त होकर इसे ग्रहण करो. आपके मनमें तनिक भी शंका रहने नहीं दूँगी.

पहेले फेरे तां ए निध ना हुती, अजवालुं तारतमजी ।
तो आ फेरो थयो आपणने, साथ जुओ विचारी मनजी ॥१४

प्रथम बार व्रज तथा रासलीलाके समय यह तारतम ज्ञानरूपी निधि हमारे पास नहीं थी. तारतम ज्ञानका प्रकाश भी नहीं था. इसलिए हमें इस ब्रह्माण्डमें आना पड़ा. हे सुन्दरसाथजी ! इस बात पर विचार करके देखो.

उत्कंठा नव रहे केहनी, जो कीजे तारतमनो विचारजी ।
तारतमतणुं अजवालुं लईने, आव्या आपणमां आधारजी ॥१५

यदि तारतम ज्ञान पर विचार करके देखें तो किसीके भी मनमें किसी भी प्रकारकी उत्कण्ठा शेष नहीं रहेगी. ऐसे ज्ञानका प्रकाश लेकर हमारे बीच धामधनी सद्गुरुके रूपमें पधारे हैं.

एणे अजवाले जो न ओलख्या, तो आपणमां अति मणांजी ।
चरणे लागी कहे इन्द्रावती, वालो नव मूके गुण आपणांजी ॥१६

इस तारतमके प्रकाशमें भी यदि हम सद्गुरु धनीकी पहचान न कर सके

तो मानना चाहिए कि हममें अत्यधिक कमी है. इन्द्रावती चरणोंमें प्रणाम कर कहती है, प्रियतम धनी तो हमें कृतार्थ करनेका अपना स्वभाव नहीं छोड़ेंगे.

प्रकरण २ चौपाई २०

सकल साथ, रखे कोई वचन विसारोजी ।
धणी मल्या आपणने मायामां, अवसर आज तमारोजी ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! सद्गुरुके वचनोंको भूलना नहीं. इस मायावी संसारमें धामधनी हमें सद्गुरुके रूपमें प्राप्त हुए हैं. तुम्हें यह सुयोग्य अवसर प्राप्त हुआ है.

सुन्दरबाई अंतरगत कहावे, प्रकास वचन अति भारीजी ।
साथ सकल तमे मली सांभलो, जो जो तारतम विचारीजी ॥ २

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (सुन्दरबाई) मेरे हृदयमें विराजमान होकर (मेरे द्वारा) कहलवाते हैं कि प्रकाश ग्रन्थ (प्रकाश वचन) की बातें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और मार्मिक हैं. हे सुन्दरसाथजी ! तुम सब मिलकर सुनो और तारतम ज्ञान पर विचार करो.

साथजी एणे पगले चालजो, पगलां ते एह प्रमाणजी ।
प्रगट तमने पहेले कह्युं, वली कहुं छुं निरवाणजी ॥ ३

हे सुन्दरसाथजी ! इस प्रेम मार्गका अनुसरण करो (जिस प्रकार व्रजभूमिसे निकलकर रासमण्डलमें जाते समय सांसारिक ममताका त्याग किया था). वास्तवमें यही मार्ग हमारा योग्य मार्ग है. इससे पूर्व (रास ग्रन्थमें) भी मैंने ये बातें स्पष्ट शब्दोंमें कही थी अब पुनः इसीको निश्चयपूर्वक कहती हूँ.

हवे रखे माया मन धरो, तमे जोई ते अनेक जुगतजी ।
कै कै पेरे कह्युं में तमने, तमे हजी न पाम्यां त्रपतजी ॥ ४

अब मायाके प्रति रुचि मत रखो. तुम सबने इसे युक्तिपूर्वक देखा है. इसके (छल-कपट, और कुटिलताके) विषयमें मैंने तुम्हें कई बार कहा है तथापि तुम अभी तक इससे तृप्त नहीं हुए हो.

जिहां लगे तमे रहो रे मायामां, रखे खिण मूको रासजी ।
पचवीस पख लेजो आपणां, तमने नहीं लोपे मायानो पासजी ॥५

जब तक तुम इस मायावी संसारमें रहो तब तक रास ग्रन्थके वचनोंको नहीं छोड़ना. साथ ही परमधामके पच्चीस पक्षको भी अपने हृदयमें रखना. जिससे तुम पर मायाका प्रभाव नहीं पड़ेगा.

अनेक विध में घणुंए कह्युं, हवे रखे खिण विहिला थाओजी ।
रासतणी रामतडी जो जो, जे भरियां आपण पाओजी ॥६

मैंने इस विषयमें आपको अनेक प्रकारसे समझाया है. अब एक क्षणके लिए भी धनीसे अलग न हों. अखण्ड रासकी आनन्दमयी रामतें देखो और विचार करो कि उस समय हमने कैसे प्रेमपूर्ण कदम रखे थे.

रास रामतडी रखे खिण मूको, जे आपण कीधी परमाणजी ।
तमे घणुंए नव मूको माया, पण हुं नहीं मूकुं निरवाणजी ॥७

रासकी रामत (प्रेमानन्द लीला) को एक क्षणके लिए भी मत छोड़ो. जिनको निश्चित ही हमलोगोंने किया था. हे सुन्दरसाथजी ! यद्यपि तुम मायाको नहीं छोड़ोगे फिर भी मैं तुम्हें किसी भी प्रकारसे नहीं छोड़ूँगीं (समझाती रहूँगी).

कहे इन्द्रावती वचन वालानां, जे सुणियां आपण सारजी ।
हवे लाख वातो जो करे रे माया, तो हुं नहीं मूकुं चरण निरधारजी ॥८

इन्द्रावती कहती है, हमलोगोंने सद्गुरुके श्रेष्ठ वचन-तारतम ज्ञानको सुना है. अब माया चाहे लाख बातें करके मुझे ठगनेका प्रयत्न करे फिर भी मैं निश्चय ही धनीके चरण नहीं छोड़ूँगी.

प्रकरण ३ चौपाई २८

चौपाई प्रगटी

न कांई मनमां न कांई चित, न कांई मारे रदे एवडी मत ।
एक वचन समु नव कहेवाय, ए तां आव्यो जाणे पूरतणो दरियाय ॥१

इन्द्रावती कहती है, (श्रीतारतम वाणीका वर्णन करनेका विचार) न मेरे मनमें था, न चित्तमें था और न ही मेरे हृदयमें कोई विशिष्ट बुद्धि (ज्ञान) ही थी.

परमधामके एक शब्दका भी सीधा वर्णन नहीं हो हो सकता है तथापि यह वाणी मेरे हृदयमें समुद्रकी लहरोंकी भाँति उछल रही है (मेरे द्वारा व्यक्त हो रही है).

श्री सुन्दरबाई लई आविया, इन्द्रावती उपर पूरण दया ।
रुदे बेसी कहेवराव्युं एह, साथ माटे कीधां सनेह ॥ २

सद्‌गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (श्रीसुन्दरबाई) परमधामसे तारतम ज्ञान लेकर आए हैं. उन्होंने इन्द्रावती पर पूर्णरूपेण कृपा की है. वे मेरे (इन्द्रावतीके) हृदयमें विराजमान होकर सुन्दरसाथके लिए यह वाणी प्रेम पूर्वक कहलवा रहे हैं.

वचन एक कहेता निरधार, अमे घेर जइने लेसुं सार ।
अद्रष्ट थइने कहे वचन, साथ सकल तमे ग्रहजो मन ॥ ३

सद्‌गुरु कहते थे, मैं इन्द्रावतीके हृदयरूपी घरमें जाकर सुन्दरसाथकी देख-भाल करूँगा. अपने वचनानुसार वे हमारे हृदयमें अदृश्य रूपसे बैठ कर ये वचन सुना रहे हैं. इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! तुम इस वाणीको ध्यानपूर्वक ग्रहण करो.

आपण पहेलां पगलां भरियां जेह, वली जे कीधां प्रेम सनेह ।
ते प्रगट कीधां आपण माट, धोक मारग ए आपणी वाट ॥ ४

हम सब सुन्दरसाथने प्रथम बार व्रज और रासमें जैसे कदम उठाए थे (प्रेम मार्ग अपनाया था) फिर उसी प्रकार प्रियतमने हमें प्रेम और स्नेह दिया. सद्‌गुरुने हमें जागृत करनेके लिए इसका पुनः प्रत्यक्ष वर्णन किया है. यह विहङ्गम (आकाशी) मार्ग ही हमारा प्रेम मार्ग है.

आपणने ए प्रगट करी, साथ सकल लेजो चित धरी ।
तमे रखे हलवी करो ए वाण, पूरण दयाए कह्युं निरवाण ॥ ५

सद्‌गुरुने हमारे लिए यह वाणी प्रकट की है. हे सुन्दरसाथजी ! तुम इसे अपने चित्तमें ग्रहण करो. इस दिव्य वाणीको तुम साधारण वाणी मत मानो. धामधनीने अत्यन्त दयापूर्वक इसका वर्णन किया है.

प्रमोध वचन ते सदा कहेवाय,पण आ वचन कांई प्रगट न थाय ।
ते माटे तमे सुणजो साथ, आपणमां बेठा प्राणनाथ ॥६

उपदेशात्मक वचन तो परम्परानुसार सब कहते आए हैं, किन्तु यह तो अद्वैत वाणी है अर्थात् ये वचन अखण्ड लीलाके हैं. ये तो कभी भी कहीं प्रकट नहीं हुए हैं. इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! तुम सब प्रेमपूर्वक इनका श्रवण करो. हमारे बीच प्राणनाथ-सद्गुरु विराजमान हैं.

आपणने सिखामण कहे, पण भरम आडे कांई रुदे नव रहे।
ते भरम उडाडो तमे जोई रास, जेम ओलखिए आपणो प्राणनाथ॥७

सद्गुरुके रूपमें स्वयं धामधनी हमें उपदेश देकर आत्मा-परमात्माके सम्बन्धकी पहचान कराते हैं किन्तु भ्रान्तिवश हमारे हृदयमें किसी भी प्रकारके उपदेश ठहरते नहीं हैं. रासके वचनोंको देखकर तुम अपना यह भ्रम (सन्देह) दूर करो. जिससे हमें प्राणनाथ-सद्गुरुकी पूरी पहचान प्राप्त हो जाए.

विहिला थयानी नहीं ए वार, तेडवा आपणने आव्या आधार ।
प्रगट पुकारी कहे छे सही, आ वचन कहाव्यां अंतरगत रही ॥८

यह धामधनीसे विमुख होनेका समय नहीं है. हमारे प्राणाधार सद्गुरु हमें बुलाने (परमधाममें ले जाने) के लिए आए हैं. वे सुन्दरसाथको स्पष्ट पुकार कर बुला रहे हैं. इतना ही नहीं वे स्वयं हमारे हृदयमें आसीन होकर ये वचन कहलवा रहे हैं.

एक वचन ना आवे अस्तुत, सोभा दीधी जेम कालबुत ।
अस्तुतनी आंही केही वात, प्रगट थावा कीधी विख्यात ॥९

सद्गुरुकी प्रार्थनाके लिए एक भी शब्द मेरी जिह्वा द्वारा उच्चारित नहीं हो रहा है. जिस प्रकार पाषाण मूर्तिमें दैवी शक्तिका आह्वान किया जाता है उसी प्रकार मेरे इस प्राकृतिक शरीरको मात्र शोभा दी है. धनीजीकी प्रार्थना करनेकी बात ही कहाँ रही ? यह तो धामधनीके प्राकट्यका विवरण है.

फल वस्त जे भारे वचन, जीव पण न कहे आगल मन ।
ते प्रगट कीधां अपार, जे कांई हुतो आपणो सार ॥१०

मूल्यवान फल अर्थात् विशेष वचनोंके बारेमें जीव भी मनसे कुछ नहीं कह सकता. ऐसे अनेक सार वचन सद्गुरु धनीने हमारे लिए प्रकट किए हैं.

सगाई कीधी प्रगट, आपण घणुंए राखी गुपत ।
वचन एक ए छे निरधार, श्री सुंदरबाई कहेतां जे सार ॥११

धामधनी सदगुरुने सुन्दरसाथ तथा श्री राजजीके सम्बन्धको प्रकट किया, परन्तु इसे हम सबने अत्यन्त गुप्त रखा. क्योंकि यह एक ऐसा ध्रुव वचन है जिसे सद्गुरु धनी स्वयं सार रूपमें संकेत द्वारा कहते थे.

आ लीला थासे विस्तार, सूरज ढांक्यो न रहे लगार ।
आ लीला केम छानी रहे, जेहने रास धणी एम वचन कहे ॥१२

वे कहते थे कि आगे चलकर इस जागनी लीलाका विस्तार होगा. तारतम ज्ञानरूपी सूर्यका प्रकाश फैलने लगा है, वह अब छिपानेसे नहीं छिपेगा. यह अद्वैत लीला कैसे छिपी रहेगी ? इन लीलाओंके वचनोंको रासके धनी श्री सद्गुरुने स्वयं वर्णन किया है.

[रासके स्वामी श्रीकृष्णजी हैं. श्रीकृष्णजी स्वयं सद्गुरुके हृदयमें विराजमान हैं. इसलिए श्रीदेवचन्द्रजी महाराजको रासके धनी कहा है.]

ते माटे तमे सुणजो साथ, जे प्रगट लीला कीधी प्राणनाथ ।
कोई मनमां म धरजो रोष, रखे काढो मेहेराजनो दोष ॥१३

इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! तुम सब इसे प्रेमपूर्वक सुनो. प्राणाधार सद्गुरु धनीने हम सुन्दरसाथके लिए यह लीला प्रकट की है. इसलिए कोई अपने मनमें मेरे प्रति रोष (क्रोध) मत रखना कि यह वाणी तो मेहेराजने कही है और मेहेराजका दोष भी मत निकालना.

एटलुं तमे जाणो निरधार, आ वचन मेहेराजे प्रगट न थाय ।
आपण घरनी नहीं ए वात, जे किव करी मांडिए विख्यात ॥१४

यह निश्चित रूपसे समझो कि अखण्ड लीलाके इस प्रकारके वचन मेहेराज

द्वारा प्रकट नहीं हो सकते. क्योंकि ये मेरे लौकिक घरकी बात नहीं है जो कविताके द्वारा विख्यात की जा सके अर्थात् परमधामकी बात कविताके द्वारा नहीं कही जा सकती.

हुं मन माहें एम जाणुं घणुं, जे किव नहीं ए काम आपणुं ।
पण आ तां नथी कांई किवनी वात, रुदे बेसी कहेवराव्युं प्राणनाथ ॥ १५

मैं इस सत्यको दृढतापूर्वक मानता हूँ कि काव्य रचना करना मेरा काम नहीं है. इस अखण्ड लीलाके वर्णनमें काव्य रचनाकी कोई बात ही उपस्थित नहीं होती है. ये तो मेरे प्राणनाथ सद्गुरुने मेरे हृदयमें बैठकर कहलवाए हैं.

ए वचन सरवे आवेसमां कह्यां, उतमबाई ए जोपे करी ग्रह्यां ।
एम कह्युं दई आवेस, जे प्रगट लीला कीधी वसेष ॥ १६

ये सभी वचन आवेशमें कहे गए हैं और इनको उत्तमबाई (उद्धव ठाकुर) ने ठीकसे ग्रहण किया (लिखा) है. सद्गुरु महाराजने मुझे शक्ति प्रदान करके ऐसा कहा कि इस जागनी लीलाको व्रज और रास दोनोंसे विशेष रूपमें प्रकट करना है.

में मन मांहें जाण्युं एम, जे किव थासे त्यारे रमसुं केम ।
किव पण थै आ वचन विचार, रमी इन्द्रावती अनेक प्रकार ॥ १७

मैंने अपने मनमें ऐसा सोचा था कि कदाचित यह वाणी सामान्य कविताकी भाँति बन जाएगी तो इसके द्वारा मैं परमधामके सुखोंमें किस प्रकार रमण करूँगी ? किन्तु सद्गुरुकी कृपासे यह वाणी कविता भी हुई और अखण्ड वाणी होनेके कारण इन्द्रावती अद्वैत घरकी लीलाओंमें अनेक प्रकारसे रमण भी कर रही है.

[तात्पर्य यह है कि किसी भी पद्यकी रचना करनी हो तो उसके लिए उपयुक्त छन्द और अलङ्कार द्वारा समझानेमें कवि व्यस्त रहता है. उसे रसानुभूति नहीं होती परन्तु यह वाणी तो अखण्ड होनेके कारण कविता चाहे जिस प्रकारकी भी हुई हो परन्तु इन्द्रावती अखण्ड लीलाका अनुभव करती है.]

सघलां कारज थयां एम सिध, श्रीसुंदरबाईए सिखामण दिध ।
रुदे बेसी कहेवराव्युं रास, पहेलो फेरो कीधो प्रकाश ॥१८

इस प्रकार सब कार्य सिद्ध हो गए. सद्गुरुके उपदेशका ही यह श्रेय है. उन्होंने मेरे हृदयमें बैठकर रास कहलाया और प्रथम बार व्रज तथा रासके भेदको इस 'प्रकाश' ग्रन्थ द्वारा प्रकाशित किया.

ते माटे तमे सुणजो साथ, आपण काजे कीधुं प्राणनाथ ।
रखे जाणो मनमां रहे कांई लेस, ते माटे कीधो उपदेस ॥१९

इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! सुनो. हम सबके लिए ही हमारे प्राणनाथ सद्गुरुने यह ब्रह्मवाणी कही है. हमारे मनमें मायाका थोड़ा-सा भी अंश शेष न रह जाए इसलिए यह उपदेश दिया है.

आपण पहेलां पगलां भरियां सार, एम चालो म लावो वार ।
वली जो जो आ पहेलां वचन, प्रेम सेवा एम राखो मन ॥२०

हम ब्रह्मात्माओंने व्रजसे रासमें जाते समय कैसे उत्तम कदम उठाए थे अर्थात् प्रेम मार्गकी ओर अग्रसर हुए. अब भी इसी प्रकार मायावी प्रवृत्तियोंको छोड़कर प्रेम मार्गका अनुसरण करें. इसमें विलम्ब न करें. व्रज और राससे सम्बन्धित इससे पूर्व कहे गए वचनोंको वारंवार देखते रहो और अपने मनको प्रेम सेवामें दृढ़ बनाओ.

तारतम वचन कहुं वली फरी, तमने कह्युं छे अनेक विध करी ।
वली तमने कहुं प्रकास, सुणजो एक मने ग्रही स्वास ॥२१

तारतमके रहस्यपूर्ण वचन कहता हूँ. तुम्हें अनेकों प्रकारसे ये वचन वारंवार कहे गए हैं. अब पुनः प्रकाशके वचनोंका वर्णन कर रहा हूँ. एकाग्र होकर इन वचनोंको विश्वास पूर्वक सुनो. (सर्वप्रथम रासका वर्णन किया गया है. अब प्रकाशका वर्णन हो रहा है).

पहेले फेरे श्री वैकुंठनाथ, इछा दरसन करवा साथ ।
साथतणे मन मनोरथ एह, जे माया रामत जोइए तेह ॥२२

सृष्टिकी उत्पत्तिसे पूर्व अक्षरब्रह्मके मनमें ब्रह्मात्माओंके दर्शन करनेकी इच्छा

हुई. उसी प्रकार परमधामकी ब्रह्मात्माओंको भी ऐसी अभिलाषा हुई कि अक्षरब्रह्मद्वारा रचित मायावी जगतका खेल देख लिया जाए.

त्यारे भगवानजी मन विमास्या रही, श्री धणीजीए इछा कीधी सही ।
लाधुं सुपन दीधो आवेस, माया रामत कीधी प्रवेस ॥ २३

अक्षरब्रह्मके मनमें जब यह विचार आया तो मूल स्वरूप सच्चिदानन्द धनीने उनकी यह इच्छा पूर्ण करनेका निश्चय किया. परिणामतः उनके मनपर निद्राका आवरण डालकर उन्हें स्वप्नावस्थामें डाल दिया और अपनी शक्ति भी दी. इस प्रकार उनकी सुरता इस मायावी जगतमें प्रविष्ट हुई.

ए आवेस लइने करी, प्रगट्या गोकल नंद घरी ।
साथ सुपन एम लाधुं सही, जे गोकल रमियां भेलां थई ॥ २४

पूर्ण ब्रह्मका आवेश लेकर, अक्षरब्रह्मकी आत्मा श्रीकृष्णके स्वरूपमें नन्द बाबाके घर गोकुलमें प्रकट हुई. परमधामकी ब्रह्मात्माओंके मन पर भी इसी प्रकारका आवरण छा गया और वे भी स्वप्न दशाको प्राप्त हुईं. वे गोपियोंके रूपमें शरीर धारणकर व्रज मण्डल-गोकुलमें श्रीकृष्णके साथ प्रेम और आनन्दपूर्वक खेलने लगीं.

अग्यारे वरस लगे लीला करी, कालमाया इहां ज परहरी ।
जोगमाया करी रमिया रास, आनंद मन आणी उलास ॥ २५

गोकुलमें श्री कृष्णके साथ इस प्रकार ११ वर्ष तक बाललीला की और वहीं पर कालमायाके ब्रह्माण्ड (गोकुल) का त्याग किया. तत्पश्चात् श्री कृष्णने योगमायाके मण्डलकी रचना की, जहाँ हम ब्रह्मात्माओंने उत्साह पूर्वक प्रेम और आनन्दके साथ रास रमण किया.

रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकल मन अधिक सनेह ।
कांईक उतकंठा रही मन सार, तो आपण आव्या आणी वार ॥ २६

योगमायाके ब्रह्माण्डमें रास लीला कर थोड़े समयके लिए हम परमधाम लौटे. ब्रह्मात्माओंके मनमें अधिक स्नेह था, अर्थात् विशेष रूपसे प्रेममग्न होकर

लौटी थीं परन्तु मनमें मायाका खेल देखनेकी उत्कण्ठा अब भी शेष रह गई थी. इसलिए हमें पुनः तीसरे ब्रह्माण्डमें आना पड़ा. (विशेष रूपसे तामस स्वभाववाली सखियोंके मनमें खेल देखनेकी इच्छा अधिक थी इसलिए हम सब इस तीसरे ब्रह्माण्डमें आए.)

वली एक वचन कहुं सुणजो साथ, दया करी कहे प्राणनाथ ।
आ किव करी रखे जाणो मन, भरम टालवा कह्या वचन ॥ २७

मुझे पुनः एक बात कहनी है. तुम सब सुन्दरसाथ ध्यानसे सुनो. श्री प्राणनाथ सद्गुरु करुणासे प्रेरित होकर ये वचन कहला रहे हैं. इनको काल्पनिक कविता मत समझो. यह वाणी तो तुम्हारे मनकी शंकाओंको मिटानेके लिए निश्चित रूपसे कही गई है.

भरम टले ओलखाय धणी, अने सेवा थाय मारा वालाजीतणी ।
ओलखाय वल्लभ तो टले माया पास, एटला माटे प्रगट थयो रास ॥ २८

जब भ्रम दूर होगा तब धामधनी श्रीराजजीकी पहचान हो जाएगी तथा उनकी सेवा होगी (उनकी आज्ञाका पालन ही उनकी सेवा है.) प्रियतम धामधनीका परिचय हो जाने पर मायाका आवरण स्वतः हट जाएगा. इसी कारण रास लीलाका प्राकट्य हुआ है अर्थात् रासका प्रत्यक्ष वर्णन किया गया है.

पहेला फेराना अवतार, ते तारतमे कह्या विचार ।
पहेले फेरे तां खबर न पडी, तो आपण आव्या आंहीं वली ॥ २९

व्रज और रासमें ब्रह्मात्माओंके अवतरणकी जानकारी हमें तारतम ज्ञान द्वारा प्राप्त हुई. व्रज और रास लीलामें ब्रह्मात्माओंको स्वयंके और परमधामके विषयमें कुछ ज्ञात न हुआ. इसलिए हम सब जागनीके इस तीसरे ब्रह्माण्डमें पुनः आए हैं.

कांईक मन मांहें रह्यो अंदेस, ते राखे नहीं धणी लवलेस ।
हवे आ फेरानो जो जो विचार, अजवालुं लई आव्या आधार ॥ ३०

व्रज मण्डलमें (स्वयं और परमधामकी पूर्ण पहचान न होनेके कारण) मनमें कुछ सन्देह रह गया था. इसके परिणाम स्वरूप खेल देखनेकी इच्छा भी शेष रह गई थी, परन्तु धामधनी अणुमात्र सन्देह भी शेष रहने देना नहीं

चाहते हैं. इसलिए अब तीसरे ब्रह्माण्ड-जागनी रासके विषय पर विचार कर लें. इसमें प्राणाधार सद्‌गुरु तारतम ज्ञानका प्रकाश लेकर आए हैं.

साथने रखे उतकंठा रहे, तारतम वचन पाधरां कहे ।
लई तारतम आव्या आ वार, महेता मतू घेर अवतार ॥ ३१

सुन्दरसाथकी किसी भी प्रकारकी इच्छा अपूर्ण न रहे इसलिए तारतम ज्ञानके वचन सीधे और सरल शब्दोंमें कहे गए हैं. इस बार तारतम ज्ञान लेकर धामधनी स्वयं सद्‌गुरु श्रीदेवचन्द्रजीके रूपमें मतु मेहताके घर अवतार लेकर आए हैं.

कुंवरबाई मातानुं नाम, उतम कायथ उमरकोट गाम ।
श्री देवचंदजी नगर आविया, आवी वचन भागवतनां ग्रह्या ॥ ३२

सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजीकी माताजीका नाम कुँवरबाई है और गाँवका नाम उमरकोट है. वहाँ उत्तम कायस्थ कुलमें उनका अवतरण (जन्म) हुआ. तत्पश्चात् कुछ समय बीतने पर वे नवानगर (जामनगर) पधारे और श्रीमद्भागवतका श्रवण कर उसके वचनोंको ग्रहण किया.

चौद वरस लगे नेष्ठा बंध, वचन ग्रह्यां सघली सनंध ।
एणे समे गांगजी भाई मल्या, धनबाई उपर पूरण दया ॥ ३३

चौदह वर्षों तक निष्ठापूर्वक श्रीमद्भागवतका श्रवणकर उसके सार रूप वचन ग्रहण किए. उस समय उन्हें गांगजीभाई मिले. उनकी वासना (सुरता) धनबाईकी है और उन पर धनीकी पूर्णरूपेण कृपा हुई.

सनंधे सरवे कह्यां वचन, ग्रह्यां गांगजी भाईए जोपे मन ।
एटला लगे कोणे नव लह्यां, ते गांगजी भाई घेर प्रगट थयां ॥ ३४

श्रीनिजानन्द स्वामीने अनेक प्रकारके वचन (श्रीमद्भागवतके सिद्धान्तोंके वास्तविक अर्थ तथा तारतम ज्ञान प्राप्ति का वृत्तान्त) कहे. श्रीगांगजीभाईने एकाग्र चित्त होकर उन्हें भली-भाँति ग्रहण किया. इतने दिनों तक इस प्रकारका ज्ञान किसीने भी प्राप्त नहीं किया था, जो गांगजीभाईके घर सद्‌गुरुके मुखारविन्दसे प्रकट हुआ.

पधराव्या पोताने घेर, जुगते सेवा कीधी अनेक पेर ।
त्यारे श्रीमुख वचन कह्यां प्राणनाथ, जे खोली काढवो छे आपणो साथ॥ ३५

श्री गांगजीभाई सद्गुरुको आदरपूर्वक अपने घर ले गए और अनेक प्रकारसे उनकी सेवा की. तब प्राणाधार सद्गुरुने अपने श्रीमुखसे कहा कि मार्ग भूले हुए सुन्दरसाथको मायासे बाहर लाना है, इसलिए उनको ढूँढ़ना है.

प्रवेस कीधो छे माया मंझार, तेडी आपणने जावुं निरधार ।
अमे आव्यां छूं एटले काम, तेडवा साथ घरे श्री धाम ॥ ३६

परमधामकी आत्माएँ इस मायावी संसारमें अलग-अलग स्थानों पर आई हैं और मायामें डूबी हुई हैं. निश्चय ही उन सबको बुलाकर हमें परमधाम लौटना है. मैं तो मात्र इसी कामके लिए आया हूँ, सुन्दरसाथको बुलाकर मूल घर परमधाम ले चलना है.

त्यारे गांगजीभाई पाम्यां अचरज मन, जे किहां छे साथ ने आवसे केम।
आ वचन बेहदनां कोण मानसे, केणी पेरे ए साथ आवसे ॥ ३७

सद्गुरुके इन वचनोंको सुनकर गांगजीभाईके मनमें आश्चर्य हुआ और प्रश्न पूछने लगे कि सुन्दरसाथ कहाँ है ? वे कैसे आएँगे ? अखण्ड घरके ये वचन कौन मानेगा और सुन्दरसाथ किस प्रकार एकत्रित होंगे ?

आ माया पूर वहे नताल, नख मूक्यो लई जाय ततकाल ।
लहेर उपर आवे छे लहेर, मांहें दीसे भमरीना फेर ॥ ३८

मायाका यह प्रवाह इतनी तीव्र गतिसे बहता जा रहा है कि नख मात्रका स्पर्श होने पर भी वह तुरन्त ही पूरे हाथको खींच लेता है. लहरके बाद लहरोंका ताँता लगा हुआ है. बीच-बीचमे भँवरियाँ दिखाई देतीं हैं अर्थात् मायाके प्रवाहमें काम, क्रोधादि वृत्तियोंकी लहरें और सत, रज, तमके रूपमें भँवर उठ रहे हैं.

आडा ऊभा वेहेवट घणां, अने विकराल जीव मांहें जलतणां ।
ऊंचो आडो ऊभो ऊंडो अतांग, पोहोरो कठण नथी केहनो लाग ॥ ३९

भवसागरका यह प्रवाह इतना लम्बा, चौड़ा, ऊँचा, टेढ़ा-मेढ़ा एवं अथाह है कि सागरमें दिखाई देने वाले भयङ्कर मगरमच्छादि जीवकी भाँति इस

मोहजलमें राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि दिखाई देते हैं. वे इतने गहरे हैं और उनका विस्तार इतना व्यापक है कि अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता. यह समय इतना कठिन है कि परमात्माकी भक्ति और भजन करनेका समय किसीके पास नहीं है.

नव सूझे हाथने हाथ, माया अमले छाक्यो साथ ।
नव ओलखे आपने पर, सुध नहीं सरीर न सूझे घर ॥ ४०

ऐसे कठिन समयमें और भयंकर अज्ञानान्धकारमें एक हाथको दूसरा हाथ दिखाई नहीं देता है अर्थात् आत्मा परमात्माको पहचान नहीं पाती. सुन्दरसाथ परमधामका मूल सम्बन्ध भूलकर मायाके नशेमें मस्त हैं. उन्हें अपने या परायकी पहचान भी नहीं है और उन्हें अपने मूलघर (परमधाम) और मूल शरीर (परात्मा) की भी सुधि नहीं है.

त्यारे बेहेर द्रस्टनो कह्यो विचार, एक मोटो आडीको थासे निरधार ।
अंतरगते आवसे धणी, वसतो आपणने देसे घणी ॥ ४१

श्रीनिजानन्द स्वामीने गांगजीभाईको श्रीकृष्णके प्रत्यक्ष दर्शनके विषयमें बातें कीं और कहा, एक बड़ी भारी चमत्कारिक लीला होगी. अन्तर्गत (परदा) में श्रीकृष्णजी आएँगे अर्थात् ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त किसीको भी उनके दर्शन नहीं होंगे. वे सुन्दरसाथको विभिन्न प्रकारकी वस्तुएँ देंगे.(हीरबाईको सोनेकी कसोंड़ी देना तथा लाड़बाई आदिको खिलौने देनेकी ओर यहाँ सङ्केत किया गया है.)

आपण मांहें आंहीं आरोगसे, साथतणी द्रस्टे आवसे ।
थासे छेडा ग्रह्या लगण, मानसे मन त्यारे अति घण ॥ ४२

श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण हम सबके बीच आकर भोजन करेंगे और सुन्दरसाथको साक्षात् दर्शन देंगे. सुन्दरसाथ एक दूसरेका दामन पकड़ कर धामधनी श्रीकृष्णके दर्शन करेंगे और दूसरोंको भी कराएँगे. इस प्रकार सुन्दरसाथका मन अति प्रसन्न होगा.

आवसे साथ उछाह अति घणां, पण तमे वचन मूको रखे तारतम तणां।
बहेर द्रस्टतणो जोई अजवास, आनंद मन उपजसे साथ ॥ ४३

इस प्रकार सुन्दरसाथ अति उत्साह और उल्लाससे भरकर एकत्रित होंगे. तुम

तारतमके वचनोंको छोड़ना नहीं. बाहरके चमत्कारोंका प्रकाश देखकर सुन्दरसाथके मनमें अति आनन्द होगा.

त्यारे वचन तणां करसुं विचार, खरी वस्त जोसुं ततकाल ।
वासना ओलखी लेसुं सही, माया जीवने वचन भारे कहेसुं नहीं ॥ ४४

इस चमत्कार पूर्ण लीलाओंके बाद तारतमके वचनों पर विचार होगा और तुरन्त ही सच्ची ब्रह्मात्माएँ दिखाईं देंगी. हम वास्तविक ब्रह्मप्रियाओंका परिचय प्राप्त कर लेंगे और मायावी अल्पज्ञ जीवोंको तारतमके महत्त्वपूर्ण वचन नहीं कहेंगे.

ए आडीको कीधो उतम, पण घरनी निध ते कही तारतम ।
जेथी ओलखिए आधार, वली जीवनो टले अंधकार ॥ ४५

यद्यपि इन चमत्कारिक लीलाओंको उत्तम कहा गया है तथापि परमधाम निजघरकी निधि तो तारतम ज्ञान ही है. इसके द्वारा धामधनीकी पहचान भी प्राप्त होती है और जीवात्माका अज्ञानान्धकार भी दूर होता है.

त्यारे गांगजीभाई पाम्यां मन उछरंग, कीधां क्रतव अति घणे रंग।
साख्यात तणी सेवा कीधी सही, अंग पाछुं कोई राख्युं नहीं ॥ ४६

सद्गुरुके उन वचनोंको सुनकर गांगजीभाईके मनमें अत्यन्त उत्साह पैदा हुआ और उन्होंने सद्गुरुकी आनन्द पूर्वक सेवा कर अपना कर्त्तव्य पूरा किया. उन्होंने सद्गुरुको साक्षात् धामधनी मानकर उनकी सेवा की. तन, मन, धन समर्पित करनेमें भी किसी प्रकारकी कमी नहीं रहने दी.

हवे साथ खोली काढुं आ वार, ते तां तमने में कह्यो प्रकार ।
श्री सुन्दरबाई तणो अवतार, पूरण आवेस दीधो आधार ॥ ४७

सद्गुरुने कहा, 'अब मैं सुन्दरसाथको ढूँढ निकालूँगा. हे गांगजीभाई ! मैंने तुम्हारे साथ वही बात की है जो श्रीकृष्णने मेरे साथ की थी.' वस्तुतः सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी सुन्दरबाईके अवतार हैं. उन्हें धामधनी श्रीराजजीने अपना पूर्ण आवेश दिया है.

आपणने तेडवा आविया, साथ उपर छे पूरण दया ।
अनेक वचन आपणने कह्या, पण भरम आडे कांई रुदे नव रह्यां ॥ ४८

वे हम सब सुन्दरसाथको परमधाम ले जानेके लिए पधारे हैं. सुन्दरसाथके प्रति उनके हृदयमें पूरी दया है. उन्होंने हमें अनेक प्रकारके वचन कहे हैं परन्तु मायाके भ्रमके कारण ये वचन (ज्ञान) हमारे हृदयमें टिक नहीं पाए.

त्यारे अनेक विधे आपणने कही, पण भरम बेठो चित आडो थई ।
अनेक आपणने कह्यां द्रस्टांत, तोहे बेठां अमे ग्रही स्वांत ॥ ४९

उस समय उन्होंने हमें अलग-अलग प्रकारसे समझाया किन्तु हमारे चित्तमें अविद्याका आवरण था इसलिये ये वचन चित्तमें समाविष्ट न हो पाए. सद्गुरुने हमें अनेक दृष्टान्त भी दिए फिर भी हम धैर्य धारण कर शान्ति पूर्वक बैठे रहे अर्थात् उनके वचनोंको कुछ भी ग्रहण नहीं किया.

अनेक आपणसुं कीधां उपाय, तोहे आपणो सुभाव न जाय ।
त्यारे अनेक विधे कह्युं तारतम, तोहे आपणो न गयो भरम ॥५०

हम सब सुन्दरसाथको जागृत करनेके लिए उन्होंने अनेक उपाय किए किन्तु हमारा स्वभाव नहीं बदला (विस्मृतिकी आदत नहीं छूटी). सद्गुरुने पुनः अनेक प्रकारसे अनेकों दृष्टान्त देकर तारतमका रहस्य समझाया फिर भी अविद्याके कारण हमारा भ्रम नहीं हटा.

अनेक आपणसुं कीधा विचार, कही कही वांक टाल्यो आधार ।
अनेक पखे समझाव्यां सही, आपणने टांकी लागी नहीं ॥५१

सद्गुरुने हमें अनेक विचार जताए. वारंवार समझा कर, हमारे दोष दिखा कर सम्पूर्ण शास्त्र तथा साधुसन्तोंकी वाणीसे अनेक प्रकारके उदाहरण उद्धृत कर उन्होंने हमें समझाया किन्तु हमारे हृदय पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा.

त्यारे अनेक आडीका मेल्या आधार, तोहे आपणने न वली सार ।
अनेक प्रकार करी करी रह्या, पख पचवीस आपणने कह्या ॥५२

तब धामधनीने भाँति-भाँतिकी चमत्कारिक लीलाएँ प्रकट की. (उदाहरण

स्वरूप व्रजकी लीला, दीवारों पर दहीके छींटे दिखाना, श्रीकृष्णके साक्षात् दर्शन करवाकर भिन्न-भिन्न वस्तुएँ देना आदि) तथापि हमें सुधि नहीं आई. सुन्दरसाथको जगानेके लिए अनेक उपाय करते हुए परमधामके पच्चीस पक्षकी लीलाओंका वर्णन किया.

ते पण आपण रह्या सही, तोहे भरम उडाड्यो नहीं ।
तोहे आपण उपर अति दया, व्रजतणां सुख विगते कह्या । ५३

हमने परमधामके पच्चीस पक्षोंका वर्णन तो सुना तथापि हम इसी भ्रममें पड़े रहे और मायावी अविद्याका आवरण हटा न सके. इतना सब होने पर भी सद्गुरुकी कृपा बनी रही. उन्होंने व्रजकी बाल लीलाको विस्तार पूर्वक समझाया.

वली वसेखे वरणव्यो रास, पहेला फेरानो कीधो प्रकास ।
तोहे आपण हजी तेहनां तेह, वली वरणव्या श्री धाम सनेह ॥५४

पुनः विशेष रूपसे रासलीलाका वर्णन कर प्रथम अवतरण-व्रज तथा रास लीलाको प्रकाशित किया, फिर भी हम सब ज्योंके त्यों मायाके भ्रममें फँसे रहे. अन्ततः उन्होंने परमधामकी लीला और धामधनीके साथ हमारा मूल स्नेहका वर्णन किया.

दया आपण उपर अति घणी, परगट लीला कीधी घरतणी ।
सेवा कीधी धनबाईए ओलखी धणी, सोभा साथमां लीधी अतिघणी ॥५५

धामधनीने हम सब पर अत्यन्त कृपा की. अखण्ड परमधामकी लीला भी यहाँ प्रकट की. धनबाई (गांगजीभाई) ने सद्गुरुको धामधनीके रूपमें पहचान कर उनकी बहुत सेवा की और सुन्दरसाथके बीच विशेष स्थान प्राप्त किया.

साथसुं हेत कीधां अपार, धन धन धनबाईनो अवतार ।
कांईक लहेर लागी संसार, त्यारे अडवडती ऊभी राखी आधार ॥५६

गांगजीभाईने सुन्दरसाथके प्रति असीम प्रेम प्रकट किया और उनका

यथायोग्य सम्मान किया. धनबाईकी वासनाके अवतार (गांगजीभाई) धन्य हैं. कई मायावी लहरें ऊठीं, उन पर आघात हुए, फिर भी धामधनीने अपनी शक्तिद्वारा उनकी लड़खड़ाहटको स्थिर बनाया. उनकी बिगड़ी हुई स्थिति ठीक हुई.

[गांगजीभाई सद्‌गुरुको छोड़कर व्यापारके लिए बाहर जा रहे थे. उन्हें वापस आना पड़ा. गुरुपत्नी लीलबाईके धामगमन बाद विहारीजी एवं जमुनाबाईके पालन-पोषणके सन्दर्भमें पत्नीके साथ मतभेद पैदा हुआ. सद्‌गुरु तथा धर्मके प्रति डगमगाता हुआ उनका भाव पूर्ववत् स्थिर हो गया. इसीको मायावी लहर तथा सद्‌गुरुकी कृपा कहा जाता है.]

वेहेवट पूर खमाय नहीं, त्यारे बांह ग्रहीने काढी सही ।
पण न वली सुध आपणने केमे, मोहजल गुण नव मूक्यो अमे ॥५७

मोहजल (भवसागर) का तीव्र प्रवाह असह्य होता है. इस परिस्थितिमें स्वयं सद्‌गुरुने श्रीगांगजीभाईका हाथ पकड़ कर उन्हें बाहर निकाला. यह सब जानते हुए भी हम सुधि खो बैठे हैं. अब भी हम मायाके अवगुणोंको छोड़ नहीं पा रहे हैं.

त्यारे वढ्या आपणसुं पोतावट करी, तोहे भरम निद्रा नव मूकी परहरी।
त्यारे अनेक पेरे आंसु वालीने कह्युं, पण एणे समे अमे कांई नव लह्युं ॥५८

अपने मूल सम्बन्धी समझ कर, धामधनी सद्‌गुरु हमारे हितके लिए हम पर क्रुद्ध हुए. तथापि हमने भ्रमरूपी निद्राको नहीं छोड़ा. वे पुनः आँखोंमें आँसू भरकर बोले फिर भी हमने कोई लाभ नहीं लिया, उनके वचन ग्रहण नहीं किए.

त्यारे वली धणीजीए कीधो विचार, जे साथ घेर तेडी जावुं निरधार ।
त्यारे संवत सतरे बारोतरे वरष, भादरवो मास अजवालो पख ॥५९

चतुरदसी बुधवारी थई, सनंध सरवे श्री विहारीजीने कही ।
मधरात पछी कीधुं परीआण, विहारीजीने कांईक खबर थै जाण ॥६०

इसके पश्चात् निजानन्द स्वामी (सद्‌गुरु) ने पुनः विचार किया कि सुन्दरसाथको अपने मूल घर अखण्ड परमधाममें वापस ले जाना है. तब

सम्वत् सत्रह सौ बारहके भाद्रशुक्ला चतुर्दशी बुधवारके दिन विहारीजीको सब विवरण बता दिया (भविष्य-व्यवस्थाकी बातें कही) एवं मध्य रात्रिके बाद महाप्रयाण किया. सद्गुरुके धामगमनके विषयमें विहारीजीको कुछ जानकारी भी हुई थी.

हुं तेणे समे थई बेठी अजाण, मुने फजीत गिनाने कीधी निरवाण ।
घेरथी तेडी मुने दीधी निध, तोहे न मूकी जीवे मोहजल बुध ॥ ६१

इन्द्रावती कहती है, मैं उस समय अनजान बनकर बैठी रही. मेरे बाह्य ज्ञान और नासमझीने मुझे परेशान कर दिया. सद्गुरुने मुझे घरसे बुलाकर अखण्ड परमधामकी निधि-तारतम ज्ञान दिया, फिर भी जीवने मोहजल (माया) की बुद्धि नहीं छोड़ी.

मुने हती मायानी लहेर, तो न आव्यो जीवने बहेर ।
त्यारे मारी निध गई मांहेथी मारे हाथ, श्री धाम घेर पोहोंता प्राणनाथ ॥ ६२

मेरे मनमें मायाकी लहरें उठ रही थीं. इसलिए जीवात्मा पर दुःख और पीड़ाका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा. परिणाम स्वरूप सद्गुरुरूपी अखण्ड धन मेरे हाथोंसे निकल गया. मेरे प्राणनाथ सद्गुरु मूल घर श्रीपरमधाम पहुँच गए.

आंहीं अम मांहेंथी अद्रस्ट थया, अमे सारा साजा बेसी रह्या ।
जो कांई जीवने आवे भाय, तो आ वचन केम काने संभलाय ॥ ६३

वे यहाँ पर हम सबकी आँखोंसे ओझल हो गए, किन्तु हम तो जैसे थे वैसे ही रह गए (शरीरके गुण, अंग, इन्द्रियरूपी साधन लेकर बैठे रहे). यदि हममें पूर्ण समर्पण भाव होता तो ''सद्गुरु धाम गए'' ये वचन कानसे कैसे सुन सकते थे ?

ते तां में जोयुं मारी द्रस्ट, अने जीव थई बेठो कोई दुस्ट ।
नहीं तो विछोडो केम खमाय, पण दुस्ट भरम बेठो मन मांय ॥ ६४

सद्गुरुके धामगमनकी घटना मैंने अपनी आँखोंसे देखी तथापि मेरा जीव कठोर बनकर बैठा रहा, अन्यथा उनका विरह वियोग हम कैसे सह सकते ? परन्तु मनमें भ्रम घुस गया और उसने मनको भ्रमित कर दिया.

एक वचन तणो नव कीधो विचार, न कांई ओलखिया आधार ।
सांभलो रतनबाई ए कीहूं परकार, एवी बुध केम आवी आ वार ॥६५

हमने सद्गुरुके एक वचन पर भी विचार नहीं किया. न ही धामधनीकी पहचान की. हे रतनबाई (विहारीजी) ! आप सुनिए, यह किस प्रकारका व्यवहार है ? मैंने ऐसा क्यों किया ? उस समय ऐसी बुद्धि क्यों आई ?

एणे समे अमने सुं थयु, सगाई तणुं सुख कांई नव लह्युं ।
जुओ रे बहेनी अमे एम कां थयां, एवडां दुख अमे खमीने रह्यां ॥६६

इस समय हमें क्या हुआ कि हम मूल सम्बन्ध अर्थात् परमधामके सुख भी प्राप्त न कर सके. सुन्दरसाथजी ! देखो, हम ऐसे क्यों बन गए ? इतने बड़े वियोगका दुःख सहन करके भी हम संसारमें ही टिके रहे.

ए दुखनी वातो छे अति घणी,पण ए अग्या मारा वालाजी तणी ।
एणे समे जो निध नव जाय, तो आवेस स्वरूप केम मुकाय ॥६७

यह दुःखकी कथा तो बड़ी लम्बी है परन्तु धामधनीकी ही इस प्रकारकी आज्ञा थी. यदि उस समय सद्गुरुरूपी निधि न जाती तो आवेशके स्वरूपको किस प्रकार छोड़ सकते. (सद्गुरु यदि धाम न जाते तो आवेशका स्वरूप यथावत् रहता. सद्गुरु धाम गए और आवेश स्वरूप श्रीकृष्णजीका आगमन ही बन्द हुआ.)

आवेसे धणी ओलखाय, ओलखे खिण जुआ न रहेवाय ।
ते माटे जो एम न थाय, तो आ वाणी केम कहेवाय ॥६८

धामधनीकी पहचान आवेश स्वरूप द्वारा ही होती है. उनकी पहचान हो जानेके बाद एक क्षणके लिए भी उनसे अलग नहीं रहा जा सकता. इसलिए यदि ऐसा न होता (यदि आवेश स्वरूप श्री कृष्ण और सद्गुरु श्री निजानन्द स्वामी अदृश्य नहीं होते) तो यह वाणी कैसे कही जा सकती ? अर्थात् यदि सद्गुरु अदृश्य न होते और आवेश स्वरूपका आगमन बन्द न होता तो मुझे विरहका अनुभव प्राप्त न होता, और यदि विरहकी अनुभूति नहीं होती तो यह वाणी कैसे अवतरित होती ?

हवे फिट फिट रे भूंडी तु बुध, तें नव दीधी जीवने सुध ।
महा दुस्ट अभागणी तुं, जाण जीवने कां नव कर्युं ॥६९

हे दुष्ट बुद्धि ! तुझे वारंवार धिक्कार है. क्योंकि तूने जीवात्माको सावधान नहीं किया. हे अभागिन ! महादुष्ट ! तूने जीवात्माको यह जानकारी क्यों नहीं दी ?

एवडी वात तें केम करी सही, के तुं घर मूकीने गई ।
के तुं विकल थई पापणी, विना खबर निध गई आपणी ॥७०

इतनी बड़ी घटनाको तूने कैस सहन किया ? क्या तू शरीररूपी घर छोड़कर अन्य कहीं चली गई थी ? अथवा हे पापिन ! क्या तू विकल हो गई थी ? जिसके कारण अनजानेमें ही सद्गुरुरूपी अखण्ड धन हाथसे निकल गया.

हवे तुंने सी दउं रे गाल, तें नव लाध्यो अवसर आणी वार ।
हवे फिट फिट रे भूंडा तुं मन, तें कां कीधो एवडो अधरम ॥७१

अब मैं तुझे क्या गाली दूँ ? क्या कहूँ ? तूने इस बार सुन्दर अवसर हाथसे जाने दिया. हे मन ! तुझे भी वारंवार धिक्कार है तूने भी इतना बड़ा अधर्म किया है ?

जीव समो तुं बेठो थई, तुंझ देखता ए निध गई ।
एवडी उपमा बेठो लई, अने बेठो छे काया धणी थई ॥७२

हे मन ! तू जीवके समान होकर बैठा और तेरे देखते-देखते अखण्ड निधि (ज्ञान) के दाता सद्गुरु चले गए. हे मन ! तू कितनी उपमा धारण करके इस महत्त्वके स्थान पर बैठा हुआ है. तू स्वयंको शरीरका स्वामी मानकर बैठा है.

तें नव कीधुं जीवने जाण, नेठ खोटो ते खोटो निरवाण ।
आ क्रोध हतो सबलो समरथ, पण नव सरयुं तुं मांहेंथी अरथ ॥७३

हे मन ! तूने जीवको इसकी जानकारी देकर सावधान भी नहीं किया. निश्चित रूपसे तू नीच और झूठा है. यह क्रोध भी सर्व प्रकारसे शक्तिशाली था परन्तु हे क्रोध ! तुझसे भी कोई काम सिद्ध नहीं हुआ.

गुण सघले घारण आवियो, अने जीव कायामां बेसी रह्यो ।
सघला गुण काया मंझार, कोणे नव लाघ्यो अवसर आणी वार ॥७४

इस शरीरके गुण, अंग, इन्द्रियाँ आदि सभीको अज्ञानतारूपी नींद आ गई, इसके कारण मायाका नशा छा गया. इसलिए जीव इस शरीरमें बैठा रहा. सब गुण भी शरीरमें ही थे फिर भी उनमें-से किसीने इस अवसरको पहचाना नहीं.

फिट फिट रे भूंडा जीव अजाण, तारी सगाई हती निरवाण ।
रे मूरख तुंने सुं थयुं, ए निध जातां कांई पाछुं नव रह्युं ॥७५

हे अज्ञानी जीव ! तुझे वारंवार धिक्कार है. तेरा सम्बन्ध निश्चित रूपसे सद्गुरुके साथ था. फिर भी हे मूर्ख ! तुझे यह क्या हो गया ? अखण्ड निधिके दाता सद्गुरुके चले जाने पर अब शेष क्या बचा ?

एटलां दुख तें केम करी सह्यो, अनेक विध तुंने घणवे कह्यो ।
निबल नीच तुं थयो निरधार, तें नव कीधी घरनी सार ॥७६

इतने बड़े दुःख तूने कैसे सहन किए ? तुझे तो धामधनीने अनेक प्रकारसे समझाया था. तू तो नीच और निर्बल हो गया है. तूने न किसीको मूल घर परमधामकी जानकारी दी और न इसका सार ही समझाया.

एवो अबूझ अकरमी थयो तुं कांए, कांई न विमास्युं रुदया मांहे ।
बुध मन सारुं बैठो थई, निध जाता तोहे घारण ना गई ॥७७

हे जीव ! तू ऐसा नासमझ और भाग्यहीन कैसे हो गया ? तूने मनमें कुछ विचार भी नहीं किया. मन और बुद्धि पर विश्वास रखकर उनके समान होकर बैठा रहा सद्गुरुरूपी अखण्ड धन हाथसे निकल गया, फिर भी तेरा अज्ञान नहीं गया.

एवो कठण कोरडूं तुं कां थयो, आवडी अगने हजी नव चढ्यो ।
पांच वरसनो होय जे बाल, ते पण कांईक करे संभाल ॥७८

तू ऐसा कठोर क्यों बन गया ? विरहाग्निका स्पर्श होने पर भी तू तनिक भी ढीला (नरम) नहीं पड़ा. (सद्गुरुरूपी धन खो देने पर तुझे दुःख होना

चाहिए था किन्तु वह भी न हुआ.) पाँच वर्षका अबोध बालक भी अपनी वस्तु संभालकर रखता है. तू तो इतना भी न कर सका.

हवे तुंने हुं केटलुं कहुं, अवसर आव्यो कांई नव लह्युं ।
तारी दोरी कां न टूटी तत्काल, फिट फिट भूंडा किहां हतो काल ॥ ७९

अब मैं तुझे कितना कहूँ ? अवसर प्राप्त होने पर भी तू उसे संभाल न सका. तेरी जीवन डोरी तत्काल क्यों नहीं टूट गई ? हे दुष्ट काल ! तुझे वारंवार धिक्कार है. उस समय तू कहाँ था, क्यों नहीं आया ?

आ तां केहेर मोटो जुलम थयो, अने जाणिए तो केम जाय सह्यो ।
ते तां में मारी मीटे जोयुं, धरम अमारुं कांई नव रह्युं ॥ ८०

यह तो हाहाकार मच गया, बड़ा अत्याचार हो गया. यदि यह ज्ञात होता तो सद्गुरुके धामगमनको कैसे सहन कर पाते ? मैं अपनी आँखोंसे सद्गुरुका धामगमन देखती रही, हमारा अनन्य भावका धर्म कुछ भी नहीं रहा.

प्रकरण ४ चौपाई १०८

विलाप कर्‌यो छे-राग रामग्री

जुओ रे बहेनी हुं हाय हाय, करती हीडुं त्राय त्राय ।
वालोजी रे विछडतां, कां जीव कडका न थाय ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सखियो ! मेरी दशा तो देखो, धामधनीके विरहके कारण मैं किस प्रकार हाय हाय करती हुई त्राही-त्राही पुकारती घूम रही हूँ. सद्गुरु धाम चले गए तो उनके वियोगमें मेरे जीवके टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गये ?

फिट फिट रे भूंडा तुं सबद, केम आवी मुख वाण ।
वाय न आव्यो ते दिसनो, धणी भेला चालतां मारा प्राण ॥ २

हे शब्द ! तुझे भी वारंवार धिक्कार है. इस प्रकारकी वाणी मुखसे कैसे निकल रही है ? धामधनीकी दिशाकी ओरसे वायु नहीं आई अन्यथा मेरे प्राण भी धामधनीके साथ चल देते.

केम वली जिभ्या मारी, ए कहेतां वचन ।
समूली न चुटांणी, जिहां थकी उतपन ॥ ३

"सद्गुरु चले गए." इस प्रकारके वचनोंका उच्चारण करनेके लिए मेरी जिह्वा क्यों हिलती है ? कट क्यों न गई ? उसे तो जड़से उखड़ जाना चाहिए था जहाँसे वह उत्पन्न हुई है.

श्री धणीजी सिधावतां, केम रही वाचा अंग ।
उखडी न पड्या दंतडा, घण घाए मुख भंग ॥ ४

धामधनी सद्गुरुके परमधाम पधारने पर भी हे वाणी ! तू मेरे शरीरमें कैसे रह गई ? उनके वियोगके दुःखके कारण ये दाँत भी क्यों नहीं उखड़ गए ? मुँह पर हथोड़ेके प्रहार होने पर भी वे टूट क्यों नहीं गए ?

केम न सुणियां रे, ए वचन तें श्रवणां ।
तें सुं न हता सुणियां, वचन धणी तणां ॥ ५

हे कान ! तूने वे विरह वेदनाके वचन क्यों नहीं सुने ? क्या तूने कभी धामधनीके वचन नहीं सुने थे ? जिस वाणीमें उन्होंने उपदेश दिया था उसे तूने सुना है अथवा नहीं ?

ए रे लवो सुणतां, तुंने दाझ न आवी ।
एणे रे लवे अगिननी, झालमां कां न झंपावी ॥ ६

मात्र एक शब्द सुनते ही तुझे आग क्यों नहीं लग गई ? सद्गुरुके धामगमनकी बात सुनने मात्रसे भी तू अग्निकी ज्वालामें क्यों नहीं कूद पड़ा?

निबल नयणां रे भूंडा, तमे द्रस्टे नव जोयुं ।
वालोजी रे विछडतां, तमे लोही नव रोयुं ॥ ७

हे पापी निर्बल नेत्र ! क्या तुझे यह दृश्य दिखाई नहीं दिया ? जब धामधनी इस संसारसे अलग हुए तो उनके वियोगमें तुझसे रक्तकी धारा (अश्रुके स्थान पर) क्यों नहीं बह गई ?

सुं रे थयुं तमने, तमे लोही नव रडियां ।
एवो व्रह देखी ततखिण, निकली न पडियां ॥ ८

हे आँखें ! तुम्हें ऐसा क्या हो गया था कि तुम रक्त बहाकर रो नहीं पड़ी ?

ऐसा दुःखदायी विरह देखकर उसी क्षण तुम बाहर क्यों नहीं निकल पड़ी ?

ए वचन तणी तुंने नासिका, न आवी रे प्रेमल ।
वालैयो रे विछडतां, तें नव दाख्युं रे बल ॥ ९

हे नासिका ! उनके वचनोंकी प्रेममय सुगन्धिका अनुभव क्या तुझे नहीं हुआ? प्रियतम सद्गुरुसे विछुड़ते समय तूने अपना जोर क्यों नहीं दिखाया ?

फिट फिट रे प्रेमल, नासिका केम रही ।
ए निध जातां अंगथी, विछडी नव गई ॥१०

सुगन्धिका अनुभव करने वाली हे नासिका ! तुझे वारंवार धिक्कार है. सद्गुरुरूपी धनसे अलग होने पर तू भी शरीरसे अलग क्यों नहीं हुई ?

प्रेमतणी रे धणी, गोली बांधतां काम ।
तेहमां सुं ना हता रे गुण, तमे चतुर सुजाण ॥११

प्रेमके मूर्त स्वरूप धामधनी प्रेमकी गोलियाँ बनाकर तुम सबको देते थे. हे गुण, अङ्ग, इन्द्रियो ! क्या तुममें ही सब गुण थे और उनमें कोई गुण नहीं थे ? जिसके कारण तुम उनके जाने पर भी यहाँ रह गईं. तुम तो स्वभावतः चतुर और सुज्ञ हो.

फिट फिट रे गुण तमने, ए अंगनां प्रेम काम ।
नव लाध्यो व्रह रे विछडतां, धणी श्री धाम ॥१२

हे मेरे गुण, अङ्ग, इन्द्रियो ! तुम्हें भी वारंवार धिक्कार है. प्रेम स्वरूप धामधनीके अलग होने पर भी तुम्हें कुछ नहीं हुआ ? तुम्हें उनकी विरह वेदनाका क्या अनुभव भी नहीं हुआ ?

एवडी वात तें केम सही, अंग ऊभुं केम रह्युं ।
रोम रोम हेठे कां, गली नव पडियुं ॥१३

हे शरीर ! इतनी बड़ी आपत्तिको तू कैसे सहन कर पाया ? अरे ! तेरे अंग अब भी कैसे टिके हुए हैं ? तेरे रोम-रोम कटकर क्यों नहीं गिर गए ?

अगिनडी न उठी रे, कालजडे रे झाल ।
ए व्रह लई अंग कां, ऊभुं रह्युं रे चंडाल ॥ १४

तुझमें अग्नि प्रज्वलित क्यों नहीं हुई ? तेरे कलेजे तक उसकी ज्वाला क्यों नहीं पहुँच पाई ? हे चाण्डाल शरीर ! तू इतना बड़ा विरह लेकर किस प्रकार खड़ा रहा ?

हाथ पग सहु अंगनां, सरवे रे संधाण ।
जुजवा कां नव थयां रे, आथमते ए भाण ॥ १५

तेरे हाथ, पाँव और सब जोड़ इस समाचारको सुनते ही क्यों अलग नहीं हुए ? सद्गुरुरूपी सूर्यके अस्त होने पर सब अंग अलग क्यों नहीं हुए ?

भाण वचन रे कांई, आ वालाने न कहेवाय ।
धणीतणी रे जोत, कोट ब्रह्मांडे न समाय ॥ १६

सद्गुरुको सूर्यकी उपमा भी नहीं दी जा सकती. (क्योंकि सूर्यका प्रकाश तो मात्र पृथ्वी पर ही होता है परन्तु) सद्गुरु धनीके तारतमकी ज्योति तो करोड़ों ब्रह्माण्डोंमें भी नहीं समाती है.

जोत ने प्रगट थई, झाली नव रहे विना ठाम ।
ब्रह्मांड अखंडोमां नीसरी, जै पोहोंती घर श्री धाम ॥ १७

सद्गुरुके तारतम ज्ञानकी अखण्ड ज्योति प्रकट हुई. अब तो यह अखण्ड स्थानके अतिरिक्त कहीं भी रुक नहीं सकती. अखण्ड ब्रह्माण्डों (व्रज और रास) में पहुँच कर वहाँसे आगे बढ़कर यह अक्षरधामसे भी आगे अपने मूल घर परमधाम पहुँच गई है.

ए जोत जोसे रे सखी, सकल मलीने साथ ।
वचन ए प्रगट थासे, रास ने प्रकास ॥ १८

हे सखी ! तारतम ज्ञानकी इस ज्योतिको सब सुन्दरसाथ मिलकर देखेंगे. तारतमके इन वचनोंके द्वारा रास और प्रकाशके वचन प्रकट होंगे.

नसो न त्रूटी रे, तुं केम रही तन तुचा ।
रूप रंग लई कां न थई, तिल तिल जेवडा पुरजा ॥ १९

अपने अङ्गोंको धिक्कारते हुए पुनः कहती है, मेरे शरीरकी नसें टूट क्यों नहीं गईं ? हे त्वचा ! तू शरीरके ऊपर क्यों चिपकी रह गई ? शरीरके रूप और रंगको लेकर तिलके समान तेरे टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए ?

हाड मांस रे तमे, केम रह्यां रे भेला ।
कांय न सूक्युं रे मारुं, लोही तेणी वेला ॥ २०

हे मेरे शरीरकी हड्डियो और मज्जा ! तुम भी शरीरके साथ क्यों चिपके रहे ? मेरा रक्त उसी समय सूख क्यों नहीं गया ?

फिट फिट रे तुंबडी, भूंडी केम रही तुं साजी ।
साखला न थै रे, एहरण घण वचे लागी ॥ २१

हे पापी खोपड़ी ! तुझे धिक्कार है. अरे दुष्ट ! तू शरीरमें ज्योंकी त्यों चिपकी है. तू टुकड़े- टुकड़े क्यों नहीं हो गई ? कृपारूपी निहाई (एहेरन) और वचनरूपी हथोड़ेके बीच आने पर भी कैसे बच पाई, टूट कर तू चूर-चूर क्यों नहीं हो गई ?

अंग मारा रे अभागी, तमे कां भूको नव थयां ।
ए धणी रे चालतां, अधरमी कां ऊभां रह्यां ॥ २२

हे मेरे भाग्यहीन अङ्ग ! तुम टुकड़े-टुकड़े होकर धूलके रूपमें क्यों नहीं बदल गए ? सद्गुरु धनीके धामगमनके बाद अधर्मी बनकर तुम क्यों खड़े रहे ?

केम ने रह्युं रे मारा, अंग मांहें तुं बल ।
तें जीवने नव काढ्यो रे, निध जातां नेहेचल ॥ २३

हे बल ! तू भी शरीरमें क्यों टिका हुआ है ? सद्गुरुरूपी अखण्ड निधि (धन) धाम जाते समय तूने जीवको बाहर क्यों नहीं निकाला ?

नेहेचल रे निध जातां, तुं किहां हती रे बुध ।
धिक धिक रे चंडालनी, तुं कां थई रे असुध ॥ २४

हे बुद्धि ! सद्गुरुरूपी अखण्ड अविनाशी धनके चले जाने पर भी तू कहाँ

छिप कर बैठी थी ? हे चाण्डालिनी ! तुझे वारंवार धिक्कार है. तू क्यों बेसुध बनी रही ?

गिनान भूंडा एणे समे, नव कीधो अजवास ।
एवी सी मुने भुलवी रे, में कीधो तारो विस्वास ॥ २५

हे तुच्छ ज्ञान ! तूने भी उस समय प्रकाश नहीं किया (उजाला क्यों नहीं किया ?) मैंने तो तुझ पर विश्वास किया था, फिर भी मुझे भुलाकर क्यों धोखा दिया ?

गुण ने सघला मली रे, तमे मोसुं थया अवला ।
मारो धणी रे चालतां, तमे कां नव थया सवला ॥ २६

हे गुण और इन्द्रियाँ ! तुम सब मिलकर मेरे विरुद्ध क्यों हो गए ? मेरे धामधनीके चले जाते हुए तुम सरल क्यों नहीं बने ? अर्थात् मेरा काम क्यों नहीं किया ?

ए वालो रे चालतां, गुण हता अंग मांहे ।
काम न आव्या रे तमे, मारे अवसर क्यांहे ॥ २७

हे गुण, अंग, इन्द्रियो ! सद्गुरुके धामगमनके समय तो तुम सब शरीरमें ही थे. समय आने पर तुम मेरे किसी काम नहीं आए.

धिक धिक पडो रे तमने, सुं ना हती ओलखाण ।
जीवनुं धन रे जातां, तमे कां नव काढ्या रे प्राण ॥ २८

हे गुण, अङ्ग, इन्द्रियो ! तुम्हें वारंवार धिक्कार है. क्या तुम सबको धामधनी सद्गुरुका परिचय प्राप्त नहीं था ? जीवनके आधाररूप सद्गुरु जब धाम जा रहे थे तो हमारे शरीरसे प्राणको तुमने बाहर क्यों नहीं निकाल दिया ?

कांय न नीसरिओ रे, भूंडा जीव एणी वार ।
फिट फिट रे कालिया अवसर, चूक्यो रे चंडाल ॥ २९

हे पापी जीव ! तू उस समय शरीरसे बाहर क्यों नहीं निकल गया ? हे काल ! तुझे भी धिक्कार है, क्योंकि तू चाण्डाल बनकर ऐसा अवसर खो बैठा.

नीच अधरमी जीव रे, एवो अधरम कोई करे ।
श्री धणी धाम चाल्या पछी, आकार कोण धरे ॥ ३०

हे नीच अधर्मी जीव ! क्या कोई ऐसा अधर्म करता है ? धामधनी सद्गुरुके चले जानेके बाद कौन ऐसा अधर्मी होगा जो शरीरको पकड़े बैठेगा ?

केही पेरे करुं जीव तुंने, तुं चूक्यो रे चंडाल ।
जो तुंने अगिन न उठी रे, कां न झंपाव्यो झाल ॥ ३१

हे जीव ! तुझे क्या कहूँ ? तेरे लिए मैं क्या उपाय करूँ ? तू तो चण्डाल बनकर सब कुछ भूल गया. तेरे हृदयमें विरहाग्नि पैदा नहीं हुई ? उस विरहकी ज्वालामें कूदकर तू विनष्ट क्यों नहीं हुआ ?

भेरव न झंपाव्यो रे जीव, एवो थयो कां कायर ।
तरवारे न ताछ्यो रे अंग, धणी जातां सुख सायर ॥ ३२

हे जीव ! तूने पर्वतसे छलाङ्ग (भैरव झाँप) क्यों नहीं लगाया ? तू ऐसा कायर क्यों बन गया ? जब सुखके सागरके समान सद्गुरुधनी धाम जा रहे थे तो तूने अपने अङ्ग तलवारसे क्यों नहीं छीले ?

गुण धणी जातां रे जीव, ताहारो किहां हतो काल ।
करम कोढियो ढेड तुं, थयो रे चंडाल ॥ ३३

हे जीव ! ऐसे सर्वगुण सम्पन्न धनीके धामगमनके समय तुझे कालने ग्रस्त क्यों नहीं किया ? तू अपने कर्मसे कोढ़ी, नीच तथा चाण्डाल बन गया है.

हवे केटलुं कहुं रे दुस्ट, तें नव ग्रह्यो वांसो ।
अवसर चूक्यो रे घणो, पडियो रे वरांसो ॥ ३४

हे दुष्ट जीव ! अब तुझे कितना कहूँ ? तू धनीजीके धाम जाते हुए उनके पीछे क्यों नहीं गया ? तू ऐसे सुन्दर अमूल्य अवसरको खो चुका है और अब पश्चात्ताप करनेके लिए इस संसारमें पड़ा हुआ है.

खरी रे वस्तनुं, तुंने हतुं रे तेज ।
तें कां नव राख्युं रे, धाम धणीसुं हेज ॥ ३५

सद्गुरुरूपी अखण्ड वस्तुका प्रकाश तेरे अन्दर विद्यमान था, तथापि तूने धामधनीके साथ प्रेम सम्बन्ध स्थापित नहीं किया.

ए धणी रे विछडतां, केम रह्युं रे अंग पास ।
कांय न समाणुं रे तुं, तेज जोत प्रकास ॥ ३६

ऐसे धामधनी संसारसे विलग हुए तो तेरे अंग शरीरके साथ क्यों चिपके रहे ? सद्गुरुके तेज और ज्योतिमें तू समाहित क्यों नहीं हो गया ?

हवे हुं केम करुं रे, वचन वाणी धणी किहां ।
वालैयो वोलावी करी, हुं पाछी रही इहां ॥ ३७

अब मैं क्या करूँ ? सद्गुरु धनीकी वाणी और वचन कहाँसे सुनूँ ? प्रियतम सद्गुरुके पार्थिव शरीरको समाधि स्थल पहुँचा कर उनसे विछुड़ी हुई मैं यहाँ रह गई.

हवे किहां ने सुणीस रे, ए वचन वल्लभ ।
श्रीमुख वाणी रे मुने, थै छे रे दुरलभ ॥ ३८

मेरे प्राणप्रिय सद्गुरुकी वाणी अब मैं कहाँ सुन पाऊँगी ? उनके मुखारविन्दसे प्रवाहित वाणी और वचन सुनना मेरे लिए दुर्लभ हो चुका है.

तारतम तणा विचार, कोण करी देसे हेत ।
केम ने सांभलसुं रे, व्रज रास अखंडनां विवेक ॥ ३९

अब मुझे विचार, विवेक, स्नेह और प्रेमसे भरकर तारतम ज्ञान कौन देगा ? अखण्ड व्रज तथा रासके ये विवेकपूर्ण वचन कैसे सुनेंगे ?

उतम आडिका ने, वली उतम द्रस्टांत ।
कोण ने विचारसे, धणी विना करी खांत ॥ ४०

उत्तम प्रकारकी चमत्कारिक लीलाएँ और उत्तम दृष्टान्त देकर चाह पूर्वक ये पवित्र विचार धामधनीके बिना अब कौन सुनाएगा ?

चौद वरस लगे नेस्टा बन्ध, भागवत कोण लेसे ।
एहनो सार काढी अमने, ततखिण कोण देसे ॥ ४१

चौदह वर्षों तक नियम पूर्वक श्रीमद्भागवतका श्रवण करके उसका सार तत्त्व निकाल कर हमें सद्गुरुके बिना कौन देगा ?

दूध पाणीना विछोडा, कोण करीने देसे ।
हवे आ वेहेवट मांहेंथी, बांहे ग्रहीने कोण लेसे ॥ ४२

दूध और पानी (ब्रह्म और माया) को अलग-अलग कर सद्गुरुके बिना इन दोनोंके भेदका निरूपण कौन समझाएगा ? अब इस मायाके विकट प्रवाहसे हाथ पकड़कर कौन बाहर निकालेगा ?

एक सो ने आठ रे, कहिए जे पख ।
ते जुजवा वरणवी, अमने कोण देसे रे सुख ॥ ४३

जिन्हें भक्ति (उपासना) के एक सौ आठ पक्ष (सोपान) कहा गया है, उन सबका अलग-अलग वर्णन करके अब हम सब सुन्दरसाथको सुख कौन देगा ?

नरसैया कबीर ने जाटी, वचन कोण लेसे ।
एहना अरथ अमने, कोण करी देसे ॥ ४४

नरसी मेहता, सन्त कबीर तथा जाट भगतके वचनोंकी साक्षी देकर हमें कौन समझाएगा तथा उन वचनोंका स्पष्टीकरण करके उनके खरे अर्थ हमें कौन समझाएगा ?

महा ने प्रले लगे, कोई करे रे अभ्यास ।
सरवे विद्या सास्त्रनी, लिए करी विसवास ॥ ४५

तोहे केमे न आवे रे, विद्या एवी रे वाण ।
ते खिण मांहें दई करी, वालो करतां चतुर सुजाण ॥ ४६

महाप्रलय तक यदि कोई विद्याभ्यास करे, चौदह विद्या और छः शास्त्रोंकी सब कलाओंका श्रद्धा पूर्वक अध्ययन कर ले फिर भी ये सब विद्याएँ मिलकर सद्गुरु धनीके वचनोंके समान नहीं हो सकतीं. सद्गुरु क्षण मात्रमें ही इन वचनोंके भाव हममें जागृत करके हम सबको चतुर और सुज्ञ बना देते थे.

अबूझ टालीने हवे, कोण करसे वचिखिण ।
नेहेचल निध निज धामनी, कोण देसे ततखिण ॥ ४७

अज्ञानताको हटाकर अब हमें विलक्षण बुद्धि कौन प्रदान करेगा ? अखण्ड अविनाशी परमधामकी निधि-तारतमज्ञान हमें तत्क्षण कौन देगा ?

खीजी वढीने ए निध, बीजो कोण देसे ।
जीवनां सगां जाणी, आंसु वाली कोण कहेसे ॥ ४८

कभी-कभी नाराज हो कर, डाँट-फटकार कर सद्गुरु धनीके बिना अन्य कौन हमें अखण्ड तारतम ज्ञान देगा ? आत्माका मूल सम्बन्धी मानकर, आँखोंसे आँसू बहा-बहा कर हमें कौन प्रबोध करेगा ?

अनेक पेरे अमने, एम कोण रे प्रीछवसे ।
देखाडवा आ रामत, एणी पेरे देह कोण धरसे ॥ ४९

भिन्न-भिन्न प्रकारके ज्ञान देकर हमें इस प्रकार कौन समझाएगा ? इस संसारका झूठा खेल दिखानेके लिए इस झूठे संसारमें इस प्रकार मानव देह कौन धारण करेगा ?

आ ब्रह्मांडने रामत, बीजो कोण कहेसे ।
ए रामत देखाडी ए थकी, अलगां राखी कोण लेसे ॥ ५०

इस ब्रह्माण्डके खेलका वर्णन सद्गुरुके बिना अन्य कौन करेगा ? यह मायावी खेल दिखाकर उसके बीच रहते हुए भी हमें उससे अलग कौन करेगा ?

विध विधनी रे चरचा, हवे किहां रे सांभलसुं ।
एह रे वाणी विना, हवे आपण केम गलसुं ॥ ५१

अब हम विभिन्न प्रकारकी चर्चा कहाँ सुन पाएँगे ? सद्गुरुकी वाणीके बिना अब हमारे कठोर हृदय कैसे द्रवित होंगे ?

गल्या पखे बीजो घाट, केम करी थासे ।
बीजा घाट विना मोहजल, केम रे मुकासे ॥ ५२

द्रवित हुए बिना दूसरा आकार कैसे प्राप्त होगा ? अर्थात् अहङ्कारको निर्मूल किए बिना प्रेम कैसे प्राप्त होगा ? दूसरा आकार ग्रहण किए बिना हम मोहजलको कैसे छोड़ सकेंगे ?

पांच पचीस तेहने, बीजो कोण ओलखावसे ।
वचन धणीनां पखे, ए सवलो केम थासे ॥ ५३

पाँच तत्त्व तथा पच्चीस प्रकृति, इन सबकी पहचान सद्गुरु धनीके बिना

हमें कौन कराएगा ? धामधनीके वचनोंका आश्रय लिए बिना ये सब किस प्रकार सीधे समझमें आएँगे ?

जीवतां गुण ते हवे, केणी पेरे मरसे ।
दुखी टालीने सुखी, बीजो कोण करसे ॥ ५४

अब हमारे शरीरमें जीवित गुण, अङ्ग इन्द्रियाँ कैसे मृत्युको प्राप्त होंगी ? अर्थात् ये इन्द्रियाँ सांसारिक भावोंके प्रति मृतप्रायः हो कर परमात्माकी ओर कैसे जाएँगी ? अखण्ड सुख देने वाले सद्गुरुके बिना दूसरा कौन हमें दुःखसे दूर कर सुखी करेगा ?

श्रवणां ने अंग इन्द्री, टालसे कोण अवला ।
ए धणी विना बीजो कोण, करी देसे सवला ॥ ५५

हमारे कान और अन्य अङ्ग इन्द्रियाँ जो मायावी वृत्तिमें फँसी हुई हैं, उन्हें झूठे मार्गसे हटाकर सीधे मार्ग पर धामधनीके बिना अन्य कौन ला सकेगा ?

आतम ने पर आतम, भेला कोण करसे ।
आ भवसागर मांहेंथी, बीजो कोण लई तरसे ॥ ५६

आत्मा और पर-आत्माके पारस्परिक सम्बन्धोंको समझाकर कौन उसे एक रूप करेगा ? इस संसार सागरके पार ले जाकर परमधामके दर्शन कौन करवाएगा ?

नख त्रोड पूर तणातां, बांहे ग्रहीने कोण वालसे ।
एवा रे लाड अमारा, हवे बीजो कोण पालसे ॥ ५७

जिस प्रकार प्रचण्ड प्रवाहमें मात्र उंगली डालने पर भी पूरा हाथ बहने लगता है, उसी प्रकार काम, क्रोध, मोहादि तूफानोंकी लहरें अपने प्रचण्ड प्रवाहमें सुरता (आत्मा) को खींच कर ले जातीं हैं. इस परिस्थितिमें सद्गुरुके बिना हाथ पकड़ कर कौन पार करा सकता है ? सद्गुरुकी अनुपस्थितिमें ऐसा लाड़ और प्यार अन्य कौन देगा ?

सागर जीव खोली करी, वासना कोण परखसे ।
खोलतां लाधे वासना, एम कोण रे हरखसे ॥ ५८

इस मोह सागरमें पड़ी हुई आत्माको ढूँढ़ कर परमधामकी वासनाओंका

परिचय कौन कराएगा ? इस प्रकार ब्रह्मात्माओंको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उनकी प्राप्ति होने पर अब कौन इस प्रकार प्रसन्न होंगे ?

हवे कोण ने रे वरणवसे, व्रज रास ने श्रीधाम ।
ए सुख दई भाजसे, कोण मारा जीवनी हाम ॥ ५९

अब व्रज-रास तथा परमधामकी अखण्ड लीलाओंका वर्णन कौन करेगा ? इन लीलाओंके अखण्ड सुख दे कर सद्गुरुके बिना हमारी इच्छाएँ कौन पूर्ण करेगा ?

जीवने जगावी ए निध, बीजो कोण देसे ।
श्रवणां उघाडी जीवनां, एम वचन कोण कहेसे ॥ ६०

हमारी जीवात्माओंको जागृत करके परमधामकी सम्पत्ति (तारतम ज्ञान) हमें कौन देगा ? आत्माके कान खोलकर इस प्रकारके वचन कौन सुनाएगा ?

नेहेचल निध दई करी, सूतो जीव कोण जगाडसे ।
ब्रह्मांड फोडीने श्री धाम, उपरवाडे कोण पोहोंचाडसे ॥ ६१

तारतम ज्ञान रूपी अखण्ड अविनाशी धन देकर सुप्त जीवात्माको कौन जागृत करेगा ? इस चौदह लोक वाले ब्रह्माण्डको वेधकर ऊँचे विहङ्गम मार्ग द्वारा परमधाम कौन पहुँचाएगा ?

उपरवाडे वाट खिण मांहें, ए घर केम रे लेवासे ।
ए भोइया विना रे आ भोम, केम रे मेलासे ॥ ६२

इस ब्रह्माण्डसे ऊपर अष्टावरण, ज्योतिस्वरूप, मोहतत्त्व, निराकार आदि श्रेष्ठ स्थानोंका मार्ग प्राप्त कर एक क्षणमें ही विहंगम मार्ग द्वारा मूल वतन परमधाम कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? इस संसारकी सम्पूर्ण स्थितिके जानकार, मार्गदर्शक सद्गुरु धनीके बिना यह मायावी संसार कैसे छोड़ा जा सकेगा?

अचेत अबूझ साथने, कोण सुधारी लेसे ।
जीवनां सगां जाणी करी, ए निध बीजो कोण देसे ॥ ६३

अज्ञानी नासमझ सुन्दरसाथको सत्य मार्ग दिखा कर कौन सुधारेगा ? आत्माके वास्तविक सम्बन्धकी पहचान करवा कर तारतमरूपी संपत्ति दूसरा कौन देगा ?

सुतेज सत सागर मांहेंथी, धन आवतुं अविचल ।
वही गयुं रे पूर, लहेर आवतियुं छोल ॥ ६४

स्वतः प्रकाशमान, तेजोमय, अखण्ड परमधामरूपी सतसागरके बीचसे इस तारतम ज्ञानरूपी अखण्ड अविनाशी धन निरन्तर आ रहा था. अब सागरकी लहरोंका वह प्रवाह भी सद्गुरुके साथ चला गया है.

ए निध बहेनी रे हुं, बेठी रे खोई ।
भरम मुने गेहेन हुतो, तेणे हुं रही रे जोई ॥ ६५

हे बहन (सुन्दरसाथजी) ! निष्क्रिय रहनेके कारण मैं इस प्रकारका अखण्ड ज्ञान खो बैठी. क्योंकि अविद्या और अज्ञानका नशा मुझपर चढ़ा हुआ था, इसलिए मैं देखती ही रह गई.

एवडुं अंधारुं थातां, तुं केम रही रे जोई ।
फिट फिट रे तुं पापणी, ए निध केम रही खोई ॥ ६६

इतना भयङ्कर अन्धकार छा गया और तू कैसे देखता रहा ? हे पापी जीव ! तुझे वारंवार धिक्कार है. तूने ऐसे सद्गुरुरूपी धनको कैसे खो दिया ?

धिक धिक रे जीवडा, तें खोई निध हाथे ।
धणी धाम चालतां, तुं न चाल्यो रे साथे ॥ ६७

हे जीव ! तुझे वारंवार धिक्कार है कि तूने हस्तगत की हुई अखण्ड सम्पत्तिको खो दिया है. सद्गुरु धनीके धामगमनके समय तू उनके साथ क्यों नहीं गया ?

खुटी न आवी रे भूंडी, तुं वल्लभ विछडतां ।
हजी न जाय रे जीव, ए वचन सांभलतां ॥ ६८

हे पापी मौत ! प्रियतम धनीके वियोगके समय तू क्यों नहीं दिखाई दी ? इतने कठोर वचन सुनने पर भी यह जीव शरीरको छोड़कर क्यों नहीं चला जाता ?

फिट फिट रे भूंडा जीव, ए तें कीधुं रे सुं ।
ए व्रह देखी अंगथी, उडी न पडियो रे तुं ॥ ६९

हे पापी जीव ! तुझे वारंवार धिक्कार है तुने यह क्या किया ? ऐसे कठोर

विरहका दुःख देखने पर भी तू मेरे अंगसे उड़कर क्यों नहीं चला गया ?

हाय हाय करुं रे बहेनी, वाले दीधो मुने छेह ।
भसम ना थयो रे, मारा जीवसुं देह ॥ ७०

हे बहन (सुन्दरसाथजी) ! अब मैं पश्चाताप कर रही हूँ. सद्गुरु धनीने मुझे वियोग दिया. सद्गुरुकी देहके साथ-साथ जीव सहित मेरी देह जलकर भस्म क्यों नहीं हो गई ?

घणुंए कह्युं रे बहेनी, मुने मूल सनेह ।
पण हुं निगमी बेठी रे, निध हाथ आवी जेह ॥ ७१

हे बहन ! धनीजीने मुझे बहुत कहा, क्योंकि मेरा उनके साथ मूल सम्बन्ध है. परन्तु मैं तो हाथमें प्राप्त धनीरूपी सम्पत्ति खो बैठी.

मुने घणुंए जणावियुं, निध दई चालतां एकांत ।
पण में खोई निध पापणी, ग्रही बेठी हुं स्वांत ॥ ७२

धनीजीने मुझे बहुत जानकारियाँ दी. धामगमनके समय एकान्तमें बुलाकर मुझे अखण्ड धन दिया. पर मैं पापिनी उस अखण्ड धनको खोकर शान्त और निश्चिन्त होकर बैठी रही.

हवे सबदातीत निध, कोण देसे रे वाण ।
व्रतमान तणी रे, कोण केहेसे जाण ॥ ७३

सद्गुरुके बिना अब परमधामकी शब्दातीत निधिको वचनों द्वारा कौन देगा ? परमधाम तथा वर्तमान समयकी जानकारी हमें कौन देगा ?

उठतां बेसतां रमतां, खबर कोण देसे ।
वन पधारया रे सखी, सिणगार कोण वरणवसे ॥ ७४

परमधाममें श्रीराजजीके साथ हम सब सुन्दरसाथ इस प्रकार उठते बैठते और खेलते थे इसकी जानकारी अब कौन देगा ? तीसरे प्रहरमें जब सखियाँ वनमें जाती थीं, उस समयके शृङ्गारका वर्णन कौन करेगा ?

वस्तर भूषण तणी रे, विगत कोण लेसे ।
ए धणी विना रे ए सुख, हवे बीजो कोण देसे ॥ ७५

परमधामके वस्त्राभूषणोंका विवरण कौन देगा, धामधनीके बिना यह सुख अन्य कौन दे सकेगा ?

मूल तारतम तणी, कोण प्रीछवसे रे बडाई ।
धाम धणीसुं मुने, कोण करी देसे रे सगाई ॥ ७६

परमधामका मूल रहस्य तथा तारतम ज्ञानका महत्त्व कौन समझाएगा, धामधनीके साथ मेरा सम्बन्ध कौन स्मरण कराएगा ?

मूल तारतमतणां, कोण करसे विचार ।
आसामुखी हती इन्द्रावती, मारा प्राणना आधार ॥ ७७

मूल घर परमधामके मूल रहस्य-तारतमके वचनों पर अब कौन विचार करेगा ? हे मेरे प्राणाधार सद्गुरु ! इन्द्रावतीको यह पूरी आशा थी कि आप ही इसे पूर्ण करेंगे.

प्रकरण ५ चौपाई १८५

भाषा सिंधी जाटी

मूंजी सैयल रे, सजण हुअडा मूं गरे ।
मूं न सुजातां सिपरी, हल्यां कारयूं घणुं करे ॥ १

हे मेरी सखी ! धनी (साजन) मेरे घर आए थे. मैं उन्हें पहचान न सकी. धनीजीने काफी समय तक पुकारा और चले गए.

सजण आया मूं गरे, मूं न सुजातां सेंण ।
गाल्यूं केयाऊं हेतमें, घणी भती भती जा वेण ॥ २

धनी (साजन) मेरे घर आए. मैं उन्हें पहचान न पाई. उन्होंने भाँति-भाँतिके वचनोंसे मेरे साथ प्रेमपूर्वक बातें की.

मूंके जा घारण आबई, जे आंई पसो साथ ।
त खरे बपोरे सेज सोझरे, मूंके थेई रात ॥ ३

मुझ पर अज्ञान और मायाका नशा चढ़ा हुआ था. उसे तुम सब सुन्दरसाथ देखो. मध्याह्नके सूर्यके समान सद्गुरुकी उपस्थितिमें भी अज्ञानान्धकारने मुझे घेर लिया.

सजण आया न सुजातंम, मूके चेयाऊं घणां वेण ।
कंन अंखियूं फूटियूं, व्या फुट्या हियजा नेण ॥ ४

सद्गुरु आए और मैं उन्हें पहचान न सकी. उन्होंने मुझे अनेक प्रकारके वचन

कहे. मानों मेरे कान और नेत्र फूटे हुए थे. इसके साथ-साथ मेरे हृदयके नेत्र भी फूटे हुए थे.

सजण बिया निकरी, हांणें आंऊं करियां कीं ।
अवसर व्यो मूंजे हथ मंझां, हांणें रुअण रातो डींह ॥ ५

धनीजी मेरे पाससे निकलकर धाम पधार गए. अब मैं क्या करूँ ? प्राप्त अवसर हाथसे निकल गया. अब तो रात-दिन रोना और विरहाग्निमें जलना ही बचा है.

पिरी हल्यां प्रभातमें, आंऊं उथिस अबेरी ।
कीं बंजांइयां वलहो, जे हूंद जागां सबेरी ॥ ६

सद्गुरु धनी तो प्रातःकाल जल्दी ही धाम चले गए और मैं तो देरसे जागृत हुई. यदि मैं प्रातः काल जल्दी ही जग गई होती तो प्रियतम धनी मुझे छोड़कर कैसे जा पाते ?

जीव मूंहीजो जे तडे जागे, त अवसर बंजांइयां कीं ।
हूंद साथ न छडियां सजणे, आडी लेहेर माया थेइनी ॥ ७

मेरा जीव यदि उसी समय जागृत हो उठता तो यह अवसर हाथसे कैसे छूट जाता ? मैं सद्गुरु धनीका साथ नहीं छोड़ती किन्तु मायाके प्रभावने बीचमें ही रुकावट डाल दी.

हांणें डिसूनी डोहें निहारीयां, तां जर भरया अतांग ।
महें लेहेरयूं मेर जेडियूं, व्यो मछे पेरां न्हाए माग ॥ ८

अब दसों दिशाओंमें देखती हूँ तो चारों ओर मोह सागरका अथाह जल भरा हुआ है. बीच-बीचमें मेरु (पर्वत) के समान काम, क्रोधादि लहरें उठतीं हैं, दूसरा मछलीके तैरनेके लिए भी मार्ग नहीं रहता अर्थात् परमात्माकी प्राप्तिके लिए स्पष्ट मार्ग दिखाई नहीं देता.

महें घूमरियूं जर जुजवा, व्या परी परी जा पूर ।
हिक बेर न बेहेजे सुख करे, हेतां डिसे डुखे संदा मूर ॥ ९

मोह जलमें सत्, रज और तमरूपी भँवर उठ रहे हैं. साथ ही मोह और अहंकार रूपी लहरें भी उठा करती हैं, एक क्षण भी सुखसे नहीं बैठा जा

सकता. इसलिए ऐसा लगता है कि यह संसार ही दु:खकी जड़ है.

हिक घोर अंधारो व्यो अंखे न सुझे, त्रेओ हियडो न्हायम हंद ।
पिरी आया मूंके पार उतारण, एहेडी धारा मंझ ॥ १०

एक ओर इस संसारमें मोह मायारूपी अन्धकार छाया हुआ है, दूसरा आँखोंको सद्धर्मका सच्चा मार्ग भी दिखाई नहीं देता. तीसरा, हृदयका भी कोई ठिकाना नहीं है अर्थात् हृदय भी स्थिर नहीं रह पाता. प्रियतम धनी मुझे पार करनेके लिए इस मोहजलके प्रवाहके बीच आए थे.

मूं कारण सैयल मूंहजी, हिनमें बिधाऊं पांण ।
कूकडियूं करे करे, नेठ उथी बियां निरवाण ॥ ११

हे सखी ! मेरे ही कारण प्रियतम धनीने स्वयंको इस मोह सागरमें डाला अर्थात् मायावी संसारमें शरीर धारण किया. वे पुकार-पुकार कर जगानेका प्रयत्न करते हुए उठकर चले गए.

हांणे कीं करियां केडां बंजां, केहेडो मूंजो हांणे हंद ।
पिरी न पसां अंखिएं, जे मूं कारण आया माया मंझ ॥ १२

अब मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? अब मेरे लिए कहाँ स्थान है ? प्रियतम धनीको इन आँखोंसे नहीं देखती. वे तो मेरे लिए ही इस मायावी संसारमें आए थे.

बीजी विलामणी

सजण बिया मूंजा निकरी, मूं तां सुजातां न सारे रे ।
मूंके चेयाऊं घणवे पुकारे रे, न कीं न्हारयो मूं दिल विचारेरे ॥
से सजण हांणे कित न्हारियां ॥१

धनीजी मेरे हाथसे निकल गए. मैंने उनका ठीकसे परिचय भी प्राप्त नहीं किया. अत्यधिक पुकारते हुए उन्होंने मुझे विभिन्न प्रकारसे उपदेश दिए, परन्तु मैंने इस पर हृदयमें विचार ही नहीं किया. अब मैं उन धनीको कहाँ देखूँ ?

अदी रे पिरिए पांणसे जा केई, आऊं सेजे संभारियां साथ ।
पांणजे काजें हिन मायामें, कीए विधाऊं आप ॥ २

हे बहन ! हम सब सुन्दरसाथके लिए प्रियतम धनीने जो कुछ किया उसे मैं सहज भावसे याद करती हूँ अर्थात् अनायास ही उसका स्मरण हो आता है. हम सबके लिए प्रियतम धनीने किस प्रकार अपने आपको इस मायावी संसारमें डाला.

हिक अधगुण संभारजे, अदी रे त पण लभे साह ।
गुण संभारींदे सजणें, अजां को न उडे अरवाह ॥ ३

धनीजीके असीम गुणोंमें-से यदि एकाध गुणको भी याद किया जाए तो हे बहन ! उनसे मिलाप हो सकता है. किन्तु प्रियतम धनीके अनेक गुणोंका स्मरण करते हुए अब भी यह जीव शरीरसे क्यों नहीं निकलता है ?

अदी रे सजण सांणें हलया, घणुं धायडियुं पाए ।
खुई मूंहजो जिंदुओ, जे अजां अंख न उघाडे रे ॥ ४

हे बहन ! धामधनी परमधाम चले गए उन्होंने हमें कई आवाजें दीं. मेरे जीवको आग क्यों नहीं लग जाती कि वह अब भी आँखें खोलकर नहीं देखता ?

परी परी मूंके चेयाऊं, मूंके सल्लेथा से वेंण ।
अंखडिए पाणी भरयाऊं, आऊं तोहे न खणां मथा नेण ॥ ५

धनीजीने मुझे विभिन्न प्रकारसे उपदेश दिए. उन वचनोंका स्मरण होते ही मनमें शूल-सा उठता है. उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे भी समझाया फिर भी मैंने आँखें उठाकर नहीं देखा.

अंखडियुं भरे असांसे, बांह झल्ले केयाऊं गाल ।
फिट फिट रे मूंजा जिंदुआ, अजां जेहेजो उही हाल ॥ ६

सद्गुरुने रो-रोकर मेरा हाथ पकड़कर मेरे साथ मूल सम्बन्धकी बातें की. हे मेरे जीव ! तुझे धिक्कार है, अभी भी तेरा वही हाल है.

हांणेंनी आंऊं कीं करियां, मूंजानी केहा हवाल ।
केहे मोंह गिंनी रे अदियूं, आंऊं करियां आंसे गाल ॥ ७

अब मैं क्या करूँ ? अब मेरा क्या हाल होगा ? हे बहन ! क्या मुँह लेकर तुम्हारे साथ बातें करूँ ?

अदीबाईनी सुणो गालडी, मूंके रुअण रातो डींह ।
पाणीनी पिरी गिंनी बेयां, हांणें फडकां मछी जींह ॥ ८

हे बहन (सुन्दरसाथ) ! मेरी बात सुनो. अब मेरे लिए रात-दिन रोना ही बचा है. प्रेमरूपी जल तो प्रियतम धनी अपने साथ ले गए. अब तो बिना पानीकी मछलीकी भाँति मुझे तड़पना ही है.

वेण चई चई वलहो मूंहजो, बर्‌या घर मणे रे ।
हलया मूंजे डिसंदे, अदी कारयूं घणुं करे रे ॥ ९

अखण्ड तारतम ज्ञानके वचन कहते कहते मेरे प्रिय सद्‌गुरु परमधामकी ओर चले गए. हे बहन ! मेरी आँखोंके सामने धनीजी पुकारते हुए चले गए.

पिरी मूंजानी हलया, आऊं कीं चुआं जिभ्या अरे ।
सजण वेर न बिसरे, मूंके लगा तरारी जा घा अरे ॥ १०

"मेरे प्रियतम धनी चले गए" ऐसा मैं इस जिह्वा द्वारा कैसे कहूँ ? एक क्षणके लिए भी मैं सद्‌गुरु धनीको भूल नहीं पाती. क्योंकि उनकी वाणी और वचनोंने मेरे हृदय पर तलवारकी चोटकी तरह प्रहार किए हैं.

प्रकरण ७ चौपाई २०७

खुई सा परडेहडो, जित सांगाय न्हाय सिपरी ।
पिरी पुकारेनी हलया, मूंजी माया मत बेई फिरी ॥ १

उस संसाररूपी विदेशमें आग लग जाए जहाँ प्रियतम धनीकी कोई पहचान नहीं है. धनीजी स्वयं पुकार-पुकार कर चले गए किन्तु मेरी बुद्धि मायाकी ओर मुड़ गई.

मूंजो जीव बढे कोरा करे, महें मिठो पाताऊं ।
सजण संदो सूर ईं मारे, मंझा जीव करे रे धांऊं ॥ २

मेरे इस जीवको काट कर टुकड़े करूँ और उसमें नमक भर दूँ. इस प्रकार

धनीजीकी विरह वेदना मुझे सता रही है. इस बीच मेरे प्राण पुकार रहे हैं.

जेरोनी लगो जर उथई, जीव कर करे मंझ ।
वलहे संदोनी व्रह ईं मारे, मूंके डिनाऊं डूरण डंझ ॥ ३

जब आग जलती है तो उससे ज्वालाएँ निकलतीं हैं. उसी प्रकार जीव भी विरह वेदनारूपी अग्निकी ज्वालामें सिसक-सिसक कर रोता हुआ बीच बीचमें पुकार उठता है. धामधनीका विरहजन्य दु:ख इस प्रकार मुझे सता रहा है. उसी विरहने मुझे अत्यधिक दु:ख दिया है.

मूं पिरीयन से जा केई, अदी एडी न करे व्यो कोए ।
सजण आया मूं कारण, आंऊं अंख न खणियां तोए ॥ ४

हे बहन ! मैंने प्रियतम धनीके साथ जो व्यवहार किया है वैसा अन्य कोई न करे. साजन धनी इस मायावी संसारमें मेरे लिए आए तथापि मैंने आँखें उठा कर उनकी ओर देखा तक नहीं.

कीं करियां आंऊं गालडी, मथां उखणियां कीं मोंह ।
मूं हथां एहेडी थेई, खल लाहियां चोटी नोंह ॥ ५

अब मैं बात कैसे करूँगी, सिर कैसे उठाऊँगी ? मुझसे ऐसी भूल हुई है जिससे मनमें इच्छा होती है कि नखसे लेकर मस्तक तककी शरीरकी सब त्वचा उधेड़ कर फेंक दूँ.

तरारे गिंनी तन ताछियां, हडेनी करियां भोर ।
पेहेलेनी खल उबती लाहियां, जीव कढां ईं जोर ॥ ६

(इच्छा होती है कि) तलवार लेकर शरीरको छील डालूँ और हड्डियोंको तोड़ कर धूलकी तरह बना दूँ. इससे पहले तो मेरे शरीरकी त्वचा उलटी दिशामें पैरोंकी ओरसे निकालूँ. इस प्रकार प्राणोंको बल पूर्वक निकाल दूँ.

भालें तरारी कटारिएं, मूंके बढे बिधाऊं झूक ।
मूं अंग मूंही डुझण थेया, जीव करे रे मंझ कूक ॥ ७

भाला, तलवार तथा कटारी द्वारा शरीरको काट कर उसे हवन (विरह) की

अग्निमें होम दूँ, क्योंकि मेरे शरीरके ये अंग ही मेरे लिए दुःखदायी बन गए हैं. इसीके कारण जीव अन्दर बैठकर पुकार रहा है.

सजण सुजाणी करे, कडे समी सई न कीयम गाल रे ।
ए डुख आंऊं कीं झलींदी, मूंजा हांणें केहा हवाल रे ॥ ८

धनीजीको पहचान कर भी मैंने कभी भी उनके साथ सीधे ढंगसे बात नहीं की है. इस दुःखदायी वेदनाको मैं कैसे सहूँ, अब मेरी क्या दशा होगी ?

सूर तोहेजा घणुंज सुहामणां, जे तो डिंना रे डंझ ।
सूरेनी घणुं सुखाइस, पेई पचारे हांणें मंझ ॥ ९

हे धनीजी ! आपकी यह विरह वेदना अत्यन्त ही सुन्दर और सुखदायी है. वियोगका यह दुःख भी आपने ही दिया है. वास्तविक सुखसे भी यह अधिक सुखदायक सिद्ध हुआ क्योंकि इस दुःख रूपी आगमें तप कर मैं परिपक्व हो गई हूँ.

सूर तोहेजा हेडा सुखाला, त तो सुखें हुंदो केहेडो सुख ।
पण मूं न सुजातां मूंजा सिपरी, आंऊं झूरां तेहेजे डुख ॥ १०

यदि आपका विरह दुःख भी इतना आनन्ददायी और सुखदायी है तो आपके सान्निध्यमें कितना सुख, कितना आनन्द प्राप्त होता होगा ? मैंने मेरे प्रियतम धनीकी पूरी पहचान प्राप्त नहीं की, इसी दुःखके कारण मैं सूख रही हूँ.

अंग मूंहींजे अडाए तरारी, झूक करे करियां झोरो ।
घोरे बंजां आंजी डिस मथां, त को लाईम सजणें थोरो ॥ ११

मैं शरीरके अंगोंको तलवारसे काट कर टुकड़े-टुकड़े कर अग्निमें डाल दूँ और अपने सिरको आपकी ओर न्योछावर कर दूँ फिर भी धामधनीकी प्राप्तिके लिए यह बलिदान अल्प ही माना जाएगा.

हडेनी करियां अंगीठडी, मूंजो माहनी होमियां मंझ ।
नारिएर हंदे ल्हाए रखां मथां, मूंके तोहे न भंजे रे डंझ ॥ १२

हड्डियोंके टुकड़ोंकी सिगड़ी अथवा वेदी बनाऊँ और उस अग्निमें मेरे मांसको हव्यके रूपमें डालूँ. इस विरह यज्ञमें नारियलके स्थान पर मेरा मस्तक उतार कर डाल दूँ, फिर भी आपके वियोगका दुःख दूर नहीं होता.

जरो जरो मूंजे जीव संदो, मूंके व्रह पाताऊं वढ ।
इन्द्रावती चोए चेताए, मूंके माया मंझानी कढ ॥ १३

मैं मेरे प्राणोंके छोटे-छोटे टुकड़े करके विरहकी अग्निमें डालनेको तैयार हूँ. इन्द्रावती इस प्रकार सबको सावधान करके कहती है, हे धनी ! मुझे मायासे मुक्ति दिलाइए.

प्रकरण ८ चौपाई २२०

चौपाई प्रगटाणी

हवे एक लवो जो सांभरे सही, तो जीव रहे केम काया ग्रही ।
सांभलो साथ कहुं विचार, चूक्या अवसर आपण आणी वार ॥ १

इन्द्रावती कहती है, यदि सद्गुरुके वचनोंका एक अंश मात्र भी स्मरण करें तो जीव इस शरीरको जकड़ कर क्यों रहेगा ? हे सुन्दरसाथजी ! मैं अपने विचार प्रकट कर रही हूँ, उन्हें ध्यानसे सुनो. हम इस शुभ अवसरको इस बार खो चुके हैं.

ए आपण खमीने रह्या, त्यारे वली धणीजीए कीधी दया ।
बाई रतनबाईनी वासना, श्रीलीलबाईने उदर उपना ॥ २

उस विरह जन्य दु:खके अवसरको हमने सह लिया. धामधनीने हम पर दया की. रतनबाईकी वासना (श्रीविहारीजी) लीलबाईके उदरसे उत्पन्न हुई है.

श्री देवचन्द्रजी पिता परमाण, निरखी आवेस दीधो निरवाण ।
नहीं तो ए आवेस छे अपार, पण धणीतणां वचन निरधार ॥ ३

श्रीदेवचन्द्रजी यथार्थ रूपमें इनके पिता हैं. हम दोनों (इन्द्रावती और रतनबाई) को देख कर योग्यतानुसार उन्होंने हमें अपनी शक्ति अथवा आवेश प्रदान किया. धामधनीका आवेश वैसे तो असीम है परन्तु सद्गुरु धनीके वचन निश्चित रूपसे कहते हैं (कि जागनीका कार्य इन्द्रावतीके द्वारा ही सम्पन्न होगा.)

मारी वाणीए ब्रह्मांड ज गले, तो वासना केम वचनथी टले ।
वासनाओ माटे बांध्यां बंध, कई भांते अनेक सनंध ॥ ४

धनीके आवेश द्वारा प्रेरित मेरी इस तारतम वाणीसे ब्रह्माण्ड भी गल जाएगा (लोगोंके अहंकार और अज्ञानका नाश होगा) तो वासना इन वचनोंके प्रभावसे कैसे दूर जा सकेगी ? ब्रह्मात्माओंके लिए ही ये चमत्कारिक(आड़िका) लीलाएँ अनेक प्रकारसे रचाई गईं हैं.

ए वचनो मांहें छे निध घणी, आगल प्रगट थासे धणी ।
हरखे साथ जागसे एह, रहेसे नहीं कोई संदेह ॥ ५

सद्गुरु धनीके इन वचनोंमें अपूर्व सामर्थ्य है. इसलिए जैसे-जैसे वाणी प्रकट होती जाएगी वैसे-वैसे धनीजीकी पहचान भी प्रकट होती रहेगी. हर्षित और प्रसन्न चित्त होकर सुन्दरसाथमें जागृति फैलेगी और उनके हृदयमें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं रहेगा.

साथ सकलने तेडुं सही, माया मांहें मूकुं नहीं ।
वली वाणी श्रीदेवचन्द्रजीतणी, साथ सकलने ताणे घर भणी ॥ ६

सब सुन्दरसाथको परमधाम बुलाऊँ, उन्हें मायाकी मझधारमें नहीं छोडूँ. पुनः सद्गुरुधनी श्रीदेवचन्द्रजीकी यह तारतम वाणी सब साथको मूल वतन परमधामकी ओर आकर्षित करेगी.

वली तेह चरचा ने तेहज वाण, वचन कहेतां जे परमाण ।
व्रज रास ने वली श्री धाम, सुख साथने दिए निधान ॥ ७

जिस प्रकारकी चर्चा (व्रज, रास और धामकी) सद्गुरु करते थे, वही वाणी और वे ही वचन पुनः प्रकट हो गए हैं. इस प्रकार सद्गुरुने व्रज, रास और परमधामकी लीलाओंका सुख सुन्दरसाथको निश्चित रूपसे दिया हैं.

पचवीस पख वरणवनी जेह, वल्लभ वली सुख आपे तेह ।
अंतरधान समे जेम थया, वली वालो ततखिण आवया ॥ ८

सद्गुरुने प्रत्यक्षरूपमें परमधामके पच्चीस पक्षोंका जो वर्णन किया था वे

उसी उपदेशको पुनः मेरे हृदय पर बैठकर प्रदान कर रहे हैं. जिस प्रकार रासमें श्रीकृष्ण अन्तर्धान होकर पुनः प्रकट हुए उसी प्रकार यहाँ सद्गुरु भी धामगमनके बाद पुनः मेरे हृदयमें विराजमान होकर यह वाणी कह रहे हैं.

पहेले फेरे थयुं छे जेम, आंहीं पण वालेजीए कीधुं तेम ।
आ ते वालो ने तेहज दिन, विचार करी जुओ तारतम ॥ ९

प्रथम बार, रास मण्डलमें अन्तर्धान होकर श्रीकृष्णजी पुनः प्रकट हुए थे. उसी प्रकार यहाँ भी सद्गुरुधनी अन्तर्धान होकर पुनः मेरे हृदयमें प्रकट हो गए हैं. ये वही प्रियतम हैं और लीलाका समय भी वही है परन्तु उसे समझनेके लिए हमें तारतमके वचनों पर विचार कर देखना चाहिए.

आ तेह घडी ने तेहज ताल, माया दुस्ट पाडी विचाल ।
आपणने नव अलगां करे, विना आपण नव डगलुं भरे ॥१०

यह वही घड़ी और वही समय है, बीचमें दुष्ट मायाने वियोगका विक्षेप डाला था अर्थात् अन्तर्धानका परदा डाला था. धनीजी हमें कभी भी स्वयंसे अलग नहीं करते हैं और हमारे बिना एक कदम भी आगे नहीं चलते है.

अधखिण एक नथी थै वार, मायाए विछोडो पाड्यो आधार ।
मारकंड माया द्रस्टांत, धणी कने मांगी करी खांत ॥११

आधे क्षणका समय भी अभी बीता नहीं है अर्थात् थोड़ा-सा भी विलम्ब नहीं हुआ है. यह तो मायाके कारण धनीजीका वियोग-सा लग रहा है. मार्कण्डेय ऋषिका दृष्टान्त यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने अपने स्वामी भगवान नारायणके पास माया देखनेकी इच्छा प्रकट की थी.

जो जो मायानो वरतांत, ए अलगी थाय तो उपजे स्वांत ।
ततखिण कंपमान ते थयो, अने माया मांहें भलीने गयो ॥१२

हे सुन्दरसाथजी ! मार्कण्डेय ऋषिकी माया देखनेकी इच्छा की घटनाको देखो. यदि यह माया हमसे अलग होगी तो शान्ति मिलेगी. जब मार्कण्डेय ऋषि मायाके आवरणमें फँस गए तो उसी क्षण काँपने लगे और स्वयंको भूलकर मायाके बीच खो गए.

कलपांत सात ने छियासी जुग, माया आडी आवी बुध ।
नव पडी खबर लगार, रिषीस्वर दुख पाम्यो निरधार ॥ १३

सात कल्प और छियासी युग बीत गए. मायाने उनकी बुद्धि पर ऐसा आवरण डाल दिया कि उन्हें कुछ भी पता न चला. वे अपने आपको भूल गए और अपने स्वामी (नारायण) को भी भूल गए. इस प्रकार महर्षियोंमें श्रेष्ठ मार्कण्डेय अत्यन्त दुःखी हुए.

[सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि इन चार युगोंको एक चतुर्युगी कहा जाता है. ऐसे एक हजार चतुर्युगी व्यतीत होने पर ब्रह्माजीका एक दिन होता है. ब्रह्माजीका एक दिन एक कल्प कहलाता है.]

त्यारे नारायणजी कीधो प्रवेस, देखाडी माया लवलेस ।
जुए जागीतां तेहज ताल, दया करी काढ्यो ततकाल ॥ १४

तब नारायणने ऋषिके हृदयमें प्रवेश किया और थोड़ी-सी माया उन्हें दिखाई. जागृत होकर जब मार्कण्डेय मुनि देखते हैं तो वही क्षण और वही घड़ी है. इस प्रकार भगवान नारायणने उन पर दया कर तुरन्त ही उन्हें मायासे बाहर निकाला.

मायानी तां एह सनंध, निरमल नेत्रे थैए अंध ।
ते माटे कीधो प्रकास, तारतमतणो अजवास ॥ १५

हे सुन्दरसाथजी ! मायाकी यह वास्तविकता है कि निर्मल दृष्टि रखने वाले भी इस प्रकार अन्धे जैसे बन जाते हैं. इसलिए इस "प्रकाश" वाणीका वर्णन कर तुम्हारे लिए अखण्ड तारतम ज्ञानका प्रकाश दिया है.

ते लईने आव्या धणी, दया आपण उपर छे घणी ।
जाणे जोसे माया अलगां थई, तारतमने अजवाले रही ॥ १६

इस प्रकारका तारतम ज्ञान लेकर सद्गुरु धनी आए. हम सुन्दरसाथ पर उनकी सदैव दया (कृपादृष्टि) रही है, मानों सुन्दरसाथ तारतमके प्रकाशमें अलिप्त होकर यह माया देखेंगे.

भले तारतम कीधो प्रकास, सकल मनोरथ सिध्यां साथ ।
वचने सरव अजवालो कर्‌यो, अने बीजो देह माया मांहें धर्‌यो ॥ १७

सद्‌गुरु धनीने तारतमको प्रकाशित कर हमारे लिए बड़ा सुन्दर कार्य किया. उन्होंने सुन्दरसाथके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध किए. तारतमके वचन द्वारा धाम-परमधामका प्रकाश दिखाया और दूसरी बार मायामें देह धारण की.

विनती : राग धन्यासरी

हवे विनती एक करुं मारा वाला, सुणो पिउजी वात ।
परगट तमे पधारिया, आकार फेरो छो नाथ ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे प्रियतम धनी ! मेरी एक प्रार्थना सुनिए. आप प्रत्यक्ष पधारे हैं और अपना पाञ्चभौतिक आकार त्यागकर मुझमें विराजमान हुए हैं (मात्र शरीर ही आपने बदला है).

श्री देवचन्द्रजी अम कारणे, रुदे तमारे आवया ।
वचन पालवा आपणां, साथ सकल पर कीधी दया ॥ २

हे सद्‌गुरु ! हम सबके लिए आपके हृदयमें साक्षात् श्रीकृष्ण आ कर विराजमान हुए. परमधाममें मूल स्वरूपके बारेमें दिया गया वचन तथा धामगमनके समय अपने मूल घर जाकर हमारी सम्भाल लेनेका वचन पूरा करनेके लिए आपने समस्त सुन्दरसाथके ऊपर दया की है.

जनम अंध अमे जे हतां, ते तां तमे देखीतां करयां ।
वासो वछूट्यो हाथथी, जमपुरी जातां वली कर ग्रह्यां ॥ ३

हम तो जन्मान्ध ही थे. आपने तारतम ज्ञान देकर हमें दृष्टि दी. हमसे आपका पीछा छूट गया था (आपके वचनोंका अनुपालन नहीं हो रहा था). अब आपने पुनः आकर मेरा हाथ पकड़ा और यमपुरीसे मुझे बचा लिया.

हवे अम मांहें अमपणुं, जो कांई होसे लगार ।
तो निद्रा उडाडी तमे निध दीधी, हवे नहीं मूकुं निरधार ॥ ४

अब भी हममें आपके प्रति थोड़ा-सा भी अपनापन होगा तभी तो आपने

अज्ञानरूपी नींदसे जागृत कर हमें तारतम रूपी अखण्ड धन दिया है, उसे निश्चित रूपसे नहीं छोडेंगी.

आगे तो अमे नव ओलख्या, ते साले छे मन ।
चरचा ते करी करी प्रीछव्या, अने कह्यां ते विविध वचन ॥ ५

पहले तो हम आपको पहचान न पाईं. यह भूल मनमें खटकती है. विविध प्रकारसे चर्चा करके आपने समझाया और भाँति-भाँतिके दृष्टान्त और साक्षियाँ भी देकर कहा.

एहवां अनेक वचन कह्यां अमने, जेणे एक वचने ओलखुं तमने ।
पेरे पेरे करीने प्रीछव्या सही, अमे निरोध तोहे उडाड्यो नहीं ॥ ६

आपने हमें ऐसे अनेक वचन कहे. इन वचनोंमें-से एकका भी अनुकरण करने पर आपका परिचय हो जाता है. विभिन्न प्रकारसे आपने हमें समझाया, परन्तु हमने अज्ञानके आवरणको नहीं उड़ाया.

त्यारे हंसी वढी आंसु वालीने कह्युं, पण एणे समे अमे कांई नव लह्युं।
त्यारे तारतम कही घर देखाड्या सही, पण अमे तोहे ओलख्या नहीं ॥ ७

उस समय आपने हँसकर, लड़-झगड़कर, आँखोंसे आँसू बहाकर हमें समझाया किन्तु ऐसे समयमें भी हमने कुछ ग्रहण नहीं किया. तत्पश्चात् तारतम ज्ञान देकर मूल घर परमधाम दिखाया, फिर भी हम पहचान नहीं पाए.

त्यारे अम मांहेंथी अद्रस्ट थया, मूल वचन रुदयामां रह्या ।
एणे समे जो खबर न लेवाय, तो दुस्तर अमने घणुं दोहेलुं थाय ॥ ८

तब आप हमारे बीचसे अदृश्य हो गए. तारतमके मूल वचन हमारे हृदयमें ही रह गए. इस समय यदि आपने पुनः प्रकट होकर हमारी सुधि न ली होती तो यह संसार हमारे लिए अत्यन्त दुःखदायी बन जाता.

एम जाणीने आव्या अम मांहे, आवी बेठा प्रगट्या तम जांहे ।
आपण जेम पहेलां व्रजमां हतां, नित प्रते वालाजीसुं रंगे रमतां ॥ ९

ऐसा जानकर आप हमारे बीच आकर प्रकट हुए अर्थात् मेरे हृदयमें विराजमान हुए. जैसे इससे पूर्व हम सब व्रज-रासमें थे और रात-दिन

प्रियतमके साथ प्रेमानन्दमें मग्न होकर खेलते थे अभी भी वही स्थिति उत्पन्न हो गई है.

अनेक रामत कीधी आपणे, पूरण मनोरथ कीधां समे तेणे ।
अग्यारे वरसनी लीला करी, कालमाया इहां ज परहरी ॥१०

व्रजमें हमने अनेक प्रकारसे प्रेम और आनन्दमयी रामतें की. उस समय हमारी इच्छाएँ प्रियतमने पूरी कीं. ग्यारह वर्ष तक व्रजमें लीला कर उसके बाद कालमायाके ब्रह्माण्ड (व्रज) का वहीं पर परित्याग किया.

जोगमायामां आपण रास ज रम्यां, तेतां साथ सकलने घणुं घणुं गम्यां।
वचन संभारवाने अद्रस्ट थया, त्यारे अमे व्रह कीधां जुजवा ॥११

योगमायाके मण्डलमें हम सबने रासकी लीलाएँ की. ये प्रेमानन्दकी लीलाएँ सब सुन्दरसाथको बहुत अच्छी लगीं. परमधामके वचनोंका स्मरण करानेके लिए, स्वयं श्रीकृष्णजी अदृश्य हो गए. तब हमने रासमें अलग-अलग प्रकारसे विरह-वेदनाका अनुभव किया.

ते देखीने आव्या जेम, वली आहीं प्रगट थया छो तेम ।
धणी ज्यारे धणवट करे, त्यारे मन चितव्यां कारज सरे ॥१२

उस विरहको देखकर जिस प्रकार श्रीकृष्णजी पुनः प्रकट हुए थे उसी प्रकार आप सद्गुरु धनी भी अदृश्य होकर इन्द्रावतीके मन मन्दिरमें पुनः प्रकट हुए हैं. धामधनी जब रक्षा (कृपा) करते हैं तब मनकी सब इच्छाएँ और संकल्पित कार्य पूरे हो जाते हैं.

तेणे समे धाख रहीती जेह, हवणां पूरण कीधी तेह ।
हवे वालाजी कहुं ते सुणो, अने अति घणो दोष छे अमतणो ॥१३

उस समय (व्रज-रास मण्डलमें) जो इच्छाएँ शेष रह गई थीं उन्हें आपने यहाँ आकर पूर्ण किये. हे सद्गुरु धनी ! अब मैं जो कह रही हूँ उसे सुनिए, हमारी अनेक त्रुटियाँ हैं.

तमारा मनमां न आवे लेस, पण साख पूरे मारुं मनडुं वसेष ।
वारी फरी नाखुं मारी देह, तमे कीधां मोसुं अधिक सनेह ॥१४

हे धनी ! आपके मनमें हमारे दोषोंके विषयमें थोड़ा-सा भी ख्याल नहीं है.

तथापि मेरे मनमें तो दोषी होनेका भाव साक्षी रूपमें है. इसलिए मैं अपने शरीरको न्योछावर कर दूँ. आपने तो मुझे अधिक स्नेह और लाड़-प्यार दिया है.

वार वार हुं घोली घोली जाऊं, एक वचन तणां न ओसीकल थाउं ।
ओसीकल वचन ते तो कहेवाय, जो अमे बेठा मोहजल मांय ॥ १५

मैं तो वारंवार आप पर न्योछावर हो जाती हूँ. आपके एक भी वचनके लिए आभार प्रकट करनेमें मैं बाकी नहीं छोड़ूँगी. गरीबी (नम्रता) के ये वचन मैं इसलिए कह रही हूँ कि हम सब इस मायावी संसारमें बैठे हुए हैं.

अनेक वार जाऊं वारणे, तमे जे कीधुं ते आपोपणे ।
भामणां उपर लउं भामणां, पण दोष साले जे में कीधां घणां ॥ १६

मैं तो आपके लिए अनेक बार समर्पित होती हूँ. आपने जो अपनत्व दिखाया है उसके लिए मैं यदि बलिहारी हो जाऊँ तो भी कम है परन्तु मेरे मनमें मेरे द्वारा हुए कई दोष खटक रहे हैं.

हवे ए दोष केम छूटीस हो नाथ, साचुं कहुं मारा धामना साथ ।
तमे साथ मांहें देओ छो उपमा, पण हुं केम छुटीस ए वज्रलेपणां ॥ १७

हे सद्गुरु ! मैं इन भूलों (दोषों) से कैसे छुटूँगी ? हे मेरे धामके सुन्दरसाथ ! मैं यह सत्य कह रही हूँ. हे धनी ! सब सुन्दरसाथके बीच (इन्द्रावतीके हाथोंसे जागनी होगी इस प्रकार) आप मुझे शोभा (उपमा) देते हैं किन्तु मैं वज्रलेपके समान इन दोषोंसे कैसे मुक्त हो जाऊँगी ?

तमे गुण कीधां मोसुं घणां घणां, पण अलेखे अवगुण अमतणां।
तमे गुण करो छो ते ओलखी करी, पण मोहजल लहेर मुने फरी वली ॥ १८

आपने मुझ पर कई उपकार किए हैं, परन्तु मेरे अवगुण तो असीम हैं. मूल सम्बन्धको पहचान कर आप मुझ पर कृपा करते हैं, किन्तु मैं तो मोहजलकी लहरोंसे घिर गई हूँ.

हवे हुं बलिहारी जाऊं मारा धणी, मारा मनमां एक हाम छे घणी ।
अछतां मंडल मांहें लाभ छे घणो, अने आझो छे मारा धणीजी तम तणो ॥ १९

हे मेरे धामधनी ! अब मैं आप पर न्योछावर होती हूँ, परन्तु मेरे मनमें एक

उत्कट इच्छा है. इस अछूत मण्डल (अस्पृश्य जैसा मायावी संसार) में अनेक लाभ हैं. हे मेरे धनी ! अब तो मुझे मात्र आपका ही भरोसा है.

जे मनोरथ कीधां श्री धाम मांहें, ते द्रढ सघला आहीं थाए ।
जे पेर सघली कही छे तमे, ते द्रढ कीधी सरवे जोइए अमे ॥ २०

परमधाममें जो मनोरथ (माया देखनेकी इच्छा) किए थे वे सब यहाँ पूर्ण होंगे. जिस प्रकार आपने सम्पूर्ण उपदेशात्मक बातें बताईं हैं, उन सबको हमें दृढ़ता पूर्वक ग्रहण करना चाहिए.

श्री धामनां सुख जे दीसे आहें, ते जीव जाणे मन ज मांहें ।
आ देहनी जीभ्या केणी पेरे कहे, वचन कहुं ते ओरुं रहे ॥ २१

परमधामके जो सुख यहाँ दिखाई देते हैं उन्हें यह जीव मनमें ही जानता है. इस देहकी रसना (वाणी) उनका कैसे वर्णन करेगी ? क्योंकि जिन शब्दों द्वारा आपको सम्बोधित करके कहती हूँ वे सब तो अपूर्ण होनेके कारण यहीं रह जाते हैं.

ए सोभा सबदातीत छे घणी, अने सबद मांहें जीभ्या आपणी ।
ए सुख विलसी निरदोष थाउं, तम दयाए फेरो सुफल करी जाऊं ॥ २२

आपकी शोभा शब्दातीत है और हमारी जिह्वा शब्दमें बँधी हुई है. इसलिए धामके अखण्ड सुखोंका वर्णन करके, उन्हींमें विलसित होकर मैं निर्दोष सिद्ध हो जाऊँ एवं आपकी दयासे इस जन्मको सफल बना लूँ.

एटले मनोरथ पूरण थया, जे थाय ते वालाजीनी दया ।
दयातणुं तो कहुं छुं घणुं, जो करी न सकी बस आपोपणुं ॥ २३

इतनी इच्छाएँ तो पूरी हो गईं हैं, जो पूरी हो रहीं हैं वह भी सद्गुरुकी दयासे ही हो रहीं हैं. (और जो पूरी होंगी वे भी उनकी दयाके कारण ही होंगी.) दयाकी बात तो बहुत करती हूँ अर्थात् दयाकी याचना करती हूँ क्योंकि मैं अपने आपको वशमें नहीं कर सकती.

हवे मनसा वाचा करमणा करी, हुं नहीं मूकुं निध परहरी ।
नैणे निरखुं निरमल चित करी, हुं रुदे राखीस वालो प्रेम धरी ॥ २४

अब तो मैं मन, वचन और कर्मसे सद्गुरुरूपी धनको कभी भी किसी प्रकार अपनेसे अलग होने नहीं दूँगी. अब तो अन्तःचक्षुओंकी निर्मल दृष्टिसे आपको देखती रहूँगी और मेरे हृदयमें प्रियतमको प्रेम पूर्वक रखूँगी.

करी प्रणाम लागुं चरणे, सेवा करीस हुं वालपण घणे ।
दंडवत करूं जीव ने मन, दऊं प्रदखिणां रात ने दिन ॥ २५

हे सद्गुरुधनी ! मैं आपके श्रीचरणोंमें प्रणाम करती हूँ. अति लाड़-प्यारसे आपकी सेवा करूँगी. मन और आत्मासे आपको दण्डवत् करके रात-दिन आपकी परिक्रमा करूँगी.

क्रपा करो छो सहु साथज तणी, वली कृपा साथने करजो घणी घणी।
इन्द्रावती चरण लागे आधार, धणी लिए तेम लीधी सार ॥ २६

सब सुन्दरसाथ पर आपकी दया दृष्टि तो है ही तथापि उन पर और विशेष कृपा कीजिए. इन्द्रावती धामधनीके चरणोंमें प्रणाम करती है. धनीको जैसी सुध लेनी चाहिए थी वैसी ही सुधि आपने ली है.

हवे आपणमां बेठा आधार, रामत देखाडी उघाडी बार ।
हवे माया कोटान कोट करे प्रकार, पण आपणने नव मूके निरधार ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! धामधनी सद्गुरु अब हमारे अन्दर विराजमान हुए हैं. इस संसारका खेल दिखाकर उन्होंने परमधामके द्वार खोल दिए हैं. अब माया हमें भुलावेमें डालनेके लिए करोड़ों प्रयत्न करे फिर भी धामधनी हमें नहीं छोड़ेंगे.

तेडी आपणने जाय घरे, वचन कह्यां ते केम पाछां फरे ।
मननां मनोरथ पूरण करे, नेहेचे धणी तेडी जाय घरे ॥ २

सद्गुरु हम सबको बुलाकर परमधाम ले जाएँगे. सुन्दरसाथको परमधाम ले

जानेका वचन उन्होंने दिया है उससे वे पीछे क्यों हटेंगे ? वे सबकी मनोकामनाएँ पूरी करेंगे. निश्चित रूपसे धनी सबको परमधाम बुलाकर ले जाएँगे.

जो हवे आपण ओलखिए आ वार, तो जीव घणुं पामे करार ।
साथ उपर दया अति करी, वली जोगवाई आवी छे फरी ॥ ३

अब यदि हम लोग धामधनीकी पहचान कर लेंगे तो हमारी आत्माको शान्ति प्राप्त होगी. धनीजीने समस्त सुन्दरसाथके ऊपर अत्यन्त दया की है और खोई हुई वस्तु-अखण्ड धन पुनः प्राप्त हुआ है अर्थात् धनीजी पुनः आकर हमारे हृदयमें बैठ गए हैं.

वली अवसर आव्यो छे घणो, अने वखत उघड्यो साथज तणो ।
आपणे नव मूकवा हीडुं संसार, धणी आपणो विछोडो न सहे लगार ॥ ४

पुनः बड़ा शुभ अवसर प्राप्त हुआ है और सुन्दरसाथको जागृत होनेका समय आ पहुँचा है. हम इस मायावी संसारको छोड़ना नहीं चाहते ठीक उसी प्रकार धामधनी सतगुरु भी हमारा थोड़ा वियोग भी सहन नहीं कर सकते.

तारतम पखे विछोडो नहीं, सुपनमां माया जोइए सही ।
सुपन विछोडो पण धणी नव सहे, तारतम वचन पाधरां कहे ॥ ५

यदि तारतमकी दृष्टिसे विचार करें तो धनीका वियोग हुआ ही नहीं हैं. स्वप्नके दृश्योंकी भाँति हम धाममें बैठकर इस मायाको देख रहे हैं. किन्तु स्वप्न(व्रज-रास) के वियोगको भी धनीजी सहन नहीं कर पाते. इस तथ्यको तारतमके वचन स्पष्ट करते हैं.

लई तारतम अजवालुं सार, वली श्रीजी आव्या आ वार ।
जाणे रखे केहने उतकंठा रहे, साथ उपर एटलो नव सहे ॥ ६

अखण्ड तारतमका प्रकाश लेकर सद्गुरु धनी (श्रीजी) पुनः यहाँ पर आए. वे चाहते हैं कि सुन्दरसाथकी कोई भी इच्छा शेष न रह जाए. धनीजी सुन्दरसाथके लिए इतना भी सहन नहीं कर सकते हैं.

श्री धणीतणां गुण केटला कहुं, हुं अबूझ कांई घणुं नव लहुं ।
पण पाधरा गुण दीसे अपार, धणीए जे कीधां आ वार ॥ ७

धामधनी सद्गुरुके गुणोंका मैं कितना वर्णन करूँ ? अनजान होनेके कारण मैं अधिक ग्रहण न कर सकी. इस बार धनीजीने जो उपकार किये हैं, उनके असीम गुण स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं.

आपणी मीटे दीठां सही, पण आणी जीभ्याए कहेवाय नहीं ।
भोम कणका जो गणाय, सायर लहेर उठे जल मांहे ॥ ८

सद्गुरुके गुणोंको हमने अपनी आँखोंसे देखा है. परन्तु झूठी जिह्वा द्वारा उनका वर्णन नहीं हो सकता है. कदाचित् धरतीके कण तथा समुद्रमें उठती हुई अनेक लहरोंको गिन सकें, परन्तु सद्गुरुके गुणोंकी गिनती (वर्णन) नहीं हो सकती.

मेघ पणगा जे वली पडे, वनसपति पत्र कोई नव गणे ।
जदिप तेहनो निरमाण थाय, पण धणीतणां गुण कोणे न गणाय ॥ ९

मेघ गर्जनाके बाद वर्षाकी जो बूँदे आकाशसे गिरती हैं उनकी तथा जंगलके वृक्षोंके पत्तोंकी गिनती कोई भी नहीं कर सकता है. यद्यपि किसी भी प्रकारसे इनकी गिनती हो भी जाए किन्तु धामधनीके गुण किसी भी प्रकारसे गिने नहीं जा सकते हैं.

न गणाय आ फेरा तणां, अने गुण आपणसुं कीधां अति घणां ।
पहेला फेरानी केही कहुं वात, गुण जे कीधां धणी प्राणनाथ ॥ १०

सद्गुरुके इस जीवनके गुण गिने नहीं जा सकते. उन्होंने हम पर कई उपकार किए हैं. प्रथम अवतरण (व्रज तथा रास मण्डल) की तो बात ही क्या कहूँ. उस समय प्राणोंके नाथ श्रीकृष्ण परमात्माने हमारे पर अनेक उपकार किए हैं.

ते आणी जोगवाइए केम गणुं आधार, पण कांईक तोहे गणवा निरधार ।
इन्द्रावती कहे हुं गुण गणुं, कांईक दाखुं आपोपणुं ॥ ११

इन सांसारिक साधनोंके द्वारा धनीजीके गुण किस प्रकार गिनाऊँ. फिर भी

उन्हें गिननेके लिए कुछ तो करना ही पड़ेगा. इन्द्रावती कहती है, धनीजीके गुणोंकी गिनती भी करूँ और उनके प्रति थोड़ा अपनापन भी दिखाऊँ.

प्रकरण ११ चौपाई २७४

श्रीधणीजीना गुण लख्या छे

हवे गुण ने लखुंजी तमतणां, जे तमे कीधां अमसुं अति घणां ।
जोजन पचास कोट प्रथवी कहेवाए, आडी ऊभी सरवे ते मांहे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सद्गुरु ! अब मैं आपके गुणोंका उल्लेख कर रही हूँ. जो आपने हम पर कई उपकार किए हैं. इस धरती का क्षेत्रफल पचास करोड़ योजन कहा गया है. इसमें लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई समाविष्ट है.

चौद लोक वैकुंठ सुंन जेह, भोम समी हुं करुं वली तेह ।
पाधरा पाथरी करुं एक ठामे, वांकचूक टालुं ए मांहे ॥ २

चौदह लोक, वैकुण्ठ और शून्य इन सबको मैं समतल बनाकर, इन सबकी विषमता (टेढ़ापन) निकाल दूँ और एक समान बिछा दूँ.

कागल परठ्युं में एहनुं नाम, गुण लखवा मारा धणी श्री धाम ।
चौद भवननी लऊं वनराय, तेहनी लेखणो मारे हाथ घडाय ॥ ३

इस समतल भूमिका नाम मैं कागज रखूँ. इस काजग पर मुझे मेरे धामधनीके गुण लिखने हैं. चौदह लोकोंकी वनस्पति लेकर मैं अपने हाथोंसे घड़कर उनकी लेखनी (कलम) बना लूँ.

घडतां कोसर करुं अति घणी, जाणुं रखे मोटी छोही पडे तेहतणी ।
झीणीयुं टांको मारे हाथे थाय, अणियुं मांहें नहीं मूकुं मणाय ॥ ४

कलम बनाते समय मैं बहुत लोभ करूँ क्योंकि उस समय मोटे छिलके न छिले जाएँ, इसका मैं ध्यान रखूँ. मेरे हाथों कलमकी नोंक बहुत ही सूक्ष्म हो, इसमें मैं कोई कमी रहने नहीं दूँगी.

तोहे कोसर करुं घडतां अति घणी, जाणुं जेम ने झीणी थाय अति अणी ।
हवे धरती उपलां लऊं सरव जल, बीजां पण भरयां सात पातालनां तल ॥ ५

तथापि इस कलमको बनाते हुए मैं बहुत ही लोभ करूँगी. क्योंकि मैं जानती

हूँ कि कलमकी नोंक अत्यन्त तीक्ष्ण होगी. अब पृथ्वी परका सब पानी मैं एकत्रित कर लूँ. इतना ही नहीं सातों पातालके पानीको भी एकत्रित कर लूँ.

बीजा रे छ लोक तेहनां लऊं जल, नहीं मूकुं किहांए टीपुं अव्वल ।
सर्व जल मेलवीने लऊं मारे हाथ, गुण लखवा मारा श्रीप्राणनाथ ॥ ६

ऊपरके स्वर्गादि अन्य छः लोकोंके पानीको भी ले लूँ. एक बूँद भी कहीं पर रहने न दूँ. इसके बाद सभी लोकोंके जलको एकत्रित कर मेरे हाथोंमें ले लूँ. क्योंकि मुझे मेरे प्राणनाथ (सद्गुरु) के गुण लिखने हैं.

स्याही करुं अति जुगते करी, रखे कांई मांहेंथी जाय परी ।
ए लेखणो कागल आ स्याही करी, मांहें झीणां आंक लखुं चित धरी ॥ ७

सम्पूर्ण पानीकी युक्ति पूर्वक स्याही बनाऊँ. इससे एक बूँद भी गिर न जाए इसका ठीकसे ध्यान रखूँ. इस प्रकार कलम, कागज, स्याही तैयार हो जानेके पश्चात् उस कागज पर ध्यान पूर्वक सूक्ष्म (बारीक) अङ्क लिखूँ.

गुण जे कीधां मोसुं मारा वालैया, ते आणी जिभ्याए नव जाय
क ह्या ा ।
देह सारुं हुं लखुं परमाण, एक अर्ध अणु मात्रनुं काढुं निरवाण ॥ ८

मुझ पर मेरे प्रियतमने जो उपकार किए हैं वे इस जिह्वासे वर्णित नहीं हो सकते हैं. मेरी बुद्धिके अनुसार मैं सद्गुरुके गुण लिख रही हूँ. (गुणके) एकाध कण मात्रका भी मैं निश्चित रूपसे निरूपण कर लूँ.

हवे लखुं छुं तमे जो जो साथ, हुं गजा सारुं करुं प्रकास ।
हुं घणुं चीफुं आंक लखतां एह, रखे जाणुं कांई मींडां मोटां थाय तेह ॥ ९

अब मैं लिख रही हूँ. हे सुन्दरसाथजी ! तुम देखो. मैं अपनी बुद्धिके अनुसार गुणों पर प्रकाश डाल रही हूँ. साथ ही अङ्क लिखनेमें संकोच (डर) का अनुभव होता है कि कहीं कोई शून्य बड़ा न हो जाए.

हवे प्रथम एकडो काढुं एक चित, अडतुं मींडुं धरुं भिलत ।
मारे हाथे अक्षर पहोला नव थाय, अने बीहुं जाणुं रखे घेलाय ॥ १०

अब सर्व प्रथम एकाग्र चित्तसे एकका अङ्क लिख रही हूँ, उसके पास

सटाकर एक शून्य रखती हूँ. मुझसे अक्षर बड़े न लिखे जाएँ और एक दूसरेसे भी न जुड़ें इसका ध्यान रखती हूँ.

एम करतां ए दस ज थया, मींडुं मूकीने एक सो गणया ।
वली एक मूकुं नव करुं वार, जेम गुण गणुं मारा धणीनां हजार ॥ ११

इस प्रकार एकके पास शून्य रखने पर दस हुए. उसके आगे दूसरा शून्य रखने पर सौ हुए. तीसरा शून्य रखनेमें विलम्ब नहीं करूँगी जिससे धनीजीके गुण एक हजार हो जाएँगे.

हवे मींडुं मूकुं लगतुं एक, जेम गुण गणुं दस हजार वसेक ।
वली एक मूकतां लाख गणाय, हवे मूकुं जेम दस लाख थाय ॥ १२

अब इसके पास एक और शून्य रखने पर गुणोंकी संख्या बढ़कर दस हजार हो जाएगी. एक शून्य और मिलाने पर एक लाखकी गिनती होगी. उसके साथ और एक शून्य रखने पर वह संख्या दस लाख हो जाएगी.

कोट थाय मींडुं मूके सातमुं, दस कोट करुं वली मूकी आठमुं ।
नव मूकीने करुं अबज, गुण गणती जाऊं करती कवज ॥ १३

सात शून्य रखने पर संख्या एक करोड़ हो जाती है और आठवाँ शून्य रखने पर दस करोड़ हो जाता है. नवम शून्य जोड़ने पर एक अरबकी गिनती पर पहुँचते हैं. इस प्रकार गुणोंकी गिनती करते करते उनको आत्मसात् करती जाऊँ.

दस मूकी ने करुं अबज दस, ए गुण गणतां मुने आवे घणो रस ।
अग्यार मूकीने करुं खरव ज एक, लखतां गुण धणी ग्रहुं वसेक ॥ १४

दस शून्य रखकर गिनती दस अरब पहुँचा दूँ. सद्गुरुके गुणोंका इस प्रकार गिनती करनेसे मुझे अति आनन्द प्राप्त होता है. ग्यारह शून्य लगाने पर संख्या एक खरब तक पहुँच जाती है. इस प्रकार धनीके गुण लिखते-लिखते मैं विशेष रूपसे उन्हें ग्रहण भी करती जाती हूँ.

बार करीने दस करूं खरव, आगे कोणे नव गण्या गुण एव ।
तारतम जोतां बीजो कोण गणसे, अम टाली कोई थयो न थासे ॥ १५

बारह शून्य लगाकर दस खरबका हिसाब करती हूँ. इससे पहले इस प्रकार गुणोंकी गिनती किसीने नहीं की है. तारतमको विचार पूर्वक देखने पर पता चलता है कि इस प्रकार दूसरा कौन गुणोंकी गिनती करेगा ? हमारे अतिरिक्त कोई ऐसा न हुआ है और न होगा.

हवे गुण गणुं मारा धणीतणां, पण कागल स्याही लेखणो मांहें मणां।
मणां तो कहुं छुं जो बेठी माया मांहे, नहीं तो मणां मुने नथी कोई क्यांहे॥ १६

अब मैं इससे आगे धनीजीके गुणोंका लेखा-जोखा करती हूँ किन्तु वे इतने अधिक हैं कि कागज, स्याही और लेखनी कम पड़ रहे हैं. कमीकी बात इसलिए कह रही हूँ कि मैं स्वयं मायाके खेलमें बैठी हुई हूँ, अन्यथा किसी भी प्रकारकी कमी नहीं होती.

साथ माटे हुं करुं रे पुकार, जोऊं वासना चौद लोक मंझार ।
मेली वासनाओने रास रमाडुं, धणीना गुण हुं गणीने देखाडुं ॥ १७

मैं सुन्दरसाथके लिए पुकार कर रही हूँ, चौदह लोकमें ब्रह्मात्माओंको देख रही हूँ. इच्छा होती है कि उन ब्रह्मात्माओंको एकत्रित करके जागनी रास करूँ और धनीजीके गुणोंकी गिनती करके दिखाऊँ.

नील करुं मींडां मूकीने तेर, ए गुण गणतां मुने टली गयो फेर ।
हवे चौद करुं दस नील ने काज, गुण गणवा मारा धणी श्री राज ॥ १८

तेरह शून्य लगाकर मैं एक नील तक संख्या गिनूँ. धामधनीके गुणोंकी गिनती करते हुए मुझे आवागमनके चक्रसे मुक्ति मिल गई. अब चौदह शून्य लगाकर दस नीलका हिसाब करती हूँ. इस प्रकार मुझे सद्गुरु धनीके गुण गिनने हैं.

पनर करीने गणुं गुण पार, दस पार करुं सोल गुणने आधार ।
पदम करवाने करुं सतर, हुं अरधांग मारो धणी ए घर ॥ १९

एकके पास पन्द्रह शून्य लगाकर पार गुणकी गिनती करूँ और सोलह शून्य

लगाकर दस पारका हिसाब लगाऊँ. एक पद्मकी गिनती करनेके लिए मैं सत्रह शून्य रखूँगी. मैं अर्धांगिनी हूँ और वे मेरे घरके स्वामी हैं. (इसलिए मैं उनके गुण गिन रही हूँ).

अढार करीने दस करुं पदम, मुने वाला लागे धणीनां गुण एम ।
खोइण करुं करीने नव दस, गुणने बंधाई वालो आव्यो मारे वस ॥ २०

अठारह शून्य रखकर गुणोंकी संख्या दस पद्म तक पहुँचा देती हूँ. मुझे धनीके ये गुण प्रिय लगते हैं. उन्नीस शून्य रखकर खोइणकी गिनती करती हूँ. गिनतीके इन गुणोंमें बँधकर प्रियतम मेरे वशमें आ गए.

वीस करीने दस करुं खोइण, एकवीस करुं जेम थाय गुण जोण ।
दस जोण करुं मूकीने दस वार, गुण गणतां घणुं जीती आधार ॥ २१

एकके पास बीस शून्य रखने पर संख्या दस खोइण हो गई. अब इक्कीस शून्य रखने पर वह गिनती एक जोण तक पहुँचेगी. बाइस शून्य रखकर दसजोण पूरा करती हूँ. इस प्रकार गुणोंकी गिनती करते हुए मैंने धनीजीको जीतकर अपना बना लिया.

अंक करुं गुण लखीने त्रेवीस, दस अंक करुं मींडां मूकीने चोवीस ।
हवे पचवीस कीधे गुण एक संख थाय, रदे रे मोटो गुण घणां समाय ॥ २२

अब एकके आगे तेईस शून्य रखने पर गुणोंकी गिनती एक अंककी हो जाती है और चौबीस शून्य रखने पर संख्या दस अंककी बन जाती है. पच्चीस शून्यके पूरा होने पर संख्या एक शंखकी बन जाती है. मेरा हृदय विशाल होनेके कारण ये सब गुण उसमें समाहित हो जाते हैं.

हवे छबीस करीने करुं दस संख, वली लखतां लखतां चीफुं निसंख ।
सुरिता करुं मींडां मूकीने सतावीस, ए गुण धणी जोई हुं पगलां भरीस ॥ २३

अब छब्बीस शून्य लगाने पर संख्या दस शंखकी बन जाती है. इससे अधिक गुण लिखते हुए संकोचका अनुभव होता है. एकके पास सताईस शून्य रखने पर संख्या एक सूरिता कहलाती है. धामधनीके गुणोंको देखकर मैं आगे भी ऐसे ही गुण लिखनेका कार्य करूँगी अर्थात् गुण लिखती जाऊँगी.

अठावीसे दस सुरिता थाय, वीस नव करुं जेम पती गुण ग्रहाय ।
दसपती गुण हुं त्रीस ज करुं, ए गुण गणी मारा चितमां धरुं ॥ २४

अठ्ठाइस शून्य रखने पर दस सूरिताकी संख्या बन जाती है. पुनः एक शून्य बढ़ाकर रखने पर उसकी गिनती पति तक पहुँचेगी. तीस शून्यसे दसपति (संख्या)का हिसाब होता है. इन गुणोंकी गिनती कर मैं उन्हें अपने चित्तमें ग्रहण करूँगी.

एकत्रीसे एम अंत कहेवाय, वली लेखणो कागल स्याहीनी चिंता थाय।
जाणुं रखे खपी जाए अधविच, त्यारे केम गुण गणीने ग्रहीस मारे चित ॥ २५

एकके पास एकतीस शून्य रखने पर अन्त नामक संख्या बनती है. अब आगे लिखने पर पुनः लेखनी और कागजकी कमीकी चिन्ता होने लगती है. कहीं ऐसा न हो कि वर्णन करते हुए बीचमें ही ये कम पड़ जाएँ, तब मैं इन गुणोंको गिन कर अपने चित्तमें कैसे रखूँगी ?

बत्रीस करीने दस अंत ज करुं, ए गुण एकांत मारा चितमां धरुं ।
मध गुण करुं त्रेतीस ज करी, रखे कागल स्याही लेखणो जाय वरी ॥ २६

बत्तीस शून्य रखने पर दस अन्तका हिसाब होता है. मैं धनीजीके गुणोंको मेरे अन्तःकरणमें समाहित कर लूँ. तैतीस शून्य रखने पर मध्यकी संख्या होती है. मुझे चिन्ता है कि कहीं लेखनी, कागज और स्याही समाप्त न हो जाएँ.

हवे दस मध करुं करीने चोत्रीस, गुण मारा वालानां चितमां ग्रहीस ।
हवे एकडा उपर पांत्रीस मींडां धरुं, परारध करीने लेखो मारो करुं ॥ २७

अब एकके पास चौंतीस शून्य रखने पर दस मध्यकी संख्या बनती है. प्रियतमके इन गुणोंको मैं हृदयस्थ करूँ. अब एकके पास पैंतीस शून्य रखने पर मेरी गिनती अनुसार परार्ध नामक संख्या बन गई.

एणे लेखे कांई गणती न थाय, मारा धणी तणां गुण एम न गणाय ।
हवे लेखो करुं साथ जो जो विचार, लखवा गुण मारा प्राणना आधार ॥ २८

इन सांसारिक संख्याओं द्वारा मेरे सद्गुरुके गुणोंकी गिनती नहीं हो सकती है. मेरे धामधनीके गुण इस प्रकार गिनतीमें नहीं आ सकते. हे सुन्दरसाथजी ! इसके बाद मुझे अलौकिक हिसाब लगाकर प्राणाधारके गुण लिखने हैं.

एक मींडे थाय परारध गणां, एणी सनंधे वाधे बीजे एह तणां ।
एम करतां ए जेटला थाय, वली एहना एटला गुण गणाय ॥ २९

उपर्युक्त परार्धकी संख्याके पास एक शून्य मिलाने पर संख्या बढ़ कर और परार्ध गुणा बन जाती है. इस प्रकार सद्गुरुके गुण बढ़ते ही जाते हैं. ऐसा करने पर जो संख्या होगी फिर उसे उतने ही गुणा गुण गिनतीमें ले लेती हूँ.

ए गुण मारा जीवमां ग्रहाय, पण बीहती लखुं जाणुं रखे कागले न समाय ।
लेखणोनी मुने चिंता थाय, जाणुं घडतां घडतां रखे उतरी जाय ॥ ३०

धनीजीके उपर्युक्त गुण मैं अपने हृदयमें ग्रहण करती हूँ, परन्तु मैं लिखते-लिखते डरती हूँ कि कहीं वे गुण कागजमें समाविष्ट न हो पाएँ. इसके साथ-साथ लेखनीकी भी चिन्ता होती है कि ये सब लिखते-लिखते घिस जाएगी और उसे छीलने पर कहीं अधिक न छिल जाए.

हुं तां स्याहीनी पण करुं छुं जोवाण, जाणुं रखे लखतां न पोहोंचे निरवाण ।
एम मूकतां मूकतां मींडां रह्यां भराय, कागल स्याही लेखणो खपी जाय ॥ ३१

मैं तो स्याहीके बारेमें भी चिन्ता करती हूँ, क्योंकि हिसाब लिखते लिखते कहीं स्याहीकी कमी न पड़ जाए. इस प्रकार एकके पास शून्य रखते-रखते कागज भर जाएगा एवं लेखनी और स्याही भी पूरी हो जाएगी.

ए कागल एम रह्यो भराई, कोर मेर सघली रह्यो समाई ।
कीडी पग मूकवानो नथी क्यांहे ठाम, किहां ने मूकुं मींडुं जेहनुं नाम ॥ ३२

इस प्रकार धनीजीके गुण गानसे यह कागज भर गया. उसके कोने कोने सभी जगह भर गए. चींटीके पैर रखने भरकी जगह भी नहीं बची. जिसका नाम ही शून्य है अब उसे मैं कहाँ पर रखूँ ?

हवे ए गुण गण मारा जीव तुं रही, जेम जाणजे तेम राखजे ग्रही ।
ए गुण तां में घणुंए गणाय, पण मारा धणीतणां गुण एमां न समाय ॥ ३३

हे मेरे जीव ! अब तू इन गुणोंकी ठीकसे गिनती कर और जैसे ही तुझे इसका महत्त्व समझमें आ जाए, उसे यथावत् ग्रहण कर. धनीके गुण तो मैंने बहुत सारे गिने, किन्तु वे इस कागजमें पूरी तरह वर्णित न हो पाएँगे.

हवे वली करुं बीजो लखवानो ठाम, लखवा गुण मारा धणी श्री धाम।
जेटला गुण ए मांहें थया, एटली दाण एवा कागल भरया ॥ ३४

अब लिखनेके लिए दूसरा कोई स्थान तैयार कर लूँ क्योंकि मुझे तो मेरे धामधनीके गुण लिखने हैं. लिखते-लिखते जितने गुणोंकी गितनी यहाँ हुई उतनी ही बार उतने ही कागज लिख कर पूरे हो गए.

एवा कागल एवी स्याही लेखण, मांहें झीणां आंक लख्या अति घण ।
ए लेखणोनी में जोई अणी, पण हजी कांई करी न सकी झीणी अतंत घणी ॥ ३५

उसी प्रकारके कागज, वैसी ही स्याही और उसी प्रकारकी लेखनी बनाई और बारीक अङ्क लिखे. इन कलमोंकी नोंक भी मैंने देखी. उसको अधिक बारीक बनाया नहीं जा सकता था. इसलिए उससे अधिक लिख नहीं सकी.

जेटला गुण ए गणतां थाय, ए गुण मारा जीवमां समाय ।
लेखणो करवाने बुध करे छे बल, घडुं ने समारूं सहु काढीने बल ॥ ३६

मैंने धनीजीके जितने गुणोंकी गिनती की वे सब मुझमें समाहित हो गए. मेरी बुद्धि और अधिक लेखनी बनानेके लिए मुझ पर दवाब डाल रही है. इसलिए पूरी शक्ति लगाकर सावधान होकर लेखनी बनाया करती हूँ.

कथुवाना पगनो गुण जेटलो भाग, लेखणोनी टांको में चीरियुं जोई लाग ।
एणी टांके आंक लख्या एम करी, एटली दाण एवा कागल फरी फरी ॥ ३७

ऊपर जितने परार्ध गुण गिनाए उतने ही परार्ध भाग कथुवा (एक सूक्ष्म जीव) के एक पाँवके करें और जो शेष रहे उसको चीरकर कलमकी नोंक बनाएँ और उस अति तीक्ष्ण नोंकसे इस प्रकार बारीक अङ्क बनाकर उतने ही कागज पर उतनी ही बार फिरसे धनीजीके गुण लिखें.

एम लखी लखीने में गणिया गुण, पण मारा धणीतणां गुण छे अतिघण ।
ए गुण मलीने जेटला थया, ते तां में मारा जीवमां ग्रह्या ॥ ३८

इस प्रकार धनीजीके गुण लिख-लिख कर गिनती की, परन्तु वे तो असीम और अनन्त हैं. इन सब गुणोंको मिलाकर जो संख्या हुई वे सब गुण मैंने अपनी आत्मामें ग्रहण किए.

ए लखतां मुने केटली थई छे वार, हवे एहनो निरमाण काढवो निरधार।
गुण जे तमो भाग एक खिणनो आधार, एटली थई छे मुने लखतां वार ॥ ३९

अब इस प्रकार धनीजीके गुणोंको लिखनेमें मुझे कितना समय लगा उसका निरूपण करना है. धनीजीके जितने परार्ध गुण हुए उतने ही परार्ध भाग एक क्षणके करें और उनमेंसे जो क्षण बचे, उस क्षणमें ही मैंने ये गुण लिखे हैं.

एम लखी लखीने में लख्या अपार, हवे वली जोऊं केटली थई छे मुने वार।
गुण जेटला महाप्रले थाय, एम लख्या में तेणे ताय ॥ ४०

इस प्रकार मैंने अपरिमित गुण लिख डाले. अब मैं सांसारिक गिनती करके देखूँ कि कितना समय लगा होगा. गुणके जितने भाग हैं उतने ही महा प्रलय हो जाएँ अर्थात् महा प्रलयके होनेमें दुनियावी दृष्टिसे जितना समय लगता है उतने समयमें भी अन्य कोई इस प्रकार गुणोंकी गिनती नहीं कर सकता, किन्तु मैंने तो उसी क्षण ये सब गुण लिख लिए.

वचमां स्वांस न खाधो एक, वेल न कीधी कांई लखतां वसेक ।
एहनो में सरवालो किध, श्री सुंदरबाईए सिखामण दिध ॥ ४१

इन गुणोंको लिखते समय मैंने बीचमें एक साँस भी नहीं ली. इसको लिखनेमें थोड़ी-सी भी देरी और असावधानी नहीं की. मेरे सद्गुरु स्वरूपा श्री सुन्दरबाईके बोधके कारण मैंने इन सब गुणोंकी गिनती की है.

हवे जो जो साथ लेखुं एम लख्युं जोर, तोहे मारा जीवनी हामनी न चंपाणी कोर।
जीव छे मारो मोटो पात्र, हजी जीव जाणे ए लख्युं तुछ मात्र ॥ ४२

हे सुन्दरसाथजी ! अब देखो, मैंने गुणोंका हिसाब किस प्रकार किया है ? इसको करते समय मेरी आत्माका प्रेम रूपी किनारा दबा नहीं है. (अर्थात् मेरे जीवकी तनिक मात्र इच्छा भी पूरी नहीं हुई.) मेरा जीव तो अखण्ड परमधामका है. इसलिए वह जानता है कि मैंने अभी भी थोड़े ही गुण लिखे हैं.

गुण तो पाछल हजी भरया भण्डार, गुण जेटला भंडार में गणियां आधार ।
गणतां गणतां पाछल दीसे अपार, तेहनो निरमाण काढवो निरधार ॥ ४३

यदि विचार पूर्वक देखें तो धनीके गुणोंका भण्डार अब भी भरा पड़ा है.

धनीजीके जितने गुण गिनाए हैं उतने ही अभी भी भण्डारमें भरे पड़े हैं. गिनते गिनते पीछे मुड़कर देखती हूँ तो ज्ञात होता है कि अब भी असीम और अनन्त गुण भरे पड़े हैं. उन सबका निरूपण अवश्य करना है.

हुं नव काढुं तो बीजो काढे कोण, निरमाण काढी ग्रहुं धणीतणां गुण।
पाछ्ल भंडारनुं लेखुं दऊं वल्लभ, ए लेखुं करतां मुने नथी रे दुरलभ ॥ ४४

यदि मैं धनीजीके गुणोंकी गिनतीका कार्य नहीं करूँगी तो अन्य कौन करेगा ? मैं निश्चित रूपसे इसका निरूपण करके हृदयस्थ करूँगी. हे प्राणवल्लभ धनीजी ! भण्डारमें पड़े हुए अन्य गुणोंका भी मैं हिसाब दूँगी. इस हिसाबको रखनेमें मुझे किसी भी प्रकारकी कठिनाई नहीं होती है.

सर्वे गुण गणी जीवे कीधा मारे हाथ, हुं तां प्रगट कहुं छुं मारा प्राणना नाथ ।
ए सर्वे तो कहुं जो गुण ऊभा थाय, गुण मननी पेरे वधता जाय ॥ ४५

इन सब गुणोंको गिन कर जीवने मेरे हाथमें सौंपा है. हे मेरे प्राणके नाथ सद्गुरु ! मैं तो स्पष्ट रूपसे कह रही हूँ कि जब ये सब गुण स्थिर हो जाएँ तभी मैं इनका प्रत्यक्ष वर्णन करूँ. ये सब गुण तो मनकी गतिके समान बढ़ते ही जा रहे हैं.

एक खिण में वहेच्युं मारा श्रीराज, ए गुण जेटला कीधा तेहना भाग ।
तेहवा एक भागना में ए गुण कह्या, ए सर्वे मारा जीवमां ग्रह्या ॥ ४६

हे मेरे सद्गुरु धनी (श्रीराज) ! आपने जितने गुण किए हैं उतने ही भाग एक क्षणके करूँ. उस क्षणके एक भागमें मैंने इन गुणोंकी गिनती कर दिखाई और उन सबको मैंने हृदयमें ग्रहण किया.

ए गुण गणतां मारा कारज सरया, भले रे मायामा आपण देह धरया ।
आखा अवतारनी केही कहुं वात, कांईक प्रेमल रदे मुने आवी प्राणनाथ ॥ ४७

इन गुणोंकी गिनती करने पर मेरा कार्य सिद्ध हो गया. अच्छा हुआ कि हमने इस संसारमें शरीर धारण किए हैं. पूरे अवतार (व्रज, रास और जागनीके स्वरूप) के विषयमें क्या कहूँ ? मेरे हृदयमें प्राणनाथ सद्गुरु धनीके प्रेमकी सुगन्ध फैली हुई है.

ए गुण गणिया में निद्रा मंझार, नहीं तो एम केम गणुं मारा जीवना आधार।
हवे वातडियुं करसुं इछा तमतणी, आहीं जाग्यानी मुने हाम छे घणी ॥ ४८

मैंने इन गुणोंकी गिनती निद्रा अर्थात् मायावी परिस्थितिमें की है, अन्यथा प्रियतम धनीके गुणोंका कथन कैसे सम्भव होता ? अब तो मैं आपकी इच्छानुसार बातें करूँगी. इस संसारमें आई हुई आत्माओंको जागृत करनेकी मेरी तीव्र इच्छा है.

वाला तमे आव्या छो माया देह धरी, साथतणी मत मायाए गई फरी ।
हवे अनेक हांसी थासे जाग्या पछी घरे, ज्यारे साथे माया मांगी कहे अमने सुं करे॥ ४९

हे सद्गुरु धनी ! आप मायावी शरीर धारण कर यहाँ आए, किन्तु सुन्दरसाथकी बुद्धिको तो इस मायाने भ्रमित कर दिया है. इसलिए आत्माके जागृत होनेके बाद मूल घर परमधाममें सुन्दरसाथकी बहुत हँसी उड़ाई जाएगी (परन्तु मैं क्या करूँ ?) क्योंकि ब्रह्मात्माओंने ही मायाका यह खेल देखनेकी माँग की थी और कहा था कि माया हमारा क्या बिगाड़ लेगी ?

तमे ततखिण लीधी अमारी खबर, लई आव्या तारतम देखाड्यां घर ।
आपण जाग्या पछी हांसी करसुं जोर, घरने विसारी मायाए कीधां चोर ॥ ५०

हे धनी ! आपने तो उसी समय हमारी देखभाल की. आप तारतम ज्ञान लेकर आए तथा अखण्ड घर परमधामका परिचय भी करवाया. हम सब जागृत होनेके बाद परस्पर हँसी करेंगे, क्योंकि परमधामरूपी घरको भुला कर मायाने ब्रह्मात्माओंको चुरा लिया है.

हवे ने करसुं जाग्या पछी वात, कांई अमल चढ्युं छे साथने निघात ।
तारतम कहेतां हजी न वले सार, नहीं तो अनेक विधे कह्युं प्राणने आधार॥ ५१

अब तो जागृत होने पर परमधाममें जाकर धामधनीके साथ बातें करेंगे. समस्त सुन्दरसाथ पर मायाका नशा छाया हुआ है. तारतम ज्ञानके कहने और समझाने पर भी पहचान नहीं कर पा रहे हैं. प्राणाधार सद्गुरु धनीने तो अनेक प्रकारसे समझाया है.

इन्द्रावती लिए भामणां गुण जेटलां, तमे आहीं सुख दीधां अमने एटलां ।
घरना सुखनी आहीं केही कहुं वात, हवे सुख घरनानी घेरे करसुं विख्यात ॥ ५२

आपके जितने गुण हैं इन्द्रावती उतनी ही बार आप पर न्योछावर होनेके लिए तत्पर है. यहाँ आकर आपने हमें उतने ही सुख दिए हैं. अखण्ड परमधामके सुखोंकी बात यहाँ क्या करूँ ? उन सुखोंकी बात तो घर (परमधाम) में पहुँच कर ही करेंगे.

चरणे लाग कहे इन्द्रावती, गुण ना देखे किन एक रती ।
धणी जगाडी देखाडसे गुण, हांसी थासे त्यारे अति घण ॥ ५३

धनीजीके चरणोंमें प्रणाम करके इन्द्रावती कहती है,अभी तक किसीने भी एक तिल मात्र भी गुण नहीं देखा है अर्थात् उस पर विचार नहीं किया. अब तो धामधनी जागृत करके हमें अपने गुण दिखाएँगे तभी सुन्दरसाथ पर अधिक हँसी होगी.

सांभलो साथ मारा सिरदार, वचन कहुं ते ग्रहो निरधार ।
एटला गुण आपणसुं करी, बेठा आपणमां माया देह धरी ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे मेरे शिरोमणि सुन्दरसाथजी ! मेरे वचनोंको सुनो और उन्हें ठीकसे ग्रहण करो. सद्गुरुधनीने इतने अधिक उपकार किए हैं कि लौकिक देह धारणकर वे सुन्दरसाथके बीच आकर बैठ गए.

भरम भाजो वचन जोई करी, निद्रा घेन मूको परहरी ।
श्री धामतणां धणी कहेवाय, ते आवी बेठा आपण मांय ॥ २

सद्गुरुके वचनों पर विचार कर भ्रमको दूर करो. निद्रा और अज्ञानके नशेका परित्याग करो. सद्गुरु धामके धनी कहे जाते हैं. वे हम सबके बीच आकर विराजमान हुए हैं.

हवे सेवा कीजे अनेक विध करी, अने आपण काजे आव्या फरी ।
वली अवसर आव्यो छे हाथ, चेतन करी दीधो प्राणनाथ ॥ ३

अब सद्गुरुकी सेवा-शुश्रूषा अनेक प्रकारसे करें, क्योंकि वे हम सुन्दरसाथके

लिए पुनः पधारे हैं. पुनः हमारे हाथमें सेवाका सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ है. प्राणनाथ सद्गुरुने हम सबको सचेत कर दिया है.

ए उपर हवे सुं कहुं, श्रीवालाजीनां चरण ज ग्रहुं ।
कर जोडी करुं विनती, अने अलगी न थाउं चरण थकी ॥ ४

अब इस विषय पर अधिक क्या कहूँ ? प्रियतम धनीके चरण पकड़ती हूँ तथा हाथ जोड़ कर प्रार्थना करती हूँ कि मैं आपके चरणकमलोंसे कभी भी अलग न होऊँ.

प्रकरण १३ चौपाई ३३१

जाटी भाषामें प्रबोध

मूंजा अंध अभागी जीव जोर रे, तूं कीं सुतो हित ।
पर पर धणिएं जगाइया, तोके घर न सूझे कित ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे अन्धा एवं अभागी जीव ! तू यहाँ इस मायावी संसारमें क्यों सो गया ? विभिन्न प्रकारके उपदेश देकर धामधनीने तुझे(अज्ञान रूपी) नींदसे जगाया फिर भी परमधाम कहाँ है तुझे नहीं सूझा ?

अगेनी तूं कुरो केयो, जडे पिरी हल्या सांणे ।
से अजां न उथिए अकरमी, भूंडा सुते हित केही सांगायसे ॥ २

सद्गुरुकी उपस्थितिमें तूने क्या किया ? वे तो परमधाम चले गए (परन्तु तू उनके साथ नहीं गया.) इतना ही नहीं, हे जीव ! तू भाग्यहीन है और अब भी जागृत नहीं हो रहा है. हे दुष्ट ! किस परिचयके कारण तू मोह निद्रामें सो रहा है ?

पर पोतेजी न्हार तूं निखर, वलहो न डेसे अजां छेह ।
अवगुण न डिसे पांहिंजा, पिरी मेहेर करी वरी एह ॥ ३

हे जड़ जीव ! तू अपनी ओर तो देख. प्रियतमने अब भी तुझे अलग नहीं किया है. तू अपने अवगुणों (दोषों) को नहीं देखता है. धामधनीने फिरसे तुझ पर कितनी दया की है ?

बभिरकां पिरी तो कारण, आया माया मंझ ।
को न सुजाणे सिपरी, न तां थींदिए डूरण डंझ ॥ ४

धनीजी तेरे लिए इस मायावी संसारमें दूसरी बार आए. यह सब देखने पर भी तू धामधनीको क्यों पहचान नहीं पाता ? अन्यथा तुझे अत्यन्त दुःखका अनुभव होगा.

पांण पांहिंजो पस तूं, अंख उघाडे न्हार ।
खीर पाणीजी परख पधरी, हिन तारतम महें विचार ॥ ५

हे जीव ! तू अपने आपको पहचान. अन्तरकी आँखें खोलकर देख. दूध और पानी अर्थात् ब्रह्म और मायाको परखनेके लिए तू तारतम ज्ञानके रहस्य पर विचार कर.

अगेनी अंखियूं फूटियूं, भूंडा हांणे तूं कींक सांगाय ।
ही जोगवाई हथ न रेहेंदी, पोए पर न थिंदिए कांय ॥ ६

इससे पहले जब सद्गुरु धनी पधारे तब भी तेरी आँखें (विवेक, विचार) फूट गईं थीं. अर्थात् तूने उन्हें देखने पर भी अनदेखा कर दिया. हे पापी जीव ! मानव शरीररूपी यह साधन सदैव तेरे हाथोंमें नहीं रहेगा और इस शरीरके छूटनेके बाद कुछ भी होने वाला नहीं है.

अगेनी अकरमी थेयो, भूंडा हांणे तूं पांण संभार ।
पिरी पले पले तोके थका, भूंडा अजां न बरे तोके सार ॥ ७

पहले तो तू अकर्मी बना हुआ था. हे दुष्ट जीव ! अब तो अपने आपको सम्हाल. धामधनी तुझे समझाते हुए थक गए. हे पतित ! अब भी तुझे कुछ पता नहीं चल रहा है.

बभिरकां पिरी तो कारण, हांणे आया माया मंझ ।
धाउं पाइंदे पिरी बभिरकां, तोके थीअण आईं संझ ॥ ८

तेरे लिए अब दूसरी बार धनीजी मायामें पधारे हैं. धनीजी दूसरी बार पुकार कर रहे हैं. तेरी आयुका सन्ध्या समय आ पहुँचा. तू किनारे पर बैठा हुआ है, अब तो कुछ विचार कर.

अंग मरोडे न उथिए, पासें फजर पसी हींए मंझ ।
पोए कारी रातमें कीं न सुझे, से तां डुखें संदांनी डंझ ॥ ९

यदि तू अङ्ग मोड़ कर खड़ा नहीं होगा तो आत्म-जागृतिका समय तेरे हाथसे निकल जाएगा. इसके बाद संसार रूपी काली रात्रिमें कुछ भी दिखाई नहीं देगा, क्योंकि यह संसार (मोहजल) तो दुःखका ही रूप है.

तारतम तूं तां न्हार विचारे, जा पिरी आंदो तो कारण ।
हेतरा भठ बरंदे मथें, तोके अजां सा न बंजे घारण ॥ १०
मूंजा अंध अभागी जीव जोर रे, भूंडा हित सुते केही सांगायसे ॥

हे जीव ! तू तारतम ज्ञानके वचनों पर ठीकसे विचार कर ले. धामधनी तेरे लिए ही यह ज्ञान लाए हैं. तेरे सिर पर विरह वेदनाकी आग जल रही है तथापि अभी तक अज्ञानरूपी नींदका नशा उतरा नहीं ! हे मेरे अन्धे भाग्यहीन जीव ! तू अत्यधिक नशेमें क्यों डूबा हुआ है ?

मूंहजा जीव अभागी रे, हांणे तूं जिन चुके हिन वेर ।
तोकेनी हिन अंधारें मंझां, ईं बेयो कढंदो केर ॥ १

हे मेरे अभागी जीव ! इस वेलाको तू मत भूल. इस अज्ञानरूपी अन्धकारसे तुझे अन्य कौन निकालेगा ? इस पर तो थोड़ा विचार कर.

गुण तूं हिकडो न्हार संभारे, संदो सिपरियन ।
जाग तूं मूंजा जीव अभागी, को सुते सारुंथी मन ॥ २

प्रियतम धनीके एकाध गुणको तो तू याद करके देख. हे मेरे अभागे जीव ! अपने आपको पहचान कर अब तो जागृत हो. मनके (वैभवके) वशीभूत होकर क्यों सो रहा है ?

पेरो वेण तो केहा कढ्या, से कुरो मथियण मन मंझा ।
बुध मन तोहिजा बेही रेहेंदा, हांणे क्रोध कढंदे साहा ॥ ३

पहले तूने धनीजीकी उपस्थितिमें कैसे वचन कहे थे ? क्या वे वचन बाह्य

मनसे कहे थे ? अथवा अन्तरात्मासे निकले थे ? तेरे मन और बुद्धि यहीं रहेंगे अब क्रोध करके अपने जीवको शरीरसे बाहर निकाल.

जीव निरजो को थिए, तोके अजां न लगे घाए ।
सिपरी संभारे करे, भूंडा को न उडाइए अरवाए ॥ ४

हे जीव ! तू इतना निर्लज्ज क्यों बन गया है ? क्या तुझ पर धनीजीके वचनोंकी चोट अब भी नहीं लगी ? हे पापी जीव ! अपने प्रियतम धनीको स्मरण कर अपनी आत्माको क्यों नहीं उड़ाता है ?

जे तू चुके जीव हिन भेरां, त तां सुणज मूंजी गाल ।
जीव कढंदुस जोरे तोके, करे भुछा हवाल ॥ ५

हे जीव ! यदि तू इस बार चूक (भूल) गया, तो मेरी बात भी सुन ले, मैं भी तेरी बुरी दशा (अवदशा) करूँगी. इतना ही नहीं तुझे दुःख दे-देकर इस शरीरसे बाहर निकालूँगी.

अगेनी तो भुछी केई, जीव हांणे तूं पांण संभाल ।
सजण तोके सांणे कोठींनथा, खिल्ली करींनथा गाल ॥ ६

इससे पूर्व भी तूने खराब काम किए हैं. हे जीव ! अब तू स्वयं अपने आपको संभाल. धामधनी तुझे अपने घर परमधाम बुला रहे हैं तथा हँसकर (प्रसन्न होकर) तेरे साथ बात करना चाहते हैं.

हो ससुई सा पण ईं चोए, आंउं डियां कोड मथां ।
पुंनूं संदी बधाई को आंणे, ते के डियां ल्हाए हथां ॥ ७

वह ससी (एक प्रेमिका) भी ऐसा कहती थी कि मेरे प्रेमी पुत्रका सन्देश जो कोई देगा उसे मैं अपने हाथसे अपने करोड़ों सिर उतार कर दे दूँगी.

ए वेण न न्हारिए, फिट फिट रे भूंडा जीव ।
तो जो ओठो पण बेयो को न्हारे, हिन गालें बेयो घणुं लही ॥ ८

हे पापी जीव ! तू इन मायावी प्रेमियोंके वचनोंको सुन कर भी कुछ विचार नहीं करता. तुझे वारंवार धिक्कार है. तेरे प्रेमका दृष्टान्त और कौन देखेगा ? यह मायावी दृष्टान्त तो बड़ा निम्न कक्षाका माना जाएगा.

तोहे तोके सांगाए न बरे, तूं थेयो को ईं ।
न्हार संभारे पांण पांहिंजो, जे गाल्यूं करींनथा पिरी ॥ ९

इतना सब समझाते हुए भी तुझे धनीकी पहचान नहीं हुई. तू ऐसा कठोर क्यों बन गया है ? परमधाममें धनीके साथ तूने क्या बात की थी ? उस ओर देख और अपने आपको याद कर.

से वेण तूं को विसारिए भूंडा, जे पिरी चेयां तोके पांण ।
जे वेण विचारिए हिकडो, त हंद न छडिए निरवाण ॥ १०

हे पापी जीव ! तू उन वाणी और वचनोंको कैसे भूल गया ? ये वचन तो तुझे प्रियतम धनीने कहे थे. क्या ये भूले जा सकते हैं ? वाणीके एक वचन पर भी यदि तूने विचार किया होता तो निश्चित रूपसे तू सद्गुरुका ठिकाना नहीं भूलता.

अभागी तोके ते चुआं अकरमी, जे न पसां तोमें हाल ।
सत दांण तोके चुआं सुहागी, जे करिए कीं कीं भाल ॥ ११

हे जीवात्मा ! तुझे कर्महीन और भाग्यहीन इसलिए कहा गया है कि तुझमें जागनेकी अवस्था अभी प्राप्त नहीं हुई है, इसलिए तुझे धनीजीका परिचय प्राप्त नहीं होता. यदि तू कुछ उपकारपूर्ण कार्य करेगा तो मैं तुझे एक सौ बार सुहागी कहकर सम्बोधित करूँगी.

प्रकरण १५ चौपाई ३५२

बी वलामणी

मूंजा जीव सुहागी रे, हांणे जिन छडिए पिरी पेर ।
बभेरकां तो कारण, पिरी आया हिन वेर ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे मेरे सुहागी जीव ! अब तू प्रियतम धनीके चरण कमलोंको मत छोड़. क्योंकि तेरे कारण प्रियतम इस संसारमें दूसरी बार आए हैं.

पिरिए संदां गुण संभारे, झल्ल तूं पिरिए पेर ।
सांणे तोके सुखे पुजाइंदा, बेयो कोठे इंय केर ॥ २

धनीजीके गुणोंका स्मरण करते हुए उनके चरण कमलोंको ग्रहण कर ताकि वे तुझे सुखपूर्वक परमधाम पहुँचा दें. इस प्रकार तुझे दूसरा कोई नहीं बुलाएगा.

खिल्ली कूडी कर गालडी, सुजाण पोतेजा पिरी ।
तोजे काजे आप बिधाऊं, बिंनी भेरां न्हार कीं ॥ ३

अपने प्रियतम धनीका परिचय प्राप्त हो जानेके बाद तू उनके साथ हँसते खेलते बातें कर. धनीजीने तेरे लिए ही अपने आपको मोहजल (इस मायावी संसार) में फिरसे डाला है. इस पर थोड़ा-सा तो विचार कर ले.

सजण ए कीं छडजे, तूं तां न्हार केडा आइन ।
पिरिए तोसे पांण न रख्यो, से न संभारजे कीं ॥ ४

ऐसे उत्तम धनीको हम कैसे छोड़ सकते हैं ? जरा देखो (सोचो) कि धनीजी किस प्रकार मायामें आए हैं ? तेरे लिए धनीजीने अपना कुछ नहीं रखा. तू इस बातको याद क्यों नहीं करता ?

कोड करे तूं केड बांधीने, थी पिरिए जे पास ।
सिपरी तूं सुजाण पांहिंजा, छड बेयो मंडे साथ ॥ ५

आनन्दके साथ साहस करके, कमर कस कर प्रियतम धनीके समक्ष आ जा. तू धामधनीका परिचय प्राप्त कर ले और अन्य झूठी बातें (संगति) छोड़ दे.

पांणजे साथ के परमें चोएज, जे तो उकले वेण ।
साथ तां कीं न सांगाए सुहागी, तोहे पांहिजा सेण ॥ ६

हमारे सुन्दरसाथके विषयमें जो कुछ कहा गया है वह यदि तू समझ पाएगा तो समझ ले. साथको तो इतना गहरा परिचय तो नहीं है तथापि वे परमधामके स्वजन (सुहागिनी) हैं.

प्रकरण १६ चौपाई ३५८

मूंजा साथ सुहागी रे, हांणे आंईं को न सुजाणो सिपरी ।
पेरोनी पांण न सुजातां, आइडा से वरी रे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, परमधामके सुख लेनेवाले हे मेरे सुन्दरसाथजी ! अब तुम धामधनीको क्यों नहीं पहचानते ? पहली बार भी तुमने उन्हें नहीं पहचाना. इसलिए वे दूसरी बार आए हैं.

सेईं सजण सेईं गालडयूं, सेईं कारयूं करीन ।
पांणजे काजे पिरी पांहिंजा, पांणी अंखिए भरीन ॥ २

वही धामधनी तुम्हें उन्हीं बातों द्वारा उसी परमधाममें जागृत होनेके लिए पुकार कर बुला रहे हैं. अपने सुन्दरसाथके लिए धामधनी अपनी आँखोंमें अश्रु भरकर कहते हैं.

सेईं सिखामण डियन सिपरी, तांणीन घर मणें ।
पांण पांहियूं कीं ओसरूं, वलहो आव्यो वरी करे ॥ ३

सद्गुरु धनी पहलेकी भाँति ही उपदेश देकर मूल घर परमधामकी ओर ले जानेके लिए बुलाते हैं. इसलिए हम सुन्दरसाथ अब धनीसे परिचय प्राप्त करनेसे कैसे हटें ? क्योंकि धामधनी पुनः हमारे बीच आए हैं.

कूकडियूं करीन पेहेलीनीयूं, हांणे को न सुजाणो साथ ।
न तां खरे बपोरे सेज सोझरे, हांणे थींदी रात ॥ ४

पहलेकी भाँति ही सद्गुरु धनी पुकार कर कह रहे हैं. हे सुन्दरसाथजी ! तुम अब भी धनीकी पहचान क्यों नहीं कर लेते ? अन्यथा अखण्ड तारतम ज्ञानका प्रकाश (सद्गुरुकी उपस्थितिमें) जो मध्याह्नके सूर्यकी भाँति प्रकाशमान है, वह अस्त हो जाएगा तो अज्ञानरूपी अन्धेरी रात फैल जाएगी.

पोए हथ हणंदा पटसे, हैडे डींदा घा ।
सजण सूरे में बेही न रेहेंदा, हल्ली वेदांनी हथ मंझा ॥ ५

तब तुम्हारे हृदयमें घाव हो जाएँगे और तुम भूमि पर हाथ पटकते रह जाओगे. धामधनी इस दुःख रूपी संसारमें बैठे नहीं रहेंगे ? इसलिए सावधान हो जाओ, यदि वे चले जाएँगे तो हाथमें आया हुआ यह सुनहरा अवसर तुम खो बैठोगे.

धाएडियूं करीन पिरी, परी परी चए वेण ।
पांणजे काजे पिरी बभेरां, पाण त्रेमाइन नेण ॥ ६

धामधनी विविध प्रकारके वचनोंसे पुकार कर कहते हैं. वे हमारे लिए दुबारा आकर आँसू बहा कर समझा रहे हैं.

माया तां डिठियां मंझ पेहीने, सोझरे सिपरियन ।
भती भतीजी रांद डेंखारण, पिरी आंदो तारतम ॥ ७

इस संसारके बीच रह कर भी प्रियतम धनी तारतम ज्ञानके प्रकाश द्वारा मायाका खेल दिखला रहे हैं. भाँति-भाँतिके सांसारिक खेल दिखानेके लिए ही धामधनी सद्गुरु तारतम ज्ञान लेकर आए हैं.

जा माया आं मोंहें मंगई, सा डिठियां बी वार ।
साथ हांणे पिरी साथ हल्लजे, जीं पिरी पेराइन करार ॥ ८

इस मायावी खेलको स्वयं हमने अपने मुखसे माँगा था, इसे हमने दो बार देख लिया. इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! अब हम धनीजीके साथ धाममें जाएँ ताकि हमारे प्रियतम धनीको शान्तिका अनुभव हो.

ब भेरें पिरी पांणजे काजें, सायरमें बिधाऊं आप ।
आपण काजें पांण विधाऊं हांणे को न सुजाणो साथ ॥ ९

हमारे लिए धनीजी इस मायावी संसारमें दुबारा आए हैं. हे सुन्दरसाथजी ! अब भी इस स्वरूपको क्यों नहीं पहचानते हो ? उन्होंने हमारे लिए ही तो इस मायामें प्रवेश किया है.

आकार तां आंई भले पसो था, पण पसो मंझिओ तेज ।
पिरी पांहिजा पांण पांणसे, घणुं करींनथा हेज ॥ १०

इस मायावी शरीरके आकारको तो तुम देख रहे हो, परन्तु भीतरके प्रकाशको देखो. हमारे धनीजी सुन्दरसाथके प्रति अत्यन्त प्रेम रखते हैं.

हांणे केही पर करिया आंसे, को न सुजाणों सेण ।
सजण सेई पुकार करीन, आंके निद्र अचे कीं नेण ॥ ११

अब मैं तुम्हें किस प्रकार कहूँ ? अपने सखा धनीजीका परिचय क्यों प्राप्त

नहीं करते ? धामधनी पहलेकी भाँति ही पुकार रहे हैं, फिर भी तुम्हारी आँखें अज्ञानकी नींदसे क्यों घिरी हुई हैं ?

नेणेंनी मंझां निद्र न बंजे, जे हेडी मथां थेई ।
सेणेसे आंई साथ न हल्यां, पोरयां कुरो कंदा रही ॥ १२

तुम्हारी आँखोंसे नींद नहीं जा रही है. तुम्हारे सिर पर इतनी बड़ी चोट (सद्‌गुरुका धामगमन) भी लगी. अपने प्रियतम धनीकी आज्ञानुसार यदि हम उनके साथ नहीं जाएँगे तो बादमें इस संसारमें रह कर क्या करेंगे ?

हिन डुखे मंझा को न निकरयो, केहो डिसोथा भाल ।
जडे हली बेदां हथ मंझां, तडे केहा थींदा हवाल ॥ १३

इस दुःखरूपी संसारसे कोई भी आज तक निकल नहीं पाया अर्थात् किसीको भी मोहजलकी थाह नहीं मिली. इस संसारमें कौन-सी भलाई देख रहे हो ? यदि सद्‌गुरु हाथसे निकल जाएँगे तो तुम्हारी क्या दशा होगी ?

पांणके हिन पिरी धारा, बेयो चोये ईं केर ।
साथ संभारे न्हारयो दिलमें, जिन चुको हिन वेर ॥ १४

हमें इन धनीके अतिरिक्त अन्य कौन इस प्रकारके वचन कहेगा ? हे सुन्दरसाथजी ! इन वचनोंको याद करके सोचो और ऐसा सुअवसर हाथसे जाने मत दो.

हिकडी आर चुके मांहड़ू, तेके बी आर अचे बुध ।
हेतरा भठ बरंदे मंथे, आंके अजां न बरे सुध ॥ १५

यदि मनुष्य एक बार भूल जाता है तो परिचय होनेके बाद दूसरी बार समझ जाता है परन्तु तेरे सिर पर विरहकी इतनी आग जली, फिर भी तुझे अब तक इसका पता भी नहीं चला ?

हिक बेर मथीजा विसरयां, हित न्हाए बेठे जो लाग ।
अंख उघाडे ढंकजे, कोडमी पातीमें थिए अभाग ॥ १६

एक बार भूल तो होती है किन्तु अब तो संसारमें बैठे रहनेका समय नहीं है. आँखकी पलकें खोलने और बन्द करनेमें जितना समय लगता है, उसके

करोड़वें भागके लिए भी जो धामधनीको भूलेगा वह अभागा है.

आंऊं खीजी आंके कीं चुआं, सा न वरे मूंजी जिभ ।
पण आंईं हिन माया मंझां, केही कढंदा निध ॥ १७

मैं नाराज होकर तुम्हें क्यों कहूँ ? यदि मैं कुछ कहना चाहूँ तो भी मेरी जिह्वा उठ नहीं रही है. परन्तु इस मायामें रह कर तुम सबको कौन-सी समृद्धि (सम्पत्ति) मिलेगी ?

वेण बिगो आंके चुआं, सा बढिया मूंहजी जिभ ।
पण अंईं हिनमें पईं रह्या, हिन मंझां कां न थिंदियां सिध ॥ १८

यदि मैं तुम्हें वाणीसे कटु शब्द कहूँ तो मैं इस जिह्वाको काट डालूँ. परन्तु यदि तुम इस दुनियाँमें पड़े रहोगे तो कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होगा.

हिन सोझरे जे न सुजातां, बभेरकां हीं ईं ।
पोए सांणेनी सिपरियन अग्यां, मोंह खणंदियूं कीं ॥ १९

धनीजीके दूसरी बारके आगमनके बाद भी यदि तारतमके प्रकाशको न पहचानें तो परमधाममें पहुँचनेके बाद धनीजीके समक्ष क्या मुख लेकर खड़े रहेंगे ?

पेरोनी पांण नजर न्हारींदे, व्यो अवसर हथां ।
जडे हथे मंझा हली बेयां, तडे केहेडी थेईनी पांण मथां ॥ २०

(हमारी आँखोंके सामनेसे ही) यह अवसर हाथसे निकल गया. (सद्गुरु धनी धाम चले गए.) उस समय हमारे सिर पर दुःखके पहाड़ टूट पडे थे और हमें कैसा कष्ट सहन करना पड़ा था ?

हींय हंद एहेडो आए, हिक वेरमें थिए वेणां ।
साथ तां आइन सभे समजू, न्हाए केहेमें मणां ॥ २१

यह स्थान (संसार सागर) माया, मोहका ऐसा प्रपञ्च है कि कभी-कभी एक क्षणमें ही सर्वनाश हो जाता है. हे सुन्दरसाथजी ! तुम सब तो समझदार हो. तुममें किसी प्रकारकी कोई कमी नहीं है (फिर विलम्ब क्यों कर रहे हो ?).

साथ अंई कीं कीं न्हारयो संभारे, गुण म छडो मोकरे मोए ।
इन्द्रावती चोए पेरे लगी, फिरी फिरीने केतरो चोए ॥ २२

हे सुन्दरसाथजी ! तुम सब धनीजीके कुछेक गुण याद करके देख लो. उन गुणोंको छोड़ना नहीं. मायासे मोहित मत होना. इन्द्रावती चरणोंमें प्रणाम कर कहती है, मैं वारंवार तुमसे यह प्रार्थना करती हूँ, अब अधिक कितना कहूँ !

प्रकरण १७ चौपाई ३८०

विनती-राग धन्यासरी

हुं तां पीउजीने लागुं छुं पाय, मारा वाला, जेम आ फेरो सफल मारो थाय ।
जेम पीउजी ओलखाय, मारा वालाजी, सुणोने अमारी वालाजी विनती॥ १

हे मेरे प्रियतम धनी ! मैं आपके चरण कमलोंमें प्रणाम करती हूँ ताकि मेरा मनुष्य जन्म सार्थक हो जाए. जिस प्रकार भी मुझे धामधनीकी पहचान प्राप्त हो, उसी प्रकारकी मेरी प्रार्थनाको सुनिए.

अमे पहेलां नव ओलख्या श्री राज, अमने भरम गेहने आण्या बाज ।
भवसागरना जल छे अपार, ते तां तमे सेहजे उतार्‌या पार ॥ २

हे श्रीराजजी (सद्‌गुरु) ! हमने इससे पूर्व आपके स्वरूपकी पहचान नहीं की, क्योंकि हमें भ्रम (अज्ञानता) की निद्राने पूरा-पूरा घेर लिया था. संसारका यह मोह जल अथाह (असीम) है आपने तो हमें अति सरलतासे पार करवा दिया है.

तमे भली पहेली कीधी मारी वहार, धणी लिए तेम लीधी सार ।
चौद भवननी गम आहीं, ते तां लखी सर्वे सास्त्रो मांहीं ॥ ३

हे धनीजी ! आपने पहलेकी भाँति ही हमारी अच्छी सम्हाल ली. स्वामीके रूपमें जिस प्रकार सम्हालना चाहिए उसी प्रकार आपने हमें सम्हाला. चौदह लोकोंका ज्ञान यहींसे सबको प्राप्त होता है और यह सर्व शास्त्रोंमें लिखा हुआ है.

ते तमे कीधी छे प्रकास, तेहनी तारतम पाए पुरावी साख ।
तमे अमने जुगते माया रामत देखाडी, तमे अमने घेर पहोंचाड्या दुस्तर उतारी॥ ४

आपने तारतम ज्ञान द्वारा इन सब शास्त्रोंका सार प्रकाशित किया है और

तारतम प्राप्त करके आपने उन सब शास्त्रोंकी साक्षी दी. हमें मायाका खेल अच्छी तरह दिखाया और इस दुस्तर भवसागरसे पार उतार कर परमधाममें पहुँचा दिया.

अमे मनोरथ कीधां हतां जेह, तमे पूरण कीधां सर्वे तेह ।
तमे अमने मनोरथ करतां वार्‌या, तोहे कारज अमारा लई सार्‌या ॥५

मायाके खेल देखनेकी जो इच्छा हमने की थी उन सब इच्छाओंको आपने पूर्ण किया. आपने परमधाममें ऐसी इच्छा करनेसे हमें रोका था, तथापि आपने हमारा कार्य पूर्ण किया.

अमने लागी हती जेहनी रढ, ते तमे पूरण कीधी आहीं आवी द्रढ ।
तमे अमने रामत देखाडवाने काज, अम पहेलां ने पधारया श्रीराज ॥ ६

हमें मायाके खेल देखनेकी रट लगी थी, उसे आपने यहाँ आकर निश्चित रूपसे पूर्ण किया. हे धनी ! मायाका खेल दिखानेके लिए आप हमसे पहले ही इस संसारमें आए.

एवा मारा लाड पूरण कोण करे, बीजी दाण देह मायामां कोण धरे ।
तमे मोसुं गुण कीधां छे अनेक, ते तां लख्या मारा रुदयामां लेख ॥ ७

इस प्रकार हमारे लाड़-प्यार कौन पूर्ण करेगा तथा इसके लिए दुबारा इस संसारमें कौन देह धारण करेगा ? आपने तो हम पर अनेक उपकार किए हैं. ये सब हमारे हृदयमें अंकित हैं.

तम उपर तिल तिल करी नाखुं मारी देह, तमे कीधां मोसुं अधिक सनेह।
हुं तो भामणियां लई लई जाऊं, तमसुं सरखरुं केणी पेरे थाऊं ॥ ८

आपके लिए मैं अपने शरीरके टुकड़े-टुकड़े करके अर्पण कर दूँ तो भी कम है. आपने मुझसे अत्यन्त स्नेह किया है. मैं तो आपके लिए सब कुछ न्योछावर करनेके लिए तैयार हूँ फिर भी आपके समान (सम्मानित) कैसे हो सकती हूँ ?

तमे छो अमारडा धणी, तो आसडी पूरो छो अमतणी ।
इन्द्रावती चरणे लागे, कृपा करो तो जागी जागे ॥ ९

आप हमारी आत्माके धनी हैं इसलिए हमारी आशाओंको पूरा करते हैं.

इन्द्रावती प्रणाम कर कहती है, आपकी कृपा प्राप्त होने पर इस संसारसे परमधाममें जागृत हो जाऊँगी.

प्रकरण १८ चौपाई ३८९

अखंड दंडवत करुं प्रणाम, हैडे भीडीने भाजुं हाम ।
प्रेमे दऊं प्रदखिणा, फरी फरी वली अति घणा ॥ १

हे धनी ! मैं आपके चरणोंमें अखण्ड दण्डवत् प्रणाम करती हूँ और आपके गले लगकर मेरी इच्छा पूरी करना चाहती हूँ. मैं चाहती हूँ कि प्रेममग्न होकर वारंवार आपकी अधिकसे अधिक परिक्रमा करूँ.

वारी वारी जाउं मुखारने विंद, वरणवुं सोभा सरूप सनंध ।
वारणां लऊं आंखडियुं तणां, सीतल द्रस्ट मांहें नहीं मणां ॥ २

आपके मुखारविंदकी शोभा पर वारंवार समर्पित हो जाती हूँ तथा आपके स्वरूपकी शोभाका अनेक प्रकारसे वर्णन करती हूँ. आपके नेत्रों पर मैं अपने आपको न्योछावर करती हूँ क्योंकि इस शीतल दृष्टिमें दयाकी थोड़ी-सी भी कमी दिखाई नहीं देती है.

भामणां उपर लउं भामणां, सुख अमने दीधां अति घणां ।
वली वली लागुं चरणे, सेवा करीस हुं वालपण घणे ॥ ३

मैं वारंवार समर्पित होती हूँ. अपने सुन्दरसाथको आपने अत्यन्त प्रेम, आनन्द और सुख दिए हैं. मैं आपके चरणकमलोंमें वारंवार प्रणाम करती हूँ, मैं अत्यन्त प्रेमसे आपकी सेवा करूँगी.

वारी फरी नाखुं मारी देह, इन्द्रावती वली वली एम कहे ।
अति वखाण में थाए नहीं, पोताना घरनी वात ज थई ॥ ४

इन्द्रावती वारंवार ऐसा कहती है कि मैं अपने आपको आप पर न्योछावर कर दूँ. अधिक प्रशंसा भी मुझसे नहीं हो पाती, क्योंकि यह तो मेरी अपनी बात है.

पोते पोताना करे वखाण, तेहने सहु कोई कहे अजाण ।
पण जेवडी वात तेहवा वखाण, वचन ग्रहेसे जोईने जाण ॥ ५

जो अपने मुखसे अपनी प्रशंसा किया करते हैं उन्हें अज्ञानी (मूर्ख) कहा जाता है. परन्तु मैं तो जैसी बात है वैसी ही प्रशंसा कर रही हूँ. इस लिए सुन्दरसाथ इन वचनों (वाणी) को सोच समझ कर ग्रहण करेंगे.

श्री धणीतणां वचन प्रमाण, प्रगट लीला थासे निरवाण ।
चौद भवननो कहिए भाण, रास प्रकास उदे थया जाण ॥ ६

सद्गुरु धनीके वचन यथार्थ हैं. यह जागनी लीला अवश्य प्रकट होगी. चौदह लोकोंको अखण्ड प्रकाश देने वाले सूर्यके समान ''रास'' व ''प्रकाश'' का उदय हो गया है.

चौद भवननो नहीं आसरो, उदेकार अति घणो थयो ।
सबदातीत ब्रह्मांड कीधां प्रकास, ए अजवालुं जोसे साथ ॥ ७

चौदह लोकोंमें रास और प्रकाशरूपी सूर्यका तेज नहीं समाता क्योंकि अब वह सूर्य उदय हो चुका है, जिसके प्रकाशने तो शब्दातीत ब्रह्माण्ड (व्रज और रास) को भी प्रकाशित कर दिया है. इस प्रकाशको अब सुन्दरसाथ देखेंगे.

प्रकासतणां वचन निरधार, जे जोइने करसे विचार ।
आगल ए थासे विस्तार, जीव घणां उतरसे पार ॥ ८

प्रकाश वाणीके वचनोंको देख कर सुन्दरसाथ निश्चित रूपसे उन पर विचार करेंगे, क्योंकि भविष्यमें इस तारतम (सागर) वाणीका विस्तार होगा और इसके कारण असंख्य जीवोंका उद्धार होगा.

ए लीला जे जोसे विचार, सुं करसे तेहने संसार ।
प्रगट पाइयो कीधो एह, अंबारत थासे हवे तेह ॥ ९

जो कोई सुन्दरसाथ इस लीलाको विचार पूर्वक देखेंगे तो संसारकी माया उनका क्या कर पाएगी ? इन ''रास'' और ''प्रकाश'' ग्रन्थों द्वारा अखण्ड

ज्ञानकी नींव डाली गई है. उसके आधार पर भविष्यमें ''तारतम सागर'' रूपी भवन खड़ा हो जाएगा.

हवे सुणजो सहुए साथ, चरणे तमने लागे मेहेराज ।
ए वाणी श्रीधणिए कही, वली वली तमने क्रपा थई ॥१०

हे सुन्दरसाथजी ! अब तुम सब सुनो. मेहेराज चरणोंमें प्रणाम कर कहते हैं कि यह वाणी धामधनी (सद्गुरु) ने मेरी अन्तरात्मामें बैठकर कही है. इस प्रकार उनकी कृपा तुम पर वारंवार हुई है.

एहवो पकव प्रवीण नथी कांई हुं, तो सिखामण तमने केम देऊं ।
हुं घणुंए एम जाणुं सही, जे जीव मारुं समझावुं रही ॥११

मैं कोई ऐसा परिपक्व विद्वान नहीं हूँ. इसलिए आपको ऐसी शिक्षा कैसे दूँ ? मैं अपने जीवको समझाना भर अवश्य जानता हूँ.

पण धणी तणी कृपा घणी, वली वली दया करे साथ तणी ।
तो वचन तमने कहेवाय, नही तो कीडी मुख कोहलुं न समाय ॥१२

परन्तु धामधनीकी हम पर विशेष कृपा है. वे सुन्दरसाथ पर वारंवार दया करते हैं. इसी कारण तुम्हें तारतमके वचन कहे जाते हैं, अन्यथा चीटीके मुखमें कद्दू कैसे समा सकता है ?

हवे रखे वचन विसारो एक, साथ माटे कह्यां विसेक ।
वचन कह्यां छे करजो तेम, आपण पहेलां पगलां भरियां जेम ॥१३

हे सुन्दरसाथजी ! अब एक भी वचन भूलना नहीं. यह वाणी विशेष रूपसे तुम्हारे लिए ही कही गई है. जैसा कहा गया है वैसा ही करना. पहले व्रजसे रास मण्डलमें जाते समय जिस प्रकारके कदम उठाए थे, अब परमधाम जानेके लिए भी उसी मार्गको ग्रहण करना.

वली अवसर आव्यो छे हाथ, चरणे लागीने कहुं छुं साथ ।
हवे चरणे लागुं श्रीवालाजी, तमे वहार मारी भली कीधी ॥१४

सबके हाथोंमें पुनः ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ है. हे सुन्दरसाथजी ! मैं तुम्हारे चरणोंमें प्रणाम कर कह रही हूँ. अब प्रियतम धनीके चरणकमलोंमें प्रणाम

करती हूँ , हे धनी ! आपने पुनः हमारी सम्हाल लेकर हम पर अत्यन्त कृपा की है.

आ माया घणुं जोरावर हती, पण हलवी थई मारा धणी तम थकी ।
मायाने तजारक थई, ते उपर आ विनती कही ॥ १५

यह माया अति बलशालिनी थी, परन्तु आपके चरणोंके प्रभावसे अब यह हल्की बन गई है. आपके प्रतापसे इसको सजा मिली, इसीलिए इस प्रकार प्रार्थना करनेकी शक्ति मुझे प्राप्त हुई है.

ते विनतडी जो जो सार, माया दुख पामी निरधार ।
धणी लिए तेम लीधी सार, मुख मांहेथी काढी आधार ॥ १६

हे सुन्दरसाथजी ! विनतीके रूपमें कहे गए मेरे इन वचनोंका सार ग्रहण करो. यह निश्चित है कि धनीजी द्वारा सजा मिलने पर माया दुःखी हो गई है. स्वामीको जिस प्रकार सम्हालना चाहिए उसी प्रकार धनीजीने हमें सम्हाला है और मायाके बन्धनोंसे छुड़ाया है.

तमारा गुणनी केही कहुं वात, तमे अनेक विधे कीधी विख्यात ।
पोतावट जाणी प्रमाण, इन्द्रावती चरणे राखी निरवाण ॥ १७

हे प्रियतम धनी ! आपके उपकारके विषयमें मैं क्या कहूँ. आपने हमें अनेक प्रकारसे समझाया है. आपने इन्द्रावतीको अपनी मान कर अपने चरणोंमें स्थान दिया है.

चरण पसाय सुन्दरबाईने करी, फल वस्त आवी रदे चढी ।
चरण फल्यां निध आवी एह, हवे नहीं मूकुं चित चरण सनेह ॥ १८

श्री सुन्दरबाईके चरणोंकी कृपासे मेरे हृदयको भी तारतम रूपी फल प्राप्त हुआ है. उन्हीं चरण कमलकी कृपासे यह निधि (अखण्ड सम्पत्ति) प्राप्त हुई है, इसलिए अब मैं आपके चरणकमलोंसे ध्यान नहीं हटाऊँगी.

चरण तले कीधो निवास, इन्द्रावती गाए प्रकास ।
भाजी भरम कीधो अजवास, पामे फल कारण विस्वास ॥ १९

सद्गुरु धनीके चरण कमलोंमें ही रहकर इन्द्रावती प्रकाश वाणीका गान

करती है. भ्रमको मिटाकर धनीजीने प्रकाश फैलाया है. मात्र विश्वासके कारण ही यह फल प्राप्त होता है.

विस्वास करीने दोडे जेह, तारतमनुं फल लेसे तेह ।
ते माटे कहुं प्रकास, जोपे जागी लेजो साथ ॥ २०

विश्वास धारण करके जो कोई सुन्दरसाथ दौड़ेंगे, वे तारतमका फल अवश्य प्राप्त करेंगे. इस लिए प्रकाश ग्रन्थके इन वचनोंको कह रही हूँ, ताकि सब सुन्दरसाथ जागृत होकर इन वचनोंका अच्छी तरहसे पालन करेंगे.

एटले पूरण थयो रास, इन्द्रावती धणीने पास ।
मुने मारे धणीए दीधी बुध, हवे प्रकास करुं तारतमनी निध ॥ २१

इन्द्रावती कहती है, सद्गुरु धनीके पास रह कर इस प्रकार रास (ग्रन्थ) पूरा हुआ. मुझे मेरे धनीने जागृत-बुद्धि दी है. अब मैं तारतमकी अखण्ड निधि प्रकाशित करूँगी.

प्रकरण १९ चौपाई ४१०

हवे प्रकाश उपनो छे

हवे करुं ते अस्तुत आधार, वल्लभ सुणो विनती ।
आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, मायानी लहेर मुने जोर हती॥ १

हे मेरे प्राणाधार प्रियतम ! अब मैं आपसे प्रार्थना कर रही हूँ मेरी एक विनती सुनिए. इतने दिनों तक मुझे आपके स्वरूपकी पहचान नहीं हुई, क्योंकि मुझ पर मायावी लहरोंका प्रभाव अधिक था.

जीव जगावी भाजी भरम, श्री वालाजीने लागुं पाए ।
सोभा तमारी तीत सबद थकी, मारी देह आ जिभ्या सबद मांहे ॥ २

सद्गुरु धनीने मेरे जीवको जागृत करके भ्रम दूर कर दिया. ऐसे प्रियतम धनीके चरणोंमें मैं नतमस्तक होती हूँ. आपके स्वरूपकी शोभा (सुन्दरता) शब्दातीत है. मेरे शरीरकी यह जिह्वा शब्दमें सीमित है.

केणी पेरे हुं करुं अस्तुत, मारा जीवने नथी कांई बल ।
मारी जोगवाई सर्वे अस्थिर वस्तनी, केम वरणवुं सोभा नेहेचल ॥ ३

इसलिए इस जिह्वाके द्वारा मैं आपकी स्तुति (गुणगान) कैसे करूँ. मुझमें कोई शक्ति ही नहीं है. मेरे शरीरकी रचना प्राकृतिक तत्त्व (अस्थिर वस्तुओं) द्वारा ही हुई है. इसलिए आपके अखण्ड स्वरूपकी शोभाका किस प्रकार वर्णन करूँ ?

आगल जीवे कीधी अस्तुत, भगवानजीनी भली भांत ।
पंडिताई चतुराई ने प्रवीणाई, किवता मांडे छे करी खांत ॥ ४

पहले भी लोगोंने भगवानकी स्तुति अच्छी तरहसे की है. इसमें उन्होंने अपनी पूरी-पूरी विद्वत्ता, चतुराई और दक्षता दिखा कर अपनी इच्छानुसार कविताओंकी रचना की है.

ते प्रवाही वचन ज्यारे जोइए, तेहमां को को छे भारे वचन ।
ए तां दिए अचेत थका उपमा, पण मुने साले ते मन ॥ ५

प्रवाहमें लिखे गए उन वचनोंको जब हम देखते हैं तो उन रचनाओंमें कहीं कहीं गूढ़ शब्द (परमानन्द, सच्चिदानन्द, पूर्णब्रह्मादि) भी प्राप्त होते हैं. इन महत्त्वपूर्ण शब्दोंकी उपमा अज्ञानतावश दी गई है, किन्तु मेरे मनमें ये ऊँचे शब्द खटकते हैं.

अजाण थके दिए एवडी उपमा, त्यारे जाण्यानो कीहो प्रमाण ।
एक वचन जो पडे मुख प्रवाही, ते तां नव जाण्युं निरवाण ॥ ६

इस दुनियाँके लोगोंने मूल तत्त्वकी जानकारी प्राप्त किए बिना ही इतनी बड़ी उपमा दी है, तो मूल तत्त्व (तारतम) का ज्ञान होने पर मैं आपको कौन-सी उपमा दूँ ? ऐसे एक दो वचन प्रवाहीके मुखसे निकलते हैं किन्तु वे उसकी वास्तविकता नहीं जानते है.

नव में सांभल्युं वेद पुराण, नव सांभली किव चतुराई ।
एक बे वचन मुख सांभल्या धणीनां, तेणे एम जाण्युं आ पुष्ट ओ प्रवाही ॥ ७

मैंने वेदों और पुराणोंको भी नहीं सुना है. न तो मैंने कवियोंकी चातुर्यपूर्ण

कविता सुनी है. मैंने सद्गुरु धनीके मुखारविंदसे निकले हुए एक दो वचन ही सुने हैं. इनके द्वारा मैंने पुष्ट और प्रवाहके वचनोंको जाना अर्थात् सद्गुरुके वचन पुष्ट और अन्य कवियोंके वचन प्रवाह मार्गके हैं.

ते पण चित दई नव सांभल्या, नहीं तो पूर बूढ्यो प्रघल ।
आडा गुण सघला जोध जुजवा, तेणे नव लेवा दीधुं टीपुं जल ॥ ८

धनीजीके एक दो वचन भी मैंने मन लगाकर नहीं सुने हैं, अन्यथा सद्गुरु धनीका अखण्ड ज्ञान सागरकी लहरोंके समान हृदयमें उमड़ रहा होता. समस्त गुण, अंग, इन्द्रियाँ अपना अलग-अलग प्रभाव लेकर जीवके लिए अवरोधक बन जातीं हैं. उन्होंने ही सद्गुरु धनीके वचनामृतकी एक बूँद भी लेने नहीं दी.

हवे ते गुणने केही दीजे उपमा, फिट फिट भूंडी बुध ।
प्रथम तुं मोहोवड मंडाणी, तें कां न लीधी ए निध ॥ ९

अब इन गुण, अंग और इन्द्रियोंको कौन-सी उपमा दी जाए ? हे पापिन बुद्धि ! तुझे धिक्कार है. सबसे पहले तू ही वहाँ पहुँची थी. तूने इस अखण्ड ज्ञानरूपी धनको क्यों ग्रहण नहीं किया ?

सागर पूर वह्युं रे सनंधे, तें कां न लीधुं ए जल ।
तें बुध पापणी हुं मेलुं परहरी, जे थई मोसुं निबल ॥१०

समुद्रके प्रवाहमें ऊठने वाली बड़ी-बड़ी लहरोंकी भाँति सद्गुरुधनीके ज्ञानका प्रवाह उमड़ पड़ा. फिर भी उस अमृत रूपी जलको तूने क्यों प्राप्त नहीं किया ? हे पापिन बुद्धि ! मैं तेरा संग छोड़ रही हूँ. तू मेरे लिए निर्बल सिद्ध हुई है.

हवे रे बुधडी हुं कहुं तुंने, तुं थाय बुधनो अवतार ।
श्री वालाजीने वल्लभ करे रे, एक खिण म मूके लगार ॥११

हे बुद्धि ! अब मैं तुझे कहती हूँ कि तू बुद्धिके अवतार स्वरूप बन जा. धामधनीको प्रेम कर और उन्हें एक क्षणके लिए भी मत छोड़.

बीजी बुध केही आवे अम समवड, हुं बुध मांहें बुध अवतार ।
बुधे करी वालाजीने वल्लभ करीस, ए बुध नहीं मूकुं लगार ॥ १२

जागृत बुद्धि प्रत्युत्तर देती है, ऐसी दूसरी कौन-सी बुद्धि है जो मेरे समकक्ष बन सके ? मैं तो वह बुद्धि हूँ जिसमें बुद्धावतारका अवतरण हुआ है. मैं इसी बुद्धिके द्वारा प्रियतम धनीके साथ प्रेम करूँगी. इसलिए मैं इस बुद्धिको एक क्षणके लिए भी नहीं छोड़ूँगी.

बुधजी रह्या छे आसरे, जे छे बुध अवतार ।
ए बुधजी विना बीजा बापडा, कोण काढे ए सार ॥ १३

इन्द्रावती कहती है, अक्षरकी जागृत बुद्धि (रासके बाद सम्वत् सत्रह सौ पैंतीस हरिद्वारके कुम्भमेलेके अवसर तक) हमारे आश्रयमें रही है जिसे बुद्धावतार कहा जाता है. इस बुद्धिके बिना अन्य सब दयाके पात्र कहे जाते हैं. इसलिए इस जागृत बुद्धिके बिना बेचारे अन्य लोग कैसे सारतत्त्व निकालेंगे ?

सार काढे सुध करीने, वाणी वेहद गाय ।
धन अवतार ते बुध तणो, जे रह्यो आवीने पाय ॥ १४

इसने शास्त्र पुराणोंके सार तत्त्वका निरूपण कर उनकी सुधि देते हुए बेहद वाणीका गान (अखण्ड भूमिकाओंका वर्णन) किया. धन्य है अक्षरब्रह्मकी बुद्धिके इस अवतारको, क्योंकि यह (बुद्धि) हमारे सद्गुरु धनीके चरणकमलोंमें आश्रय लेकर रही थी.

ते नहीं वैकुंठनाथने, जे रस बुध अवतार ।
चरण ग्रह्यां वालाजी तणां, कांई ए निध पाम्यो सार ॥ १५

वैकुण्ठके स्वामी भगवान विष्णुको भी वह ब्रह्मानन्द रस अप्राप्य है जिसकी प्राप्ति अक्षरकी जागृत बुद्धिको बुद्धावतारके रूपमें हुई है. इसने प्रियतम धनीके चरण कमल ग्रहण किए है, इसलिए उसे ऐसे साररूपी धनकी प्राप्ति हुई.

सार पामे सुख उपनुं, धन धन ए अवतार ।
आज लगे ब्रह्मांड मांहें, कोई एम न पाम्यो पार ॥ १६

तारतम निधि प्राप्त होने पर बुद्धजीको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ. अक्षरकी जागृत बुद्धिका यह अवतार धन्य है. आज तक ब्रह्माण्डमें कोई भी इस प्रकार परब्रह्मको प्राप्त नहीं कर सका है.

ए अवतारनी उपमा, कांई लीला अखंड थासे ।
वचन एहना विधे विधे, कांई वाणी ब्रह्मांड गासे ॥ १७

इस बुद्धावतारकी उपमा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसके द्वारा जागनी लीला (तीसरा ब्रह्माण्ड) अखण्ड होगी और ब्रह्माण्डके प्राणी विभिन्न प्रकारसे इसके वचन गाएँगे.

हवे रे श्रवणां कहुं हुं तुंने, तुंने धणिए कह्यां वचन ।
कां न लीधां तें वचन वचिखिण, फिट फिट भूंडा करन ॥ १८

हे कान ! अब मैं तुझे कहती हूँ जब धामधनीने तुझे वह वाणी सुनाई तो तूने चतुराईसे उन वचनोंको क्यों ग्रहण नहीं किया ? इसलिए हे दुष्ट कान ! तुझे धिक्कार है.

मंडाण तुझ उपर रे श्रवणां, लेवाय तारे बल ।
धणिए धन रेढतां नव जोयुं, नेठ कान थया निबल ॥ १९

हे कान ! मेरा मुख्य आशय तेरे ऊपर ही आधारित है. तेरी श्रवण शक्तिके कारण ही सब सुनाई देता है. धामधनीने इस अखण्ड ज्ञानको बहानेमें किसी भी प्रकारकी कमी नहीं रखी परन्तु हे कान ! तुम सचमुच निर्बल हो गए हो.

हवे श्रवणां तुं संभार आपोपुं, थाय वचिखिण वीर ।
वाणी जे वल्लभतणी, ग्रहेजे द्रढ करी धीर ॥ २०

हे श्रवण ! अब तुम अपने आपको सम्हालो. समझदार और बलवान बन जाओ. धामधनीकी अखण्ड वाणीको दृढ़ता और धैर्यके साथ ग्रहण करो.

विध विधनां वचन सुणियाजी, श्रवणां कहे संभारी ।
जे मनोरथ हता मारा जीवने, ते पूरी वाले आस अमारी ॥ २१

कान कहते हैं, हमने धामधनीकी वाणी विभिन्न प्रकारसे सावधानी पूर्वक सुनी है. हमारे हृदयमें जो इच्छाएँ थी उन सबको धामधनीने पूर्ण कर दिये.

हवे सुणीस हुं जोपे करी, नव मूकुं एक वचन ।
ए वाणी घणुं हुं वल्लभ करीस, जेम सहु कोई कहे धन धन ॥ २२

अब मैं अच्छी तरह श्रवण करूँगा. एक वचनको भी नहीं छोडूँगा. इस वाणीसे मैं प्रेम करूँगा ताकि सब मुझे धन्य-धन्य कहेंगे.

हवे तुंने हुं कहुं रे निद्रा, तुं नीच निबल निरधार ।
गुण सघला आडी तुं फरी वली, नव लेवा दीधी निध आधार ॥ २३

हे निद्रा ! अब मैं तुझे कह रही हूँ. तू अवश्य नीच और निर्बल बन गई है. सब अंग इन्द्रियोंके लिए तू ही रुकावट बन गई है. तूने प्राणाधार धनीके धन (अखण्ड ज्ञान) को लेने नहीं दिया.

तुं तां केवल माया रूप पापणी, वोल्या लई तें बाथ ।
श्रवणां ए तें सांभलवा न दीधां, आलस बगाई तारे साथ ॥ २४

हे निद्रा ! तू तो मात्र पापिनी मायाका ही स्वरूप हो. सब गुण, अंग, इन्द्रियोंको वशमें कर तूने उन्हें डुबा दिया. कानोंको तूने सुनने न दिया, आलस्य और जम्हाई तेरे साथी हैं.

घारण घणी विध आवी जीवने, जेम मीन वीट्यो मांहें जाल ।
जेणे नेत्रे निध निरखुं निरमल, ते नेत्रे आडी थई पाल ॥ २५

जिस प्रकार मछली जालमें फँस जाती है उसी प्रकार जीवको घोर निद्रा रूपी मायाके मदने अनेक प्रकारसे घेर लिया. जिन आँखोंके द्वारा धनीरूपी पवित्र धन देखना है उनके आगे परदा बना कर हे निद्रा ! तूने आँखकी पलकें गिरा दीं.

फिट फिट भूंडी दुस्ट पापणी, हवे तजुं तुझने निरधार ।
आगे तें अवसर चूकव्यो, हवे निरखुं जीवनो आधार ॥ २६

हे पापी निद्रा ! तुझे वारंवार धिक्कार है. अब मैं अवश्य तेरा त्याग करूँगी. इससे पूर्व भी तूने प्राप्त अवसरको हाथसे खो दिया. परन्तु अब तो मैं मेरे धनी पूर्णब्रह्म परमात्माके दर्शन करूँगी.

आगे निद्रा थई निबल मोसुं, घारण हुती घणी पर ।
हवे तुं जीवने म आवीस ढूकडी, कर संसार मांहें घर ॥ २७

हे निद्रा ! मेरे धनीजीके साथ जानेमें तो तूने अपनी निर्बलता दिखाई. उस समय मायाका नशा मुझ पर छाया हुआ था. अब तू जीवके पास नहीं आना. (उससे दूर रहना.) मायावी संसारमें ही अपना घर बनाना.

निद्रा कहे ज्यारे जीव जाग्यो, त्यारे में केम रहेवाय ।
चरण फल्यां ज्यारे धणीतणां, त्यारे जाऊं छुं लागीने पाय ॥ २८

अब प्रत्युत्तरमें निद्रा कहती है, जब जीवात्मा जागृत अवस्थामें आ जाए तब मैं किस प्रकार रह सकती हूँ ? जब धामधनीके चरणकमल रूपी फल तुम्हें प्राप्त हुआ है तो मैं उन्हें प्रणाम कर विदा ले रही हूँ अर्थात् लौट रही हूँ.

अरुचडी तुं त्यारे आवी, ज्यारे मल्या मुने श्री राज ।
फिट फिट भूंडी उहन अकरमण, तुं सरजी स्याने काज ॥ २९

हे अरुचि गुण ! तू भी उस समय आकर अपना प्रभाव दिखाने लगा, जब मुझे सद्गुरु धनीकी प्राप्ति हुई थी. हे पापी, उलटी, कर्महीन अरुचि ! तेरे इस विपरीत कर्मके लिए तुझे वारंवार धिक्कार है. तू किस कार्यके लिए उत्पन्न हुई है ?

फिट फिट भूंडी तें दा चूकव्यो, हवे करे कांईक तुं बल ।
जीवनजी मलिया जीवने, तुं थाय संसारमां नेहेचल ॥ ३०

हे पापी ! तुझे धिक्कार है, क्योंकि तूने इससे पूर्व प्राप्त अवसर खो दिया. अब तू कुछ बल लगा (प्रयत्न कर). जीवको जीवनाधार धनी मिल चुके हैं, अब तू इस जगतमें स्थिर हो जा.

अरुचडी कहे हुं बलवंती, मुने न लखे कोय ।
छानी थईने आवुं जीवमां, भाजुं ते साजुं नव होय ॥ ३१

अरुचि इसका उत्तर देती है, मैं बलशालिनी हूँ मुझे कोई भी देख नहीं सकता. मैं चुपचाप जीवमें प्रवेश करती हूँ. मैं जिसको एकबार फेंक देती हूँ, वह कभी भी सीधा नहीं हो सकता.

ज्यारे धणी पोते घर संभारे, त्यारे चोरी करे केम चोर ।
हवे अवला मांहेंथी सवलुं करुं, जै बेसुं संसार मांहें जोर ॥ ३२

जब जीव (स्वामी) अपने शरीररूपी घरको सम्हालता है तो चोर (अरुचि) किस प्रकार चोरी कर सकता है. अब मैं टेढ़ापन छोड़कर सीधे मार्ग पर आ गई हूँ (अरुचिसे रुचि उत्पन्न करती हूँ) और स्वयं संसारमें जाकर अपनी सम्पूर्ण शक्तिके साथ निवास करती हूँ.

मुने मारो वल्लभ मल्या रे वालेसरी, जाणुं सेवा कीजे हरकांत ।
तेणे समे आवी ऊभी तुं अकरमण, फिट फिट भूंडी स्वांत ॥ ३३

मुझे मेरे प्रियतम धनी मिल गए हैं, इसलिए मैं हर प्रकारसे उनकी सेवा करूँगी, ऐसा विचार कर रही थी. हे भाग्यहीन ! स्वान्त (धैर्य) ! ऐसे अवसर पर आ कर तू खड़ा हो गया. हे पापी ! इसलिए तुझे भी वारंवार धिक्कार है.

ए निध आवे केम स्वांत कीजे, केम बेसिए करार ।
दोड कीजे सघला अंगसुं, स्वांत कीजे संसार ॥ ३४

धनीरूपी अखण्ड धन प्राप्त होने पर क्यों शान्त होकर बैठा जाए. सब अंगोंको कार्यरत करके दौड़ते-दौड़ते मैं सेवा करूँ और दुनियाँकी ओर धैर्य धारण करूँ.

स्वांत कहे हुं तिहां लगे हुती, जिहां जीवने निद्रा हती जोर ।
हवे जाऊं छुं संसार मांहें, तमे करो धनीसुं कलोल ॥ ३५

धैर्य कहता है, मैं तो तब तक ही था जब तक जीव पर अज्ञानरूपी निद्राका जोर था. अब मैं संसारकी ओरसे मुख मोड़ता हूँ. अब तुम अपने धनीके साथ आनन्द करो.

हवे रे तुंने कहुं लोभ लालची, फिट फिट भूंडा अजाण ।
नव कीधो लोभ खरी निधनो, जेथी अरथ सरे निरवाण ॥ ३६

जीव लोभ-लालच आदि गुणोंसे कहता है कि तुम दुष्ट और अज्ञानी हो, इसलिए तुम्हें धिक्कार है. अखण्ड धनरूपी धामधनीको जाते हुए तूने लोभ नहीं किया, अन्यथा तेरे सब काम सिद्ध हो जाते.

हवे म थासो तमे माया ढूकडा, मारा लोभ लालच बंने जोड ।
लोभ आवो मारा वालाजीमां, जेम करुं रात दिन दोड ॥ ३७

हे लोभ-लालच ! अब तुम दोनों मायाके पास मत जाओ. मेरे प्रियतम धनीको प्राप्त करनेके लिए अब तुम आ जाओ ताकि धनीके पास जानेके लिए मैं दिन रात दौड़ा करूँ.

लोभ लालच कहे स्यो वांक अमारो, जिहां न वले जीवने सार ।
हवे जे तमे कह्युं अमने, ते जो जो केम ग्रहुं छुं आधार ॥ ३८

लोभ और लालच कहते हैं, इसमें हमारा क्या दोष है. जब तक जीवको कुछ भी पता न हो तभी तक हमारा जोर चलता है. अब आपने हमें जो कुछ कहा है, देखना कि हम धामधनीको किस प्रकार प्राप्त कर लेते हैं.

फिट फिट भूंडी त्रस्ना अभागणी, तुं निबल थई निरधार ।
बीजा गुण सघला त्रपत थाय, पण तुंने कोई भावठनां भंडार ॥ ३९

हे अभागिन तृष्णा ! तुझे भी धिक्कार है. तू भी निश्चय ही निर्बल हो गई. अन्य सब गुण सन्तुष्ट हो जाते हैं, परन्तु तुझमें भूखका भण्डार छिपा हुआ है.

हवे तुंने केम काढुं रे त्रस्ना, तोसुं मारे घणुं काम ।
त्रस्ना आवो मारा वालाजीमां, जेम वस करुं धणी श्री धाम ॥ ४०

हे तृष्णा ! अब मैं तुझे किस प्रकार निकालूँ ? तुझसे तो बहुत बड़ा काम करवाना है. अब तू मुझे प्रियतम मिलनके प्रति सहायभूत हो जा ताकि मैं धामधनीको अपने वशमें कर सकूँ.

त्रस्ना कहे हुं केमे न मूकुं, जे आत्माए देखाड्या आधार ।
तमे जै बीजा गुण संभारो, ए हुं नहीं मूकुं निरधार ॥ ४१

तृष्णा उत्तर देती है कि जीवने जिन धामधनीको दिखाया है उन्हें मैं किसी भी तरह नहीं छोड़ूँगी. हे जीव ! अब तुम जाकर अन्य गुण, अंग, इन्द्रियोंको सम्हालो. मैं निश्चित रूपसे धामधनीको कभी भी नहीं छोड़ूँगी.

मोह कहुं सुण वातडी मारी, मुने मल्या ता मारो आधार ।
फिट फिट भूंडा दुरमती, तें तोहे न छाड्यो संसार ॥ ४२

जीव अब मोहसे कहता है, हे मोह ! मेरी इस बातको ध्यानपूर्वक सुनो. मुझे मेरे प्राणाधार धामधनी मिले थे किन्तु हे पापी दुष्टमति मोह ! तुझे धिक्कार है क्योंकि इतना जानते हुए भी तूने संसारकी माया नहीं छोड़ी.

हवे रे आव तुं वालाजीमां, मायासुं करजे विछोह ।
फरी जोगवाई आवी मारा हाथमां, हवे केवो जोध जोइए मारो मोह ॥ ४३

हे मोह ! अब तू धामधनीमें आकर स्थिर हो जा और मायासे अलग हो जा. मेरे हाथमें पुनः यह अवसर आया है अर्थात् सद्गुरु मेरे हृदयमें विराजमान हो गए हैं. अब मेरा मोह कितना महान योद्धा है, यह मुझे देखना है.

मोह कहे मारी वात छे मोटी, मुने जाणे सहु कोय ।
जेणे ठामे हुं बेसुं, तिहांथी अलगो न करी सके कोय ॥ ४४

तब मोह कहता है, मेरी बात तो बड़ी है. (मैं तुम्हें भ्रममें डाल कर मोहग्रस्त कर सकता हूँ) मुझे सब कोई जानते हैं. मैं जिस स्थान पर जाकर बैठ जाता हूँ, वहाँसे मुझे कोई दूर नहीं कर सकता.

जे निध देखाडी तमे मुने, तेने जड थई वलगुं हुं अंध ।
मारी विध तां एक ज छे, बीजी न जाणुं सनंध ॥ ४५

हे जीव ! तुमने मुझे धामधनीरूपी अखण्ड धन दिखाया, इसे मैं अन्धेकी तरह जकड़ लूँ. मेरी यही एक मात्र पद्धति है. अन्य कोई पद्धति मैं नहीं जानता.

हरख सोक तमे थया रे मायाना, फिट फिट अभागी अजाण ।
धणी मले तुं हरख न आव्यो, चाले सोक न आव्यो निरवाण ॥ ४६

हे हर्ष-शोक ! तुम दोनों मायाके बन गए. हे भाग्यहीन मूर्ख ! तुम दोनोंको भी धिक्कार है. धामधनी (सद्गुरु)के मिलने पर भी तुम्हें आनन्द न आया और जब वे धाम सिधार गए तब भी तुम्हें कोई दुःख नहीं हुआ ?

निखर तमे निबलाई घणी कीधी, एवा अंध थया अभागी ।
हवे तमने हुं सुं कहुं, जे जीवे न वार्‌या जागी ॥ ४७

सचमुच तुम निष्ठुर हो और निर्बलता एवं कमजोरीका परिचय देकर ऐसे अन्धे और अभागे बन गए हो. अब मैं तुम्हें क्या कहूँ ? जीवने भी जागृत होकर तुम्हें रोका ही नहीं.

हवे आवो तमे खरी निधमां, आगे चूक्या अवसर ।
एक लीजे लाहो श्रीवालाजीनो, बीजो हरखे जागुं मारे घर ॥ ४८

अब तुम प्रियतम रूपी अखण्ड (सच्ची) निधिकी ओर आ जाओ. इससे पूर्व भी तुमने अवसर खो दिया था. प्रियतम धनीसे मिलनेका एक लाभ तो ले लो. दूसरा लाभ तो हर्ष पूर्वक अपने घर परमधाममें जागृत होकर प्राप्त करेंगे.

हरख कहे हुं सुं करुं, जिहां धणी न लिए खबर ।
सोक कहे जिहां धणी नव कहे, तिहां अमे करुं केही पर ॥ ४९

हर्ष कहता है, मैं भी क्या करूँ ? जब तक मेरा स्वामी (जीव) स्वयं अपने आपको सम्हाल नहीं पाता तो मुझसे क्या होगा ? उसी प्रकार शोक कहता है, जहाँ धनी नहीं कहते वहाँ पर मैं क्या करूँ ?

जोध अमे बंने छऊं बलिया, हवे जो जो अमारी भांत ।
धणी तमे देखाड्या अमने, अमे ते ग्रहुं छुं हरकांत ॥ ५०

हर्ष और शोक कहते हैं कि हम दोनों शक्तिशाली योद्धा हैं. अब हमारी युक्तिको तो देखो. आपने हमें धामधनीका परिचय करवाया. अब हम उन्हें सब प्रकारसे ग्रहण करेंगे.

मद मत्सर अहंमेव अहंकार, तमे दोड कीधी संसार ।
फिट फिट गुण भूंडा एवा बलिया, तमे विछोह पाड्यो मारे आधार ॥ ५१

हे मद, मत्सर और अहमेव अहंकार ! तुम सब इतने अधिक शक्तिशाली होने पर भी वारंवार धिक्कारके पात्र हो, क्योंकि संसारकी ओर दौड़ लगा कर तुमने हमारे और धनीजीके बीच अन्तर बढ़ा कर वियोग करवा दिया है.

तमे त्रणे जोधा एक सम थई, कां नव कीधी समी वात ।
ज्यारे जीवनजी मल्या जीवने, त्यारे तमे कां नव कीधो उलास ॥ ५२

तुम तीनों योद्धाओंने सम्मति साध कर धामधनीके साथ विचार पूर्वक सीधी बात क्यों नहीं की ? जब जीवको जीवनके आधार धामधनी मिले तब तुम उत्साहमें क्यों नहीं आए ?

हवे रे तमे मारे पासे थाओ, मुने वली मल्या मारो आधार ।
बले जुध करजो बुधे करी, जेम छांटो न लागे संसार ॥ ५३

जीव कहता है, अब तुम तीनों मेरे पास आ जाओ. क्योंकि अब मुझे पुनः धामधनी मिल गए हैं. तुम अपनी सम्पूर्ण शक्ति द्वारा मायाके साथ कुशलतापूर्वक लड़ाई करो ताकि मुझे संसारका तनिक भी रंग न लगे.

त्रणे जोधा अमे जोरावर, चालुं एकी वाट ।
वालाजीने ग्रही करीने, जीवने भेलां करी दऊं साथ ॥ ५४

अब ये तीनों कहते हैं, हम तीनों योद्धा बलवान हैं. अब हम तीनों एक ही मार्ग पर चलेंगे. अब प्रियतम धनी वालाजीको ग्रहण कर जीवको उनके साथ मिला देंगे.

हवे एवा जोध सबल तमे बलिया, मल्या मोसुं खोटे भाव ।
जोगवाई गई मारे हाथथी, पण तमे न गया सहेज सुभाव ॥ ५५

हे सहज (सरल) स्वभाव ! तुम इतने बलवान होने पर भी मुझसे कपट भावसे मिले. मानव जीवनका यह सुन्दर अवसर मेरे हाथसे चला गया किन्तु तुम नहीं गए.

मायाने मलीने रे मूरखो, मोसुं थया तमे कूडा ।
फिट फिट भूंडा दुस्ट अभागी, एणी वाते न थया रूडा ॥५६

हे मूर्ख सहज स्वभाव ! तुम मायासे मिलकर मेरे साथ झूठे (कपटी) बन गए. हे दुष्ट अभागी ! तुम्हें धिक्कार है. इतनी सब बातें जानते हुए भी तुमसे कोई अच्छा काम न हो सका.

सहेज सुभाव बंने सरखी जोड, मारा जोध सबल तमे जवान ।
जेहनी गमां तमे थाओ, ते जीते निरवाण ॥५७

हे सहज और स्वभाव ! तुम दोनोंकी जोड़ी समान है. हे मेरे योद्धाओ ! तुम सबल नवयुवक हो जिसके पक्षमें जाकर खड़े रहोगे उसकी जीत अवश्य होगी.

हवे तमने हुं खीजी कहुं छुं, मारा सबल थाजो सुजाण ।
सहेज सुभाव करजो वालाजीसुं वालपण, मा माणजो केहनी आण ॥५८

अब मैं तुम दोनोंको क्रुद्ध हो कर कहता हूँ, तुम सबल और जानकार बन जाओ. प्रियतम धनीके साथ प्रेम करो, अन्य किसीकी आज्ञा माननेकी आवश्यकता ही नहीं है.

सहेज सुभाव बंने अमे बलिया, जो करे कोई कोट उपाय ।
जे अमे वात ग्रहुं जोपे करी, ते केणे नव पाछी थाय ॥५९

सहज और स्वभाव कहते हैं, हम दोनों बलवान हैं. कोई भी चाहे कितने ही उपाय क्यों न करे हम जिसको अच्छी तरहसे पकड़े रहते हैं वह बात बाकी नहीं रहती है अर्थात् अवश्य पूरी होती है.

हवे जो जो तमे जोर अमारो, वालोजी ग्रहुं करी खांत ।
पूरो पास दई रंग चोलनो, पाडुं पटोले भांत ॥६०

वे पुनः कहते हैं, हे जीव ! तुम हमारी शक्तिको देखो. हम लोग चाह पूर्वक प्रियतम धनीको ग्रहण करेंगे और हृदयमें प्रेमरूपी ऐसा गाढ़ लाल रंग लगा देंगे जो पटोरा (रेशमी वस्त्र) की भाँति अमिट हो जाएगा.

ममता तुं मायातणी, निबल थई निरवाण ।
फिट फिट भूंडी दुस्ट पापणी, कीधी मुझने घणी हाण ॥६१

हे ममता ! तू मायाके पक्षमें होकर अवश्य निर्बल हो गई है. हे दुष्ट पापिन ! तुझे वारंवार धिक्कार है. तूने मुझे बड़ी भारी हानि पहुँचाई है.

हवे ममता आव मारा वालाजीमां, बीजो मूक सरव संसार ।
सबल संघातण थाय मुझ पासे, मुने मल्या छे मारो आधार ॥६२

हे ममता ! अब तू मेरे प्रियतम धनीकी ओर आ जा. संसारकी अन्य विडम्बनाओंको त्याग दे, सम्पूर्ण शक्तिके साथ तू मेरे साथ रह जा क्योंकि अब मुझे प्राणाधार धामधनी मिल गए हैं.

हुं संघातण छऊं जो तमारी, तमे लेओ ए निध ।
ए निध अलगी थावा न दऊं, करो कारज तमे सिध ॥६३

ममता इसका प्रत्युत्तर देती है– मैं तुम्हारे साथ ही हूँ. तुम उस अखण्ड निधि (धामधनी) को ग्रहण करो. मैं उनसे तुम्हें अलग होने नहीं दूँगी. अब तुम अपना कार्य पूर्ण रूपेण (सफलतापूर्वक) पार करो.

हवे तुंने हुं कहुं रे कलपना, फिट फिट भूंडी अकरमण ।
फोकटियाणी फजीत तें कीधां, कांई अमने अति घण ॥६४

हे कल्पना ! अब मैं तुझे कहता हूँ. तू अकर्मण्य (आलसी) बन गई है. इसलिए हे पापिन ! तुझे वारंवार धिक्कार है. तूने हमें व्यर्थ ही बहुत परेशान किया.

हवे करमण था तुं आव कलपना, सेवा मांहें कर विचार ।
वालैयो वालाजी मुझने मल्या, लाभ लऊं आवी मांहें संसार ॥६५

हे कल्पना ! अब तू काम करने वाली (स्फूर्ति) बन कर मेरे साथ आ जा और धामधनीकी सेवा और प्रेममें लग जा. प्रियतम सद्गुरु धनी मुझे प्राप्त हो चुके हैं. अब संसारमें आई हुई मैं उनसे लाभ लूँगी.

कहे कलपना ए काम मारो, हुं करुं विधविधना विचार ।
अंग एके नव राखुं पाछुं, सेवानी सेवा दाखुं सार ॥६६

कल्पना कहती है, यह काम तो मेरा है. अब मैं भाँति-भाँतिके विचार करूँगी. मेरे किसी भी अङ्गको सेवा कार्यमें पीछे नहीं रखूँगी. उन सबको सेवा और सेवा करनेकी सार वस्तु (श्रेष्ठ प्रेम) प्रकट कर दिखाऊँगी.

वेर राग बंने जोध जुजवा, साम सामी सिरदार ।
वेर कीधुं तमे वल्लभजीसुं, राग कीधो संसार ॥६७

हे वैर और राग ! तुम दोनों अलग-अलग स्वभावके हो. तुम बलवान हो, एक दूसरेसे बढ़ कर श्रेष्ठ भी बन सकते हो. तुमने धामधनीके साथ वैर भाव रखा और जगतके साथ प्रेम किया.

तमे मोसुं भूंडाई अति कीधी, तमने दऊं कटारी घाय ।
एवो अवसर आव्यो मारा हाथमां, पण तमे भूलव्यो मुने दाय ॥६८

तुमने मेरे साथ अति दुष्टता पूर्ण व्यवहार किया. अब मैं तुम्हें तलवारसे आहत करूँगी. ऐसा सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ था, तुमने उस अवसरको भूला कर खो दिया.

मारे मंडाण छे तम उपर, तमे कां थया मोसुं एम ।
हवे हुंकारी आवो अम पासे, हुं लाभ लऊं वालाजीनो जेम ॥६९

मेरा मुख्य आशय तुम पर टिका हुआ है. तुमने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया ? अब तुम गर्जना करते हुए मेरे पास आओ, ताकि मैं प्रियतम धनीका यथार्थ लाभ ले सकूँ.

जोर करो तमे जोध जुजवा, राग आवो मांहें आधार ।
वेर विधे विधे कठणाइसुं, जई बेसो मांहें संसार ॥७०

तुम दोनों योद्धा अलग-अलग प्रकारसे अपना पराक्रम बताओ. हे राग ! अब तू प्राणाधार धामधनीके प्रेममें लग जा. हे बैर ! अब तू अलग-अलग कठिनाइयोंको साथ लेकर संसारमें जाकर बैठ जा.

वेर कहे स्यो वांक अमारो, जां धणी पोते घर नव राखे ।
अमे आफरवा केम करी ग्रहुं, जां जीव चींधी नव दाखे ॥ ७१

इसके प्रत्युत्तरमें बैर कहता है, इसमें हमारा क्या दोष है ? जबकि स्वामी (जीव) ही स्वयं अपने घरका ख्याल न रखे. जब तक जीव निर्देश न करे तब तक मैं क्षण-क्षणमें बदलने वाले इस गुणको कैसे पकडूँगा ?

राग कहे हुं रूडी पेरे, हलमल करुं आधार ।
जीव धणी वचे अंतर टालुं, तो वखाणजो आ वार ॥ ७२

राग कहता है, अब मैं प्राणाधार धामधनीके साथ अच्छी तरह हिल-मिल कर रहूँगा. जीव तथा धामधनीके बीचके अन्तरको दूर करूँगा. तब तुम हमारे किए हुए कार्यकी प्रशंसा करना.

हवे वेर कहे मारी विध जो जो, केवी कठणाई करुं संसार ।
कोई गुण जो जीवसुं जोर करे, तो उतरी वढुं तरवार ॥ ७३

बैर कहता है, अब मेरी भी रीति देखो ! मैं किस प्रकार संसारके प्रति कठोर बनता हूँ. यदि कोई भी गुण जीवको अपना बल दिखाएगा (विरोध करेगा) तो उसे तुरन्त ही तलवारसे काट डालूँगा.

फिट फिट भूंडा स्वाद कहुं तुंने, मुने मल्याता मीठा आधार ।
एह स्वाद मेलीने सोखिया, तुं स्वाद थयो संसार ॥ ७४

हे स्वाद ! अब मैं तुझे धिक्कारता हूँ, मुझे अमृतरूपी प्रेम रसका पान कराने वाले प्रियतम धनी मिले थे. हे शौकीन स्वाद ! ऐसे दिव्य स्वादको छोड़ कर तू संसारके पञ्च-विषयोंका भोगी बन गया.

हवे रे स्वाद तुं थाय सुहागी, जो जे वल्लभनी मिठास ।
ज्यारे तुं आव्यो ए मांहें, त्यारे कहिए न कर बीजी आस ॥ ७५

हे स्वाद ! अब तू धनीके प्रेम रसका आस्वाद लेकर सुहागी बन जा और धामधनीकी मधुरताको देख. यदि तू धनीके इस मधुर प्रेमका स्वाद चखेगा तो कभी भी दूसरे स्वादकी अपेक्षा नहीं रखेगा.

स्वाद कहे ज्यारे ए सुख लाध्यो, त्यारे अभख थयो मोहजल ।
उवल हतो ते टली गयो, हवे सवलो आव्यो बल ॥७६

स्वाद कहता है, जब मुझे धनीका सुख प्राप्त हुआ तब मोहजलका सुख अभक्ष बन गया. (अर्थात् मायावी सुखोंकी ओर अरुचि पैदा हो गई) मुझमें जो उलटी बुद्धि और बल थे वे मिट गए. अब धामधनीकी ओरसे सीधे प्रेमका बल मिल गया.

हवे रे कहुं तुंने गुणना उतार, तें वल्लभसुं कीधो ब्रोध ।
में तुंने जाण्यो हतो सुहागी, फिट फिट कमल फेरण क्रोध ॥७७

हे क्रोध ! अब मैं तुझे गुणोंको हटाने वाला कहूँगी. तुमने प्रियतम धनीके साथ इर्ष्या की. मैंने तो तुझे भाग्यशाली (सुखको भोगने वाला) माना था परन्तु हृदय कमल पर विपरीत भाव डालने वाले हे क्रोध ! तुझे वारंवार धिक्कार है.

क्रोध में तुंने जाण्यो पोतानो, पण नव सिध्युं तुं मांहेंथी काम ।
फिट फिट भूंडा दुस्ट अभागी, रही मारा हैडा मांहें हाम ॥७८

हे क्रोध ! मैंने तो तुझे अपना ही माना था, परन्तु तुझसे एक भी काम सिद्ध नहीं हुआ. हे दुष्ट अभागी ! तुझे धिक्कार है क्योंकि तेरे कारण मेरे हृदयकी चाह पूरी नहीं हुई (मेरी मनोकामना अधूरी रह गई).

हवे क्रोध कमल फेरी नाख तुं ऊंधो, ऊंधो फेरजे कमल संसारे ।
एहवो अकरमी कां थई बेठो, तेम कर जेम सहु को संभारे ॥७९

हे क्रोध ! अब तू हृदयकमलके उलटे पनको फेर दे. संसारकी ओरसे उलटा कर धनीजीके सम्मुख कर दे. सचमुच तू ऐसा अकर्मण्य हो कर क्यों बैठा है, कुछ ऐसा कर जिससे सब तेरी ही प्रसंशा करें.

क्रोध कहे हुं घणवे जोरावर, पण धणी विना करुं हुं केम ।
हवे जो कोई गुण जीवने चंपावे, तो त्यारे तमे कहेजो मुने एम ॥८०

क्रोध कहता है, मैं अधिक शक्तिशाली हूँ परन्तु अपने स्वामी जीवकी अनुपस्थितिमें मैं क्या करूँ ? अब यदि कोई भी गुण अवरोध डालकर जीवको दबाएगा, तो मुझे इस प्रकार दोषी कहना.

हवे ने कहुं तुंने चाक चकरडा, तुं चढी बेठो जीवने माथे ।
आपोपुं नव ओलख्या अभागी, फोकट फेरव्यो जीव निघाते ॥८१

कुम्हारके चक्रकी भाँति घूमने वाले हे मन ! अब मैं तुझे कह रही हूँ, तू जीवके सिर पर चढ़ बैठा है. हे दुर्भागी ! तू अपने आपको पहचान नहीं सका और अकारण जीवको परेशान करके जन्म मरणके चक्रमें डाल रहा है.

अंध एवो कां थयो रे अभागी, तें नव सुण्यो आटलो पुकार ।
फिट फिट भूंडा फेर न राख्यो, ज्यारे मलिया मुने आधार ॥८२

हे अभागे ! तू ऐसा अन्धा क्यों बन गया है ? तुम्हें सद्गुरु धनीकी इतनी पुकार सुनाई नहीं दी ? हे दुष्ट ! तुझे धिक्कार है. जब मुझे मेरे प्राणाधार सद्गुरु धनी मिले तब भी तूने भवसागरके इस चक्रसे अपना मुख नहीं मोड़ा.

मन समरथ सबल तुं बलियो, तारा वेगनो कीहो कहुं विस्तार ।
सुज सबल मांहें तुं फरतो, आडो ऊभो द्रोड अपार ॥८३

हे मन ! तू समर्थ, शक्तिशाली और बलवान है. तेरे गतिका मैं क्या वर्णन करूँ ? तू स्वतः प्रकाशमान परमधाममें ऊपर नीचे दसों दिशाओंमें प्रत्येक स्थान पर दौड़ लगाता था.

हवे तुं मांहें काम मारे छे अति घणुं, जोसुं तारो जोर मेवार ।
पचवीस पख मांहें तुं फरजे, रखे अधखिण रहे लगार ॥८४

अब मुझे तुझसे बड़ा काम करवाना है. हे पड़ोसी (मन) ! अब तेरी शक्ति देखूँगी. अब तू परमधामके पच्चीस पक्षमें भ्रमण कर और आधे क्षणके लिए भी इस मायामें भ्रमित मत हो.

संकलप विकलप छे तुं मांही, ते तुं कर सेवानी ।
मन उमंग आण तुं अति घणी, श्री धाम धणी मलवानी ॥८५

हे मन ! संकल्प और विकल्प ये दोनों गुण तुझमें हैं. अब तू उनको सेवाकी ओर उन्मुख कर. अपनेमें अति उत्साह भर कर धामधनीको मिलनेकी इच्छा कर.

मन कहे मारी वात छे मोटी, अने सकल विध हुं जाणुं ।
गजा पखे चढी बेसुं माथे, जीवने जोपे वस आणुं ॥८६

मन कहता है, मेरी बात बहुत बड़ी है और मैं सभी ढंग जानता हूँ. हाथी पर सवार महावतकी भाँति मैं जीव पर सवार होकर उसे अपने वशमें कर लेता हूँ.

ज्यारे जीव पोते जाग्रत न थाय, त्यारे करुं केम अमे ।
जोर अमारुं त्यारे चाले, ज्यारे सामा जागी बेसो तमे ॥८७

जब जीव स्वयं जागृत न हो तो मैं क्या कर सकता हूँ. हे जीव ! मेरा बल तभी काम करता है जब तुम जागृत होकर मेरे सामने बैठ जाओ.

हवे पेर जो जो तमे मारी, करुं मारा बलनो विस्तार ।
निध लईने दऊं ततखिण, तो कहेजो गुण सिरदार ॥८८

हे जीव ! अब तुम मेरी रीतिको देखो. मैं अपनी शक्तिका विस्तार करता हूँ. यदि तारतम ज्ञानरूपी अखण्ड धन ले कर तत्काल तुझे दे दूँ तो मुझे सर्वगुणोंका अग्रणी मानना.

कोई जो केलवी जाणे अमने, तो फल लई दऊं ततकाल ।
सेवानी सनंधो ते देखाडुं, जेणे धणी न थाय अलगा कोई काल ॥८९

यदि कोई मुझे प्रयोग करना जान ले तो मैं उसे तुरन्त ही फल दिला सकता हूँ. मैं सेवा शुश्रूषाकी अनेक रीति दिखलाता हूँ, जिससे धनी एक क्षणके लिए भी अलग न हों.

भरम भ्रांत कीधी तमे भूंडी, एम न करे बीजो कोए ।
तारतम अजवाले वालोजी ओलख्या, तमे आडा फरी वल्या तोए ॥९०

हे भ्रम और भ्रान्ति ! तुमने जैसा अधम काम किया है वैसा कोई नहीं करेगा. तारतमके प्रकाशमें सद्गुरु धनीकी पहचान की, फिर भी तुम मेरे लिए अवरोधक बन कर खड़े हो गए.

जो आकार तमारो होत रे अभागी, तो कटका करुं तरवारे ।
पींजी पींजी पुरजा करी, वली वली काढुं हेठल धारे ॥९१

हे दुर्भागी ! यदि तुम्हारा कोई आकार होता तो मैं तलवारसे टुकड़े-टुकड़े

कर देती और उन टुकड़ोंको महीन कर तलवारकी उल्टी धारसे बारीक चूर्ण बना देती.

हवे जोपे थईने जाओ संसार मांहें, ए छे तेवा थाओ तमे ।
जेम अजवाले श्रीवालोजीने ओलखी, एमां मूल जोत देखुं जेम अमे ॥ ९२

अब संसारमें जाकर अच्छी तरह रहो और जैसा संसार है वैसा तुम भी बन जाओ. जिस तारतमके प्रकाशमें मैंने प्रियतमको पहचाना है, अब मैं उसी प्रकाशमें मूल तेज (अपनी परात्मा) को भी देख लूँ.

भरम भ्रांत कहे सांभलो जीवजी, अमने मारो तरवारो ।
कीहे ठिकाणे निद्रा करो, ते आपोपुं कां न संभारो ॥ ९३

तब भ्रम-भ्रान्ति कहते हैं, हे जीव ! सुनो जरा भी संकोच किए बिना मुझे तलवारसे काट डालो, परन्तु तुम किस स्थान पर जाकर अज्ञानरूपी निद्रामें सो रहे हो ? स्वयंको क्यों नहीं सम्हालते ?

जेहनो धणी पोते निध पामे, ते केम सुए करारे ।
आप पोते खबर नव राखे, अने फोकट अमने मारे ॥ ९४

जिसका स्वामी स्वयं अखण्ड धनीकी प्राप्ति कर ले वहाँ वह (सेवक) आरामसे कैसे सो सकेगा ? तुम अपने आपकी सम्हाल नहीं रखते और व्यर्थ ही हमें मार रहे हो (तिरस्कृत कर रहे हो).

ज्यारे तमे जाग्या जोरावर, त्यारे अमे जाऊं छुं संसार ।
भले मल्या धणीजी तमने, हवे करो अजवालुं अपार ॥ ९५

हे जीव ! जब तुम स्वयं जागृत हो जाओगे तभी हम संसारकी ओर जाएँगे. यह अच्छा हुआ कि तुम्हें सद्गुरु धनी मिल गए, अब तुम अखण्ड (अनन्त) ज्ञानका प्रकाश फैलाओ.

फिट फिट लज्या तुं थई लोकिकनी, बीजां बांध्यां कुटमसुं करम ।
धाम धणी मुने तेडवा आव्या, तिहां तुंने न आवी सरम ॥ ९६

हे लज्जा ! तू भी संसारके साथ मिल गई, इसलिए तुझे भी धिक्कार है. तदुपरान्त तू परिवारके कर्मरूपी बन्धनमें बँध गई. धामधनी सद्गुरु हमें बुलाने आए परन्तु उस समय तुझे शर्म नहीं आई.

दुस्ट पापणी तें सुं कीधुं, आगल करीस हुं केम ।
केही पेरे हुं मोंहो उपाडीस, मारा धणी आगल न आवी सरम ॥ ९७

हे दुष्ट पापिन ! तुमने क्या किया ? अब आगे मैं क्या करूँगी (धनीजीको क्या उत्तर दूँगी)? धामधनीके समक्ष मेरा मस्तक कैसे उठ पाएगा ? तेरे कारण मुझे धनीके समक्ष शर्मका अनुभव नहीं होगा ?

हवे रे सरमडी कहुं हुं तुंने, तुं जोजे मूल सगाई ।
आगे अवसर मोटो चूकी, हवे फरी आवी जोगवाई ॥ ९८

हे शर्म ! अब मैं तुझे कहती हूँ, तू परमधामके मूल सम्बन्धको देख. पहले भी तूने बड़ा मौका गँवा दिया. अब पुनः जागृत होनेका सुअवसर प्राप्त हुआ है.

लज्या कहे हुं घणुंए भूली, हवे वालाजीसुं मुख केम मेलुं ।
दुस्तर उपर आग ज उठो, जेणे भूलवी मुने पहेलुं ॥ ९९

लज्जा कहती है, मैंने बड़ी भूल की है. अब मैं प्रियतम धनीकी ओर कैसे देख सकूँगी ? जिस दुष्टने इससे पूर्व मुझे मार्गभ्रष्ट किया वह जल कर खाक हो जाए.

फिट फिट भूंडी आसा तुं थई सागरनी, धणी मेल्या विसारी ।
जीवने सफल जे हाथ लाग्युं, भूंडी ते तुं बेठी हारी ॥ १००

हे आशा ! तुझे वारंवार धिक्कार है. क्योंकि तू भी मोहसागरकी बन गई. तूने धनीके साथ मिलाप तो किया परन्तु बादमें उन्हें भूलकर छोड़ दिया. इस प्रकार जीवकी सफलताके आधार हस्तगत हुए थे, हे पापिन ! तू उन्हें खो बैठी.

एह फल तें मूकी करीने, नीच वस्त कां लीधी ।
ए दोष सरवे जीवने बेठो, तुंने सिखामण नव दीधी ॥ १०१

सद्गुरु धनी द्वारा प्रदत्त उस अखण्ड धनको छोड़ कर इन सांसारिक सुखों जैसी तुच्छ वस्तुओंको तूने क्यों ग्रहण किया ? इन सबका दोष जीवको लग गया है, क्योंकि तूने (समय पर) उपदेश नहीं दिया.

हवे आस धणीनी घणी मोटी, थाइस हुं विचारी ।
मणां नहीं राखुं कोई आसडी, हवे लेजो सुफल संभारी ॥ १०२

अब धनीजीको प्राप्त करनेकी बड़ी आशा ले कर मैं विचार मग्न रहूँगी. किसी भी प्रकारकी इच्छाकी कमी नहीं रखूँगी. इसलिए हे जीव ! जीवनको सफल बनानेके लिए अपनी सम्हाल रखो.

अचेत गुण तुं आव्यो अकरमी, धाख थावा नव दीधी ।
जीवने जे निध हाथ लागी, भूंडा तें ते जूई कीधी ॥ १०३

हे अकर्मण्य अचेतन गुण ! तेरा आगमन भी हो चुका है. तूने हमारी इच्छा पूरी होने नहीं दी. मेरे जीवको सद्गुरुरूपी धन प्राप्त हुआ था. हे पापी ! तूने उसे उनसे विमुख कर दिया.

ए निधनी केही वात करुं, भूंडा फिट फिट गुण अचेत ।
तुझ बेठा तिवरता न आवी, नहीं तो ए निध हुं लेत ॥ १०४

इस सद्गुरुरूपी धनकी मैं क्या बात करूँ ? हे अचेतन गुण ! तुझे धिक्कार है. तेरे होते हुए तीव्रताकी भावना पैदा नहीं हुई अन्यथा मैं सद्गुरुरूपी अखण्ड धन ग्रहण कर लेती.

अचेत कहे हुं सागरनो, ते जाऊं छुं सागर मांहें ।
निध तमारी तमे पामो, ग्रहुं तिवरता बांहें ॥ १०५

अचेतन गुण प्रत्युत्तरमें कहता है, मैं तो मोहजलका हूँ. इसलिए सांसारिक मायाकी ओर ही जा रहा हूँ. तुम अपना धन प्राप्त कर लो. मैं तो तीव्रताकी बाँह पकड़ता हूँ.

फिट फिट भूंडा गुण कहुं तिवरता, मुने मल्याता धामधणी ।
एवो अवसर कोई निगमे, ते कीधी मोसुं भूंडी घणी ॥ १०६

जीव कहता है, हे तीव्रता गुण ! तुझे भी वारंवार धिक्कार है. मुझे धामधनी प्राप्त हुए थे. ऐसा सुन्दर अवसर क्या कोई अपने हाथोंसे जाने देगा ? हे पापी ! तूने मेरे साथ अति नीचताका व्यवहार किया.

वली अवसर आव्यो छे हाथमां, हवे तिवरता तुं संभारे ।
रात दिवस तुं जीवने दोडावे, एक पाव पल मा विसारे ॥ १०७

अब पुनः वही (धनी मिलनका) सुअवसर प्राप्त हुआ है. इसलिए हे तीव्रता ! अब तू सचेत हो जा. रात दिन जीवको धनीकी ओर दौड़ाती रहना, ताकि वह एक क्षणके लिए भी धनीजीको नहीं भूले.

तिवरता कहे हुं बलवंती, जीवने दऊं हुं जोर ।
वस करी आपुं धणी तमारो, करुं पाधरा दोर ॥ १०८

तीव्रता कहती है, यह सच है कि मैं बलवती हूँ. जीवकी सहायताके लिए मैं अपना बल लगा देती हूँ. तुम्हारे धनीजीको वश करनेके लिए मैं जीवको सीधा कर देती हूँ.

सील संतोष हवे आवजो ढूकडा, बांधो सागर आडी पाल ।
गुण सघला कहेसो तेम करसे, नथी कांई बीजो जंजाल ॥ १०९

हे शील-सन्तोष गुण ! अब तुम मेरे पास आ जाओ. इस मोह सागरके चारों तरफ पाल (बाँध) बाँध लो. तुम जैसा कहोगे सारे गुण वैसा ही करेंगे. अब अन्य कोई जंजाल नहीं है.

सील कहे संतोष सुणो, आपणने कीधां छे पाल ।
परवत ताणे पूर सागरनां, मांहें वेहेवट छे नताल ॥ ११०

शील गुण कहता है, हे सन्तोष ! तू सुन. हमें मोह सागर पर बाँध (पाल) बनाना है परन्तु यह मोहजलका प्रवाह इतना शक्तिशाली है कि बड़े पर्वतको भी बहा सकता है.

आमलिया अलेखे दीसे, लहेरो मेर समान ।
मछ जोरावर मांहें छे मोटा, पाल करवी एणे ठाम ॥ १११

इसमें विभिन्न प्रकारके (सत, रज, तम आदिके) भँवर दिखाई देते हैं, तथा (काम क्रोधादि) लहरें भी मेरु पर्वतके समान ऊँची ऊठकर उछल रहीं हैं. (इच्छा, तृष्णा आदि) बड़े-बड़े मगरमच्छ तैर रहे हैं. ऐसे स्थान पर हमें बाँध बनाना है.

हवे बांधिए पाल खरो करी पाइयो, जेम खसे नहीं लगार ।
पछे जल पोते ज्यारे ठाम ग्रहेसे, त्यारे सामुं सोभा थाय अपार ॥ ११२

अब मजबूत नींव डाल कर बाँध बनाना है ताकि वह तनिक भी नहीं हिले. समय बीतने पर जब माया-मोहरूपी जल अपने स्थान पर पहुँच कर रुक जाएगा तो हम सबकी शोभा बढ़ेगी.

हवे ए पाल अमे बांधसुं जीवजी, पण तमे थाओ ततपर ।
आ अवसर बीजी वार नहीं आवे, सोभा साथ मांहें ल्यो घर ॥ ११३

शील सन्तोष कहते हैं, हे जीव ! अब हम इस बाँधको मजबूतीसे बना रहे हैं. अब तुम तैयार हो जाओ, ऐसा अवसर फिर मिलनेवाला नहीं है. इसलिए परमधाममें तथा यहाँ सुन्दरसाथके बीच शोभा प्राप्त कर लो.

हवे जाग जीव तुं जोपे बलिया, तुंने केही दऊं गाल ।
में तुंने घणुंए फिटकार्‌यो, पण चूक्यो अवसर निनाल ॥ ११४

हे बलशाली जीव ! अब तू अच्छी तरहसे जागृत हो जा. तुझे कटु शब्द कैसे कहूँ ? मैंने तुझे बहुत धिक्कारा है, फिर भी तू निश्चय ही अवसर चूक गया.

कठणाई में जोई जीव तारी, अति खरो निखर अपार ।
धणी धमी धमीने थाक्या, पण नेठ नव गलियो निरधार ॥ ११५

हे जीव ! मैंने तेरी कठिनाइयोंको देखा, तू सचमुच अत्यन्त कठोर है. धामधनी समझा- समझा कर थक गए, किन्तु तू तनिक भी नहीं पिघला.

जीवनो प्रबोध

सांभल जीव कहुं वरतांत, तुंने एक दऊं द्रस्टांत ।
ते तुं सांभल एके चित, तुंने कहुं छुं करीने हित ॥ १

हे जीव ! सुन, अब तुझे एक दृष्टान्त देकर वृत्तान्त सुनाती हूँ. एकाग्र चित्त होकर सुन. यह सब तुझे प्रेम पूर्वक तेरी भलाईके लिए कहती हूँ.

परीछते एम पूछ्यो प्रस्न सुकजी मुने कहो वचन ।
चौद भवन मांहें मोटो जेह, मुझने उतर आपो तेह ॥ २

राजा परीक्षितने इस प्रकार प्रश्न किया था. हे शुकदेवजी ! चौदह लोकोंमें सर्वश्रेष्ठ कौन है ? मुझे इस प्रश्नका उत्तर दीजिए.

त्यारे सुकजी एम बोल्या प्रमाण, ग्रहेजे वचन उतम करी जाण ।
चौद भवनमां मोटो तेह, मोटी मतनो धणी छे जेह ॥ ३

तब शुकदेव मुनिने उन्हें कहा, मेरे उत्तम वचनोंको सुनकर ग्रहण करो. चौदह लोकोंमें सर्वश्रेष्ठ वह है जो महान् बुद्धिका धनी है.

वली परीछते पूछ्युं एम, जे मोटी मत ते जाणिए केम ।
मोटी मतनो कहुं विचार, ग्रहेजे परीछत जाणी सार ॥ ४

पुनः राजा परीक्षितने पूछा, महान् बुद्धि वालेको कैसे जाना जा सकता है ? शुकदेवजीने प्रत्युत्तरमें कहा, मैं तुझे महान् बुद्धि धारककी पहचान दे रहा हूँ. हे परीक्षित ! उसे सार तत्त्व समझकर ग्रहण करो.

मोटी मत ते कहिए एम, जेहना जीवने वल्लभ श्रीक्रस्न ।
मतनी मत तां ए छे सार, वली बीजी मतनो कहुं विचार ॥ ५

महान् बुद्धि उसकी कही जाती है जिस जीवको अक्षरातीत श्रीकृष्ण प्रिय लगें. बुद्धियोंमें भी उत्तम बुद्धिका सार यही है. अब अन्य बुद्धियोंका तत्त्व प्रकट कर रहा हूँ.

एह विना जे बीजी मत, ते तुं सर्वे जाणे कुमत ।
कुमत ते केही कहेवाय, निछाराथी नीची थाय ॥ ६

अक्षरातीत श्रीकृष्णमें प्रेम रखने वाली बुद्धिके अतिरिक्त जितनी भी अन्य मायावी बुद्धियाँ हैं उन्हें तुम कुबुद्धि समझना. कुबुद्धि उसे कहा जाता है जो सर्वाधिक नीच और हलके विचार वाली हो.

एवडो तेहनो स्यो वरतांत, तेहनुं कांइक कहुं द्रस्टांत ।
सांभल परीछत कहुं वली तेह, एक मोटी मतनो धणी छे जेह ॥ ७

इसका इतना बड़ा विवरण क्या है ? इस सन्दर्भमें दृष्टान्त देकर कह रहा

हूँ. हे परीक्षित ! जो बड़ी मतका धनी है उसकी बात सुनो.

मोटी मत वल्लभ धणी करे, ते भवसागर खिण मांहें तरे ।
तेहने आडो न आवे संसार, ते नेहेचल सुख पामे करार ॥ ८

विशाल बुद्धि प्राणवल्लभ श्रीकृष्ण परमात्माको सर्वस्व मानती हैं ऐसी बुद्धि वाले लोग आधे क्षणमें ही भवसागर पार हो जाते हैं. उनके लिए यह मायावी संसार बाधक नहीं बनता. वे निश्चित रूपसे अखण्ड सुख प्राप्त करते हैं.

ओली कुमत कहिए तेणे सुं थाए, अंध कूप पड्यो पचे मांहे ।
ए सुकजीनां कह्यां वचन, जीव विमासी जुए जोपे मन ॥ ९

जिसे कुमति कहा है उसका क्या होगा ? वह तो अन्धकूप (जन्म-मरणके चक्र) में गिर कर वहीं पड़ा रहेगा. हे जीव ! ये वचन भी शुकदेव मुनिके हैं जिन्हें विचार पूर्वक (मन लगाकर) सुनना चाहिए.

विमासणनी नहीं ए वात, तारो निरमाण बांध्यो स्वांसो स्वांस ।
तेहनो पण नथी विस्वास, जे केटला तुं लईस ए स्वांस ॥१०

उपर्युक्त कथन मात्र विचार करनेके लिए ही नहीं है (उस पर तुरन्त ही अमल होना चाहिए). इसलिए हे जीव ! तेरे शरीरका निर्माण तो श्वासोच्छ्वासके साथ बँधा हुआ है. उन श्वासोंका भी भरोसा नहीं है तू ऐसे कितने श्वास ले पाएगा.

ए खिणमां कई वार आवे जाय, त्यारे कात्युं वीछ्युं कपासिया थाय ।
ते माटे सुणजे रे जीव सही, मोटी मत में तुझने कही ॥११

एक क्षणमें कई बार श्वासोंका आवागमन होता है. उनका सदुपयोग न किया जाए तो वे व्यर्थ ही चले जाएँगे. जिस प्रकार पींजी हुई रुईको काता न जाए तो पुनः रुई ही हो जाएगी. (इसी तरह यह मनुष्य जीवन चौरासी लाख योनियोंमें घूम फिर कर प्राप्त हुआ है. इसके एक-एक श्वासका सदुपयोग करके यदि भजन, भक्ति न करें तो पुनः चौरासीके चक्रमें घूमना पड़ेगा.) इसलिए हे जीव ! तू प्रेम पूर्वक मेरी बात सुन मैंने तुझे विशाल बुद्धिका विवेचन समझाया है.

जे जोगवाई छे तारे हाथ, ते आणी जिभ्याए केही कहुं वात ।
आटला दिवस तें जाण्युं नव जाण, मूरख करे तेम कीधुं अजाण ॥ १२

यह मनुष्य जीवन तुझे प्राप्त हुआ है इस जिह्वासे इसकी प्रशंसा कैसे करूँ ? इतने दिनों तक इसका महत्त्व तुझे समझाया है इसको जानने पर भी तू अनजान बन कर मूर्खकी भाँति कार्य करता रहा.

हवे ए वचन विचारजे रही, सुकजी पाए साख पुरावी सही ।
हवे एक वचन कहुं सुणजे जीव सही, वालाजीनां चरण तुं ग्रहेजे रही ॥ १३

हे जीव ! तू अब इन वचनों पर ठीकसे विचार कर. शुकदेवजी इसके साक्षी बने हैं. अब मैं अन्तमें एक बात कहती हूँ, उसे सुन. तू प्रियतम धनी श्रीकृष्णके चरणकमलोंको पकड़े रहना.

सुणजे वली धणीनां वचन, वाणी कहे ते ग्रहेजे मन ।
रखे पाणीवल विहिलो थाय, आवो नहीं लाभे रे दाय ॥ १४

तू पुनः धामधनी सद्गुरुके वचन सुन और एकाग्र चित्त होकर उनकी उपदेशमयी वाणीको ग्रहण कर. एक क्षणके लिए भी तू धनीजीसे अलग नहीं रहना. क्योंकि ऐसा समय तुझे पुनः प्राप्त नहीं होगा.

भरम भांजवा कह्यां वचन, मोटी मत ग्रहे जेम थाय धन धन ।
हवे ओलखजे जोपे करी, भरम भ्रांत मूको परहरी ॥ १५

हे जीव ! तेरे भ्रमको तोड़नेके लिए मैंने ये वचन कहे हैं. तू विशाल बुद्धिको धारण कर धन्य बन. अब अच्छी तरह पहचान कर भ्रम और भ्रान्तिको छोड़ दे.

मुख मांहेंथी वचन कह्यां तो सुं, जो हजी न छेक निकलियो तुं ।
आगे किव मांडी छे अनेक, तें पण कांइक कीधी विसेक ॥ १६

जब तक अन्तरात्मामें ये वचन नहीं पहुँचें तब तक केवल मुखके कहने मात्रसे क्या होगा ? वैसे तो इससे पूर्व भक्तजनोंने भी परमात्मा और विशाल बुद्धिके विषयमें अनेक कविताएँ लिखीं हैं, परन्तु इन्द्रावती द्वारा निर्मित कृतियाँ अक्षरातीतका वर्णन होनेसे अन्यसे विशिष्ट हैं.

पण साचो तो जो समझे जीव, तो वाणी भले मुखथी कही पीव ।
ए वाणी नथी कांई किवना जेम, मारा जीवने खीझवा कह्या में एम ॥ १७

परन्तु धामधनीके श्रीमुखसे विनिसृत इस वाणीकी सार्थकता तो तभी मानी जाएगी जब जीव उसे समझ कर ग्रहण करे. यह वाणी किसी कविकी कल्पनाकी भाँति नहीं है. मेरे जीवको उत्तेजित करनेके लिए मैंने इस प्रकार कहा है.

जीव छे मारो अति सुजाण, ते धणीनां चरण नहीं मूके निरवाण ।
पण साचो तो जो करे प्रकास, जोत जई लागी आकास ॥ १८

मेरा जीव अत्यन्त चतुर और प्रवीण है. निश्चित रूपसे वह धनीजीके चरणोंको कभी नहीं छोड़ेगा. किन्तु वह सत्य तभी होगा जब धनीजीके वचनोंको प्रकाशित करे, ताकि इस ज्ञानकी अखण्ड ज्योति आकाश तक पहुँच कर उससे भी आगे जाए.

आणी जोगवाईए तो एम थाए, चौद भवनमां जोत न समाए ।
एम अमे न करुं तो बीजो कोण करे, धणी अमारे काजे बीजी दाण देह धरे॥ १९

इस शरीरके द्वारा ज्ञानकी ऐसी ज्योति प्रकट हुई कि उसका प्रकाश चौदह लोकोंमें भी नहीं समा सकता. यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो दूसरा कौन करेगा ? धामधनी सद्गुरुने हमारे लिए दूसरी बार देह धारण किया है.

एणी केमे नव थाए सरम, एणी द्रस्टे केम न थाए नरम ।
जीव छे मारो खरी वस्त, ते कां नव करे अजवालुं अत ॥ २०

इन्द्रावती कहती है, इस जीवमें किसी भी प्रकारकी लज्जा नहीं है. वह सद्गुरुके दर्शनमात्रसे विनम्र क्यों नहीं हो जाता ? वस्तुतः मेरा जीव तो (परमधामका होनेसे) विशेष श्रेष्ठ है. अतः वह तारतम ज्ञानका अखण्ड प्रकाश क्यों नहीं फैलाएगा ?

श्री सुंदरबाईने चरण ज थकी, वली मोसुं गुण कीधा बाई गुणवंती ।
मारे माथे दया रतनबाईनी घणी, एहनी कृपाए जोपे ओलखीस धणी ॥ २१

सद्गुरुके चरणोंकी अनुकम्पा, सद्गुरुसे मिलाप करवाकर श्री गोवर्धन ठाकुर

(गुणवन्तीबाईकी वासना) द्वारा मेरे ऊपर किया गया उपकार तथा रतनबाई (विहारीजी) की विशेष अनुकम्पाके कारण श्रीमुखवाणी अवतरित हुई. इस प्रकार इन सबकी कृपा द्वारा मैंने धामधनीको पहचाना.

एहनी दयाए जोत एम करीस, चरण धणीनां चितमां धरीस ।
इन्द्रावती चरणे लागे आधार, सुफल फेरो करुं आ वार ॥ २२

इस प्रकार इन सबकी दयाके कारण मेरे हृदयमें अखण्ड ज्ञानकी ज्योति प्रज्वलित करूँगी और धामधनीके चरण कमलोंको अपने हृदयमें रखूँगी. इन्द्रावती धामधनीके चरणोंमें प्रणाम कर इस मनुष्य जीवनको सफल बनाती है.

हवे द्रष्ट उघाडी जो पोतानी, निरख धणी श्री धाम ।
प्रेमल करी पोते आप संभारी, बांध गोली प्रेम काम ॥ १

हे जीव ! तू अपने अन्तरके नेत्रोंको खोलकर धामधनीके दर्शन कर. अपने आपको सम्हाल कर धनीजीके साथ प्रेम कर तथा प्रेमरूपी गोली बाँध ले (इन्द्रियोंको एकाग्र कर).

प्रेमतणी गोली बांधीने, अमल करुं जो जो छाक ।
चौद भवन मांहें किरण कुलांभी, फोडी जाऊं ब्रह्मांड पीउ पास ॥ २

मैं चाहती हूँ कि प्रेमकी गोली बनाकर नित्य नियमपूर्वक प्रेममें मस्त रहनेकी आदत डालूँ. चौदह लोकमें तारतमका प्रकाश फैला कर, उससे आगे इस ब्रह्माण्डको फोड़ कर धामधनीके पास पहुँच जाऊँ.

हवे वाचा मुख बोले तुं वाणी, करजे हांस विलास ।
श्रवणां तुं संभार तहारी, सुण धणीनो प्रकास ॥ ३

हे वाचा ! अब तू धनीजीके गुणोंका ही उच्चारण कर और उसीमें मग्न हो कर आनन्द विनोद कर. हे श्रवण ! तू अपने आपको सावधान करके तारतम ज्ञानके रूपमें प्रकट हुए धनीजीके वचनोंका श्रवण कर.

जीवनां अंग कहे परियाणी, तमे धणी देखाड्या जेह ।
प्रले ब्रह्मांड जो थाए प्रगट, पण अमे तोहे न मूकुं खिण एह ॥ ४

जीवके गुण-अंग-इन्द्रियाँ सब परस्पर मन्त्रणा करके कहते हैं, तुमने हमें धामधनीकी पहचान करवाई. यदि इस ब्रह्माण्डका नाश भी हो जाए फिर भी हम एक क्षणके लिए भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे.

हवे जाग जीव सावचेत थई, वालो ओलख आंख उघाडी ।
कर अस्तुत विनती वल्लभसुं, नाख अंतर पट टाली ॥ ५

हे जीव ! अब तू सावधान होकर जागृत हो जा. अपनी अन्तर्दृष्टि खोल कर प्रियतम धनीको पहचान ले. धनीजीकी स्तुति कर, और हृदयके परदेको हटा दे.

आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, में कीधुं अधमनुं काम ।
महाचंडाल अकरमी अबूझ, में न ओलख्या धणी श्री धाम ॥ ६

हे प्रियतम ! इतने दिनों तक मैंने आपको नहीं पहचाना. इस तरह मैंने महाचण्डाल तथा कुकर्मीकी भाँति अधम कार्य किया.

धिक धिक पडो मारा जीव अभागी, धिक धिक पडो चतुराई ।
धिक धिक पडो मारा गुण सघलाने, जेणे नव जाणी मूल सगाई ॥ ७

हे मेरे अभागी जीव ! तुझे धिक्कार है. मेरी बुद्धि और चातुर्यको भी धिक्कार है. मेरे सब गुणोंको भी वारंवार धिक्कार है, जिन्होंने मूल सम्बन्धकी पहचान नहीं की.

धिक धिक पडो ते तेज बलने, धिक धिक पडो रूप रंग ।
धिक धिक पडो ते गिनानने, जेहने नव लाध्यो परसंग ॥ ८

मेरे तेज, बल, रूप, रंगको भी धिक्कार है. उस ज्ञानको भी धिक्कार है जिसने कभी भी मूल सम्बन्धको प्राप्त नहीं किया.

धिक धिक पडो मारी पांचो इन्द्री, धिक धिक पडो मारी देह ।
श्री धाम धणी मूकी करी, संसारसुं कीधो सनेह ॥ ९

मेरी पाँचों इन्द्रियोंको तथा देहको भी धिक्कार है. इन सबने धामधनीको छोड़ कर संसारकी झूठी मायासे प्रेम किया.

धिक धिक पडो मारा सर्वा अंगने, जे न आव्या धणीने काम ।
में ओलखी नव वावरया, मारा धणी सुन्दर श्री धाम ॥ १०

मेरे सब अंगोंको धिक्कार है, जो धामधनीके किसी भी काममें नहीं आए. मैंने धामधनीको पहचान कर उनके सुन्दर स्वरूपके प्रति इन सबको प्रेमपूर्वक समर्पित नहीं किया.

तमे तमारा गुण नव मूक्या, में कीधी घणी दुष्टाई ।
हुं महा निबल अति नीच थई, पण तमे नव मूकी मूल सगाई ॥ ११

इन्द्रावती कहती है, हे धनीजी ! आपने तो अपना उपकारी गुण नहीं छोड़ा, किन्तु मैंने तो अति दुष्टता की है. मैं अत्यन्त निर्बल और नीच बन गई, परन्तु आपने अपने परमधामके मूल सम्बन्धको नहीं त्यागा.

प्रकरण २२ चौपाई ५५८

हवे वारी जाऊं वनराय वल्लभनी, जेहनी सकोमल छाया ।
गुण जो जो तमे ए वन ओखदी, दीठडे दूर जाए माया ॥ १

इन्द्रावती कहती है, अब मैं वनराज शमी वृक्ष-खीजड़ाके वृक्ष (जिसको प्रियतम सद्गुरुने अपने हाथोंसे बोया था एवं जो अभी भी श्री ५ नवतनपुरीधामके निज मन्दिरके साथ हरे-भरे रूपमें सुशोभित है) पर अपने आपको न्योछावर करती हूँ, जिसकी छाया अत्यन्त शीतल एवं कोमल है. हे सुन्दरसाथजी ! तुम उस वृक्षके गुणको देखो, वह औषधि रूप है. उसके दर्शन मात्रसे माया दूर भाग जाती है.

हवे वारणां लऊं आंगणियुं वेलुं, जिहां बेसो छो संझा समे साथ ।
परियाण करो धाम चालवा, घर वाटडी देखाडो प्राणनाथ ॥ २

मैं आँगनकी उस रेत पर अपने आपको न्योछावर करनेके लिए तत्पर हूँ, जहाँ सन्ध्याके समय सद्गुरु सुन्दरसाथके साथ बैठते थे. सब मिल कर परमधाम जानेके लिए चर्चा-विचारणा करते थे एवं प्राणनाथ सद्गुरु अखण्ड परमधाम जानेका मार्ग बताते थे.

वली वारणा लऊं आंगणियां, अने आसपास सहु साज ।
जिहां बेसो उठो ऊभा रहो, वल्लभ मारा श्री राज ॥ ३

पुनः मैं उस आँगन और आसपासकी सब वस्तुओंके प्रति समर्पित होती

हूँ, जहाँ प्राणवल्लभ सद्गुरु धनीका बैठना-उठना होता रहता था.

घणी विधे हुं घोली घोली जाऊं, मंदिर ने वली द्वार ।
भामणां लऊं ते भोम तणां, जिहां बेसो छो मारा आधार ॥ ४

मैं अनेक प्रकारसे उन मन्दिर और दरवाजे पर समर्पित होती हूँ. उस भूमि पर अपने आपको न्योछावर करती हूँ, जहाँ मेरे धामधनी बैठते थे.

वारी जाऊं पलंग पाटी ओसीसां, तलाई सिरख ओछाड ।
वली वारी जाऊं चंद्रवा, जिहां पोढो सुख सिज्याए ॥ ५

उस पलंग, पाटी, तकिया, गद्दा-चादर आदि पर अपने आपको समर्पित करती हूँ. सद्गुरु धनीके पलंगके ऊपर टँगे हुए चँदवा पर पुनः समर्पित होती हूँ जिस पलंग पर सद्गुरु धनी सुख पूर्वक शयन करते थे.

हवे घोली घोली जाऊं झीला ने चाकला, घोली जाऊं मंदिरना थंभ ।
जेणे थंभे करे धणी पोताने, जुगते वाल्या बंध ॥ ६

अब मैं गलीचा, छोटे छोटे आसन, मन्दिरके स्थम्भ पर भी न्योछावर होती हूँ. इन स्थम्भों पर धामधनीने स्वयं अपने हाथोंसे युक्ति पूर्वक बन्धन बाँधे थे.

[विक्रम सम्वत् सोलह सौ सतासीके कार्तिक महीनेमें सद्गुरु महाराजने अपने कर कमलोंसे श्री ५ नवतनपुरीधामकी स्थापना की थी. इन चौपाइयोंके द्वारा श्री प्राणनाथजी अपने श्रीमुखसे इसी धामकी महिमाका वर्णन कर रहे हैं और उसपर स्वयंको समर्पित कर रहे हैं.]

बेसो छो जिहां बलवंत बलिया, जाऊं बलिहारी तेणे ठाम ।
साथ सकल सवारो आवी बेसे, वरणवो धणी श्री धाम ॥ ७

जिस स्थान पर सर्व शक्तिमान सद्गुरु धनी बैठा करते थे उस स्थानके लिए मैं अपना सर्वस्व न्योछावर करती हूँ. जहाँ समस्त सुन्दरसाथ प्रातःकालमें आकर बैठते थे और स्वयं धामधनी सद्गुरु परमधामका वर्णन सुनाते रहे उस स्थान पर भी मैं अपने आपको समर्पित करती हूँ.

मंदिर मांहें अनेक विध दीसे, जोगवाई पूरण सरवे ।
अनेक वार लउं तेना भामणां, मारी वारी नाखुं जीवसुं देह ॥ ८

हे सद्गुरु ! आप जहाँ पर विराजमान हैं वह मन्दिर अनेक प्रकारके साधनोंसे परिपूर्ण है. उन सब पर मैं स्वयं अपने देह और प्राणोंको अनेक बार समर्पित करती हूँ.

भले तमे देह धरया मुझ कारण, करी अजवालुं टाल्यो भरम ।
जीव मारो घणो कठण हतो, तमे नेत्रे गाली कीधो नरम ॥ ९

हे सद्गुरु धनी ! आपने हमारे लिए सुन्दर देह धारण की तथा तारतमके प्रकाशके द्वारा भ्रमको हटाया. मेरा जीव अति कठोर था परन्तु आपने अपनी कृपा दृष्टि द्वारा द्रवित कर उसे नरम बना दिया.

हवे चरण कमलनां लऊं भामणियां, अने भामणां लऊं सरवा अंग ।
हस्तकमलने वारणे, वारी जाऊं मुखार ने विंद ॥१०

आपके दिव्य चरणकमलोंमें मैं न्योछावर होती हूँ और आपके सब अङ्गों-प्रत्यङ्गों पर अपने आपको न्योछावर करती हूँ. आपके हस्तकमल एवं मुख मण्डल पर भी मैं समर्पित होती हूँ.

वस्तर उपर वारी वारी जाऊं, भामणां लऊं भूषण ।
नेत्र निरमलने वारणे, जेहेनी द्रस्टे फल पामिए ततखिण ॥११

मैं धनीजीके वस्त्रों एवं आभूषणों पर न्योछावर होती हूँ. आपके पवित्र नेत्रों पर भी स्वयंको समर्पित करती हूँ, जिन कृपा दृष्टिसे ही तत्क्षण फल प्राप्त होता है.

जाऊं बलिहारी नासिका पर, अने दुखणां लऊं सरवणां ।
सुन्दर सरूप सकोमल उपर, जीव लिए भामणां घणां घणां ॥१२

मैं सद्गुरु धनीकी नासिका एवं श्रवण पर अपने आपको न्योछावर करती हूँ. प्रियतम सद्गुरुके सुन्दर सुकोमल स्वरूप पर मेरा जीव अनेक बार समर्पित होता है.

सेवा करे छे बाई हीरबाई, ओछव रसोई जांहे ।
अंतरगते तमे नित आरोगो, हुं लऊं भामणां घणां घणां तांहे ॥१३

सद्गुरु धनीकी रसोई तैयार करनेकी सेवा हीर बाई करती है. जहाँ प्रतिदिन रसोईका उत्सव होता है. आप श्रीकृष्णके स्वरूपमें प्रकट होकर नित्य भोजन करते हैं. उस स्थान पर मैं वारंवार समर्पित होती हूँ.

घोली घोली जाऊं ते वाणी उपर, जे वचन कहो छो रसाल ।
साथ सकलने चरणे राखी, सागर आडी बांधो छो पाल ॥१४

हे धनीजी ! आप जिस सुमधुर वाणी द्वारा रसपूर्ण चर्चा करते हैं उस पर मैं अपने आपको वारंवार न्योछावर करती हूँ. इस प्रकार समस्त सुन्दरसाथको अपनी छत्र-छायाके नीचे रखकर मोह सागरको रोकनेके लिए आप ज्ञानरूपी बाँध बनाते रहते हैं.

हवे सेवा करीस हुं सर्वा अंगे, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन ।
पल न वालुं निरखुं नेत्रे, वालपण करुं जीव ने मन ॥१५

अब मैं अपने सम्पूर्ण अंगोंसे आपकी सेवा शुश्रूषा करते हुए रात-दिन आपकी परिक्रमा किया करूँगी. एक क्षणके लिए भी पलकोंको बन्द किए बिना आपको निहारती रहूँगी. अपने जीव और मन द्वारा आपसे प्रेम करूँगी.

मुं जेहवा अजाण अबूझ दुस्ट होए अप्रीछक, अधम नीच मतहीन ।
ते एणे चरणे आवी थाय जाण सिरोमण, सुघड सुप्रीछक प्रवीन ॥१६

मेरे जैसी कोई अनजान, नासमझ, दुष्ट, अल्प बुद्धिवाली, अधम, नीच तथा अनभिज्ञ भी आपके चरणकमलोंके आश्रयमें आकर आपकी कृपासे शिरोमणि, सुन्दर, समझदार तथा चतुर बन जाती है.

तेना जीवने जगावी निध देओ छो निरमल, करो छो वासना प्रकास ।
ते जीव वचिखिण वीर थई, चौद भवन करे अजवास ॥१७

आप ऐसे जीवको जगाकर पवित्र तारतम ज्ञान देते हैं और वासनाको परखकर उसका सम्बन्ध प्रकट करते हैं. इसके परिणाम स्वरूप वह जीव चतुर, प्रवीण, साहसी और वीर बन कर चौदह लोकोंको तारतम ज्ञानसे आलोकित करता है.

हवे गुण केटला कहुं मारा वालैया, जे अमसुं कीधां आ वार ।
आणी जोगवाईए न कहेवाय, पण लखवा तोहे निरधार ॥१८

हे मेरे सद्गुरु धनी ! अब मैं आपके गुणोंकी कितनी प्रशंसा करूँ ? आपने इस बार हम पर जो उपकार किए हैं, उनकी प्रशंसा इस झूठे मायावी शरीर द्वारा नहीं की जा सकती तथापि पहचानके लिए कुछ तो लिखना ही चाहिए.

हवे आहीं उपमा केही दऊं मारा वालैया, ए सबद न पोहोंचे तमने ।
वचन कहुं ते ओरुं रहे, तेणे दुख लागे घणुं अमने ॥१९

हे मेरे प्रियतम ! यहाँ इस झूठे संसारमें आपकी महत्ताको कौन-सी उपमा दूँ ? यहाँके शब्द आप तक नहीं पहुँच पाते. हम वाणी द्वारा जो भी वर्णन करते हैं, वे शब्द इधर ही रह जाते हैं. इसके कारण मुझे बहुत दुःख होता है.

एक वचने मारी दाझ भाजे छे, ज्यारे कहुं छुं धणी श्री धाम ।
एक एणे वचने मारो जीव करारयो, भाजी हैडानी हाम ॥२०

जब मैं एक ही शब्द 'धामधनी' का उच्चारण करती हूँ तो मेरी दाझ (अन्तरकी चाह) शान्त हो जाती है. उस वचनके द्वारा मेरे जीवको अखण्ड सुखका अनुभव होता है तथा मेरे हृदयकी इच्छा पूर्ण हो जाती है.

कहे इन्द्रावती अति उछरंगे, फोडी ब्रह्मांड करुं प्रकास ।
विगते वाट देखाडुं घरनी, जेम सोहेलो आवे मारो साथ ॥२१

इन्द्रावती मनमें उत्साह और आनन्द भरकर कहती है अब मैं ब्रह्माण्डको फोड़कर तारतमका प्रकाश चारों ओर फैला दूँगी, और युक्ति पूर्वक परमधामका मार्ग देखाऊँगी ताकि मेरे सुन्दरसाथ सरलता पूर्वक परमधाम पहुँच सकें.

प्रकरण २३ चौपाई ५७९

हवे अस्तुत ऊपर एक विनती कहुं, चरण तमारा जीवने नेत्रे ग्रहुं ।
एणे चरणे मुने थै छे सिध, पहेली निध मुने सुन्दरबाईए दिध ॥ १

इन्द्रावती कहती है, अब मैं सद्गुरु धनीकी स्तुतिके बाद एक प्रार्थना करती

हूँ कि आपके चरणकमलको नेत्रसे दर्शन कर अपने हृदयमें स्थापित करूँ, अपने अन्तर (हृदय) की दृष्टिमें रख लूँ (अथवा हृदयमें तथा नेत्रोंमें ग्रहण करूँ). इन्हीं चरणोंकी कृपासे मुझे सिद्धि (अखण्ड परमधाम और धामधनी) प्राप्त हुई है. वस्तुतः सर्व प्रथम तारतम ज्ञानरूपी निधि सुन्दरबाई-सद्गुरुने ही तो दी है.

ए बंने सरूपमां जोत ज एक, ते में जोयुं करी विवेक ।
इन्द्रावती करे विनती, तमे निध दीधी मुने तारतम थकी ॥ २

इन दोनों स्वरूपों (श्रीकृष्ण और श्रीदेवचन्द्रजी) में धनी अक्षरातीतकी एक ही ज्योति झिलमिला रही है. इस वास्तविकताको मैंने विवेक पूर्वक देखा. इन्द्रावती प्रार्थना करती हुई कहती है, हे धनी ! आपने ही तारतम ज्ञानकी अखण्ड सम्पत्ति मुझे दी है.

मारो आसरो कांई न हतो मारा धणी, पण मुने बंने सरूप दया कीधी घणी।
सेवा मांहें न हती सरीख, नव जाणुं मुने निध दीधी केम करीस ॥ ३

हे मेरे धनी ! आपको छोड़ कर मेरा कोई आश्रय नहीं था. आप दोनों स्वरूपों (श्रीकृष्ण एवं श्रीसद्गुरु) ने मुझ पर अत्यन्त दया की है. मैं तो सेवामें भी ठीक रूपसे उपस्थित नहीं रह सकी फिर भी न जाने क्यों आपने मुझे तारतमरूपी अखण्ड निधि प्रदान की.

क्रतव चितवणी जे सेवा करे, अवला गुण मोहजल परहरे ।
ते पण मनसा वाचा करमणा करी, अने दोड करे घणुं वालपण धरी ॥ ४
पण जिहां लगे दया तमारी नव थाए, तिहां लगे सर्व तणाणुं जाए ।
ते पारखुं में जोयुं निरधार, साथ सकलनां वचन विचार ॥ ५

जो लोग कर्त्तव्योंका पालन करते हुए, चित्त लगाकर सेवा करते हैं तथा मायाके उलटे सीधे गुणोंको छोड़ कर, मन वचन और कर्मसे एकाग्र चित्त होकर प्रेम पूर्वक सेवामें लगे रहते हैं, किन्तु हे सद्गुरु धनी ! जब तक आपकी दयादृष्टि उन पर नहीं पड़ती तब तक वे मायामें ही बहते चले जाते हैं. इस तथ्यकी पुष्टि मैंने अच्छी तरह कर ली है और समस्त सुन्दरसाथके साथ विचार विमर्श करके परख भी लिया है.

जे खरो थै जीव जुओ मन करे, कपट रती रदे नव धरे ।
एम थैने जे तमने सेवे, अने वचन विचारी तमारां ग्रहे ॥ ६
साचो सनकूल करे जे तमारो चित, अने भ्रांत मेली करे जीवने हित ।
चित उपर खरो चालसे जेह, सोभा घेर साथमां लेसे तेह ॥ ७

जो जीव सच्चा बनकर स्वयंसे मनको अलग कर देगा तथा हृदयमें रत्ती भर भी कपट भाव नहीं रखेगा, तथा इस प्रकार जो व्यक्ति आपकी सेवा करेगा, आपके वचन विचार पूर्वक ग्रहण करेगा सच्चा बन कर सत् (अखण्ड) मार्गका अनुसरण करके आपके चित्तको प्रसन्न रखेगा तथा भ्रम दूर कर जीवके साथ प्रेम करेगा और आप सद्गुरुके चित्तके अनुकूल चलेगा वही अपने जीवनमें परमधाम तथा सुन्दरसाथके बीच अवश्य शोभा प्राप्त करेगा.

ए निद्रा उडाडीने कह्या वचन, श्री धाम धणी जीव जाणी मन ।
वली जां जोऊं तमने जोपे करी, तां हजी में निद्रा नथी मूकी परहरी ॥ ८

अज्ञानरूपी इस निद्राको त्याग कर और धामधनीको जीव तथा मनमें विराजमान समझ कर ये वचन कहे हैं. जब मैं पुनः आपको ठीक ढंगसे देखती हूँ तो ज्ञात होता है कि अब तक मैंने निद्राका त्याग नहीं किया है (क्योंकि मैं पाँच तत्त्वके शरीरसे ही तो बोल रही हूँ).

आ वचन कह्यां में निद्रा मंझार, जां जोपे करी जोऊं मारा जीवना आधार ।
नहीं तो एह वचन केम कहुं मारा धणी, पण कांईक तासीर दीसे अस्थानक तणी । ९

हे मेरे जीवनाधार ! जब मैं उपर्युक्त कथनके बारेमें विचार कर देखती हूँ तो ऐसा लगता है कि निःसन्देह ये वचन मैंने अज्ञानरूपी निद्रामें कहे थे, अन्यथा सुन्दरसाथको परमधाम बुलानेके लिए आग्रह करने जैसे वचन आपको क्यों कहती ? (आप तो स्वयं सर्वज्ञ हैं) किन्तु कुछ प्रभाव इस स्थान (धरती) का भी दीखता है (जिसके कारण ऐसे वचन मैंने आपसे कहे है).

वली जोऊं ज्यारे घरनी दिस तमने, त्यारे वली एम थाए अमने ।
आ धामनां धणीने में किहा कह्यां वचन, त्यारे जीव विमासी दुख पामे मन॥ १०

जब मैं पुनः आपको परमधामकी दृष्टिसे देखती हूँ तो मेरे हृदयमें ऐसा भाव उठता है कि धामके धनीको मैंने ये वचन कैसे कहे ? इस विचारसे मेरा मन भीतरसे दुःखित होता है.

पण केम कहुं सबद न पोहोंचे तमने, मारी जिभ्या थै माया अंगने ।
वाला तमे थया छो सबदातीत, मारी माया देह ऊभी सरीख ॥ ११

परन्तु हे धामधनी ! आपके गुण तथा उपकारकी प्रशंसा किन शब्दोंमें करूँ ? क्योंकि वे तो आप तक पहुँचते ही नहीं. मेरी जिह्वा भी झूठी मायाका ही अंग है. हे प्रियतम धनी ! आप साक्षात् शब्दातीत हैं. मेरी देह तो मायाके समान ही झूठी खड़ी है.

धणी लगतां वचन कहीस आवी धाम, त्यारे भाजीस मारा जीवनी हाम।
आ तां वचन में साथ माटे कह्यां, ए वचन जोई साथ मूकसे माया ॥ १२

हे धनीजी ! आपसे सम्बन्धित वचन तो परमधाममें आकर ही कहूँगी, तभी मेरे जीवकी तीव्र इच्छा शान्त होगी. ये वचन तो मैंने सुन्दरसाथके लिए कहे हैं, ताकि इन वचनों पर विचार (देख) कर सुन्दरसाथ मायाका परित्याग करेंगे.

इन्द्रावती कहे साथने तेडो ततकाल, ए माया कठण छे नताल ।
आ दुस्तर मांहें दुख देखे घणुं, नव ओलखाए कांई आपोपणुं ॥ १३

इन्द्रावती कहती है, हे धामधनी ! सुन्दरसाथको तुरन्त ही अपने पास बुला लीजिए, क्यों कि यह माया कठिन (कठोर) और गहन है. ऐसे दुस्तर संसारमें बहुत-से दुःख ही दिखाई देते हैं तथा हम अपने आपको पहचान भी नहीं पाते.

में तां ए लवो कह्यो मायाने सनमंध, हुं देखीती नव देखुं अंध ।
एम कहिए तेने जे नव लिए सार, तमे ततखिण खबर लेओ छो आधार ॥ १४

मैंने तो मायाके सम्बन्धमें थोड़ा-सा ही कहा है. देखते हुए भी मैं अन्धी

बन गई हूँ. इस प्रकारके वचन तो उन्हें कहे जा सकते हैं जो सुधि ही नहीं लेते, परन्तु हे प्राणाधार ! आप तो तुरन्त ही हमारी सुधि लेते हैं.

ते माटे वचन कह्यां में एह, रखे अधखिण साथ विसारो तेह ।
अधखिण रखे तमारी थाय, तो तेहमां कै कलपांत वही जाय ॥ १५

हे धनी ! मैंने ये वचन इसलिए कहे हैं ताकि सुन्दरसाथ उन्हें क्षणमात्रके लिए भी नहीं भूले. आपका तो आधा क्षण भी नहीं होता, इतनेमें तो संसारके अनेक कल्प बीत जाते हैं.

मारा धणी हुं तो कहुं जो तमे अलगा हो, एक पावपल अमारो विछोडो नव सहो ।
में एम तां कह्युं जो मारी ओछी मत, तमे अम माटे केटलो करो छो खप ॥ १६

हे मेरे धामधनी ! ऐसे वचन तो मैं तब कहूँगी, जब आप मुझसे अलग हों. परन्तु आप तो पलमात्रके लिए भी हमारा वियोग सहन नहीं करते. मैंने तो मायाकी तुच्छ बुद्धिके कारण आपसे ऐसा कहा है. आप तो हमारी इच्छा पूर्ण करनेके लिए अनेक उपाय करते हैं.

तमे आहीं आव्या अम माटे देह धरी, दया अम उपर अति घणी करी ।
तमे सामा आव्या आगल अम माट, लई आव्या तारतम देखाडी घर वाट । १७

आप हमारे कारण इस संसारमें देह धारण कर आए हैं. आपने हम पर अत्यन्त कृपा की है. आप हमारे लिए हमसे भी पहले आए हैं और अखण्ड तारतम ज्ञान लाकर आपने परमधामका मार्ग दिखाया है.

साथे माया मांगी ते थै अति जोर, तमे साद कीधा घणां करी बकोर ।
पण केमे न वली अमने सुध, त्यारे व्रह देवा सरूपजी अद्रस्ट किध ॥ १८

सुन्दरसाथने परमधाममें माया देखनेके लिए माँगी थी, वही (माया) यहाँ बलवती हो गई है. आपने हमें (मायासे पार करनेके लिए) अनेक बार पुकारा, फिर भी हम जागृत नहीं हुए. तब हमें विरह देनेके लिए आपने अपने स्वरूपको अदृश्य कर दिया.

पण तोहे न वली अमने सार, त्यारे वली बीजो देह धर्‌यो ततकाल ।
ततखिण आवी अम भेला थया, वली वचन सागरना पूर लाविया ॥ १९

इतना सब होने पर भी हम सचेत न हुए. तब तुरन्त ही आपने दूसरी देह धारण की और तत्काल आकर मेरे (इन्द्रावतीके) हृदय पर विराजमान हुए इस प्रकार आप सागरमें उठनेवाली हजारों लहरोंकी भाँति इस ब्रह्मवाणी (तारतम सागर) का प्रवाह ले आए.

में साथने कह्युं ते केम तमने कहेवाय, कहिए तेहने जे अलगां थाय ।
एटलुं घणुंए हुं जाणुं सही, ए वचन धणीने कहेवाय नहीं ॥ २०

मैंने सुन्दरसाथको जो कुछ भी कहा वह आपको कैसे कहूँ ? क्योंकि जो अलग हो उनको ही कहा जाता है. (आप तो मुझसे अलग ही नहीं हैं) मैं इतना तो विशेष रूपसे जानती हूँ कि ऐसे वचन धामधनीसे नहीं कहे जा सकते.

मारा मन मांहे एम आवी थयुं, साथ रखे जाणे अम माटे कां नव कह्युं।
जो एम न कहुं तो खबर केम पडे, जे धणी साथ उपर दया एम करे ॥ २१

मेरे मनमें भी यह विचार आया कि कहीं सुन्दरसाथ ऐसा न मान लें कि इन्द्रावतीने उनके लिए कुछ कहा ही नहीं. यदि मैं ऐसा नहीं कहूँ तो साथको कैसे पता चलेगा कि धामधनी हम सुन्दरसाथ पर इस प्रकारसे दया करते हैं.

साथने जणाववा माटे कह्यां ए वचन, धणी तमारी दया हुं जाणुं जीव ने मन ।
साथ चरणे छे ते तां वचिखिण वीर, वली भले वचन विचारे द्रढ धीर ॥ २२

सुन्दरसाथको परिचय दिलानेके लिए ये वचन कहे गए हैं. हे धामधनी ! मैं आपकी कृपाको मन और हृदयसे जानती हूँ. जो सुन्दरसाथ आपके चरणों (आपकी छत्र छाया) में हैं वे चतुर और प्रवीण हैं. इसके पश्चात् आने वाले सुन्दरसाथ भी इन वचनों पर दृढ़ता पूर्वक विचार कर परमधामका मार्ग अपनाएँगे.

पण घणो खप करुं साथ पाछला माट, साथ जोई वचन आवसे आणी वाट।
साथ जो जो तमे दया धणी तणी, ए दयानी वातो छे अति घणी ॥ २३

मुझे भविष्यमें आनेवाले सुन्दरसाथके लिए बडी इच्छा है कि वे इन वाणी-वचनोंको देख (समझ) कर परमधाम प्राप्तिके इस मार्गको अपनाएँगे. हे सुन्दरसाथजी ! धामधनीकी दयाको तो देखो इस प्रकार दयाकी अनेक बातें हैं.

ए दयानी विध हुं जाणुं सही, पण आणी जीभ्याए कहेवाय नहीं ।
जो जीवसुं वचन विचारसो प्रकास, तो ततखिण जीवने थासे अजवास॥ २४

धनीजीकी दयाकी यह रीति मैं अच्छी तरह जानती हूँ, किन्तु मेरी इस झूठी जिह्वा (वाणी) द्वारा उसे कहना सम्भव नहीं है. यदि हृदय (जीव) पूर्वक रास और प्रकाशके वचनों पर विचार करेंगे तो तुरन्त ही ज्ञानका प्रकाश प्राप्त होगा.

इन्द्रावती सुन्दरबाईने चरणे, श्रीवालाजीनी सेवा करीस वालपण घणे।
सेवा जेहवो बीजो पदारथ नथी, जाण जोई लेसे वचन ज थकी ॥ २५

इन्द्रावती, श्री सुन्दरबाईके चरणोंकी कृपाके कारण प्रियतम धनीकी सेवा अत्यन्त प्रेमसे करेगी, क्योंकि सेवा जैसा दूसरा मूल्यवान पदार्थ कोई नहीं है. सुन्दरसाथ इन वचनोंको देख (समझ, विचार) कर ग्रहण करेंगे.

प्रकरण २४ चौपाई ६०४

श्रीप्राणनाथजीने सूत कातनेके दृष्टान्त द्वारा संसारमें रहते हुए भी भजन-भक्ति करेनेका निर्देश देते हुए चरखाके उपकरणोंके शरीरके बाह्य और आन्तरिक अङ्गोंके साथ तुलना की है जिसका स्पष्टिकरण इन चौपाईयोंके द्वारा होता है-

प्रेम इश्कको सूत है, रूई उमर पुकार ।
एक एक पूनी स्वांसा कही, गरीबी फारी फुकार ॥
वजूद को चरखा जानो, मनरूपी तकुआ होय ।
अदवानको ईमान है, सुरत मालिक सोय ॥

खुई सा निद्रडी रे, जे अजां न छडे रे जीव ।
तोहेनी सांगाए न वरे, जे पसां मथे हेडी भाइयां ॥ १

इन्द्रावती कहती है, उस अज्ञानरूपी निद्राको आग लग जाए जो अब तक जीवका पीछा नहीं छोड़ती है फिर भी उसकी पहचान न हो पाई. देखो, इसलिए सिर पर ऐसी विपदा आ पड़ी है.

आंके निद्र उडाणके अदीयूं मूंजीयूं, आऊं डियां हिकमी साख ।
अंई अगईं पर पसी करे, हांणे मान सांगायो रे साथ ॥ २

तुम सबकी नींद हटानेके लिए ही हे बहन ! मैं एक दृष्टान्त (साक्षी) देती हूँ. तुम सब पूरोगामियों (गांगजीभाई, गोवर्धन ठाकुर जो परमधाम चले गए है) को देख कर अब तो इस बातको मानो.

आतण मंझे जे आवयूं, जेडियूं हेरे मिडी ।
किंनीनी कींझो कतयो, किंने न भगी रे भीडी ॥ ३

जो ब्रह्मात्माएँ परमधामसे इस संसार रूपी घरमें कातने (धनीजीका भजन स्मरणकरने) के लिए एकत्रित होकर आई हैं उनमें-से कुछेकने बारीक (पतला) सूत काता (एकाग्र चित्त होकर भजन किया). जबकि कुछेकने रूईके पुलिन्देको खोला भी नहीं (वे मायामें ही डूबे रहे).

कपाइतियूं आवयूं, कतण कोड करे ।
केहे केहे संनो कतयो, घणों नेह धरे ॥ ४

सूत कातनेवाली सखियाँ कातनेके लिए (धनीजीका भजन करनेके लिए) बड़े हर्षके साथ आईं. कुछ सखियोंने अत्यन्त प्रेम पूर्वक बारीक सूत काता.

के बेठीयूं मए विच थेई, पण नाडी तंद न चढे ।
कतंणके जे विसरयूं, से उठियूं ओराता धरे ॥ ५

कई सखियाँ तो अहंकार वश बीचमें ही बैठी रहीं, उन्होंने दिलरूपी नाड़ीमें भजनरूपी ताँत चढ़ाया ही नहीं. जो कातना (भजन करना) भूल गई, वे उदास होकर उठेंगी.

किंनी कतया सोहागजा, सुतर भर्‌या सेर ।
के बेठियूं मए विच थेई, पेर मथे चाडे पेर ॥ ६

किसी किसीने सुहागिनकी तरह सुखदायक सूत काता. (एकाग्र चित्त होकर धनीजीका स्मरण-भजन किया) और इतना काता कि वह सूत सेर भर हो गया. कुछेक मैं पन (मान प्रतिष्ठा) लेकर पाँव पर पाँव चढ़ाए बैठी रहीं (उन्होंने भजन नहीं किया).

के तंदू चाडीन तकडूं, लधाऊं ही वेर ।
के न्हारींदयूं भूं अडूं, के मथे चढ्यूं सिर मेर ॥ ७

कुछेकने तकली पर सूत इसलिए चढ़ाया (मनको भजन-बंदगीमें लगाया) कि यह तो सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ है. कई धरतीकी ओर देखती रहीं. कई पहाड़की भाँति सिर ऊँचा करके अहंकारमें भर कर बैठी रह गईं.

हिक तंदू न्हारींदे वीयंनज्यूं, जमारो सभे वेई ।
हिक फेरा डींदे फुटरयूं, पण हथ न छुताऊं पई ॥ ८

कई अपना कातनेका काम छोड़ कर दूसरेका सूत देखती हुई उम्र (समय) बिता रही हैं. कुछेक बिना किसी कारणके व्यर्थ घूम फिर रही हैं परन्तु रूईको हाथ भी नहीं लगाया है.

के अची आतंण मंझा, सुतीयूं सुख करे ।
उथियूं से उचाटमें, जडे सुतर संभारे ॥ ९

कई सूत कातनेके लिए घरमें आईं परन्तु आकर तुरन्त ही आरामसे सो गईं. जब वे घबरा कर उठेंगी (परमधाममें जागेंगी) तब उन्हें भजन रूपी सूतका स्मरण हो पाएगा.

जिंनीनी कींझो कतयो, तनके ता डेई ।
सा जोर करे महें जेडिए, मरके मंझ बेही ॥ १०

जिस किसीने शरीरको कष्ट देकर बारीक सूत काता है (निष्ठासे भक्ति की है) वह परमधाममें सखियोंके बीचमें बहुत उमंग (जोर) से झूम उठेगी.

जिंनी जाचो कतयो, फारी फुकारे ।
सा माले मंझ सरतिए, सुहाग लधाई घरें ॥ ११

जिन्होंने नम्रता पूर्वक महीन और अधिक काता है (भक्ति की है) वे सखियोंके बीच बैठ कर परमधाममें सुहागिनका सुख प्राप्त करतीं हैं.

जडे सुतर सभनी न्हारयो, बीयन हथ पाए ।
जिंनी मूर न कतयो, पोएसे मोंहों लिकाए ॥ १२

जब सबने एक दूसरेके सूतको हाथमें लेकर देखा तो जिस सखीने प्रारम्भसे ही सूत नहीं काता था वह पीछे लज्जासे अपना मुख छिपाने लगीं.

सुतरवारीयूं सुहागण्यूं, न्हारीन कर खणी ।
हिक डिंनी स्याबासी जेडीए, व्यो मान लधाऊं धणी ॥ १३

जिन सुहागिनियोंने बारीक सूत काता है वे अपने सूतको हाथमें उठाकर देखेंगी. वे एक ओर अपनी सखियोंके बीच प्रशंसा प्राप्त करेंगी, दूसरी ओर उन्हें धनीजीका मान प्राप्त होगा.

हिक फेरीन अरट उतावरो, तनके ता डेई ।
राती कन उजागरा, सुत्र कतींदीयूं पण सेई ॥ १४

कोई एक सखी अपने शरीररूपी चरखे को परिश्रम के साथ शीघ्रता पूर्वक चलाती है, और रात्रिमें भी जागकर सूत कातती है. वास्तवमें वही (धामकी आत्मा) सूत कातने वाली (भजनानन्दी) कहलाएगी.

जे कंन गाल्यूं विचमें, तंद न उकले तिन ।
पई रही तिंन हथमें, पोए बेठ्यूं फेरीन मन ॥ १५

जो कातते समय बीच-बीचमें बातें करतीं हैं, उनके हाथसे सूत निकलता नहीं है. उनके हाथमें तो मात्र रूई ही रहती है. इस प्रकार बादमें वे मनको फिरा कर पश्चाताप करती हुई बैठी रहतीं हैं.

सभा विच सरतिए, गाल्यूं कंदियूं वेही ।
पण जिंनी कीं न कतयो, तिंनी पर केही ॥ १६

जिन्होंने ठीक ढंगसे सूत काता है वे सखियोंकी सभाके बीच बैठ कर परस्पर बातें करेंगी, परन्तु जिसने कुछ काता ही नहीं उनका क्या होगा ?

न कीं कत्यो रातमें, न कीं कत्यो डींह ।
से सांणे मंझ सरतिए, मोंह खणंदिंयूं कींह ॥ १७

जिन्होंने न रातको कुछ काता (भजन किया) और न दिनको कुछ किया, वे घर (परमधाम) में सखियोंके बीच गौरव पूर्वक अपना सिर कैसे ऊठा सकेंगी ?

अदीरे संनो थूलो अघयो, जे कीं कत्याऊं ।
पण किंनी विचथी विसरयो, पई हथ न छुताऊं ॥ १८
तिंनी सांणे विच सरतिए, पोए मिहीणां लधाऊं ।
न तां चेताणवारिए बंग लाथा, परी परी करे धाऊं ॥ १९

हे बहनो ! किसीने महीन, किसीने मोटा, तो किसीने ज्यादा जैसे भी सूत काता परन्तु कोई तो बीचमें ही कातना भूल गई उसने हाथसे भी स्पर्श नहीं किया. उसको परमधाममें सखियोंके बीच उपालम्भ (उलाहना) मिलेगा. वैसे तो उनको चेतानेके लिए इन्द्रावतीने पुकार-पुकार कर अपने कर्तव्यका पालन किया है.

आंके धाऊं सुणंदे धणीज्यूं, जमारो सभे बेई ।
अंई अगियां थींदियूं अणुसरयूं, अंई कतो को न बेही ॥ २०

हे सुन्दरसाथजी ! धनीजीकी पुकार सुनते-सुनते तुम्हारा समस्त जीवन पूरा हो गया. आगे चलकर तुम्हें पश्चात्ताप होगा. यहाँ बैठ कर तुम सूत क्यों नहीं काततीं ?

जिंनी अजां न कतयो, सा रींदियूं सेई ।
जडे गाल्यूं कंदयूं पांणमें, जेडियूं सभे बेही ॥ २१

जब सभी सखियाँ बैठ कर बाते करेंगी तब जिसने आज तक भजन कीर्तन रूपी सूत नहीं काता, वे रोएँगी.

हिक गिनंदयुं सुहाग सुलतानजा, सुहागणियूं सेई ।
से कर खणी गालियूं, कंदियूं विच बेही ॥ २२

विशेष प्रकारसे कातने वाली कोई सखी धामधनीका सुख प्राप्त करेगी. वही सच्ची सुहागिनी कही जाएगी. वही सखियोंके बीच बैठी हुई हाथ उठाकर बातें करेगी.

जिनी कीं न जाणयो, ते हथ न छुती पई ।
कोड करे घणवे आवई, पण उंनी हाम रही ॥ २३

जिन्होंने कुछ भी नहीं जाना (अपनी आत्मा, परमात्मा एवं इस अवसरको नहीं पहचाना) उसने रूईको हाथसे भी नहीं छुआ, वे बहुत उत्साह (हर्ष) के साथ इस संसारमें आईं थीं किन्तु उनकी चाहना बाकी रह गई.

खुई सो भरम जो घेण, जे लाथो लहे न कींय ।
अंख उघाडे सओ कुछण, पुन वरी तींअ ज्यूं तींय ॥ १

इन्द्रावती कहती है, भ्रम तथा मायाके इस नशेको आग लग जाए. यह नशा ऐसा है कि प्रयत्न करने पर भी उतरता नहीं है. यदि आँखें खोल कर हृदयपूर्वक विचार करके सीधी बात कहें तो भी वह जैसेका तैसा रह जाता है.

हिक त्रकू झोरीन ताअमें, फोकट फेरा डींन ।
हिंक झोडो लगाइन पांणमें, अदीरे उंनी न जातो कींन ॥ २

एक सखी आवेशमें आकर व्यर्थ ही घूमते हुए चरखेकी तकलीको तोड़ देती है तो दूसरी सखी परस्पर झगड़ा करती है. हे बहन ! उनका यह स्वभाव किसी भी तरह नही छूटता है.

हिक पाण त्रकू सारीन बीयनज्यूं, हकले कताइंन ।
हिक जेडियूं जाणे जोर करे, पांण आयतूं करांइन ॥ ३

कोई एक सखी अपना और दूसरेका भी चरखा सम्हालती है और दूसरोंको भी शीघ्रतासे सूत कातनेमें लगाती है (अपने साथ-साथ दूसरोंको भी भजनानन्दी बनाती है). कोई सखी दूसरीको भी अपनी सहेली समझ कर सूत कातनेके लिए प्रेरणा देती है.

हिक खोटी करीन पांण वीयनके, त्रके पाइन वर ।
जडे उथींदियूं आतण मंझां, तडे गाल्यू थिंदयूं घर ॥ ४

कोई सखी न स्वयं कातती है और न ही दूसरोंको कातने देती है. तकलीको टेढ़ा-मेढ़ा बनाकर बिगाड़ देती है. इसलिए जब वह कार्यशाला (इस संसार) से उठ जाएगी (जागृत होगी) तो घर (परमधाम) में ये सारी बातें होंगी.

हिक त्रकू झोरीन वियनज्यूं, ते पर थींदी कींय ।
कतण उनी पूरो थेई, पण मिहीणां लेहेंदियूं नींय ॥ ५

कुछेक सखियाँ जो दूसरोंकी तकलीको तोड़ देतीं हैं, उन पर क्या बीतेगी ? उनका सूत कातना (भजन, कीर्तन) तो पूरा हो जाएगा, परन्तु निश्चित रूपसे वे उपालम्भ (उपहास) के पात्र बनेंगीं.

जा झोडा लगाए पांणमें, सा कंदी उचाट घणी ।
मनसे भाए कोए न पसे, पण महे बेठो सुणे धणी ॥ ६

जो परस्पर झगड़ा कराती है उसे बड़ा पश्चात्ताप होगा. वह मनमें ऐसा सोचती है कि उसका यह कार्य कोई देख नहीं रहा है, परन्तु हृदयमें बैठे हुए धनी सब कुछ देखते हैं और सुनते हैं.

जीव करे मनसे गालडी, सा सभे थींदी घर ।
पाए न रहेंदी तिर जेतरी, अंई जिन विसरो हिन पर ॥ ७

जीव जो कुछ भी मनसे बातें करता है अर्थात् अन्तःकरणमें विचार करता है वे सब परमधाममें प्रकट होंगे. तिल जितनी छोटी बात भी छिप नहीं पाएगी. तुम सब इस बातको मत भूलना.

हिक कतण महे माठ थेई, सेहन भिंने रे वेंण ।
तंदू चाडीन तकड्यूं, नीचा ढारे नेंण ॥ ८

कोई एक चुपचाप बैठ कर सूत कातती है (छिपकर भजन करती) है और दूसरोंके वचन सहन करती है, वह करघे और तकली पर डोरा चढ़ा कर आँखोंको नीची करके कातनेमें रत रहती है.

सा गिनंदी सुहाग धणीजा, जेडिए विच वेही ।
सा उथींदी आयत मंझां, पेर पडतारो डेई ॥ ९

वह सखी परमधाममें अन्य सखियोंके बीच बैठ कर धामधनीका अखण्ड सुख प्राप्त करेगी और अत्यन्त उत्साहके साथ पैरोंसे ताल देते हुए परमधाममें उठकर खड़ी होगी.

घणो सा गेहेंदी हथडा, जा चुकंदी हेर ।
निद्र लथे ओरातवी, पण वरी हथ न इंदी हीय वेर ॥ १०

जो सूत कातना भूल जाएगी वह सखी हाथ मलती ही रहेगी (पश्चात्ताप करेगी). अज्ञानरूपी निद्राको जो हटा न सकी वह पछताएगी उसे ऐसा सुअवसर पुनः प्राप्त न होगा.

हित अंख उघाडींदी जोरसे, नसूं चढाए निलाड ।
जा हित थींदी निद्र खरी, सा घर उथींदी ओलाड ॥ ११

जो कोई जोर लगा कर और ललाटकी नसों पर बल देकर आँख खोलेंगी (अच्छी तरह धनीजीको पहचानेगी) उनके अन्तर पट खुल जाएँगे परन्तु जो इस मोह मायाकी गहरी निद्रामें हैं वे उदासी लेकर परमधाम जाएँगी.

जा हित लाहिंदी निद्रडी, सा घर उथींदी छिडकाय ।
हिन आतण संदियूं गालियूं, कंदीसा कोड मंझाय ॥ १२

जिसने इस संसारमें अज्ञान रूपी निद्रासे मुक्ति पा ली उसे तुरन्त ही घरमें उत्साह प्राप्त होगा. वह घर (परमधाम) में इस संसाररूपी घरकी बातें भिन्न-भिन्न रूपसे आनन्द पूर्वक करेगी.

अंख भुसींदी जा उथींदी, केही गाल कंदीसा ।
कोड करे घणवें आवईं, पण निद्र न कढई नेण मंझा ॥ १३

जो सखी नींदके आवेगमें आँखे मसलती हुई उठेगी, वह सूत कातनेके विषयमें क्या बात करेगी ? वह उत्साह (हर्ष) के साथ परमधामसे इस खेलमें आई थी परन्तु अपनी आँखोंसे मायावी (अज्ञानताकी) नींद हटा न सकी.

इन्द्रावती चोएनी अदियूं, अंई को करयो ईंय ।
कोड करे अंई आवयूं, अदी हांणे को अंई हींय ॥ १४

इन्द्रावती कहती है, हे बहनो ! तुम सब ऐसा क्यों कर रही हो ? तुम सब सहर्ष यहाँ आई थीं, अब क्यों ऐसे ही बैठी हो ?

साणें सिपरियनसे, अंई गाल्यूं कंदियूं कींय ।
पांण संभारे न्हारयो, आंके ही वेर न रहेंदीय ॥ १५

हे बहनो ! परमधाममें तुम प्रियतम धनीके साथ बातें कैसे करोगी ? हृदयकी आँखें खोल कर अपने मूल सम्बन्धको याद कर लो, क्योंकि फिर यह समय तुम्हारे हाथमें नहीं रहेगा.

कतण के उतावरयूं, अंई आतण आवयूं ।
कतण निद्रडी विसारयो, हांणे लूडो लाड गेहेलियूं ॥ १६

कातनेके लिए जल्दी-जल्दी उत्सुकता पूर्वक तुम इस संसार रूपी घरमें आईं. सूत कातनेका कार्य (भजन,कीर्तन) इस मायावी नींदने भूला दिया और इस कौटुम्बिक झूठे लाड़-प्यारमें मग्न होकर दिवानी बन गईं.

पिरी कोठणके आवया, सुणियो सजण वेंण ।
को न सुजाणो सिपरी, मथे खणी नेण ॥ १७

धामधनी सद्गुरु स्वयं बुलानेके लिए आए हैं. उनके वचनोंको सुनो. आँखें उठाकर, मस्तक ऊँचा करके, तुम धामधनीकी पहचान क्यों नहीं करती हो ?

हीं आतण थींदो अलखामणो, जडे हलंदा सजण सांणे ।
निद्र ल्हाए न्हारयो, हिन वलहे जे वेंणे ॥ १८

जब धामधनी परमधाम चले जाएँगे तो यह संसाररूपी घर (सूत कातनेका स्थान) अत्यन्त कठिन और दुःखदायक लगने लगेगा. इसलिए मोह-मायारूपी निद्राको त्याग कर (जागृत होकर) प्रियतम धनीके इन वचनोंको देखो (हृदय पूर्वक उस पर विचार करो).

खुई कर्यो ही निद्रडी, ही हंद ओखो घणुं आए ।
जे हिंनी वेंणे न उथियूं, त केही पर कंदियूं ताए ॥ १९

इस अज्ञानरूपी निद्राको विरहाग्निमें जला डालो. यह स्थान (झूठा संसार) अत्यन्त विकट और दुःखदायक है. जो धनीके इन वचनोंसे जागृत न हुए उनका वहाँ (परमधाममें) कैसे स्थान होगा ?

पर पसो पिरियनजी, पांणसे के के पर करे ।
इन्द्रावती चोए अदियूं, अंई हांणे हलोनी घरे ॥ २०

परन्तु सद्गुरु धनीकी एक बातको देखो, उन्होंने हम सबको किस प्रकार अलग-अलग ढंगसे (साक्षी और दृष्टान्त देकर) जागृत करनेका उपाय किया है ? इन्द्रावती कहती है, हे बहनो ! अब तुम सब मूल घर परमधाम चलो.

धणी मंझ अची करे, आंके बेठा वेंण चाए ।
वियनके मतु डिए, पण तो पर केही आए ॥ २१

धामधनी सद्गुरु इस संसारमें आकर तुम सबको ये वचन (वाणी) सुना रहे हैं. हे इन्द्रावती ! तुम दूसरोंको ज्ञान (मत) देती हो किन्तु तुम्हारी अपनी स्थिति कैसी है ?

प्रकरण २६ चौपाई ६४८

हांणे तूं म भूलज रे, भोरडी सुजाणें तूं सेंण ।
सांणे तो डिठां सिपरी, भोरी तोहेनी तोहजडे नेंण ॥ १

हे भोली इन्द्रावती ! अब तू भूलना नहीं, अपने प्रियतम धनीकी पहचान कर. हे भोली ! तूने अपने धनीको अपने घरमें ही देखा फिर भी तेरे नेत्र वैसे के वैसे ही रह गए.

वेंण बडानी मोंहे कढे, भोरी तूं ता तोहेनी जाग ।
कींझोनी कत तूं धणीजो, अंई तंद पेराइंदी आघ ॥ २

अपने मुखसे तो बड़ी-बड़ी बातें करती है किन्तु हे भोली इन्द्रावती ! अब तू तुरन्त ही जागृत हो जा. धामधनीके नामका बारीक सूत (भजन,कीर्तन) कात ले, क्योंकि भजनरूपी ताँत द्वारा तुझे अधिक सुख प्राप्त होगा.

तें ता पा न कतयो, हुत घुरवो सेर ।
जडे उथींदी आतण मंझा, तडे घणुं घुरंदीस हीय वेर ॥ ३

तूने तो अभी एक पाव भी नहीं काता. परमधाममें तो (धनी) सेर भर सूत (भजन) माँगेंगे (बाल्यकालसे लेकर चारों अवस्थामें धनीका भजन होना चाहिए). जब कार्यशाला (संसार) से जाना (जागृत होना) होगा उस समय तू इस अवसरकी बहुत ही माँग करेगी.

हे जे डींह वंझाइयां, भोरी विसरी विच बेही ।
हांणे हलंण संदा डींहडा, भोरी आया से पेही ॥ ४

जो दिन तूने व्यर्थ ही गँवाए हे भोली इन्द्रावती ! तू इस संसारमें बैठकर अपने आपको भूल गई. हे भोली ! अब यहाँसे जानेके दिन निकट आ गए (इस संसारको छोड़कर परमधाममें जागृत होनेका समय आ गया है).

रे कते जे उथिए, त तो पर केही ।
कां कंनी ही निद्रडी, भोरी घरें साथ नेई ॥ ५

जो भजन-कीर्तन रूपी सूत काते बिना ही परमधाममें जागृत होगी तो उसकी क्या स्थिति होगी ? हे भोली ! इस अज्ञानरूपी निद्राको साथ ले जा कर परमधाममें क्या करोगी ?

अजां न जागे जोर करे, जे हेडी मथा थेई ।
पिरी बभेरकां आइया, तोजी सिध को ईं वेई ॥ ६

तू प्रयत्न करने पर भी अभी तक नहीं जागी, तेरे सिर पर इतनी बीत गई. धामधनी दुबारा आए फिर भी तेरी सूझ-बूझ इस प्रकारकी क्यों हो गई ?

त्रक तूं सारे सई कर, जोपे कर जोत्रा ।
माल तूं बंध मूरडे करे, पई म छड हथां ॥ ७

अपने मनरूपी तकलीको ध्यान पूर्वक सीधा कर और विश्वासरूपी अदवान (चरखेकी डोरी) को ठीकसे सम्हाल. सुरतारूपी डोरी (माल) को तू परमधामकी ओर मोड़ दे. ठीकसे गाँठ बाँध कर श्वासरूपी रूईके फाहे (पूनी) को अपने हाथसे मत छोड़.

अरट फेर उतावरो, तन के डेई ता ।
तूं तां गिनंदी सुहाग धणीयजा, तोजे संनो हिन सुत्रा ॥ ८

अब शरीररूपी चरखेको कष्ट देते हुए जल्दी चला. इस प्रकार तू बारीक सूत कात कर धामधनीके अखण्ड सुख (सुहाग) प्राप्त करेगी.

कतण रहेंदो अधविच, आए डींह मथां ।
कतण वारयूं हलयूं, डिसे न तूं पासां ॥ ९

तेरा कातना बीचमें ही अधूरा रह जाएगा, क्योंकि अब यहाँसे चलनेके दिन

निकट आ गए हैं. तेरे साथ भजन रूपी सूत कातने वाली सखियाँ (गाङ्गजीभाई और गोवर्धन ठाकुर) तेरे देखते-देखते ही (परमधाम) चली गईं. क्या तूने इस घटनाको स्वयं निकटसे नहीं देखा ?

हांणे जिन थिए बिसरी, कत तुं कोड मंझां ।
सुहाग संदो सुत्रडो, संनो थींदो तो हथां ॥ १०

अब तू भूल मत कर. बड़े आनन्दके साथ भजन भक्तिरूपी सूत कात. तेरे हाथसे काता हुआ यह बारीक सूत सुखदायी होगा.

हांणे तूं म किज निद्रडी, निद्रडी डेरे डुहाग ।
तूं तां जागी जोर करे, गिंन तूं वंजी रे सुहाग ॥ ११

हे जीव ! अब तू अज्ञान रूपी नींद मत कर, क्योंकि यह निद्रा अति कष्टदायिनी होगी. अब तू प्रयत्न पूर्वक जागृत हो जा और अपने प्रियतम धनीके पास जाकर अखण्ड सुख प्राप्त कर.

ही सूत्र घणों सुहामणों, मोघो थींदो जोर ।
सुजाणी तूं सिपरी, जीव मथां ईं घोर ॥ १२

यह (प्रेम, ज्ञान, भजन, भक्तिरूपी) सूत अत्यन्त सुखदायक है, किन्तु शरीर छूटनेके बाद यह अत्यन्त महंगा (दुर्लभ) हो जाएगा. इसलिए धामधनीको पहचान कर अपने जीवको उनके ऊपर समर्पित कर दे.

गिंन स्याबासी जेडिए, कर कां एहेडी पर ।
हांणे को थिए विसरी, जे तो पिरी सुजातां घर ॥ १३

हे आत्मा ! तू कुछ इस प्रकारसे प्रयत्न कर ताकि सखियोंके बीच तुझे प्रशंसा प्राप्त हो. अपने प्रियतम धनीको पहचान कर अब तू भूल-भूलैयामें क्यों भूल रही है ?

प्रकरण २७ चौपाई ६६१

भोरी तूं म भूल इन्द्रावती, ही बेर एहेडी आए ।
पिरी पांहिंजडो गिंनी करे, भोरी वीए तूं कां मसलाए ॥ १

हे भोली इन्द्रावती ! अब तू मत भूल. यह समय बहुत उपयुक्त है. हे भोली !

अपने प्रियतम धनीको प्राप्त करनेके बाद अब तू अन्यको उपदेश देनेमें और उन्हें सम्हालनेमें क्यों लगी हुई है ?

ही पिरी तोके कडे मिडंदा, गिंन तूं सुजाणी सुहाग ।
एहेडी एकांत तूं कडे लेहेनी, आए तोहेजडो लाग ॥ २

इस प्रकार तुझे धनी पुनः कब प्राप्त होंगे ? इसलिए उनकी पहचान कर अखण्ड सुख प्राप्त कर. इस प्रकार धनीके साथ एकान्तमें मिलनेका सुअवसर तुझे पुनः कब प्राप्त होगा ? जागृत होनेके लिए यह सुअवसर आया है.

ही बेर घणुं सुहामणी, जा पिरिए डिंनी तोके पांण ।
जगायाऊं जोर करे, सुहागणियनके सुरतांन ॥ ३

यह समय अत्यन्त सुन्दर (सुखदायक) है, जिसे धनीने तुझे अपनी जानकर दिया है. अखण्ड सुख लेनेवाली सुहागिनी ब्रह्मात्माओंके बादशाह (धनीजी) प्रयत्नपूर्वक जगा रहे हैं.

अंख उघाडे ढंकजे, भोरी जिन चुके हितरी बेर ।
रातो डींहा राजजो, सुत्र संनो कत सवासेर ॥ ४

आँखें बन्द कर खोलने (पलक झपकने) में जितना समय लगता है, उतना समय भी हे भोली इन्द्रावती ! तू धामधनीको नहीं भूलना. दिन-रात श्रीराजजीके प्रेममय भजन बन्दगी रूपी सवा सेर सूत कातना अर्थात् स्वयं जागृत होकर दूसरोंको भी जगाना.

नेणेसेनी नेह धरे, मूंजे चस्मेसे कतां ।
सुत्र संनो ही कती करे, मूंजी अंखिए भर अचां ॥ ५

सद्गुरुने कहा था, आँखोंसे प्रेम करके और मेरे तारतमज्ञान रूप दृष्टिसे सूत कातना. इस प्रकारका बारीक सूत (प्रेममय भजन, कीर्तन) कात कर मेरे ज्ञानरूपी नेत्रोंसे देख (चल) कर परमधामकी ओर आना.

भले सो कतंदी ही सुत्रडो, अदी भले लधिम ही वेर ।
भले सो भगी ही निद्रडी, मूंके भले धणी मिड्या हेर ॥ ६

हे बहन ! यह अच्छा हुआ कि तूने यह सूत काता. यह भी अच्छा हुआ

कि ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ. इसके परिणाम स्वरूप भ्रमकी निद्रा भाग गई. यह अच्छा हुआ कि मुझे धामधनी पुनः यहाँ पर मिल गए.

धणी धारा ही निद्रडी, व्यो ल्हाए ईं केर ।
पिरी उतां जिंदुओ अदी, आंऊं घोरे वंजां हिन वेर ॥ ७

इस भ्रमकी नींदको धनीके बिना अन्य कौन भगा सकता है ? इसलिए हे बहन ! इस समय मेरे प्रियतम धनी पर मैं मेरे जीवको न्योछावर कर रही हूँ.

मुंनी कारण मूंजी अदियूं, पिरी डिंना हित पेर ।
जिंनी पेरे आया अदियूं, आऊं घोरे वंजां हिन सेर ॥ ८

हे मेरी बहन ! मेरे लिए ही धनीजीने यहाँ पर चरण रखे हैं. हे बहन ! धनीजी जिस मार्गसे यहाँ आए, उस मार्ग पर अपने आपको न्योछावर करती हूँ.

अदी तूं धणी गिंनी बेठी मूंहजो, बेओ न पसे कोय ।
पस तूं गिंना धणी पांहिजो, अदी त तूं भाईज जोय ॥ ९

हे बहन ! (रतनबाई-विहारीजी) आप मेरे धनीजीको लेकर बैठी हो मानों दूसरा कोई देखता (जानता) ही नहीं है. देखना, अब मैं अपने धनीजीको किस प्रकार अपने हृदयमें रखती हूँ. हे बहन ! तभी आप मुझे धनीजीकी अर्धांगिनी समझना.

इन्द्रावती चोए अदी मूंहजी, मूंके मिड्यां मूंजा पिरी ।
जिंनी कोडे आंऊं आवईं, से पूरण केयां उंनी ॥ १०

इन्द्रावती कहती है, हे बहन ! मुझे मेरे प्रियतम धनी मिल गए हैं. मैं जिस उत्साह (हर्ष) के साथ यहाँ आई थी धनीजीने उन सब इच्छाओं (आकांक्षाओं) को पूर्ण कर दिया है.

रतनबाई अदी मूंहजी, आऊं करियां आंसे गाल ।
सुहाग मूंके डिनाऊ घणो, अदी थेइस आंऊं निहाल ॥ ११

हे मेरी बहन रतनबाई (विहारीजी) ! मैं (प्रबोधपुरीसे लौट कर) आपसे सब बातें करूँगी. धनीजीने मुझे बहुत सुख दिया. इसलिए हे बहन ! मैं कृतकृत्य हो गई.

मूं पर मंगई हिकडी, पिरी सुख डिंना घणी पर ।
हिंनी सुखे संदियूं गालियूं, अदी कंदासी वंजी घर ॥ १२

मैंने तो धामधनीके पास मात्र (परमधामके दर्शनकी इच्छा) एक ही वस्तु माँगी थी, परन्तु उन्होंने विभिन्न प्रकारसे (वाणी कहनेका) अखण्ड सुख दिया. हे बहन ! इन सुखोंकी बातें घर-परमधाममें जा कर कहूँगी.

प्रकरण २८ चौपाई ६७३

श्री लखमीजीनुं द्रस्टांत

हुं जाणुं निध एकली लऊं, धणी तणां सुख सघलां सहुं ।
ए सुख बीजा कोणे नव दऊं, वली वली तमने स्याने कहुं ॥ १

इन्द्रावती कहती है, मेरी इच्छा थी कि मैं तारतम ज्ञानरूपी अखण्ड धन अकेली ही प्राप्त करूँ और धनीजीके सम्पूर्ण अखण्ड सुख मैं ही ग्रहण करूँ, अन्य किसीको न दूँ. तुम्हें वारंवार इनके विषयमें किसलिए कहूँ ?

ए वचन कांई एम न कहेवाय, जीव मारो मांहें दुखाय ।
मुने घणुं विमासण थाय, पण जाक्यो मारो नव जकाय ॥ २

ये वचन इस प्रकार नहीं कहे जाते. इनको कहते हुए मेरा जीव अन्दरसे दुःखी होता है. मैं बहुत विचार भी करती हूँ परन्तु यह अखण्ड वाणीरूपी धन रोकने पर भी रुकता नहीं है.

धणी कहावे तो हुं कहुं, नहीं तो ए निध कांई एम न दऊं ।
देतां मारो जीव निसरे, ए वचन कांई मुने न विसरे ॥ ३

धामधनी कहलवाते हैं इसलिए ही कह रही हूँ, अन्यथा इस प्रकार यह अखण्ड धन दे नहीं देती. ऐसी अखण्ड वस्तुको देनेमें मेरे प्राण निकलना चाहते हैं (क्योंकि ये अखण्ड वचन धनीजीसे प्राप्त किए हैं). यह घटना मुझसे भूलाई नहीं जाती.

में लीधां कठणाई करी, श्री धणी तणे चरणे चित धरी ।
हुं घणुंए राखुं अंतर, पण सागर पूर प्रगट करे घर ॥ ४

मैंने धामधनीके चरणोंमें चित्त लगा कर इस अखण्ड धनको कष्टपूर्वक प्राप्त

किया है. इसलिए मैं इसे बड़ी सावधानी पूर्वक गुप्त रखना चाहती हूँ, परन्तु धामधनी मेरे हृदयरूपी घरमें बैठकर सागरकी तीव्र लहरोंकी भाँति उसे प्रवाहित कर वाणीके रूपमें प्रकट कर रहे हैं.

धणी कहावे अंतरगत रही, कह्यानी सोभा कालबुतने थई ।
नहीं तो ए वचन केम प्रगट थाय, कहेतां घणुं कालजुं कपाय ॥ ५

मेरी अन्तरात्मामें बैठकर स्वयं धनीजी कहलवा रहे हैं, परन्तु कहनेका श्रेय मूर्तिकी तरह मेरे शरीरको प्राप्त हुआ है. अन्यथा अखण्ड ज्ञानके ये वचन कैसे प्रकट होते ? क्योंकि ये वचन कहते हुए मेरा कलेजा विदीर्ण हो जाता है.

रखे जाणो वचन कह्यां अचेत, कहेतां जीवे दुख दीठां अनेक ।
ज्यारे जीवसुं विचारी जोयुं मन, जे आ हुं केहा कहुं छुं वचन ॥ ६

यह मत समझना कि मैं अचेतन अवस्थामें ये वचन कह रही हूँ, क्योंकि कहते हुए मेरे जीवने बहुत कष्ट देखे हैं. जब मैंने आत्माके साथ विचार करके देखा तो लगा कि मैं ये वचन कैसे कह रही हूँ.

एक लवो मारी बुधे न निसरे, पण धणी आपोपुं प्रगट करे ।
हवे जो साथ करो कांई बल, तो पूरण सोभा लेओ नेहेचल ॥ ७

मेरी बुद्धिके द्वारा तो इस अखण्ड निधिका एक शब्द भी नहीं निकल पाता परन्तु धामधनी स्वयं ये वचन प्रकट कर रहे हैं. हे सुन्दरसाथजी ! अब इन वचनोंको ग्रहण करनेके लिए कुछ और प्रयत्न करो ताकि तुम पूर्णरूपेण परमधामकी अखण्ड शोभा प्राप्त कर सको.

भारे वचन छे जो घणुं, जो कांई ग्रहेसो आपोपणुं ।
ए वचन उपर एक कहुं विचार, सांभलो साथ मारा धामना आधार ॥ ८

यदि विश्वास पूर्वक ग्रहण किए जाएँ तो ये वचन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं. एक दृष्टान्त देकर इनका महत्त्व बताऊँगी. हे मेरे परमधामके प्राणाधार सुन्दरसाथजी ! सुनिए.

धडथी मस्तक कोई अलगुं करे, तो अरध वचन मुखथी नव परे ।
जो कोई सारे सघलां संधाण, तो अरध लवो न कहेवाय निरवाण ॥ ९

शरीरसे मस्तकको कोई अलग कर दे फिर भी अखण्ड निधिका आधा

वचन भी मुखसे उच्चारित नहीं हो सकता. यहाँ तक कि यदि कोई लोहेके छड़ेसे पूरे शरीरको छेद डाले फिर भी निश्चय ही आधा वचन भी नहीं कहा जा सकता है.

साथ माटे कहुं सगाई जाणी, धणी ओलखजो घर रुदे आणी ।
एम हाथ झालीने बीजो कोई नव दिए, अने एम देतां अभागी नव लिए॥ १०

सुन्दरसाथके साथका मूल सम्बन्ध जानते हुए मैं ये वचन कह रही हूँ कि धामधनीको पहचान कर अखण्ड परमधामको हृदयमें रखो. इस प्रकार हाथ पकड़ कर अखण्ड निधि दूसरा कोई नहीं देगा, और यदि कोई दे दे, तो भी अभागा उसे ग्रहण नहीं कर सकता.

तमे साथ मारा सिरदार, हवे आ द्रस्टांत जो जो विचार ।
पाधरो एक कहुं प्रकास, सुकजी पाए पुरावुं साख ॥ ११

हे मेरे शिरोमणि सुन्दरसाथजी ! इस दृष्टान्तको विचार पूर्वक देखो. अब मैं शुकदेव मुनिके वचनोंकी साक्षी देकर इस पर सीधा प्रकाश डाल रही हूँ.

एह जोइने टालो भरम, जीव कांईक हवे करो नरम ।
वचन जीवसुं करो विचार, त्यारे ततखिण जीव ओलखसे आधार ॥ १२

इस उदाहरणको देख (विचार) कर भ्रम दूर करो. और जीव (हृदय) को थोड़ा कोमल बनाओ. जीवात्मा द्वारा इन वचनों पर विचार करो. तब जीव तुरन्त ही धनीको पहचान लेगा.

ओलखीने टालो अंतर, आपोपुं संभालो घर ।
हवे घर तणी केही कहुं वात, वचन विचारी जो जो प्रकास ॥ १३

इस प्रकार धनीके स्वरूपकी पहचान कर, अन्तरात्मा पर छाए हुए भ्रमको दूर करो. अपने आपको पहचानो एवं अपने घर-परमधामको याद करो. अब अखण्ड घर-परमधामकी बातोंका वर्णन किस प्रकार करूँ ? इसके बारेमें ''प्रकाश'' के वचनों पर अन्तरात्मासे विचार करके देखो.

हवे सांभलो आ पाधरुं द्रस्टांत, जीव जगावी जो जो एकांत ।
चौद भवननो कहिए धणी, लीला करे वैकुंठ विषे घणी ॥ १४

अब इस सरल दृष्टान्तके विषयमें सुनो. जीवको जागृत कर एकान्तमें एकाग्र चित्त हो कर देखो. चौदह लोकोंके स्वामी विष्णु भगवान कहलाते हैं. वे सदैव वैकुण्ठमें अनेक प्रकारकी लीलाएँ करते हैं.

लखमीजी सेवे दिन रात, एहनी छे मोटी विख्यात ।
जे जीव वांछे पोते हेत घर, ते सेवे श्री परमेस्वर ॥ १५

लक्ष्मीजी रात-दिन उनकी चरणोंकी सेवा करती हैं. पूरी दुनियाँमें उनकी प्रसिद्धि है. जो सांसारिक जीव अपना कल्याण चाहते हैं (वैकुण्ठ धामकी इच्छा करते हैं) वे परमेश्वरके रूपमें विष्णु भगवानकी सेवा करते हैं.

ब्रह्मादिक नारद छे देव, बीजा सुर नर अनेक करे एनी सेव ।
ब्रह्मांड विषे केटलां लऊं नाम, सहु कोई सेवे श्री भगवान ॥ १६

ब्रह्मा आदि देवोंसे ले कर नारद ऋषि अन्य देवी देवताओं सहित अनेक मनुष्य उनकी सेवा करते हैं. इस ब्रह्माण्डमें रह कर सेवा करनेवालोंके कितने नाम लें ? सब विष्णु भगवानकी ही सेवा (उपासना) करते हैं.

सेवतां न पामे पार, ए लीला एहनी छे अपार ।
आगे सेवा कीधी छे घणे, ते जो जो वचन सुकजी तणे ॥ १७

सेवा और उपासना करने पर भी वे उनका पार नहीं पा सकते. उनकी लीला अपार है पहले भी कई भक्तोंने बहुत उपासना की. इसकी पुष्टि शुकेदवजीके वचनोंसे होती है.

एह छे एवो समरथ, सेवकना सारे अरथ ।
हवे एह तणुं जो जो गिनान, मोटी मतनो धणी भगवान ॥ १८

भगवान विष्णु इतने शक्तिशाली हैं कि वे अपने सेवकोंके सभी कार्य सिद्ध कर देते हैं. जो विशाल बुद्धिके स्वामी विष्णु भगवान हैं अब उनके ज्ञानको भी देखो.

एक समे करी बेठा ध्यान, विसरी सरीर तणी सुध सान ।
ए तां सदीवे चितवणी करे, पण बाहेर केहने खबर ना परे ॥ १९

एक बार भगवान विष्णु ध्यान लगा कर बैठे थे. वे ध्यानमें ऐसे लीन हो गए कि शरीरकी सुध-बुध नहीं रही. इस प्रकार वे हमेशा ध्यान किया करते थे किन्तु इसकी जानकारी किसीको भी नहीं थी.

एणे समे ध्यान थयुं अति जोर, प्रेम तणी चंपाणी कोर ।
लखमीजी आव्यां एणे समे, मन अचरज पाम्यां विसमे ॥ २०

एक समय वे ध्यानमें ऐसे तल्लीन हो गए कि प्रेमका प्रवाह उमड़ पड़ा. उस समय लक्ष्मीजी आ पहुँची, और उनका मन आश्चर्यमें डूब गया.

आवी लखमीजी ऊभां रह्यां, श्री भगवान तिहां जाग्रत थया ।
लखमीजी करे विनती, अमे बीजो कोई देखतां नथी ॥ २१

लक्ष्मीजी पासमें आकर खड़ी हो गईं. ऐसेमें भगवान विष्णु ध्यानमेंसे जागृत हो गए. तब लक्ष्मीजी विनय पूर्वक कहने लगीं कि मैं आपको छोड़ कर अन्य किसीको महान् और पूज्य नहीं देखती हूँ.

केहनुं तमे करो छो ध्यान, ते मुने कहो श्री भगवान ।
मारा मनमां थयो संदेह, कही प्रीछवो मुने एह ॥ २२

हे भगवान ! आप किसका ध्यान कर रहे हैं ? कृपया मुझे बताइए. क्योंकि मेरे मनमें सन्देह उत्पन्न हुआ है. आप मुझे यह सब कह कर समझाइए.

किहां वसे ने कीहो ठाम, ते मुने कहो श्री भगवान ।
ए लीला सांभलुं श्रवणे, वली वली लागुं चरणे ॥ २३

हे भगवान ! आप जिसका ध्यान करते हैं वह स्वरूप कहाँ निवास करता है उसका स्थान कहाँ है ? कृपया मुझे यह सब बताइए. मैं उनकी लीला अपने कानोंसे सुनना चाहती हूँ इसलिए वारंवार आपके चरणोंमें प्रणाम करती हूँ.

सांभलो लखमीजी कहुं तमने, ए आगे सिवे पूछ्युं अमने ।
पण ए लीलानी मुने खबर ज नथी, तो केम कहुं तमने मुख थकी ॥ २४

तब विष्णु भगवान बोले, हे लक्ष्मीजी ! मैं तुम्हें जो कह रहा हूँ उसे ध्यानपूर्वक सुनो. इस ध्यान लीलाके विषयमें प्रथम कल्पमें शिवजीने भी मुझे पूछा था. परन्तु इस लीलाके विषयमें मुझे कुछ भी पता नहीं है, तो उसे अपने मुखसे कैसे कहूँ ?

कहुं तमने सांभलो मारी वात, ए वचन रखे मुखथी करो प्रकास ।
लखमीजी तमे कहो तेम करुं, मारु आप नथी कांई तमथी परुं ॥ २५

हे लक्ष्मीजी ! मेरी बात सुनो, इस प्रकारके वचनोंका उच्चारण नहीं करना. तुम इसके अतिरिक्त जो कुछ भी कहोगी उसे मैं करूँगा, क्योंकि तुम मुझसे भिन्न नहीं हो.

मुखथी वचन रखे ओचरो, नहीं तो घणुं थासे खरखरो ।
चौद भुवननी पूछो वात, ते तमने कहुं विख्यात ॥ २६

मुखसे ऐसे वचन मत बोलो अन्यथा बड़ी कठिनाई आ पड़ेगी. इस ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंके बारेमें मुझसे पूछो. उनकी सब बातें मैं विस्तार पूर्वक कहूँगा.

रखे आसंका आणो एह, एह रखे राखो संदेह ।
लखमीजी तमे करो करार, मारा मुखथी वचन न आवे बहार ॥ २७

इस लीलाके विषयमें किसी भी प्रकारकी आशंका मनमें नहीं लाना और न ही कोई सन्देह रखना. हे लक्ष्मीजी ! तुम सन्तुष्ट रहो क्योंकि ध्यानसे सम्बन्धित एक भी वचन मेरे मुखसे बाहर नहीं निकलता.

त्यारे लखमीजी दुखाणां घणुं, मनसुं जाणे हुं केही पेर करुं ।
मोसुं तां राख्यो अंतर, हवे करीस हुं केही पर ॥ २८

तब लक्ष्मीजी बहुत दुःखी हुई और मनमें विचार करने लगी कि अब क्या करूँ ? मेरे पति विष्णु भगवान मुझसे भी अन्तर रखने लगे. अब मैं क्या करूँ ?

नेणे आंसु बहु जल झरे, अने वली वली रमा विनती करे ।
धणी ए अंतर तां में न खमाय, जीव मारो आकुल व्याकुल थाय ॥ २९

ए दुख तां में सह्यो न जाय, अने कालजडुं मारुं कपाय ।
कंपमान थई कलकले, करे निस्वास अंतस्करण गले ॥ ३०

लक्ष्मीजीके नेत्रोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी और वारंवार विनय पूर्वक कहने लगी, हे स्वामी ! यह अन्तर मुझसे सहन नहीं होता. इसके कारण मेरा जीव आकुल व्याकुल हो रहा है. यह दुःख मुझसे सहा नहीं जाता. मेरा कलेजा कटता जा रहा है. वह अत्यन्त व्याकुल होकर काँपने लगी. उनका हृदय अन्तर्ग्लानिसे भर गया और वह लम्बी साँस लेने लगी.

हवे जो धणी करो मारी सार, तो ए वचन कहेवुं निरधार ।
तमे घणुंए मुने वार्‌या सही, अनेक पेरे सिखामण कही ॥ ३१

हे स्वामी ! यदि आप मुझे सम्हालना चाहते हैं तो आपको निश्चित रूपसे ये वचन कहने पड़ेंगे. आपने मुझे बहुत रोका तथा अनेक प्रकारके उपदेश भी दिए.

पण मारो जीव केमे नव रहे, लखमीजी वली वली एम कहे ।
त्यारे वली बोल्या श्री भगवान, लखमीजी तु निस्चे जाण ॥ ३२

किन्तु मेरा जीव किसी भी प्रकारसे नहीं रह सकता. लक्ष्मीजीने वारंवार इस प्रकार कहा तब भगवान विष्णु पुनः कहने लगे, हे लक्ष्मीजी ! तुम यह निश्चित मान लो.

जो कोटाण कोट करो प्रकार, तो एटलुं तमे जाणो निरधार ।
मारी जिभ्याए न वले एह वचन, ए द्रढ करो जीवने मन ॥ ३३

यदि करोड़ों उपाय करो फिर भी इसे निश्चित मानना कि ये ध्यानके वचन मेरी जिह्वा पर कभी नहीं आएँगे. इस वास्तविकताको हृदयमें दृढ़रूपसे ग्रहण कर लो.

हवे लखमीजी कहे सांभलो राज, मारा जीवने उपनी अति दाझ ।
स्यो वांक तमारो धणी, कांई अप्रापत दीसे अम तणी ॥ ३४

लक्ष्मीजी कहती हैं, हे स्वामी ! अब सुनिए, मेरे हृदयमें भयानक अग्नि जल

रही है. इसमें आपका दोष भी क्या है. वस्तुतः मेरे लिए यह अप्राप्त दिखाई देता है.

हवे सरीर मारुं केम रहे, जीव मारो मुने घणुं दहे ।
हवे अग्या मागुं मारा धणी, करुं आरंभ तपस्या तणी ॥ ३५

अब मेरा शरीर कैसे जीवित रहेगा ? मेरा जीव मुझे भीतर ही भीतर जला रहा है. इसलिए हे मेरे धनी ! अब तो मैं आपसे आज्ञा मागती हूँ कि कहीं जाकर तप करना आरम्भ करूँ.

त्यारे भगवानजी बोल्या ततकाल, लखमीजी म लावो वार ।
त्यारे कलप्यो जीव दुख अनंत करी, उपनो वेराग सोक मनमां धरी ॥ ३६

तब विष्णु भगवान तत्काल बोले, हे लक्ष्मीजी ! देर मत करो. इसे सुनकर लक्ष्मीजी अत्यन्त दुःखी हुईं और उनका जीव तड़पने लगा. परिणाम स्वरूप उनके मनमें आघात पहुँचा और वैराग्य उत्पन्न हो गया.

जीवने आसा पूरण हती घणी, जाणुं मुने छेह नहीं दिए मारो धणी ।
चरणे लागी लखमीजी चाल्यां, अने रुदन करे जाय पाला पल्यां ॥ ३७

लक्ष्मीजीको पूर्ण आशा थी कि उनके धनी विष्णु भगवान इस प्रकार उनसे भेद (भिन्नता) नहीं रखेंगे. चरणोंमें प्रणाम करके लक्ष्मीजीने प्रस्थान किया और मार्गमें रुदन करते हुए पैदल ही आगे बढ़ी.

एणे समे व्रह कीधो अति जोर, ते हुं केटलो कहुं बकोर ।
एक ठामे बेठा दमे देह, श्रीभगवानजीसुं पूरण सनेह ॥ ३८

इस समय लक्ष्मीजीने अत्यन्त विरह किया. मैं उनकी पुकारका वर्णन कितना करूँ ? वह एक स्थान (केतुमाल खण्ड) पर देह दमन करके विष्णु भगवान पर पूर्ण स्नेह रखकर तपस्या करने लगी.

वाय तडको टाढक नव गणे, करे तपस्या जोर अति घणे ।
सनेह धरी बेठा एकांत, एटले सात थया कल्पांत ॥ ३९

उन्होंने हवा, आँधी, तूफान, भयङ्कर ठण्डी और अत्यन्त गर्मीकी परवाह नहीं की. ये सब सहन करते हुए अत्यन्त तल्लीन होकर तपस्या करने लगीं. इस

प्रकार विष्णु भगवानके प्रति प्रेम धारण करके एकान्तमें बैठ गईं. इतनेमें सात कल्प बीत गए.

त्यारे ब्रह्मा ने खीरसागर मली, आव्या वैकुंठ भगवानजी भणी ।
एवडो स्वामी स्यो उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात ॥ ४०

तब ब्रह्माजी तथा क्षीर सागर दोनों मिलकर विष्णु भगवानके पास वैकुण्ठ गए और कहने लगे, हे स्वामी ! इतना बड़ा उत्पात क्यों मचा रहे हैं ? लक्ष्मीजी सात कल्पोंसे तप कर रही हैं.

त्यारे भगवानजी एम बोल्या रही, जे वांक अमारो कांईए नहीं ।
स्वामी तोहे वचन तमने कहेवाय, जे लखमीजी घणुं दुखी थाय ॥ ४१

तब विष्णु भगवानने उत्तर दिया, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है. पुनः उन दोनोंने कहा, हे प्रभो ! आप स्वामी हैं इसलिए आपसे ही पूछना चाहिए कि लक्ष्मीजी किस कारण दुःखी हो रही हैं ?

एवडो रोष तमे मा धरो, लखमीजी पर दया करो ।
तमे स्वामी मोटा दयाल, लखमीजी दुख पामे बाल ॥ ४२

क्षीरसागरने कहा, हे भगवन ! आप इतना अधिक क्रोध न करें. लक्ष्मीजी पर अनुकम्पा करें. क्योंकि आप ब्रह्माण्डके अधिपति हैं और बड़े दयालु हैं ! मेरी पुत्री लक्ष्मीजी दुःखित हो रही है.

अधखिण एक म लावो वार, लखमीजी तेडो ततकाल ।
चरण ग्रह्यां तिहां खीर सागरे, वली वली ब्रह्मा विनती करे ॥ ४३

इसलिए आप आधे क्षणका भी विलम्ब न करें. लक्ष्मीजीको तुरन्त ही बुला लें. इस प्रकार प्रार्थना करते हुए क्षीरसागरने विष्णु भगवानके चरण पकड़ लिए. ब्रह्माजी भी वारंवार इसी प्रकारकी प्रार्थना करने लगे.

लखमीजी लगे चालो सही, तेडी आविए तिहां लगे जई ।
त्यारे आव्या चाली श्री भगवान, लखमीजी बेठां जेणे ठाम ॥ ४४

हे प्रभु ! आप लक्ष्मीजीके पास चलिए तो सही. वहाँ जाकर उन्हें बुला लाते

हैं. तब विष्णु भगवान उस स्थानकी ओर चल पड़े जहाँ लक्ष्मीजी तपश्चर्या कर रही थीं.

त्यारे लखमीजीए कीधां परनाम, त्यारे वली बोल्या श्री भगवान ।
लखमीजी तमे चालो घरे, त्यारे वली रमा वाणी ओचरे ॥ ४५

वहाँ पहुँचने पर लक्ष्मीजीने प्रणाम किया. इसके बाद विष्णु भगवान बोले, हे लक्ष्मीजी ! अब तुम घर चलो. तब लक्ष्मीजी उन्हें पुनः इस प्रकार कहने लगीं–

मारा धणी तमे कहो ते ज वचन, जीव घणुं दुख पामे मन ।
जो तप करो कल्पांत एकवीस, तोहे न वले जिभ्या एम कहे जगदीस ॥ ४६

पण देखाडीस हुं चेहने करी, त्यारे तमे लेजो चित धरी ।
त्यारे ब्रह्मा ने खीर सागर बे, लखमीजीने वचन कहे ॥ ४७

हे मेरे स्वामी ! आप मुझे ध्यानके वही वचन कहें, क्योंकि मेरे जीव और मन अत्यन्त दुःखी हो रहे हैं. प्रत्युत्तरमें भगवान विष्णुने कहा यदि तुम इक्कीस कल्प तक भी तपस्या करती रहोगी फिर भी इस ध्यानकी बात कहनेमें मेरी जीभ असमर्थ रहेगी.

परन्तु इतना निश्चित है कि उस लीलाका अभिनय (चरित्र) कर मैं स्वयं तुम्हें दिखा दूँगा. तब तुम उसे चित्तमें धारण कर लेना. तब ब्रह्माजी और क्षीर सागर दोनों लक्ष्मीजीसे इस प्रकार कहने लगे–

लखमीजी उठो ततकाल, दया कीधी स्वामी दयाल ।
हवे रखे तमे हठ करो, आनंद मनमां अति घणो धरो ॥ ४८

हे लक्ष्मीजी ! अब आप तुरन्त ही खड़ी हो जाइए. दयाके सागर स्वामीने आप पर कृपा दृष्टि की है. इसलिए अब आप हठ छोड़ दें, और अपने मनमें अत्यधिक प्रसन्नता धारण करें.

त्यारे लखमीजी लाग्यां चरणे, एम तेडी आव्या आनंद अति घणे ।
ब्रह्मा ने खीर सागर वल्या, चरणे लागी अस्थानक आवया ॥ ४९

तब लक्ष्मीजी भगवान विष्णुके चरणोंसे लिपट गईं. इस प्रकार आनन्द पूर्वक

लक्ष्मीजीको घर ले आए. ब्रह्माजी तथा क्षीर सागर दोनोंने भगवान विष्णुके चरणोंमें प्रणाम कर अपने-अपने स्थानके लिए प्रस्थान किया.

हवे एह विचारी तमे जो जो साथ, न वली जिभ्या वैकुंठनाथ ।
ग्रही वस्त भारे करी जाण, नेठ वचन नव कह्यां निरवाण ॥५०

हे सुन्दरसाथजी ! अब तुम इस दृष्टान्त पर विचार करो और अन्तर्दृष्टिसे देखो कि उस लीलाको कहनेमें वैकुण्ठके अधिपति विष्णु भगवानकी जिह्वा भी असमर्थ हो गई. उन्होंने ध्यानमें अमूल्य वस्तु ग्रहण की, किन्तु उसके विषयमें निश्चय ही एक वचन भी नहीं कहा.

नहीं तो वैकुंठनाथने केही खबर, विना तारतम सुं जाणे मूल घर ।
बीजी खबर कांईए नव कही, तो पण निध भारे करी ग्रही ॥५१

अन्यथा वैकुण्ठके अधिपति विष्णु भगवानको अद्वैत घरकी सुधि कहाँ है ? तारतम ज्ञानके बिना मूल घर (परमधाम) की लीला कौन जान सकता है ? उन्होंने अन्य कोई भी स्पष्टता नहीं की तथापि महान् निधि समझ कर उसे ग्रहण किया.

भारे विना भार नव उपडे, मुखथी वचन जुआ केमे नव पडे ।
ज्यारे थयो कृस्न अवतार, रुकमणी हरण कीधुं मुरार ॥५२

योग्य पात्रके बिना उचित भार उठाया नहीं जा सकता (अर्थात् अखण्ड निधिके महत्त्वको अखण्ड धामके रहनेवाले ही जान सकते हैं). इस विषयमें मुखसे वचन नहीं निकल सकते. जब द्वापर युगमें श्रीकृष्णका अवतरण हुआ तब मुरारी श्रीकृष्णने विदर्भकी राजकुमारी रुक्मिणीका हरण किया.

माधवपुर परण्यां रुकमणी, धवल मंगल गाय सुहागणी ।
गातां गातां लीधुं व्रजनुं नाम, त्यारे पाछां भोम पड्या भगवान ॥५३

माधवपुरमें श्रीकृष्णने रुक्मिणीके साथ विधिपूर्वक विवाह किया. उस समय सुहागनियाँ बधाईके गीत गा रही थी. गीत गाते-गाते उन्होंने जब अखण्ड व्रजका नाम लिया तब तुरन्त ही भगवान विष्णुरूप श्रीकृष्ण उन शब्दोंको सुन कर मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़े.

त्यारे सहु कोई पाम्यो मन अचरज, एम लखमीजीने देखाड्युं व्रज ।
समा थई बेठा भगवान, लखमीजीनी एम भाजी हाम ॥५४

उस समय सबके मनमें आश्चर्य हुआ.इस प्रकार लीला (अभिनय) करके विष्णु भगवानने रुक्मिणीजी (लक्ष्मीजी) को व्रजकी लीलाका महत्त्व दिखाया. (विष्णु भगवान व्रजके स्वरूपका ही ध्यान करते थे, इस तथ्यको संकेत द्वारा रुक्मिणीजीको बता दिया.) फिर भगवान विष्णु शान्त हो कर बैठ गए. इस प्रकार लक्ष्मीजीकी मनोकामना पूर्ण की.

ए विचार तमे जो जो रही, ए लीला सुकजीए कही ।
जे लीला कीधी जगदीस, ते मांहें आपण हुता सरीख ॥५५

हे सुन्दरसाथजी ! इस दृष्टान्तको आप शान्त चित्त हो कर विचार पूर्वक देखो. इस लीलाका वर्णन शुकदेवमुनिने किया है. उपर्युक्त चरित्रके द्वारा भगवान श्रीकृष्णने रुक्मिणीजीको जिस अखण्ड व्रज लीलाका महत्त्व दिखाया है, उसी व्रजलीलामें हम भी सम्मिलित थे.

तो वचन तमने कहेवाय, नहीं तो अरध लवो नव प्रगट थाय ।
आ व्रज वालो वालो ते एह, वचन आपणने कहे छे जेह ॥५६

इसलिए आपको ये वचन कहे जाते हैं, अन्यथा इन वचनोंका लवलेश मात्र भी प्रकट नहीं होता. यही व्रजवल्लभ श्रीकृष्ण सद्गुरु बनकर आए हैं और हमें ये वचन कह रहे हैं.

रास मांहें रमाडयां जेणे, प्रगट लीला कीधी तेणे ।
श्री धामतणां धणी कहेवाए, ते आवी बेठा आपण मांहें ॥५७

जिस स्वरूपने वृन्दावनमें अखण्ड रासकी लीला खेलाई उन्होंने ही यहाँ (नवतनपुरीमें) आकर उस लीलाको प्रकट किया. वे ही परमधामके धनी कहलाते हैं. वे ही अभी हम सबके बीच आकर बैठे हैं.

ते माटे तमने कह्युं द्रस्टांत, जीवसुं वचन विचारो एकांत ।
ठेकाणुं वैकुंठ विसराम, कहेवावालो श्री भगवान ॥५८

इसी (रहस्यको समझाने) के लिए तुम्हें यह दृष्टान्त दिया गया है. एकाग्र

चित्त हो एकान्तमें बैठकर इन वचनों पर विचार करो. वैकुण्ठ धाम जैसा वह स्थान और भगवान विष्णु जैसे वक्ताका यह प्रसंग है.

लखणीजी तिहां श्रोता थयां, केटलुं खप करीने रह्यां ।
तोहे न पाम्यां एक वचन, अने तमे कीहु लई बेठा छो धन ॥५९

इस तथ्यको जाननेके लिए लक्ष्मीजी वहाँ श्रोता बनीं हैं और उन्होंने अनेक कष्ट भी सहन किए फिर भी वे इस अखण्ड लीला रहस्यका एक भी वचन प्राप्त नहीं कर सकीं. हे सुन्दरसाथजी ! विचार करो कि तुम कैसा अखण्ड धन प्राप्त (ले) कर बैठे हो.

हजीए न टालो तमे भरम, अने जीव कांए नव करो नरम ।
आ नौतनपुरी कहिए नगरी, जिहा श्रीदेवचन्द्रजीए लीला करी ॥६०

अभी तक तुम अपना भ्रम दूर नहीं कर रहे हो. अपने कठोर हृदय (जीव) को कब तक द्रवित नहीं करोगे ? यह नगरी पवित्र नवतनपुरी कहलाती है, जहाँ सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजने आकर लीलाएँ कीं.

आ प्रगट वचन कीधां अपार, तोहे न वली तमने सार ।
अमल उतारो तमे जोपे करी, अने जीव जगाओ वचन चित धरी ॥६१

ऐसे अपार प्रत्यक्ष वचन कहे जा चुके हैं, तथापि तुम सावधान नहीं हुए. तुम मायाके नशे (अमल) को अच्छी तरह उतारो और इन वचनोंको चित्तमें धारण कर जीवको जागृत करो.

माया जुओ तमे अलगां थई, तारतमने अजवाले रही ।
जे वाणी श्री धणिए कही, ते जीवने वचन केम दीजे नहीं ॥६२

हे सुन्दरसाथजी ! मोह (अज्ञान) से अलग (अनासक्त) होकर तारतम ज्ञानके प्रकाशमें इस मायाके खेलको देखो. धामधनी सद्गुरुने जो ज्ञान दिया है उसे जीवात्माको क्यों नहीं देते ?

हवे गुण सघलाने करो हाथ, अने ओलखो प्राणनो नाथ ।
हवे एटलो जीवसुं करो विचार, जे केहा वचन कह्यां आधार ॥६३

अब सब गुण, अंग, इन्द्रियोंको अपने नियन्त्रण (काबू) में लो (संयमित

करो) और अपने प्रियतम धनी प्राणनाथ (सद्गुरु) को पहचानो. हे साथजी ! जीवात्मा द्वारा इतना तो सोचो कि हमारे प्राणाधार धामधनीने हमारे लिए कैसे वचन कहे हैं ?

जिहां लगे जीव न विचारे मन मांहें, तो चोपडे घडे जेम छांटो थाए ।
हवे इन्द्रावती कहे सांभलो वात, चरणे लागुं मारा धामना साथ ॥ ६४

जब तक जीव अन्तर्मनसे विचार नहीं करता तब तक उसकी वही स्थिति होगी जो चिकने घड़े पर गिरी हुई बूँदोंकी होती है (मायामें लिप्त जीवको सद्गुरुका एक भी वचन प्रभावित नहीं करता). इन्द्रावती कहती है, मैं परमधामके सुन्दरसाथके चरणोंमें नतमस्तक होकर कहती हूँ. तुम सब सावधान होकर मेरी बात सुनो.

वली वली नहीं आवे ए अवसर, रखे हाम लई जागो घर ।
थोडा मांहें कहुं छुं अति घणुं, अने जाण्युं धन कां निगमो आपणुं ॥ ६५

वारंवार यह अवसर (मानव शरीरकी प्राप्ति और तारतम ज्ञान) प्राप्त नहीं होता. इसलिए मायावी इच्छाओंको लिए बिना परमधाममें जागृत हो जाओ. मैंने संक्षेपमें ही बहुत कुछ कह दिया है. स्वयं परिचित (सद्गुरु रूप) धनको तुम क्यों खो रहे हो ?

आगे आपण विहिला थया, तो श्री देवचन्द्रजीए वंचया ।
नहीं तो केम वंचे आपणने एह, जो राख्यो होत आपणे सनेह ॥ ६६

पहले तो हम सब धनीजीसे अलग हो गए (पूर्ण परिचय न होनेके कारण सद्गुरुके वचनोंसे दूर रहे). इसी कारण देवचन्द्रजी महाराजकी उपस्थितिसे वञ्चित हुए अर्थात् वे हमें छोड़कर चले गए. यदि हम सबने उनके साथ प्रेम किया होता तो वे हमें त्याग (छोड़) कर क्यों चले जाते ?

हवे वली आव्या बीजी देह धरी, आपण उपर दया अति करी ।
चेतन करी दीधो अवसर, लई लाभ ने जागिए घर ॥ ६७

अब पुनः दूसरा शरीर धारण कर वे हमारे अन्तःकरणमें विराजमान हुए हैं.

इस प्रकार उन्होंने हम पर बड़ी कृपा की है. तारतमज्ञान द्वारा हमें सचेत कर जागृतिके लिए यह सुअवसर दिया है. अब इस अवसरका लाभ लेकर परमधाममें जागृत हो जाओ.

मनोरथ सर्वे पूरण थाए, जो आ द्रष्टांत जुओ जीव मांहे ।
ते माटे इन्द्रावती कहे फरी फरी, जो धणिए कृपा तमने करी ॥ ६८

यदि इस दृष्टान्तको अन्तर्मनसे विचार करोगे तो सभी मनोकामनाएँ अवश्य पूरी होंगी. इसलिए इन्द्रावती वारंवार कह रही है कि धामधनीने तुम्हारे ऊपर बहुत बड़ी कृपा की है.

प्रकरण २९ चौपाई ७४१

प्रगटवाणी प्रकासनी-राग सामेरी

सुईने सुई सुता सुं करो रे, आ विषम ठिकाणा मांहे जी ।
जागीने जुओ उठी आप संभारी, एणी निद्राए लेवाणां कांए जी ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे साथजी ! इस महाविकट संसारमें तन, मन और आत्मासे अज्ञानताकी नींदमें सोकर क्या-क्या कर रहे हो ? जागृत होकर देखो, उठो और अपने आपको सम्हालो इस निद्रामें कैसे बहते चले जा रहे हो ?

एणी निद्राएजे कोई लेवाणां, नहीं ते आपणां साथी जी ।
एणी रे भोमे घणां छेतरियां, तमे उठो इहां थकी जी ॥ २

इस मोह मायाकी नींदमें जो भी बह (फँस) गया है वह हमारा साथी नहीं है. इस मायावी भूमिमें बड़े-बड़े ज्ञानी, ऋषिमुनि भी धोखा खा गए हैं. इसलिए तुम यहाँसे उठो (जाग जाओ).

नहीं रे निद्रा कोई घेण घारण, निद्रा होय तो जगव्यो जागे जी ।
उठाडी जीवने उभो कीजे, वली न मूके पोतानो माग जी ॥ ३

यह कोई गहरी नींद नहीं है (यह तो मोहका नशा है). यदि स्वाभाविक नींद होती तो जगाने पर जग जाते. परन्तु जीवात्माको जागृत करके उसे खड़ा भी करें तो भी वह अपना मार्ग नहीं छोड़ता है (मायाके झूठे विषय सुखको नहीं छोड़ता है).

ते ज गेहन ने तेह ज घारण, ते ज घूटन अधको आवे जी ।
एणी भोमने ए निद्रा मांहेंथी, धणी विना कोण जगावे जी ॥ ४

वही नशा है और वही प्रगाढ़ निद्रा है. उसी प्रकारके खर्राटे आ रहे हैं. इस मायाकी प्रगाढ़ नींद (मोह-अज्ञान) में से धामधनीके बिना दूसरा कौन जगाएगा ?

एणे ठेकाणे तां कोई न उगरियो, तमे सूता तेणे ठाम जी ।
ए ठाम घणुं विषम लागसे, प्रगट कहुं गत भोम जी ॥ ५

इस मायामेंसे कोई भी पार नहीं पा सका है. तुम स्वयं इसी झूठे स्थान पर सो रहे हो. यह स्थान अत्यन्त दुःखदायी होगा. मैं इस भूमिकी स्थिति स्पष्ट कर रही हूँ.

विषनी भोम अने विष पाथरियुं, आहार करे विष वेल जी ।
सरीर विषनुं मांहेली जोगवाई विषनी, एक मांहे ते जीव नेह केवल जी॥ ६

यह मायावी भूमि विषकी है. उसकी शय्या भी विषैली है. इसके कारण सब कोई विषकी बेलीका आहार करते हैं. यह शरीर और उसकी इन्द्रियाँ आदि सामग्री भी सब विष समान हैं. एक मात्र जीव ही विशुद्ध, चैतन्य, सत्य एवं अखण्ड है.

विषनी तलाई ने विषना ओढना, विषनो ढोलियो ढलाय जी ।
विषनो ओसीसो ने विषनो ओछाड, वली विंजणे ते विषनो वाय जी ॥ ७

गद्दा और रजाई भी विषकी हैं तथा बिछाया हुआ पलंग भी विषका ही है. तकिया और चादर भी सब विषके ही हैं. इतना ही नहीं पंखेकी हवा भी विषयुक्त है.

जागतां विषने सुपने विष रे, निद्रामां विष निरवाण जी ।
बाहेर तणो विष केही पेरे कहुं रे, ते तां वाय ते विष उंधाण जी ॥ ८

जागृत अवस्थामें तथा स्वप्न अवस्थामें भी संसार विष है. निद्रावस्था (अज्ञानरूपी निद्रामें सोते रहना) तो अवश्य ही विष है. अब शरीरके बाहरके विषके विषयमें मैं क्या कहूँ. विषकी ही आँधी चल रही है.

वस्तर विष ने भूषण विष रे, सरवा अंगे विष साज जी ।
ए विष जीवने गेहन घारण रे, ते केम टले विना एक श्रीराजजी ॥ ९

पहननेके वस्त्र और आभूषण सब विषके समान हैं. यहाँ तक कि इस शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्ग और शृङ्गारकी सभी सामग्री विषके समान ही हैं. यह विष जीवके लिए गहन नशा है. श्रीराजजीके बिना यह कैसे दूर हो सकता है ?

जोर करी तमे जगवो रे जीवने, नथी सूतानी आ भोम जी ।
जेम जेम सोइए तेम वाधे विस्तार, पछे नहीं उठाय केमे जी ॥१०

हे सुन्दरसाथजी ! तुम जोर लगा कर जीवको जागृत करो. यह भूमि अज्ञानरूपी निद्रामें सो जाने योग्य नहीं है. जैसे-जैसे गफलतकी निद्रामें सोते रहोगे, वैसे-वैसे मायाका विस्तार होता जाएगा, फिर (मानव तन छोड़नेके बाद) इससे किसी भी प्रकारसे जागृत नहीं हो पाओगे.

ए भोमलडी तमे कांए नव मूको, हजी नथी घारण जाती जी ।
एणी भोमे दुखडां दीसे घणां रे, ते तमे जुओ कां आघी जी ॥११

ऐसी भूमिको तुम क्यों नहीं त्याग देते ? अभी भी तुम्हारा नशा उतर नहीं रहा है. इस भूमिमें तुम्हें अनेक प्रकारके दुःख दिखाई देंगे. तुम उन्हें और ज्यादा क्यों देख रहे हो ?

आघी जुए दुख अनेक उपजसे, ते माटे उठो ततकाल जी ।
जलना जीवनो घर जल मांहें, जेम रहे करोलियो मांहे जाल जी ॥१२

अधिक देखने पर अनेक दुःख उत्पन्न होते हैं इसलिए तुरन्त ही मोह मायाकी निद्राको छोड़कर जागृत हो जाओ. जिस प्रकार जलचरका घर जलमें ही होता है, और मकड़ी अपने बुने हुए जालमें ही रहती है.

सहु कोई जाली गूंथे पोतानी, अने मांहेना मांहें मुझाय जी ।
मुंझाणा पछी दुख अनेक देखे, घणुं दुखे जीवडो जाय जी ॥१३

सब सांसारिक जीव मकड़ीकी भाँति अपने सम्बन्धरूपी जाल बनाते हैं और उसीमें मग्न होकर फँस जाते हैं. फँसनेके बाद अनेक दुःख देखते हैं (और उन्हें सहन करते है). इस प्रकार उनका जीव बड़ी कठिनाईके साथ शरीरको छोड़ेगा.

घणुं दुख देखे जीव जातां, वली ते गूंथे ततकाल जी ।
केम दोष दीजे करोलियाने, एहना घर थया मांहें जाल जी ॥१४

जीव जाते समय बहुत-से दुःख देखता है तथापि दूसरा जन्म लेकर पुनः सम्बन्धकी जाली गूँथता रहता है. मकड़ीको क्यों दोष दें ? उसका तो घर ही जालके अन्दर है.

आपणां घर तां नहीं एणे ठामे, चौद भवनमां क्यांहे जी ।
ते माटे वालोजी करे रे पुकार, केहे स्याने सूता छो आंहे जी ॥१५

हे सुन्दरसाथजी ! हमारा घर तो यहाँ नहीं है, इतना ही नहीं पूरे चौदह लोकमें कहीं भी नहीं है. इसलिए सद्गुरु धनी पुकार कर कहते हैं कि तुम इस संसारमें क्यों सो रहे हो ?

ओला दुखनां घर ते पण मेले नहीं, तमे सुखनां घर न संभारो जी ।
सघला ग्रन्थ पाए साख पुरावी, साथ हवे तो दोष तमारो जी ॥१६

वे संसारी जीव तो अपने दुःखके घरको भी छोड़ते नहीं हैं. परन्तु हे साथजी ! तुम सब तो सुखके घर (परमधाम) को भी याद नहीं करते. सभी धर्मग्रन्थ इसके साक्षी हैं, इसलिए अब भी आत्माको जागृत नहीं करोगे तो दोष तुम्हारा ही माना जाएगा.

बेहद घर ने बेहद सुख रे, बेहद मारा श्री राज जी ।
अविचल सुख अनन्त देवाने, हुं जगवुं तमारे काज जी ॥१७

हे सुन्दरसाथजी ! अपना तो घर भी बेहद है और वहाँके सुख भी बेहद (असीम) हैं एवं अपने स्वामी श्री राजजी भी असीम हैं. अतः ऐसे अनन्त अखण्ड सुख देनेके लिए मैं तुम्हें जागृत कर रहा हूँ.

पीउजी पुकार करी करी थाक्या, तमे कांए न जागो मारा साथजी ।
उगीने दिन आथमवा आव्यो, अने पछे ते पडसे आडी रातजी ॥१८

धामधनी पुकार-पुकार कर थक गए परन्तु हे सुन्दरसाथजी ! तुम अपनी आत्माको जागृत क्यों नहीं कर रहे हो ? दिन उदय होकर अस्त होने लगा, फिर तो घोर रात्रि आ जाएगी (जीवनका उदय होकर अस्त होने वाला है फिर तो चौरासी लाख योनिरूपी रात्रि आ जाएगी).

रात पडी त्यारे कोई नव जागे, कोई न करे पुकार जी ।
निसाए निद्रा जोर थासे, पछे वाधसे ते विष विस्तार जी ॥१९

चौरासी लाख योनिरूपी रात्रिके समय कोई जागृत नहीं होगा, और कोई (इस प्रकार) पुकार करने भी नहीं आएगा. रातको अज्ञानरूपी निद्रा जोरों पर होगी. फिर तो जन्म मरण रूपी विषका ही विस्तार बढ़ेगा.

संझा लगे रह्या धणी आपण माटे, ते तमे कांए न संभारो जी ।
ओलखी धणीने सुखडां लीजिए, तमे आपोपुं वारणे वारो जी ॥२०

सद्गुरु धनी प्रातःकालसे लेकर सायंकाल तक (बचपनसे वृद्धावस्था तक) हमारे लिए रहे. इसे तुम याद क्यों नहीं करते ? धामधनीको पहचान कर अखण्ड सुख प्राप्त करो और उनके चरणों पर अपने आपको समर्पित कर दो.

पुकार करतां रात पडी रे, वालो रात न रहे निरधार जी ।
जेणे रे तमने एवा भूलवियां, ते वेरीडा कां न अविधारो जी ॥२१

पुकारते-पुकारते रात हो गई (जीवन व्यतीत हो गया), यह निश्चित है कि प्रियतम धनी सद्गुरु (चौरासी लाख योनिरूपी) रात्रिमें नहीं मिलेंगे. जिन झूठे सम्बन्धोंने तुम्हें भुलाया है वे तुम्हारे बैरी हैं. इस सत्यको तुम स्वीकार क्यों नहीं करते ?

आ भोम मूकतां जे आडी करे रे, घेर जातां जे कोई वारे जी ।
ए वेरीडा तमारा प्रगट पाधरा, ते तां जुओने विचारी जी ॥२२

मोहमाया रूपी संसारको छोड़ते समय जो (कुटुम्ब परिवार) तुम्हारे लिए अवरोधक बनते हैं वे अखण्ड घर परमधामकी ओर जाते हुए भी रुकावट डालते हैं. वे प्रकट रूपमें तुम्हारे शत्रु हैं. उन्हें विचार पूर्वक देखो.

ए वेरीडा घणुं विष भरियां रे, जेणे खाधो ते सरवे संसारजी ।
ते तमने भूलवे छे जुई भांते, तमे रखे लेवाओ आ वार जी ॥२३

उपर्युक्त शत्रु (बाह्यरूपमें तो अमृतके समान हैं किन्तु अन्दरसे) विषसे भरे हुए हैं. जिन्होंने समस्त विश्वके प्राणियोंको अपना आहार(स्वार्थ पूर्तिके

साधन) बना लिया है. वे तुम्हें विभिन्न प्रकारसे भुलावेमें डाल रहे हैं. परन्तु इस बार तुम उनके प्रवाहमें बह न जाना.

वली तमने देखाडुं दुरजन, जेणे नव मूक्यो कोए जी ।
ते तमने प्रकासुं रे प्रगट, तारा मांहेला गुण तुं जोए जी ॥ २४

मैं तुम्हें और एक शत्रुका परिचय करा दूँ. उसने कभी भी किसीको नहीं छोड़ा है. उसे तुम्हारे समक्ष प्रत्यक्ष उपस्थित करती हूँ ताकि तुम अपने भीतरी गुणोंको देख सको.

वली गुण इन्द्री जुओ रे जातां, जे अवला वहे संसार जी ।
ए वेरीडा विसेखे आपणां, ते तमे कांय न मारो जी ॥ २५

मोह मायाकी ओर बढते हुए इन गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको तो देखो. वे तो उलटे संसारकी ओर बह रहे हैं. विशेषतः ये हमारे मुख्य शत्रु हैं. उनको तुम क्यों नहीं मारते (दमन करते) ?

मारीने मरडी भाजी करीने, वली जगवी करो तमे जोर जी ।
गुण अंग इन्द्री ज्यारे जीव जागसे, त्यारे करसे ते पाधरा दोर जी ॥ २६

इन गुण, अङ्ग इन्द्रियोंको तोड़-मोड़कर, टुकड़े करके धनीजीके प्रति जागृत करनेके लिए जोर लगाओ. जब जीव जागृत हो जाएगा तब गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ सीधे मार्ग पर चलेंगी.

वासना जाणीने कहुं छुं वचन, आ जलना जीवने कोण कहे जी ।
वचन सुणी जे होय वासना, ते आणी भोमे केम रहे जी ॥ २७

हे मेरे सुन्दरसाथजी ! तुम सबको परमधामकी आत्मा मान कर मैं (इन्द्रावती) इस प्रकार कह रही हूँ, क्योंकि मायाके जीवको ऐसे वचन कौन कहेगा ? जो ब्रह्मात्मा होगी वह इन वचनोंको सुन कर इस संसारमें कैसे रहेगी ?

ए दुस्तर भोम घणी दोहेली, वली वसेखे दुख रात जी ।
ते माटे हुं करुं रे पुकार, मारो भली गयो मायामां साथ जी ॥ २८

यह संसार अत्यन्त दुःखदायी है. इससे भी विशेष दुःखदायी चौरासी लाख

योनिरूपी रात्रि मानी जाती है. इसलिए मैं पुकार रही हूँ, क्योंकि मेरा सुन्दरसाथ मायामें ओतप्रोत (मिल गया) है.

ततखिण रातडी आवी देखसो, मांहें प्रगट थासे अंधेर जी ।
जीव अंधेर ज्यारे देखी मुझासे, त्यारे विषना ते आवसे फेर जी ॥ २९

तुम तुरन्त ही चौरासी लाख योनिरूपी रात्रिका आगमन देखोगे और उसके साथ अज्ञानरूप अन्धकार भी प्रकट होगा. जब जीव चौरासीके अन्धकारको देख कर घबरा जाएगा तब जन्म-मरणरूपी विष चक्रमें फँस जाएगा.

विष चढे फेर अनेक उपजसे, करम केरां जे दुख जी ।
वली फरसे फेर अनेक काया, आखी रात चढसे फेर विष जी ॥ ३०

इस प्रकार मायाका जहर चढ़ने पर (जन्म मृत्युके)अनेक बन्धन उपस्थित होंगे और कर्मानुसार दुःख भोगना पड़ेगा. पुनः योनिके अनुसार अनेक शरीर धारण करने पड़ेंगे. इसके परिणाम स्वरूप समग्र रात्रि (महाप्रलय) तक जन्म-मरणरूपी (मायाका) विष फैलता जाएगा.

मारो साथ होय ते तमे सांभलो, रखे आहीं पाडो रात जी ।
ए रातनां दुख घणां रे दोहेला, पछे निद्रा उडसे प्रभात जी ॥ ३१

यदि तुम मेरे परमधामके सुन्दरसाथ (आत्मा) हो तो सुनो. तुम चौरासी लाख योनिरूपी रात्रिमें जानेका प्रयत्न मत करो. इस रात्रिका दुःख असह्य है. फिर निद्रा टूटनेके बाद अर्थात् महाप्रलयके पश्चात् ही मनुष्य जीवनका प्रभात होगा.

प्रभात थासे अति वेगलो, रात छेडो केमे न आवे जी ।
दुखनी रात घणी जासे दोहेली, पछे वहाणुं ते केमे न वाय जी ॥ ३२

प्रभात होने (मानव जीवन प्राप्त होने) में अत्यधिक समय लगेगा. क्योंकि इस रात्रिका अन्त कहीं भी दिखाई नहीं देगा. दुःखमयी यह रात्रि (चौरासीका चक्र) कष्टके साथ बीतेगी. फिर प्रभातका आगमन निश्चित नहीं है.

महाप्रले काल ज्यारे थासे, तिहां लगे रहेसे अंधेर जी ।
ते माटे पीउजी करे रे पुकार, तमे आवजो ते आणे सेर जी ॥ ३३

महाप्रलय तक यह अन्धेरा छाया रहेगा. इसलिए सद्गुरु पुकार कर कहते

हैं कि तुम इसी (प्रेम) मार्गसे अपने घर परमधाममें आओ.

तारतमनुं अजवालुं लई ने, वालो आव्या ते बीजी वार जी ।
फोडी ब्रह्मांडने पाड्यो मारग, आहीं अजवालुं अपार जी ॥ ३४

तारतम ज्ञानका अखण्ड प्रकाश लेकर सद्गुरु धनी दूसरी बार यहाँ आए हैं. उन्होंने इस ब्रह्माण्डको फोड़कर अखण्ड परमधामका मार्ग प्रशस्त किया है. यह प्रकाश अनन्त और असीम है.

पीउजी पधार्‌या तेडवा तमने, तो थाय छे आटलो पुकार जी ।
एम करतां जो नहीं मानो, तो वालो नहीं रहे निरधार जी ॥ ३५

हे सुन्दरसाथजी ! धामधनी तुम सबको बुलानेके लिए आए हैं. इसलिए उन्होंने इतने जोरसे पुकारा है. इतना करने पर भी यदि तुम उनके वचनोंको नहीं मानोगे तो यह निश्चित रूपसे मानना कि वे यहाँ स्थायी रूपसे नहीं रहेंगे अर्थात् उनके जानेके बाद ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं होगा.

विषम वाट जल मांहें अंधेरी रे, तमने लागसे लहेर निघात जी ।
वलीने वसेके जीव बेसुध थासे, नहीं सांभलो ते घरनी वात जी ॥ ३६

मोह जलका मार्ग विकट है. साथमें अन्धेरा भी छाया हुआ है. इस मोहजलकी लहरें तुम्हारे लिए अवरोधक बनेंगी. फिर जीव अपने आपको भूल कर बेहोश बन जाएगा तो तुम मूल घर परमधामकी बातें नहीं सुन सकोगे.

मछ गलागल मांहें छे सबला, अने पूरतणां प्रवाह जी ।
दिस एके नव सूझे सागरमां, तमे रखे ते विहिला थाओ जी ॥ ३७

इस मोहजलमें एक दूसरेको खा जाने वाले बलवान मगरमच्छ हैं और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकाररूपी प्रबल धाराएँ बह रहीं हैं. अन्धकार और भ्रमरूपी इस सागरमें एक भी दिशा (मार्ग) दिखाई नहीं देती. इसलिए तुम धामधनीसे विमुख मत होना.

तमे उठो ते अंग मरोडीने, म जुओ मायानो मरम जी ।
धणी पधार्‌या छे तम माटे, तमने हजी न आवे सरम जी ॥ ३८

तुम गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंको मोड़ कर परमधामकी ओर जानेके लिए तैयार

हो जाओ. इस मायावी खेलका मर्म मत देखो. धामधनी तुम्हारे लिए ही आए हैं. तुम्हें अब भी लज्जाका अनुभव नहीं हो रहा है अर्थात् तुम उनकी अवज्ञा कर रहे हो.

ए निद्रा तमे केम रे उडाडसो, जिहां नहीं करो कोई पर जी ।
ओलखी धणी तमे आप संभाली, जागी जुओ तमे घर जी ॥ ३९

जब तक आत्म-जागृतिका कोई उपाय नहीं खोजोगे तब तक इस अज्ञानरूपी निद्राको कैसे हटा पाओगे ? इसलिए धामधनीको पहचान कर तुम अपने आपको संभालो और जागृत होकर निजघर-परमधामको देखो.

ए रे अमल तमने केम उतरसे, जे जहेर चढ्युं अति भारी जी ।
जिहां लगे जीवने बाण न लागे, थाक्या ते धणी पुकारी जी ॥ ४०

मोह मायाका यह नशा तुमसे कैसे उतरेगा ? जहर बराबर चढ़ा हुआ है. जब तक जीवात्माको इन वचनोंके वाण नहीं लगेंगे तब तक मायाका विष नहीं उतरेगा. इसके लिए सद्गुरु पुकार-पुकार कर थक गए.

हवे जो जाणो घर पामुं पोतानुं, तो राखजो वेरागनी सेर जी ।
सर्वा अंगे सुध सेवा करजो, एम जागसो पोताने घेर जी ॥ ४१

अब तो जो कोई परमधामकी प्राप्तिका इच्छुक हो वह संसारसे वैराग्य एवं धनीजीके साथ प्रेम करे. सम्पूर्ण अङ्गों (मन, वचन और कर्म) के द्वारा सद्गुरु धनीकी सेवा करे. इस प्रकार अपने मूल घर परमधाममें जागृत हो जाओगे.

जो जाणो जीवने जगवुं रे आहीं, तो तां जो जो ते रास प्रकास जी ।
एम कहेजो जीवने आ कह्युं सरव तुंने, त्यारे जीवने थासे अजवास जी ॥ ४२

जो कोई अपने जीवको यहीं पर जागृत करना चाहते हैं वे रास एवं प्रकाशकी वाणीको ठीकसे समझ लें. अपने जीवको ऐसी शिक्षा दो कि यह सब तुम्हारे लिए कहा गया है. तब उसको प्रकाश प्राप्त होगा और वह स्वयंको पहचानेगा.

एणे अजवाले जहेर उतरसे, त्यारे जीव ते करसे जोर जी ।
पर आतमने आतम जोसे, त्यारे टलसे ते तिमर घोर जी ॥ ४३

इस प्रकाशके द्वारा मायाका जहर उतर जाएगा और जीव अपने लक्ष्यकी ओर जानेके लिए जोर लगाएगा. जब यह आत्मा मूल स्वरूप (पर आत्मा) को देखेगी तब मायावी घोर अन्धकारका नाश हो जाएगा.

एणी पेरे तमे जीव जगवसो, त्यारे थासे ते जोत प्रकास जी ।
प्रेमतणां पूर प्रघल आवसे, थासे अंधकारनो नास जी ॥ ४४

हे सुन्दरसाथजी ! इस प्रकार यदि तुम अपने जीवको जागृत करोगे तो तुम्हारी आत्मामें अखण्ड तारतम ज्ञानका प्रकाश फैलेगा, धनीजीके प्रेमका प्रवाह बहने लगेगा और अज्ञानरूपी अन्धकारका नाश होगा.

कोमल चित करी वचन रुदे धरी, जो जो ते सरव संभारी जी ।
खरा जीवने वचन कह्या छे, माया जीवने थासे अति भारी जी ॥ ४५

चित्तको कोमल बना कर (विनम्र भावसे) एवं धनीजीके वचनोंको हृदयमें धारण कर इन सब वचनोंको याद रखना. सच्चे जीवोंके लिए ये वचन कहे गए हैं. मायाके जीवोंको तो ये कठिन लगेंगे.

माया जीव आहीं टकी न सके रे, तेणे नहीं लेवाय ए वचन जी ।
ए वचन घणुंए लागसे मीठां, पण रहेवा न दे खोटानुं मन जी ॥ ४६

मायाके जीव इन वचनोंके सामने टिक नहीं पाएँगे. इसलिए उनके द्वारा ये वचन ग्रहण नहीं होंगे तथापि बहुत-से जीवोंको ये रुचिकर (मीठे) लगेंगे किन्तु झूठा मन उन्हें हृदयमें टिकने नहीं देगा.

ब्रह्मांड मांहेलो जीव जे होय रे, ते तां जाजो पोतानी वाट जी ।
बेहद जीव जे होय रे अमारो, आ वचन कह्यां ते माटे जी ॥ ४७

जो जीव इस ब्रह्माण्डके भीतरका (जीवसृष्टि) होगा. वह अपने रास्ते पर चलकर वैकुण्ठ तक पहुँच जाएगा परन्तु जो हमारी बेहदभूमि (परमधाम) की आत्माएँ हैं, उनके लिए ये वचन कहे गए हैं.

वासनाने तां जीव न कहेवाय, घणुंए दुख मुने लागे जी ।
खोटानी संगते खोटुं कहुं छुं, पण सुं करुं मान केमे जागे जी ॥४८

ब्रह्मवासनाओंको जीव नहीं कहा जा सकता, उन्हें यह कहते हुए मुझे बहुत दु:ख होता है. झूठे संगके कारण झूठा कहना पड़ रहा है. परन्तु मैं क्या करूँ ? किसी भी प्रकारसे साथको मना कर जागृत करनेके लिए ये वचन कहती हूँ.

कठण वचन हुं तो ज कहुं छुं, नहीं तो केम कहुं वासनाने जीव जी ।
रखे दुख देखे वासना ते माटे, ए प्रगट वाणी में कही जी ॥४९

हे सुन्दरसाथजी ! ऐसे कठोर वचन आपको तभी कहे जा रहे हैं अन्यथा वासनाओंको जीव कैसे कहा जा सकता है. ब्रह्मवासना दु:ख न देखे (दु:खका अनुभव न करे) इसलिए इस प्रकट वाणीका प्रकाश फैला रही हूँ.

प्रकास वाणी तमे जो जो जोपे करी, रखे मूको ते एक वचन जी ।
द्रढ थई तमे देजो जीवने, लेजो ते मांहेलुं धन जी ॥५०

इस प्रकाश ग्रन्थकी वाणीको तुम सब अच्छी तरहसे देखो. इसके एक वचनकी भी अवहेलना मत करना. दृढ़ता पूर्वक अपने जीवको समझाना और उनके रहस्य (धन) को ग्रहण करना.

ए धननो ते लेजो अरथ, त्यारे प्रगट थासे प्रकास जी ।
एणे अजवाले जीव जागसे, त्यारे वृथा न जाय एक स्वास जी ॥५१

इस तारतमरूपी धनका गुह्य अर्थ ग्रहण करो. तब तुम्हारी अन्तरात्मामें प्रकाश प्रकट होगा. उसी प्रकाशकी आभासे जीवको जागृत होनेका अवसर मिलेगा. ऐसा करने पर एक श्वास भी व्यर्थ नहीं जाएगा.

प्रगट वाणी प्रकासी कही छे, इन्द्रावती चरणे लागी जी ।
ते लाभ लेसे बंने ठामनो, जेहनो जीव आहीं जागे जी ॥५२

इन्द्रावतीने धनीजीके चरणोंमें प्रणाम करके इस प्रत्यक्ष वाणीको 'प्रकाश' कह कर प्रकट किया है. जिसकी आत्मा यहाँ तारतमके प्रतापसे जागृत होगी

उसे दोनों स्थानों (संसार एवं परमधाम) का सुख प्राप्त होगा.

बेहद वाणी

बेहदी साथ तमे सांभलो, बोली बेहद वाणी ।
मोटा मोटेरा थई गया, कोणे नव जाणी ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे परमधामके सुन्दरसाथ ! बेहद भूमिकाकी अद्वैत ब्रह्मकी वाणी कही जा रही है, उसे तुम सुनो. बड़े बड़े ऋषि ब्रह्मर्षि और अवतारी पुरुषोंको भी इस बेहद (शब्दातीत) वाणीका प्रकाश नहीं मिला है.

अनेक उपाय कीधा घणे, केमे न कलाणी ।
कोणे न ओलखाणी ए निध, बुध विना कोणे न जाणी ॥ २

अनेक महान् आत्माओंने इसकी प्राप्तिके लिए अनेक उपाय किए परन्तु इस बेहद वाणी रूपी निधिको कोई भी नहीं पहचान सका, क्योंकि जागृत बुद्धिके बिना इस ब्रह्मज्ञानको कोई नहीं जान सकता है.

आव्या ते बुधना सागर, बुध रुदे भराणी ।
भगवानजीने महादेवजी, पूछे बेहद वाणी ॥ ३

बुद्धिके सागर कहे जाने वाले (शुक, सनकादि और वेदव्यासादि) बड़े-बड़े हो गए हैं, जिनके हृदयमें बुद्धि पूर्णरूपसे व्याप्त है. विष्णु भगवानके साथ महादेवजीने बेहद (शब्दातीत) वाणीके ब्रह्म ज्ञानके विषयमें पूछा.

ब्रह्मांड कोट वही गया, कोणे न सुणाणी ।
चौद भवननां जे धणी, खंते खोलाणी ॥ ४

करोड़ों ब्रह्माण्ड व्यतीत हो गए परन्तु किसीने भी यह वाणी नहीं सुनाई. यहाँ तक कि चौदह लोकोंके स्वामी त्रिदेवोंने भी बड़ी जिज्ञासाके साथ इसे ढूँढा था.

सुकजी सनकादिक ने कबीर, रह्या घणुंए ताणी ।
कोणे न आवी एणी प्रेमल, रह्या रुदेमां आणी ॥ ५

शुकदेवजी, सनकादि और सन्त कबीरने भी परमतत्त्व (बेहदवाणी) का

वर्णन करनेका बहुत प्रयत्न किया. इस (ब्रह्मज्ञान) की सुगन्ध किसीको भी प्राप्त न होने से वे हृदयमें ही विचार करते रहे (उन्होंने परम तत्त्वको स्पष्ट रूपसे नहीं बताया).

एक लवाने कारणे, लखमीजी राणी ।
सात कल्पांत लगे तप कर्‌या, तोहे न कहेवाणी ॥ ६

इस बेहद वाणीके एक शब्दके लिए लक्ष्मीजीने सात कल्प तक तपश्चर्या की, तथापि भगवान विष्णु द्वारा यह अखण्ड वाणी नहीं कही गई.

ए रसनी जे वासना, केहने न अपाणी ।
ते व्रज सुन्दरी सुखमां, अणजाणे माणी ॥ ७

इस बेहद वाणीरूपी प्रेम रसको ग्रहण करनेवाली ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त ऐसा प्रेमानन्द किसीको प्राप्त नहीं हुआ. ऐसे अखण्ड सुखको व्रजमण्डलकी गोपिकाओंने अनजानेमें ही आनन्दपूर्वक प्राप्त किया.

ए निध पोताना घरतणी, एम बोले वाणी ।
श्री धाम धणीसुं रामत, रमे धणियाणी ॥ ८

यह बेहद वाणीरूपी धन हमारे घर परमधामका ही है. इस प्रकार यह वाणी कहती है कि ब्रह्मप्रियाएँ धामधनीके साथ रासकी रामत (रासलीलाएँ) करतीं हैं.

अणुंचोंच पात्र एह विना, बीजा कोणे न देवाणी ।
दोड कीधी मोटे घणी, कोणे न लेवाणी ॥ ९

इन ब्रह्मप्रियाओंके अतिरिक्त अन्य किसीको भी परमाणु जितना मात्र भी अखण्ड सुख नहीं दिया गया. बड़े-बड़े विद्वान इस वाणीके लिए दौड़े परन्तु किसीको भी वह प्राप्त नहीं हुई. (बहुत लोगोंने परमतत्त्वको समझ कर दूसरोंको समझानेके लिए प्रयत्न किए पर उन्हें सफलता नहीं मिली)

साथ सुपने आवियो, इछा रामत जाणी ।
बेहद धणी पधारिया, बेहद वात वंचाणी ॥ १०

अखण्ड परमधामसे सुन्दरसाथ झूठे मायावी खेल देखनेकी इच्छासे इस

स्वप्नवत् संसारमें आए. बेहदके धनी उन्हें जागृत करनेके लिए आए और उन्होंने बेहदकी बातें की.

तेडी सिधावसे साथने, प्रगट थासे वाणी ।
बुधतणो अवतार कहिए, मोटी बुध जणाणी ॥ ११

सद्गुरु सुन्दरसाथको साथ लेकर परमधाम जाएँगे एवं यह वाणी इन्द्रावतीके द्वारा प्रकट होगी. सद्गुरु धनीको बुद्धावतार कहा गया है. उन्होंने ही महान् बुद्धिकी बातें की हैं.

जेणे ए निध खोली खंत करी, रुदयामां आणी ।
धन धन कहिए मोटी बुध, निध ए निरखाणी ॥ १२

जिन सद्गुरुने बड़े परिश्रमके साथ इस तारतमरूपी निधिको हृदयस्थ किया, उन महान् बुद्धिको अनेकानेक धन्यवाद है कि उन्होंने इस धनको पहचाना.

नौतनपुरीमां ए निध, सारी सनंधे गोताणी ।
निरखी गोती ने नेह करी, साथमां संभलाणी ॥ १३

सद्गुरुने श्री नवतनपुरी धाममें इस तारतम निधिको अच्छी तरह ढूँढा. ज्ञानरूपी सम्पत्तिको देखकर तथा खोजकर उन्होंने समस्त सुन्दरसाथको स्नेहपूर्वक सुनाया.

बेहद केरी वाटडी, जो जो तमे साथ ।
तारतम तेज छे निरमल, जोत अति अजवास ॥ १४

हे सुन्दरसाथजी ! इस बेहद भूमि (अखण्ड परमधाम) के मार्गको विचार पूर्वक देखो. तारतम ज्ञानका प्रकाश तो अत्यधिक निर्मल एवं अति उज्ज्वल है.

प्रगट थासे पाधरी, जो जो रास प्रकास ।
ग्रन्थ सघलानी उतपन, वाणी वेद व्यास ॥ १५

तुम रास और प्रकाशके वचनोंका अवलोकन करो. आगे जाकर इसका प्रकाश स्पष्ट (सरल) रूपसे प्रकट होगा. वेद व्यासजीकी वाणीसे सभी पौराणिक ग्रन्थ उत्पन्न हुए हैं.

रुदे एहना सुततणे, भागवत अभ्यास ।
बेहद वाटे आवियो, सुकजी पूरवा साख ॥ १६

उनके पुत्र शुकदेवमुनिके हृदयमें श्रीमद्भागवतका अमृत रस बहने लगा. इसलिए शुकदेवमुनि बेहदमार्गके साक्षी बन कर आए हैं.

ब्रह्मांड विषे वाणी घणी, केहनां नाम लेवाय ।
साख पूरे सहु ए वाटनी, जो जीवे जोवाय ॥ १७

ए वाणी ए वाटडी, कहीए प्रगट ना थई ।
धणी ब्रह्मांडना खप करया, रह्या जोई जोई ॥ १८

वस्तुतः ब्रह्माण्डके विषयमें बहुत-से धर्मग्रन्थ और ऋषियोंकी वाणी हैं उनमेंसे किस-किसका नाम लिया जाए ? अन्तर्हृदयसे देखने पर पता चलता है कि वे सब इस बेहद मार्गके ही साक्षी हैं. अखण्ड वाणी एवं बेहदके मार्ग अभी तक कभी भी प्रकट नहीं हुए थे. इस ब्रह्माण्डके धनी ब्रह्मादि देवता भी इसकी प्रतीक्षा करते रहे हैं.

ए वाट वाणी जोई घणे, केहने हाथ न आवी ।
नाम ब्रह्मांडना धणी कह्या, बीजा सुं करुं सुणावी ॥ १९

बहुत-से सन्तोंकी वाणीमें बेहद मार्ग एवं बेहद वाणीका उल्लेख है, किन्तु किसीने भी इसे स्पष्ट नहीं किया. इस सन्दर्भमें ब्रह्माण्डके अधिपतियोंके नाम भी लिए गए तो अब अन्योंका नाम सुना कर क्या करूँ ?

ते वाट प्रगट पाधरी, कीधी आ वार ।
धन धन ब्रह्मांड आ थयो, धन धन नर नार ॥ २०

सद्गुरुने इस बार इस बेहद मार्गको बड़ी सरलता (सीधी तरह) से प्रकट किया है. इसलिए यह ब्रह्माण्ड और उसमें रहने वाले लोग कृतार्थ हो गए हैं.

धन धन जुग ते कलजुग, जेमां ए निध आवी ।
धन धन खंड ते भरथनो, लीला ए पधरावी ॥ २१

युगोंमें कलियुग धन्य हुआ, जिसमें तारतम ज्ञानरूपी यह अखण्ड निधि

आई. नवों खण्डोंमें यह भरत खण्ड धन्य-धन्य हुआ, जिसमें इस जागनी लीलाका विस्तार हुआ.

धन धन गोकुल जमुना त्रट, धन धन व्रजवासी ।
अग्यार वरस लगे लीला करी, चौद भवन प्रकासी ॥ २२

जमुनाजीके तट गोकुल तथा व्रजवासी सब धन्य हुए. जहाँ श्रीकृष्ण परमात्माने ग्यारह वर्षों तक प्रेमलीलाएँ की और चौदह लोकोंमें उन लीलाओंका प्रकाश फैलाया.

चौद भवन सुपन तणां, जोवा आव्यो छे साथे ।
आ ब्रह्मांड मुगत पामसे, सोणुं जागे समासे ॥ २३

ये चौदह लोक स्वप्नके हैं, जिनको देखनेके लिए परमधामसे ब्रह्मात्माएँ सुरता रूपमें यहाँ आई हैं. उनके प्रभावसे समस्त ब्रह्माण्डके प्राणियोंको मोक्ष प्राप्त होगा और अक्षरब्रह्मके जागृत होने पर यह ब्रह्माण्ड भी उनके हृदयमें समा जाएगा.

वली जोगमायानो ब्रह्मांड कीधो रमवा रास ।
रामत रमे श्रीराजसुं, साथ सकल उलास ॥ २४

पुनः योगमायाका दूसरा ब्रह्माण्ड, रास लीला करनेके लिए बनाया गया. उसमें श्रीराजजीके साथ पूर्ण रूपेण आनन्द मग्न होकर समस्त सुन्दरसाथने उत्साह पूर्वक रासकी लीलाएँ कीं.

रास रामत छे नित नवी, केमे नव थाय भंग ।
साथ रमे सुपनमां, जोगमायाने रंग ॥ २५

रासकी लीलाएँ नित्य नई-नई होतीं हैं. उनमें किसी भी प्रकारसे प्रेमरस भंग नहीं होता है. इस प्रकार योगमायासे रंगा हुआ समस्त सुन्दरसाथ स्वप्नवत् ब्रह्माण्डमें रामत कर रहा था.

जुओ साथ सुपन विषे, रामत रमे छे जेम ।
एक पखे साथ जागियो, रामत तेमनी तेम ॥ २६

देखिए, स्वप्नवत् होने पर भी इस योगमायाके मण्डलमें सुन्दरसाथ प्रेममें

भावविभोर होकर कैसे खेल रहे हैं ? रास लीला करनेके बाद ब्रह्मात्माएँ एक साथ घर-परमधाममें जागृत भी हो गईं परन्तु अक्षर ब्रह्मके हृदयमें रासलीला जैसीकी तैसी है .

वली आ ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां आपण आव्या ।
धाख रही जोया तणी, आपण तेह ज लाव्या ॥ २७

इसके बाद पुनः यह तीसरा ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ, उसमें हम सब सुन्दरसाथ आए. मायावी संसार देखनेकी जो इच्छा बाकी रह गई थी, उसी इच्छाको लेकर हम सब यहाँ आए हैं.

ब्रह्मांड त्रणे दीठां अमे, रामत अलेखे ।
जागीने करसुं वातडी, जे सुपन मांहें देखे ॥ २८

इस प्रकार हमने तीनों ब्रह्माण्ड (व्रज, रास, जागनी) में प्रेमानन्दकी कई रामतें भी देखीं. स्वप्नके तीनों ब्रह्माण्डोंमें हम सब सुन्दरसाथने जो कुछ देखा है, परमधाममें जागृत होनेके बाद वे सब बातें करेंगे.

वली आ ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां राख्यो छे सेर ।
आहीं पण कीधी वातडी, साथ सिधाव्यो घेर ॥ २९

अखण्ड रास लीलाके बाद यह तीसरा ब्रह्माण्ड पुनः उत्पन्न हुआ. उसमें अखण्ड व्रज-रासका मार्ग दिखानेके लिए प्रतिबिम्ब व्रज-रास दर्शाया गया. जब ब्रह्मात्माएँ अखण्ड रास खेल कर परमधाम सिधारीं तब प्रतिबिम्ब व्रजमें श्रीकृष्णने वेदऋचा सखियोंके साथ प्रेमलीलाकी बातें की.

जेम हरयां ब्रह्माए वाछरुं, गोवाला संघाते ।
ततखिण नवा निपना, आपोपणी भांते ॥ ३०

गोकल मांहें आप आपणे, घेर सहु कोई आव्या ।
खबर न पडी केहने, एवी रची माया ॥ ३१

जिस प्रकार व्रज मण्डलमें ब्रह्माजीने ग्वाल-बालोंके साथ बछड़ोंका हरण किया. तब श्रीकृष्णने अपनी योग शक्ति द्वारा वैसे ही बछड़े, ग्वाले आदि बनाए. वे सब सायंकाल होने पर गोकुलमें अपने-अपने घर लौट गए.

किसीको भी पता नहीं चला कि ये ग्वाले एवं बछड़े वही हैं अथवा दूसरे हैं. इस प्रकार श्रीकृष्णने अपनी माया रची थी.

एणे द्रस्टांते प्रीछजो, सेर राख्यो ए भांते ।
मायातणो ए बल जुओ, केवो रच्यो छे खांते ॥ ३२

हे सुन्दरसाथजी ! उपर्युक्त दृष्टान्तके द्वारा तुम सब समझलेना कि अखण्ड रासलीला समझानेके लिए अखण्ड रासलीलाके ब्रह्माण्ड एवं जागनी ब्रह्माण्डके बीच प्रतिबिम्ब लीलाका मार्ग इस प्रकार रखा है. मायाके इस बलको तो देखो कि इसके द्वारा श्रीकृष्णजीने अपनी इच्छासे कैसे ग्वाल बाल आदि बना दिए हैं.

साथ सकल सिधावियो, श्री कृष्णजी संघाते ।
ते रमे छे रामत रासनी, अहीं उठ्या प्रभाते ॥ ३३

अखण्ड रास लीलाके बाद सुन्दरसाथ श्रीकृष्णके साथ परमधाम चले गए. वे सब अक्षरब्रह्मके हृदयमें रासकी लीला भी कर रहे हैं. रास रात्रिके बाद प्रातःकाल होते ही प्रतिबिम्ब लीलाकी सखियाँ एवं गोलोकी श्रीकृष्ण इस तीसरे ब्रह्माण्डमें जाग उठते हैं.

तेह ज गोकल जमुना त्रट, जाणे ते व्रजवासी ।
जाणे रामत रास रमी करी, सहु उठ्या उलासी ॥ ३४

वैसा ही गोकुल, वैसा ही यमुना तट, वैसे ही व्रजवासी सब बन गए. परन्तु सांसारिक लोग तो यही मानते हैं कि सब वस्तुएँ पहलेकी ही हैं, एवं ये सब गोपियाँ अखण्ड रासलीलाके बाद सोकर अब आनन्दपूर्वक जाग उठीं हैं.

जाणे ते ज ब्रह्मांड ते रामत, जेम रमतां सदाय ।
आ ते ब्रह्मांड उपनुं, एणी रे अदाय ॥ ३५

ये सांसारिक लोग यह समझते हैं कि कालमायाका यह ब्रह्माण्ड पहलेका ही है और लीलाएँ भी वही हैं. परन्तु इस तीसरे ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति तो उपरोक्त कारणोंसे ही हुई है.

बंने ब्रह्मांड वचमां, सेर राख्यो छे सार ।
खबर न पडी केहने, बेहदनुं बार ॥ ३६

अखण्ड व्रज-रास तथा जागनीका ब्रह्माण्ड इन दोनोंके बीच (अखण्ड लीलाओंकी जानकारीके लिए) प्रतिबिम्ब लीला रूप मार्ग रखा गया. किसीको भी बेहदके इस द्वारका पता नहीं चला.

बेहदी साथ आवियो, एणे दरवाजे ।
आ ब्रह्मांड मायातणो, रामत जोवा काजे ॥ ३७

बेहदभूमि (परमधाम) के सुन्दरसाथ, इसी द्वार (अखण्ड व्रजरास) से होकर कालमायाके इस तीसरे ब्रह्माण्डका झूठा खेल देखनेके लिए आए हैं.

सुं जाणे हदना जीवडा, बेहदनी वाते ।
मांहें रमे ते रामत रातडी, आहीं उठियां प्रभाते ॥ ३८

हद-भूमि (चौदहलोक) के जीव, बेहद (अखण्ड) भूमिके रहस्यको क्या जानें ? योगमायाके मण्डलमें एक ओर ब्रह्मात्माएँ अखण्ड रास खेल रहीं हैं (अक्षरब्रह्मके हृदयमें यह लीला अखण्ड हुई है.) तो इस ओर प्रतिबिम्ब लीलामें वेदऋचा सखियाँ रास पूर्ण कर प्रातः अपने-अपने घरमें जागृत हुईं.

पाछला साथमां रामत, दिन अग्यार कीधी ।
अक्रूर तेडी सिधावियो, जै मथुरा लीधी ॥ ३९

श्रीकृष्णजीने वेदऋचा सखियोंके साथ ग्यारह दिनों तक प्रतिबिम्ब लीला की. अक्रूर उन्हें गोकुलसे मथुरा बुला कर ले गए और वहाँ जाकर उन्होंने मथुराको वशीभूत किया.

तिहां लगे वेष वालातणो, मुगत कंसने दीधी ।
रास पाछली रामत, लीला जाणजो बीजी ॥ ४०

यहाँ तक श्रीकृष्णजीने ग्वालोंका भेष धारण किया और उसी बीच कंसका वध कर उसे मुक्ति दी. अखण्ड रासलीलाके बाद ग्यारह दिनों तक हुई इस लीलाको दूसरी लीला समझना.

टीलुं दई उग्रसेनने, वेष सहित सिधाव्या ।
इहांथी लीला अवतारनी, वसुदेव वधाव्या ॥ ४१

उग्रसेनको राजतिलक करनेके बाद गोलोकीनाथ श्रीकृष्णजीका आवेश ग्वाल वेषके साथ चला गया. अब यहाँसे विष्णु भगवानकी अवतार लीला प्रारम्भ हुई, जिसने वसुदेवजीको जेलसे मुक्त कर आनन्दित किया.

हवे एह लीला हदतणी, ते तां सहु कोई कहेसे ।
पण बेहद वाणी अम विना, बीजो कोण देसे ॥ ४२

अब यहाँसे आगे श्रीकृष्णजीकी लीलाएँ हदकी हैं. इसका कथन तो सब कोई करेंगे परन्तु बेहदकी वाणी हमारे बिना अन्य कौन समझा सकेगा ?

एणी वाटे उभो नरसैयो, लीला बेहद गाय ।
जोर करे बलियो घणो, रासमां ना पेसाय ॥ ४३

इस प्रतिबिम्ब लीलामें खड़े होकर नरसी मेहताने बेहद लीलाओंका गान किया. उन्होंने भक्तिमार्ग पर आरूढ़ होकर अखण्ड रासमें प्रवेश करनेका बड़ा प्रयत्न किया परन्तु असफल रहे अर्थात् अखण्ड रासके वर्णनसे वञ्चित रह गए.

जे बल कीधुं नरसैए, एवो करे न कोय ।
हदनो जीव बेहदनी, ऊभो लीला जोय ॥ ४४

जो प्रयत्न नरसी मेहताने किया इतना दूसरा कोई नहीं कर सकता. इस प्रकार हदके जीवने भी बेहदकी अखण्ड लीलाको खड़े खड़े निहारा है.

ए रस काजे दोड्यो नरसैयो, वाणी करे रे पुकार ।
रस थयो मांहेली गमां, आडा दरवाजा चार ॥ ४५

इस बेहद भूमिके प्रेम रसको पानेके लिए भक्त नरसीने बड़ी दौड़ लगाई और इन लीलाओंको विभिन्न प्रकारसे गाया. इस तथ्यकी पुष्टि स्वयं उनकी वाणी कर रही है. ब्रह्मप्रियाओंका अखण्ड प्रेमरस तो मूलमिलावेमें पहुँच

गया. नरसी मेहताके लिए इस रसको प्राप्त करनेमें चार दरवाजे अवरोधक बने अर्थात् वे दिव्य रसको प्राप्त न कर सके.

[चार दरवाजे- १. अखण्ड व्रज (सबलिक ब्रह्म). २. अखण्ड रास (केवलब्रह्म). ३. अक्षरधाम और ४. परमधाम.]

बारणे ए बेहद तणे, लहेर टाढक आवे ।
प्रेमल कांईक रसतणी, बारणे रे जणावे ॥ ४६

बेहद ब्रह्माण्डके प्रतिबिम्ब रास लीला रूपी दरवाजेसे उन्हें (नरसी मेहताको) प्रेमानन्दकी शीतल लहरें प्राप्त हुईं. इस प्रकार श्रीकृष्ण-गोपीरूपी प्रेम रसकी थोड़ी भी सुगन्ध प्राप्त करने पर उस (प्रतिबिम्ब लीला) की उन्हें जानकारी मिली.

एणे बारणे नरसैयो, घणी टाढक पाम्यो ।
लीला पाछला साथमां, सुख लईने जाम्यो ॥ ४७

इस मार्ग (प्रतिबिम्ब लीला) पर नरसी मेहताको अत्यन्त शीतलताका अनुभव हुआ और प्रतिबिम्ब लीलामें वेदऋचा सखीको जो आनन्द (सुख) प्राप्त हुआ, उसमें भक्त नरसी मेहता भी साथ हो गए.

सुकजीए लीला वरणवी, व्रज रास वखाण्यो ।
बेहदनी वाणी विना, ठाम ठाम बंधाण्यो ॥ ४८

शुकदेव मुनिने श्रीमद्भागवतमें व्रज तथा रासका विवरण तो दिया परन्तु बेहदवाणी - तारतमज्ञानकी उपलब्धिके बिना वे अनेक स्थानों पर रुक गए.

नहीं तो एम केम वरणवे, केम थाय पंच अध्याई ।
अस्कंध बारे भागवतनां, तेथी थाय कोट सवाई ॥ ४९

यदि ऐसा न होता तो शुकदेवमुनिने मात्र इतना ही वर्णन क्यों किया ? रासलीलाका इतना बड़ा विवरण मात्र पाँच अध्यायोंमें ही कैसे पूर्ण होता ? यदि इसका विस्तृत रूपसे वर्णन किया होता तो श्रीमद्भागवतके जो बारह स्कन्ध हैं उनसे अनेक गुणा संख्या बढ़ जाती.

न थई प्रगट पाधरी, मुख एहने वाणी ।
धाख रही रुदे घणी, कलप्यो दुख आणी ॥ ५०

शुकदेवमुनि द्वारा इस वाणीका पूरा-पूरा वर्णन न हो सका. उनके हृदयमें अखण्ड रासका वर्णन करनेकी उत्कण्ठा शेष रह गई, जिसके कारण वे अत्यन्त व्याकुल (दु:खी) हुए.

कलकली कंपमान थयो, रस टलियो एथी ।
केम ते दुख खमी सके ए रस जाए जेथी ॥ ५१

शुकदेवजी व्यथित होकर काँपने लगे. राजा परीक्षितके प्रश्न पूछने पर अखण्ड सुख प्रेमरसका वर्णन रह गया. इसलिए उस रसका आस्वादन नहीं कर पाए. यह दु:ख किस प्रकार सहा जा सकता है ? जिसके कारण यह अखण्ड रस दूर हो जाए.

रास वाणी कह्या तणो, हुतो हरख अपार ।
वाणी ब्रह्मांडनी सकलमां, रस रह्यो ए सार ॥ ५२

श्री शुकदेवजीको रासकी लीलाओंका वर्णन करनेकी अपार चाहना थी क्योंकि इस जगतकी वाणियोंमें (वेद, पुराण, शास्त्रादिमें) इस श्रेष्ठ रसका सार अखण्ड रास ही माना जाता है.

रासनी रातनो वरणव, कीधो जुओ विचार ।
नारायणजीनी रातनो, कोइक पामे पार ॥ ५३

पण पार नथी रास रातनो, ए तो बेहद कही ।
ते मांहें लीला बेहदनी, पंच अध्याई थई ॥ ५४

हे सुन्दरसाथजी ! जो शुकदेवमुनीने अखण्ड रासकी रात्रिका वर्णन किया है उस पर विचार कर लो. इस सृष्टिके रचयिता भगवान नारायणकी रात्रिका पार भी कुछ विरले ही लोग पा सकते हैं. परन्तु रासकी रात्रिका तो कोई पार ही नहीं है. क्योंकि यह लीला बेहद की कही गई है. इस प्रकार शुकदेवजीने बेहद भूमिकी असीम लीलाओंका वर्णन मात्र पाँच अध्यायोंमें किया है. यह कैसे सम्भव है ?

एनो अरथ कहुं पाधरो, सुणजो तमे साथ ।
रात एवी मोटी तो कही, जो लीला मोटी छे रास ॥ ५५

मैं इसका सरल स्पष्टीकरण कर देता हूँ. हे सुन्दरसाथजी ! तुम सब ध्यान पूर्वक सुनो. रासकी रात्रिको इतनी बड़ी (महत्त्वपूर्ण) इसलिए कहा है कि उस रात्रिमें अखण्ड लीलाएँ हुई है.

न थाय पंच अध्याई केमे, मारा मुनीजीनी वाण ।
पण नेठ लेवाणो निध समे, रस आवे सुजाण ॥ ५६

यदि शुकदेवजी इसका अच्छी तरह वर्णन करते तो वह वाणी मात्र पाँच अध्यायोंमें ही समाप्त नहीं हो सकती. रासका वर्णन करते समय शुकदेवमुनिको प्रेमरस आ रहा था किन्तु राजा परीक्षितके प्रश्नसे उलझने पर वे अवश्य ही रुक गए.

कलकली दुख कीधो घणो, पण सुं करे जाण ।
पात्र विना पामे नहीं, रस बेहद वाण ॥ ५७

इस प्रकार ध्यान भंग होते ही प्रेमरसका आनन्द वहीं समाप्त हो गया. इसके कारण शुकदेवजी अत्यन्त दुःखी हुए. वे जानते थे किन्तु क्या कर सकते ? क्योंकि पात्र के बिना बेहद वाणीरूपी अखण्ड प्रेम रस प्राप्त नहीं हो सकता.

पात्र विना तमे पामियां, मुनीजी कां करो दुख ।
आज लगे ए रस तणुं, कोणे लीधां छे सुख ॥ ५८

हे शुकदेवजी ! पात्र न होने पर भी आपने यह रस प्राप्त किया. अतः आप इतने दुःखी क्यों हो रहे हैं ? आज तक बेहदके प्रेमानन्द रसका सुख किसने प्राप्त किया है ?

ए कागल तां अम तणो, तम साथे आव्यो ।
रामत जोवा ब्रह्मांडनी, विध सघली लाव्यो ॥ ५९

हे शुकदेवजी ! यह श्रीमद्भागवत तो हम ब्रह्मात्माओंका पत्र है, मात्र आपके साथ इस संसारमें आया है. जिसमें मायावी खेल देखनेके लिए आई हुई ब्रह्मात्माओंका विवरण प्रस्तुत किया है.

हद बेहदनी विगत, कागल मांहें विचार ।
मुनीजी हाथ संदेसडो, आव्यो समाचार ॥ ६०

श्रीमद्भागवतमें हद और बेहद भूमिकाओंका विवरण है. इस प्रकार शुकदेवमुनिके हाथों ब्रह्मात्माओंका सन्देश आया है, यह हमारा ही समाचार पत्र है.

ए सुध सघली लई करी, वाले कह्यो सरव सार ।
बीजाने ए कोहेडा, नव लाधे बार ॥ ६१

इसी श्रीमद्भागवतका सम्पूर्ण विवरण लेकर निजानन्द स्वामी सद्गुरु धनीने हमें सम्पूर्ण सार कहा. दूसरे अल्पज्ञ (जीवसृष्टि) लोगोंके लिए यह उलझन (पहेली) के समान है. इसलिए उन्हें बेहद भूमिके द्वार नहीं मिलते हैं.

बीजा सुं जाणे बापडा, जेनो होय ते जाणे ।
अम विना बार बेहद तणां, बीजो कोण उघाडे ॥ ६२

संसारके बेचारे अन्य जीव इस बेहदका विवरण किस प्रकार जान सकें ? जिन (आत्माओं) का यह पत्र है वे ही इसका विवरण जान सकते हैं. इसलिए हमारे बिना अखण्ड बेहद भूमिका द्वार दूसरा कौन खोल सकता है ?

लाख वार जुए फरी, एक कडी नव लाधे ।
ब्रह्मांडना धणियो मांहें, पग मूकतां बांधे ॥ ६३

यदि संसारी जीव इस भागवतको लाखों बार पढ़ें तो भी इसकी एक पंक्तिका रहस्य प्राप्त नहीं कर सकते. वस्तुतः ब्रह्माण्डके धनी (त्रिदेव) भी इस संसारमें अवतार लेते ही सांसारिक सुख-दुःखमें बँध जाते हैं.

ए रे कोहेडो हद तणो, बेहदी समाचार ।
अमे देखाडुं पाधरा, बेहदनां बार ॥ ६४

यह श्रीमद्भागवत जीवसृष्टिके लिए उलझन और अन्धकारके समान है तथा बेहदी (ईश्वरीयसृष्टि एवं ब्रह्मसृष्टि) के लिए समाचार पत्रके समान है. अब मैं बेदहके दरवाजेको श्रीमद्भागवत द्वारा सीधी (सरल) रीतिसे दिखाता हूँ.

सुकजीनी वाणी सोहामणी, जोत बेहद लावी ।
फेर टालो तमे मांहेलो, जुओ आंख उघाडी ॥ ६५

शुकदेवमुनिकी यह वाणी अत्यन्त सुन्दर है. इसमें बेदह भूमिका अखण्ड तेज समाहित है. इसे देख कर तुम अन्तरके भ्रम (अज्ञानता) को दूर करो और आत्म-दृष्टि खोल कर देखो.

अस्कंध बीजो मुनिए कह्यो, चत्रसलोकी जांहे ।
ब्रह्मांडनी जिहां उतपन, अरथ जुओ तांहे ॥ ६६

शुकदेवमुनि द्वारा गाए गए श्रीमद्भागवतके दूसरे स्कन्धके नवम अध्यायके बत्तीससे पैंतीस तकके श्लोकोंको चतुःश्लोकी भागवत कहा गया है जिसमें भगवानने ब्रह्माजीको सृष्टिकी रचनाका ज्ञान दिया है, उसका यथार्थ देखो और समझो.

दीसे छे द्वार पाधरो, बेहदनो बार ।
इंडाने कह्युं सुपन, सुपन संसार ॥ ६७

उपर्युक्त चतुःश्लोकी भागवतके मूल सिद्धान्तों द्वारा बेहद भूमिका द्वार सीधा (प्रत्यक्ष) दिखाई देता है. वहाँ इस ब्रह्माण्डको स्वप्न कहा है और पूरे संसारको भी स्वप्न कहा है.

बेहद घरनी वाटडी, बेहदी जाणे ।
हदनो जीव बेहदना, बार केम उघाडे ॥ ६८

बेहद भूमिके अखण्ड घरका मार्ग, बेहद भूमि-परमधाममें रहनेवाले ही जानते हैं. हद भूमिके जीव बेहदके द्वार किस प्रकार खोल सकते हैं ?

बार उघाडवा दोडियो, सुकजी सपराणो ।
साथे परीखत चालियो, ते तां भारे चंपाणो ॥ ६९

अखण्ड द्वारको खोलनेके लिए शुकदेवमुनिने दौड़ लगाई परन्तु फँस गए. क्योंकि राजा परीक्षित उनके साथ चल रहे थे, इसलिए शुकदेवजी उनके भारसे दब गए अर्थात् परीक्षितके प्रश्नके कारण वे रासका सुख नहीं ले सके.

बल कीधुं बलिए घणुं, द्वार द्वार पछटाणो ।
साथे संघाती हद तणो, ते तां पाछल तणाणो ॥ ७०

शुकदेवजीने बेहद भूमि (अखण्ड रास) का वर्णन करनेके लिए बहुत प्रयत्न किए किन्तु स्थान-स्थान पर ठोकरें खानी पड़ीं. उनके साथमें हद ब्रह्माण्डके सहचर परीक्षित थे इसलिए वे पीछे खींचे गए.

रास तणो सुख सागर, ते तो नव कहेवाणो ।
पाछल ताण थई घणी, अध वचे लेवाणो ॥ ७१

रासका सुख तो सागरके समान है. शुकदेवजी द्वारा उसका ठीकसे वर्णन नहीं हो पाया. परीक्षितके प्रश्नसे ध्यान भङ्ग हो जाने पर वे बीचमें ही रह गए.

पात्र विना रस केम रहे, आवतो ढोलाणो ।
पात्र हुता ते पामियां, रस इहां बंधाणो ॥ ७२

योग्य पात्रके बिना रस कैसे टिक सकता है ! इसलिए आ रहा प्रवाह भी गया. ब्रह्मात्माएँ इसके योग्य पात्र थीं. उन्होंने इस अखण्ड रसको प्राप्त किया और वह रस उनके हृदयमें समाहित हुआ.

ए रस वरस एसी लगे, सारी पेरे सचवाणो ।
लीधो पीधो साथमां, वखतोवखत वहेचाणो ॥ ७३

यह ब्रह्मरस (बेहद वाणी) अस्सी वर्ष तक (संवत् १६३८ से १७१८ तक) सुन्दरसाथ (ब्रह्ममुनियों) के बीच सुरक्षित रहा. सुन्दरसाथने उसे लिया, पिया और समय समय पर परस्पर वितरित भी किया.

एक टीपुं ते बाहर न निकल्युं, साथ मांहें समाणो ।
जेनो हतो तेणे माणियो, मांहों मांहें गंठाणो ॥ ७४

बेहद वाणीका यह रस ब्रह्मसृष्टिके अतिरिक्त अन्य किसीको बूँद मात्र भी प्राप्त नहीं हुआ, मात्र सुन्दरसाथमें ही समाहित हुआ. जिन (सुन्दरसाथ) के लिए यह था उन्होंने ही इसका अनुभव किया, सुन्दरसाथके समुदायमें ही यह व्याप्त रहा.

ए रस वाणी अमतणी, आहीं आवी छलकाणो ।
छोल आवी जेम सागर, रस तो प्रगटाणो ॥ ७५

बेहद वाणीका यह रस हमारे पास आने पर छलकाया और सागरकी लहरोंकी भाँति व्यक्त होकर बाहर बहने लगा (हरजी व्यासकी जूनागढ़में जागनी हुई जो ब्रह्मात्माओंमेंसे नहीं थे).

जोर कीधुं घणुंए अमे, रस केमे न रखाणो ।
प्रगट थासे पाधरो, रस बाहर नखाणो ॥ ७६

हमने उसे रोकनेके लिए कई प्रयत्न किए परन्तु यह प्रेमरस किसी भी प्रकारसे रोका नहीं जा सका. अब यह अखण्ड (बेहद) वाणीका प्रेमरस अपनी सीमासे बाहर निकल आया है. इसलिए समग्र विश्वमें स्पष्ट रूपसे प्रकट होगा.

ए रस आजना दिन लगे, क्यांहे न कलाणो ।
लीला राखवा पाछल, जाण होय ते जाणो ॥ ७७

इस प्रेम रसको विश्वमें आज तक कोई भी नहीं जान सका. यह बेहद लीला बादमें आने वाले सुन्दरसाथके लाभके लिए रखी गई है, जिन्हें इसे पहचान कर जानकारी प्राप्त करनी हो वे कर लें.

साथ एणी पेरे आवसे, एणे रसे तणाणो ।
वचन सरबे सांभली, आवसे बंधाणो ॥ ७८

समस्त सुन्दरसाथ इसी प्रेमरसको ग्रहण करके परमधाम आएँगे. इस प्रेमरसकी डोरीसे खींचकर और इस अखण्ड वाणीके वचनोंका श्रवण करके, प्रेमके बन्धनोंमें बँधे हुए वे परमधाम आएँगे.

ए वाणी बेहद प्रगटी, इन्द्रावती मुख ।
घणी विधे ए रस पिए, बेहदने सुख ॥ ७९

यह बेहदवाणी इस संसारमें इन्द्रावतीके मुखसे प्रकट हुई है. सुन्दरसाथने अलग-अलग प्रकारसे इस रसको ग्रहण किया और इसका पान कर बेहद भूमिके असीम सुखका अनुभव किया.

ए वाणीने कारणे, घणे तपस्या कीधी ।
ए वाणीने कारणे, घणे अगन ज पीधी ॥ ८०

इस बेहदवाणीकी प्राप्तिके लिए कई लोगोंने कठोर तपस्या की और इस अखण्ड प्रेमरसको प्राप्त करनेके लिए पञ्चाग्निमें तप किया.

ए वाणीने कारणे, घणां देह ज दमिया ।
ए वाणीने कारणे, घणां कष्ट ज खमिया ॥ ८१

इस वाणीके लिए अनेकोंने हठ योग और प्राणायामके द्वारा इन्द्रियोंका दमन किया तथा भयङ्कर दुःख और कष्ट सहन किए.

ए वाणीने कारणे घणां भेरव झंपावे ।
ए वाणीने कारणे, तिल तिल देह कपावे ॥ ८२

इस बेहद वाणीको प्राप्त करनेके लिए कई लोगोंने भैरव झाँप (गिरनार पहाड़से छलाङ्ग) लगाया तथा कई लोगोंने शरीरके तिलके समान टुकड़े-टुकड़े कर डाले.

ए वाणीने कारणे, घणां संधाण सारे ।
ए वाणीने कारणे, सिर अगन ज बारे ॥ ८३

इस अखण्ड और शब्दातीत वाणीके लिए अनेक लोगोंने शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंको शलाकाओंसे छेदा और अपने सिर पर प्रज्वलित अग्नि धारण की.

ए वाणीने कारणे, अनेक दुख देखे ।
एणी विधे ए रसने, केटला कहुं रे अलेखे ॥ ८४

इस बेहद वाणीकी प्राप्तिके लिए अनेक लोगोंने अनेक प्रकारके योग, तप करके दुःख सहन किए हैं. इस प्रकार इस अमूल्य प्रेमरस युक्त अखण्ड वाणीके महत्वके विषयमें कितना कहूँ ?

एक टीपुं ते कोए न पामियो, एहना रस तणी ।
नाथ चौद भवनना, जे ब्रह्मांडनां धणी ॥ ८५

इस अद्वैत वाणीकी रसानन्दकी एक बूँद भी किसीको प्राप्त नहीं हुई है. चौदह लोक ब्रह्माण्डके स्वामी भी इससे वञ्चित रह गए.

बीजां नाम अनेक छे, पण लऊं केहनां ।
ब्रह्माण्डना धणी उपर, लेवाय ना तेहनां ॥ ८६

अन्य भी कई हैं किन्तु किन किनके नाम लूँ ? इस दुनियाँके अधिपति कहे जाने वाले त्रिदेवोंके नाम उल्लेख करनेके बाद अन्यके नामोंका उल्लेख नहीं किया जाता है.

ए रस आहीं उभर्‌यो, आवी अम मांहे ।
नौतनपुरीमां जे निध, एहवी नहीं क्यांहे ॥ ८७

इस बेहद वाणीका रस मेरे हृदयसे उमड़ कर यहाँ हमारे सुन्दरसाथके बीच प्रकट हुआ. नवतनपुरीमें जो अखण्ड निधि है, ऐसी अन्यत्र कहीं भी नहीं होगी.

जे निध गोकल प्रगटी, ते तां सुख अलेखे ।
अणजाणे सुख माणियां, घर कोई ना देखे ॥ ८८

जो निधि (प्रेमानन्दकी लीला) गोकुलमें प्रकट हुई, उसके सुख अपरिमित हैं. उस समय तारतम ज्ञान न होनेके कारण अनजानेमें (धनीके पहचानके बिना) ही सखियोंने प्रेमानन्दका अनुभव किया किन्तु किसीने भी अपने मूल घर परमधामको नहीं देखा.

ए सुख माण्यां सुपनमां, साथ राज संघाते ।
घर दीठे भांजे सुपना, जोइए केणी भांते ॥ ८९

व्रज मण्डलमें श्रीराजजी (श्रीकृष्ण) के साथ ब्रह्मात्माओंने प्रेमानन्दमयी लीला की. आत्म-जागृति न होनेसे वह सुख स्वप्नके समान था. यदि वहाँ अखण्ड घर परमधाम दीखता तो स्वप्नका ब्रह्माण्ड नाश हो जाता, तो पुनः यह खेल कैसे देखनेको मिलता ?

सुपन भांगे सुख केम थाय, माया केम जोवाय ।
घर तणुं सुख जोइए, निद्रा उडीने जाय ॥ ९०

स्वप्नके टूट जाने पर स्वप्नका सुख कैसे प्राप्त होता तथा मायावी ब्रह्माण्डका खेल भी कैसे देखा जा सकता ? जब दृष्टि परमधामके अखण्ड सुखोंकी ओर रहती है तो नींद उसी समय समाप्त हो जाती है.

निद्रा उडे भाजे सुपन, त्यारे उथलो थाय ।
सुख घेरनुं ने सुपननुं, बंने केम लेवाय ॥ ९१

अज्ञानरूपी निद्राके भंग होने पर स्वप्न भी टूट जाएगा. यदि ऐसा होगा तो विपरीत परिस्थितिका निर्माण होगा. (खेल देखनेकी इच्छा शेष रख कर यदि हम जागृत होंगे तो पुनः आना पड़ेगा). अखण्ड परमधामके सुख और स्वप्नावस्थाके सुख दोनोंको एक साथ कैसे लिया जा सकता है ?

एणी विधे साथ प्रीछजो, सुख घणुंए आण्युं ।
सुख सुपने गोकल तणुं, अणजाणे माण्युं ॥ ९२

हे सुन्दरसाथजी ! इस प्रकार समझना कि उस समय सुख तो बहुत प्राप्त हुए किन्तु गोकुल (व्रजलीला) के सुख स्वप्नवत् होनेसे अनजानेमें (धामधनी और घर-परमधामको पहचाने बिना) ही अनुभव किए गए.

रास तणां सुख सुं कहुं, जाणे मूलगां होय ।
ए सुख साथ धणी विना, नव जाणे कोय ॥ ९३

रास लीलाके अखण्ड सुखोंके विषयमें मैं क्या कहूँ ? वे तो ऐसे लगते हैं मानों मूल घर परमधामके ही सुख हैं. इसलिए इन सुखोंको सुन्दरसाथ तथा धामधनीके बिना अन्य कोई जान नहीं सकता है.

नवलो सरूप धणी तणो, नवलो सिणगार ।
नवलो नेह ते आपणो, नवलो आकार ॥ ९४

योग मायाके ब्रह्माण्डमें धामधनी श्रीकृष्णका स्वरूप नवीन था और उनका शृङ्गार भी नवीन था. हम सब सुन्दरसाथका प्रेम भी नवीन था और हमारे आकार भी नवीन थे.

नवलुं वन सोहामणुं, नवलो वा वाय ।
नवलां जल जमुनातणां, लहेरो ले वनराय ॥ ९५

अनुपम वन (अखण्ड वृन्दावन) भी नवीन और सुन्दर था. उसमें नवीन प्रकारका वायु प्रवहमान होता था. यमुनाजीका जल भी नवीन प्रकारका दीखता था. उसके किनारे पर नवीन प्रकारके वृक्षोंके झुण्ड झूम रहे थे.

नवली प्रेमल वेलडी, नवी रेत सेत प्रकास ।
नवलो पूनम चांदलो, सकल कला अजवास ॥ ९६

वनकी बेलियोंसे नवीन प्रकारकी सुगन्धि आ रही थी. यमुनाजीकी रेत भी नवीन रूपमें श्वेत रंगसे चमक रही थी. पूर्णमासीका चन्द्रमा भी नवीनता पूर्वक सम्पूर्ण कलाओं सहित प्रकाशमान था.

नवला रंग पसु पंखी, वनमां करे टहुंकार ।
नवला सुख श्रीराजसुं, साथ लिए अपार ॥ ९७

नवीन रंगके पशुपक्षी वनमें नवीन प्रकारकी बोली बोल रहे थे और सुन्दरसाथने भी श्रीराजजीके साहचर्यका नवीन प्रकारका अपार सुख प्राप्त किए.

ए सुख केरी वातडी, जीव रुदे जाणे ।
ए सुख साथ धणी विना, बीजो कोण माणे ॥ ९८

इस सुखकी बातको हमारा जीव तथा हृदय ही जानते हैं, क्योंकि इस सुखका आनन्द धामधनी तथा सुन्दरसाथके बिना अन्य कौन अनुभव कर सकता है ?

पण सुख सहु सुपननां, नेठ निद्रा मांहे ।
ए सर्व जोगमाया तणां, घर द्रस्ट न थाए ॥ ९९

किन्तु योगमायाका मण्डल स्वप्नवत् होनेके कारण वहाँके सब सुख भी स्वप्नवत् थे. अवश्य ही ये सुख निद्रामें ही अनुभव किए गए. क्योंकि यह सब योगमाया द्वारा निर्मित होनेसे उसमें अखण्ड परमधाम दृष्टि गोचर नहीं हो सकता था.

एक विध कही गोकल तणी, आगल जोगमायानुं सुपन ।
बंने सुख केम उपजे, ए विचारजो मन ॥ १००

इस प्रकार गोकुल लीलाओंकी एक रीति कही है. तत्पश्चात् योगमायाके रास मण्डलका सुख भी स्वप्नका सुख कहा गया है. इस प्रकार परमधाम तथा संसार दोनोंका सुख एक साथ कैसे प्राप्त हो ? हे सुन्दरसाथजी ! इस पर विचार करो.

ज्यारे सुख मायानां माणिए, घर ना आवे द्रष्ट ।
ज्यारे घरतणां सुख जोइए, नहीं सुपननी स्त्रष्ट ॥ १०१

जब हम मायावी संसारके सुखमें मग्न होंगे तो घर –परमधाम दिखाई नहीं देगा. जब मूल घर परमधामके सुख दिखाई देते हैं तो स्वप्न सृष्टिका वह सुख अदृश्य हो जाता है.

एम सुख सुपने माणियां, अणजाणे एह ।
बंने लीलामां घर तणी, खबर नहीं तेह ॥ १०२

इस प्रकार व्रज रासकी लीलाओंके सुख स्वप्नमें अनजान अवस्थामें ही अनुभव किए. इन दोनों लीलाओंमें मूल घर परमधामका परिचय नहीं था.

एणी विधे लीला बंने करी, घरे रे सिधाव्या ।
आ त्रीजो ब्रह्मांड मायातणो, आपण लई आव्या ॥ १०३

इस प्रकार हम दोनों लीला (व्रज, रास) करके पुनः मूल घर अखण्ड परमधाम चले आए. इसके बाद कालमायाके इस ब्रह्माण्डमें हम मायाकी शेष इच्छाओंको लेकर आए.

इछा हुती जोयातणी, ते तां पूरण ना थई ।
अणजाणे सुख माणियां, धाख एणी पेरे रही ॥ १०४

व्रज तथा रासमें मायाके झूठे खेल देखनेकी इच्छा पूरी नहीं हुई. अनजानेमें ही अखण्ड सुखका अनुभव किया. इस प्रकार सखियोंकी दुःखरूपी खेल देखनेकी इच्छा शेष रह गई.

केम रहे धाख ते आपणी, त्रीजो ब्रह्मांड लाव्या ।
साथे धणी पधारिया, तारतम लई आव्या ॥ १०५

वह चाहना शेष कैसे रह सकती थी इसलिए वही चाहना हमें इस तीसरे ब्रह्माण्डमें ले आई. यहाँ धामधनी स्वयं सद्गुरुके रूपमें पधारे और अपने साथ तारतम ज्ञान ले आए.

तारतम जोत उदोत छे, तेणे सुं थाय ।
एकी द्रष्टे घर जोइए, बीजी माया जोवाय ॥ १०६

तारतम ज्ञानकी ज्योति अत्यन्त प्रकाशमान है. उससे क्या लाभ होगा कि एक,

आन्तरिक दृष्टि द्वारा अखण्ड घर परमधाम दृष्टि गोचर होगा और दूसरी बाह्य दृष्टि द्वारा मायाके खेल (रामत) दिखाई देंगे

घर दीसे छे पाधरा, बीजी बे लीला जे कीधी ।
ते ए सर्वे सांभरे, वली आ लीला त्रीजी ॥ १०७

इस तारतम ज्ञानके प्रकाश द्वारा सीधा ही परमधाम दिखाई देता है तथा व्रज और रासकी लीलाकी स्मृतिके साथ-साथ यह तीसरी लीला (जागनीलीला) का भी अनुभव किया जा सकता है.

सांभरे सर्वे वातडी, जीव द्रष्टे देखे ।
आ तारतम जागी जोइए, ए तां बल अलेखे ॥ १०८

आत्म-दृष्टिसे देखने पर यहाँ व्रज-रास और परमधामकी सब बातें स्मरण हो जाती हैं. इस तारतम ज्ञान द्वारा जागृत होकर देखें तो उसमें अपरिमित शक्ति भरी हुई दिखाई देती है.

आ लीलानी वातडी, जिभ्याए कही न जाय ।
सुख जागतां माणिए, मनोरथ पूराय ॥ १०९

जागनी लीलाकी यह बात झूठी जिह्वा द्वारा नहीं कही जा सकती. जागृत होकर अखण्ड सुखका अनुभव करने पर सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जातीं हैं.

ए बल आ लीलातणुं, सरवे वचन कहेसे ।
रास प्रकास सुणी करी, बेहद वाणी लहेसे ॥ ११०

जागनी लीलाका यह बल तारतमके वचनों द्वारा स्पष्ट होगा और उसके प्रतापसे रास तथा प्रकाशकी वाणी सुनकर बेहद (अखण्ड) वाणीका भी आत्मसात् होगा.

धन धन ब्रह्मांड आ थयो, धन धन भरथ खंड ।
धन धन जुग ते कलजुग, जेमां लीला प्रचंड ॥ १११

तारतम ज्ञानके उदयसे यह ब्रह्माण्ड धन्य हो गया. साथ ही यह भरतखण्ड

भी धन्य हो गया. सभी युगोंमें यह कलियुग धन्य है जिसमें यह तेजोमयी जागनी लीला प्रकट हुई.

धन धन पुरी नौतन, जेमां ए लीला थई ।
लीला बंने पाधरी, रास प्रकासे कही ॥ ११२

यह नवतनपुरीधाम (जामनगर) की भूमि धन्य है इसीमें यह जागनीलीला-अक्षरातीतकी पहचान कराने वाले तारतम ज्ञानकी लीला हुई है. ये दोनों लीलाएँ-अखण्ड व्रज-रास तथा जागनी पूर्णरूपसे रास तथा प्रकाशकी वाणीमें स्पष्ट रूपसे प्रकट हुई है.

धन धन धणी साथसुं, बीजी वार जे आव्या ।
धन धन तेज तारतम, प्रगट प्रकास लाव्या ॥ ११३

धामधनी भी धन्य हैं वे व्रज रासके बाद दूसरी बार यहाँ जागनीके ब्रह्माण्डमें सुन्दरसाथके साथ पधारे. तेजोमय तारतमज्ञान भी धन्य है जिसे सद्गुरुने प्रकट हो कर प्रकाशित किया.

तारतम रस बेहद तणो, सर्वे प्रगट कीधो ।
घणी विधे सुख साथने, माया जोतां दीधो ॥ ११४

तारतमके इस ज्ञानके कारण बेहद भूमिकी प्रेम और आनन्द रसयुक्त व्रज-रास तथा धामकी लीलाएँ सर्वप्रकारसे प्रकट हुईं. इसके प्रतापसे मायावी खेल देखते हुए सुन्दरसाथको विभिन्न प्रकारसे अखण्ड सुख प्राप्त हुए.

तारतम रस वाणी करी, हु पाऊं जेहने ।
जहेर चढ्युं होय भोमनुं, सुख थाय तेहने ॥ ११५

इस तारतमज्ञानका रस यदि मैं वाणीके रूपमें किसीको पिला दूँ तो उस पर चढ़ा हुआ यह मायावी विष भी उतर जाएगा और उसे अखण्ड सुख प्राप्त होगा.

जे जीव निद्रा मूके नहीं, रस पाइए वाणी ।
धणी लाव्या एटला माटे, माया बल जाणी ॥ ११६

जो सांसारिक जीव अज्ञानरूपी निद्रासे नहीं जागते हैं, उन्हें इस

तारतमवाणीके रसका पान कराएँ, क्योंकि धामधनी इस मायाकी शक्तिको जानते थे और उसे दूर करनेके लिए ही वे तारतम ज्ञानको संसारमें ले आए हैं.

जहेर उतारवा साथनुं, लाव्या तारतम ।
बेहद रस श्रवणे करी, अमे पाऊं एम ॥ ११७

सुन्दरसाथ पर चढ़ा हुआ मायावी विषको उतारनेके लिए सद्गुरु धनी तारतम ज्ञान लेकर आए हैं इसलिए इस बेहद ज्ञानके प्रेमानन्द रसको मैं (इन्द्रावती) श्रवण (कान) द्वारा सुन्दरसाथको पिला रही हूँ.

ए रस श्रवणे जेहने झरे, तेने सुं करे जहेर ।
जागतां सुपन ना उपजे, देखी तां वेर ॥ ११८

तारतमका रस जिनके कानोंमें प्रवेश कर हृदय तक पहुँच जाता है, उन पर मायाका विष क्या असर कर सकता है ? क्योंकि जागृत अवस्थामें कभी भी स्वप्न दिखाई नहीं देता. इन दोनोंके बीच (जागृत अवस्था और निद्राके बीच) स्पष्ट विरोध है.

सुपन होय निद्रातणां, बहु ब्रह्मांड अलेखे ।
जेणी खिणे आंख उघाडिए, त्यारे कांई न देखे ॥ ११९

एम रस तारतम तणो, चढ्युं जहेर उतारे ।
निरविषी काया करे, जीव जागे करारे ॥ १२०

स्वप्न तो नींदमें ही दिखाई देता है. स्वप्नावस्थामें अनेक ब्रह्माण्ड दृष्टिगोचर होते हैं, परन्तु आँखें खोलते ही वे सब ब्रह्माण्ड कुछ भी दिखाई नहीं देते. इस प्रकार तारतमज्ञानका रस मायाके विषको उतार देता है. शरीर (अन्तःकरण) को निर्मल बनाता है जिससे जीवात्मा जागृत होकर अखण्ड सुख (शान्ति) प्राप्त कर सकती है.

जागे सुख अनेक छे, आहीं अलेखे ।
चार पदारथ पामिए, जीव द्रस्टे देखे ॥ १२१

जागृत होने पर यहाँ अनेक प्रकारके असंख्य सुख प्राप्त होते हैं. अन्तःदृष्टिसे देखने पर चार पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) सरलतासे प्राप्त होते हैं अथवा भरत खण्ड, मनुष्य शरीर, कलियुग और सद्गुरु इन चारोंका महत्त्व तारतमज्ञानकी प्राप्तिके बाद समझमें आता है.

पदारथ तारतमतणां, केम प्रगट कीजे ।
आफणिए ए देखसे, जीव जगावी लीजे ॥ १२२

तारतमके पदार्थों (पच्चीस पक्ष परमधाम) को संसारमें किस प्रकार प्रकट किया जाए ? जीव जागृत होते ही स्वयं अपनी दृष्टिसे उनको देखेगा. इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! अपनी आत्माको इस तारतम वाणी द्वारा जागृत करो.

ए वचन प्रगट पाधरां, में तां बाहर पाड्या ।
दरवाजा बेहदतणां, अनेक उघाड्या ॥ १२३

मैंने तारतम ज्ञानके इन वचनोंको यहाँ पर सरलता (स्पष्टता) पूर्वक प्रकट किया है. इस प्रकार बेहद भूमि–अखण्ड घरके अनेक द्वार अच्छी प्रकारसे खोल दिए हैं.

एक अख्यरनो पा लवो, कहिए प्रगट न थाय ।
श्री धाम धणी पधारिया, वाणी तो कहेवाय ॥ १२४

इस अद्वैत वाणीके एक अक्षरका चौथा भाग भी आज तक किसी प्रकार प्रसिद्ध नहीं हुआ है. धामधनी सद्गुरुके रूपमें इस खेल (संसार) में आए हैं और वे मेरे द्वारा यह वाणी कहला रहे हैं.

साथ जुए मायातणी, रामत जुजवा थई ।
तेडी घरे सिधाविए, वाणी ते माटे कही ॥ १२५

सुन्दरसाथ यह मायावी खेल अलग–अलग स्थान पर अलग–अलग प्रकारसे देख रहे हैं. उन्हें बुला कर, परमधाम ले जानेके लिए यह वाणी कही गई है.

ए रामत माया तणी, मूकाय नहीं ।
ब्रह्मांडनी कारीगरी, सारी कीधी सही ॥ १२६

मायाका यह खेल वैसे तो छोड़ा नहीं जाता क्योंकि इस ब्रह्माण्डके निर्माणमें अच्छी कला (निपुणता तथा कारीगरी) दिखाई गई है.

पारेवडां गोडिया तणां, जेम कडियो भरियो ।
फूंक मारी जुए फरी, तरत खाली करियो ॥ १२७

एम बाजी मायातणी, ब्रह्मांड ज रचियो ।
देखी बाजी पारेवडां, साथ मांहें मचियो ॥ १२८

जिस प्रकार कोई जादूगर अपनी एक खाली टोकरीमें जादुई कबूतर भर कर दिखाता है और बादमें जैसे ही जादूके मन्त्र बोल कर वह फूँक मारता है तो तुरन्त ही कबूतरोंसे भरी हुई टोकरी बिलकुल खाली दिखाई देती है. ठीक इसी प्रकार अक्षरब्रह्मके द्वारा इस मायावी ब्रह्माण्डकी रचना हुई है. अक्षरब्रह्मरूपी जादूगरके खेलके कबूतरोंको देखकर परमधामका सुन्दरसाथ उसीमें मस्त है.

आंबो वावी जल सीचियुं, खिणमां फूले फलियो ।
विध विधनी रंग वेलडी, वन ऊपर चढियो ॥ १२९

ते देखी चित भरमियो, सुध नहीं सरीर ।
विकल थई रंग वेलडी, चित ना रहे धीर ॥ १३०

ततखिण ते दीसे नहीं, बाजीगर हाथ ।
आंबो न कांई वेलडी, एणे रंगे बांध्यो साथ ॥ १३१

जादूके खेलका दूसरा दृष्टान्त देते हैं, जादूगरने आमका बीज बोकर पानी सींचा तो थोड़े ही समयमें उसमें फूल और फल लग गए. रंग विरंगी लताएँ उस वृक्ष पर चढ़ गईं. उसे देख कर मन भ्रमित हो जाता है और शरीरकी भी सुधि नहीं रहती है. उस आम्रवेलीका तमाशा देख कर चित्त व्याकुल हो जाता है. उसी क्षण वह खेल अदृश्य हो जाता है तथा जादूगरके हाथमें आम या बेली कुछ भी नहीं रहते. उसी प्रकार अक्षरब्रह्मरूपी जादूगरका खेल

देख कर सुन्दरसाथका चित्त भ्रमित हो गया तथा वे मायावी रङ्गमें रङ्ग कर बँध गए हैं.

सुध सरीर विसरी गई, विसरी गयां घर ।
कीडी कुंजर गली गई, अचरज या पर ॥ १३२

मायावी खेल देखकर ब्रह्मआत्माएँ अपने शरीर (मूल स्वरूप परआत्मा) को भी भूल गईं हैं. इतना ही नहीं वे अपने मूल घर परमधामको भी भूल गई हैं. चींटीके समान माया हाथीके समान ब्रह्मात्माओंको अपने वशमें कर गईं, यही बड़े आश्चर्यकी घटना है.

अदभुत एक जुओ सखी, ए अचरज मोटो ।
वस्त खरीने लई गयो, जेहनो मूल छे खोटो ॥ १३३

हे सखी ! इस अद्भुत घटनाको तो देखो. यह बड़ी आश्चर्यजनक घटना है. जिस मायावी निद्राकी जड़ें ही झूठी हैं, उस मायाने ब्रह्मात्माओंका हरण कर उन्हें भ्रममें डाल दिया.

निद्रा साथने जोर थई, एम सुपन वाध्यो ।
रामत मांहेंथी बल करी, नव जाय काढ्यो ॥ १३४

सुन्दरसाथ पर अज्ञानरूपी निद्राका प्रभाव जैसे-जैसे बढ़ता गया उसी प्रकार स्वप्नका प्रभाव भी बढ़ता गया. अब प्रयत्न करने पर भी उन्हें मायावी खेलसे बाहर निकाला नहीं जा सकता.

ते माटे वाणी बेहद तणी, केहे निद्रा टालुं ।
सुपन ना दऊं बाधवा, चड्युं जहेर उतारूं ॥ १३५

हे सुन्दरसाथजी ! इसलिए यह बेहद (अखण्ड, अद्वैत) वाणी कही है. इसके द्वारा तुम्हारी अज्ञान रूपी निद्राको दूर कर दूँ. स्वप्नको बढ़ने न दूँ तथा तुम्हारे ऊपर चढ़े हुए विषको भी उतार दूँ.

कुंजर काढुं कीडी मुख, सुध आणुं सरीर ।
वचन कहीने जुजवा, करुं खीर ने नीर ॥ १३६

चींटीरूपी मायाके मुखसे हाथीरूपी ब्रह्मात्माओंको निकाल दूँ और भूली हुई

ब्रह्मात्माओंको तारतमज्ञान द्वारा उनके वास्तविक शरीर (मूल स्वरूप) का परिचय करा दूँ. सद्गुरु धनीके अनेक वचन कह कर क्षीर और नीर अर्थात् ब्रह्म और मायाका निरूपण कर दूँ.

खोटाने खोटुं करुं, साचा सागर तारुं ।
वाणिए रस पाई करी, साथनां कारज सारुं ॥ १३७

सांसारिक झूठी मायाको झूठी कह कर सच्ची ब्रह्मात्माओंको मोह सागरसे पार कर दूँ. इस प्रकार सुन्दरसाथको तारतमवाणीका रस पिलाकर उनके कार्य (कामनाओंको) सिद्ध कर दूँ.

तारतम रस पाई करी, साथ घेर पहोंचाडुं ।
धन धन कहिए तारतम, जेणे थयुं अजवालुं ॥ १३८

अखण्ड तारतम ज्ञानका रस पिलाकर सुन्दरसाथको मूल वतन परमधाममें पहुँचा दूँ. धन्य है उस तारतम ज्ञानको जिसके द्वारा इस ब्रह्माण्डमें सम्पूर्ण प्रकाश फैल गया है.

ए अजवालुं साथने, रामत जोवा लाव्या ।
बीजा बंधाणां बंधसुं, विध विधनी माया ॥ १३९

तारतम ज्ञानका यह प्रकाश सुन्दरसाथको मायाका खेल दिखानेके लिए (परमधाममें बैठे हुए हम मायाका खेल देख रहे हैं, ऐसा अनुभव करवानेके लिए) लाया गया. संसारके दूसरे जीव तो अलग-अलग प्रकारसे मायाके बन्धनोंमें बँधे हुए हैं.

बीजा त्रीजा हुं तो कहुं, जो साथने माया थै भारी ।
साथ सुपन जुए सत करी, तो हुं कहुं विचारी ॥ १४०

हे सुन्दरसाथजी ! मैं दूसरा या तीसरा इसलिए कहती हूँ क्योंकि सुन्दरसाथने मायाको अधिक महत्त्व दिया है. सुन्दरसाथ स्वप्नवत् मायाको सत्य मान कर देख रहे हैं. इसलिए मुझे इस प्रकार विचार करके तुम्हें कहना पड़ा.

विचारी सुपन मुकाविए, तो थाय बंने पेर ।
सुख ते सुपने जोइए, हरखे जागिए घेर ॥ १४१

हे सुन्दरसाथजी ! तारतम ज्ञान पर विचार करके इस स्वप्नवत् मायाको छोड़ेंगे

तो दोनों लोकोंके (इस लोक और परमधामके) सभी सुखोंकी प्राप्ति होगी. इसलिए इस स्वप्नवत् संसारको आनन्दपूर्वक देखो और हँसते-हँसते परमधाममें भी जागृत हो जाओ.

तारतम पख बीजो कोई नथी, साथ विना सहु सुपन ।
जगवुं माया खोटी करी, धाख रखे रहे मन ॥ १४२

तारतम ज्ञानके समान समझने योग्य दूसरा कोई पक्ष (मार्ग) नहीं है. उसी प्रकार सुन्दरसाथके अतिरिक्त इस संसारके सब जीव स्वप्नके हैं. इसलिए मायाको झूठी समझा कर सब सुन्दरसाथको जागृत करूँ ताकि उनके मनमें (मायावी खेल देखनेकी) इच्छा शेष न रह जाए.

ते माटे पेर बंने करुं, सुपन हरखे समावुं ।
चरणे लागी कहे इन्द्रावती, साथ जुगते जगावुं ॥ १४३

इसलिए दोनों बातें (संसार और परमधाम) दिखा कर आनन्दके साथ इस स्वप्नावस्थाको स्वप्नमें ही मिला दूँ. इन्द्रावती धनीजीके चरणकमलोंमें प्रणाम कर कहती है कि मैं सुन्दरसाथको युक्तिपूर्वक मायासे जगा रही हूँ.

प्रकरण ३१ चौपाई ९३६

दूध पाणीनो विछोडो-माया ब्रह्मका निरूपण

वली वण पूछे कहुं विचार, कारण साथ तणे आधार ।
रखे केहने उत्कंठा रहे श्री सुन्दरबाई ते माटे कहे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! मैं पुनः तुम्हें पूछे बिना अपने विचार कह रही हूँ, क्योंकि तुम सब सुन्दरसाथ (धनीकी अंगना होनेके नाते) आत्माके आधार हो. तुम्हारे हृदयमें कोई उत्कण्ठा शेष न रह जाए, इसलिए श्रीसुन्दरबाईने ये विचार उपदेशरूपमें दिए हैं.

आगे एम वचन कहेवाय, जे कीडी पग कुंजर बंधाय ।
डुंगर तां त्रणे ढांकियो, पण पाधरो प्रकटो कोणे नव थयो ॥ २

इससे पूर्व भी सन्त-महात्माओंने अपनी वाणीमें इस प्रकारके वचन कहे हैं. उदाहरणके रूपमें - चींटीके पाँवसे हाथीका बँध जाना तथा एक तिनकेके

पीछे पर्वतका ढक जाना. परन्तु इन संकेतों (प्रतीक) का सीधा अर्थ किसीसे प्रकट नहीं हुआ है.

कीडी कुंजरने बेठी गली, तेहनी कोणे खबर न पडी ।
केहने तो कहुं छुं एम, माया भारे थई छे तेम ॥ ३

अभी ऐसी उक्ति सुननेको मिलती है कि चींटी हाथीको निगल गई और किसीको इसका पता न चला. इसलिए मैं इस प्रकार कह रही हूँ कि सभीके ऊपर मायाका विशेष प्रभाव पड़ा है.

सनकादिक ब्रह्मा ने कहे, जे जीव मन बेहु भेला रहे ।
ते जुजवा करीने द्यो, सनकादिके एम प्रस्न कह्यो ॥ ४

ब्रह्माके मानस पुत्रों (सनक, सनन्दन, सनातन, सनतकुमार) ने अपने पिता (ब्रह्माजी) से पूछा, मन और जीव दोनों हिलमिलकर एक साथ रहते हैं इन दोनोंके गुणोंको अलग-अलग कर हमें समझाइए अर्थात् इन दोनों (मन और जीव) को अलग-अलग किस प्रकार किया जा सकता है ?

त्यारे ब्रह्मा मन विमास्या रही, मन माहें अति चिंता थई ।
ए पडउत्तर हुंथी नव थयो, श्री वैकुंठनाथने सरणे गयो ॥ ५

तब ब्रह्माजी इस प्रश्न पर विचार करके अत्यन्त चिन्तित हुए. विचार करने पर भी जब उन्हें उत्तर सूझा नहीं, तब वे ध्यान द्वारा वैकुण्ठ नाथ विष्णु भगवानकी शरणमें पहुँचे.

भगवानजी त्यारे तेणे ताल, हंसरूप लाव्या ततकाल ।
हंसजीने जीवे ओलख्यो, त्यारे मन आडो फरीने वल्यो ॥ ६

विष्णु भगवान उसी समय हंसका रूप धारण कर वहाँ पधारे. (हंसावतारने सनकादिका मन खींच लिया तब) सनकादिके जीवने हंसावतार विष्णुभगवानको पहचान लिया और उन्हें प्रणाम किया. जब भगवान विष्णुने उनके मनको छोड़ दिया तो मन शङ्कामें पड़ गया.

सनकादिके एम पूछ्युं वचन, जीवने चांपी बेठुं मन ।
त्यारे हंसजीए कीधो जवाब, समझ्या सनकादिक भाग्यो वाद ॥ ७

सनकादिने इस प्रकार प्रश्न पूछा कि आप कौन हैं ? क्योंकि अब मन जीवको ढँक कर उस पर बैठ गया था. तब हंसावतार विष्णु भगवानने उन्हें समझाया. (वे बोले कि तुमने क्या समझकर मुझे प्रणाम किया ? और अब यह प्रश्न क्यों पूछ रहे हो ? इस प्रकार जीव तथा मन अलग-अलग हैं) यह बात सनकादि समझ गए तथा उनकी शङ्काका समाधान भी हो गया.

वाधे भारे समझावियां, पण दूध पाणी नव जुजवां थयां ।
तेहनो तमसुं करुं जवाब, समझावाने काजे साथ ॥ ८

इस वादविवाद पूर्ण प्रश्नको विष्णु भगवानने संक्षेपमें समझा दिया. परन्तु दूध और पानी अर्थात् जीव और मनके गुण दोषोंका अलग-अलग प्रकारसे निरूपण न हो सका. इसका उत्तर (स्पष्टीकरण) सुन्दरसाथको समझानेके लिए अब मैं कह रही हूँ.

समझीने ओलखो धणी, चालो आपणे घर ज भणी ।
ए चारेनो अरथ ज एह, रखे कांई तमने रहे संदेह ॥ ९

हे सुन्दरसाथजी ! इस तथ्यको समझ कर धामधनीको पहचानो तथा अपने अखण्ड घर परमधामकी ओर चलो. उन चारों उक्तियों [चींटीके पैरमें हाथीका बँध जाना, तिनकेसे पर्वतका ढक जाना, चींटीका हाथीको निगल जाना तथा सूईके छेदमें-से हाथीका निकल जाना.] का यह अर्थ है. इसलिए मनमें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं रखना.

एहनो जे जोतां अरथ, तेहने जवाब एम देतां ग्रन्थ ।
अकल अगम वैकुंठनो धणी, ए थोडी हजी करे घणी ॥१०

जो कोई भी इन उक्तियोंके अर्थ पर विचार करते हैं तो सब धर्मग्रन्थ इनके उत्तर इस प्रकार देते हैं. वैकुण्ठके अधिपति विष्णु भगवानकी बुद्धि अगम्य (असीम) है. इस प्रकार संक्षेपमें ही उन्होंने सनकादिको समझा दिया, वैसे तो वे इससे अधिक बहुत कुछ कह सकते थे.

एह करतां सरवे थाय, पण ओल्यो अरथ तणाणो जाय ।
अरथ उत्कंठा रहे मन मांहे, समझ कोणे नव पडे क्यांहे ॥ ११

विष्णु भगवानके द्वारा सब कुछ हो सकता है, परन्तु उपर्युक्त रहस्यका अर्थ ब्रह्मके बदले मायाकी ओर खींचता चला जाता है. इसलिए मन तथा जीवके गुण दोष जाननेकी उत्कण्ठा सबके मनमें बनी रही और उसका यथार्थ रूप किसीकी समझमें नहीं आया.

हवे समझावुं जो जो वाणी, दूध विछोडा करी दऊं पाणी ।
जो जीव साख पूरे आपणो, अरथ खरो तो तारतम तणो ॥ १२

अब मैं सद्गुरु धनीकी वाणी द्वारा तुम सबको समझाता हूँ, तथा दूध-जीव और पानी-मनके गुण दोषको अलग अलग करके दिखाता हूँ. यदि अपना जीव साक्षी बनेगा तभी तारतम ज्ञानका वास्तविक अर्थ ठीकसे समझा जाएगा.

हवे संभारजो जीवसुं वात, जीव तणो मोटो प्रकास ।
चौद भवन अजवालुं करे, जो जीव जीवनने रुदे धरे ॥ १३

हे सुन्दरसाथजी ! अब अन्तरात्मा द्वारा इस बातको समझो. जीव बहुत शक्तिशाली है. यदि यह जीव अपने जीवन अर्थात् परमात्माको हृदयमें धारण कर लेता है तो वह चौदह लोकोंको भी प्रकाशित कर सकता है.

एह छे एवो समरथ, एहना बलनो कहीस अरथ ।
नहीं राखुं संदेह लगार, जाणी साथ घरनो आधार ॥ १४

यह जीव इतना समर्थ (शक्तिशाली) है कि उसकी शक्तिके विषयमें मैं आगे चल कर बताऊँगी. सब सुन्दरसाथको मेरी आत्माके आधाररूप मूल घर परमधामके सम्बन्धी जान कर उनके मनमें जरा-सा भी सन्देह रहने नहीं दूँगी.

मन तणुं नथी काई मूल, तेथी भारे आंकडानु तूल ।
एक अरधी पांखडी नथी जेटलो, पण पग थोभ माटे कह्यो एटलो ॥ १५

मनका तो कोई मूल (अस्तित्व) ही नहीं है. इससे बड़ा तो आँकका रेशा

होता है. यहाँ तक कि मदार (आँक)के तन्तुकी एक आधी पंखुड़ीके बराबर भी मनका आकार नहीं है. किन्तु समझानेके लिए इस प्रकार उसके आकारको दिखानेका प्रयत्न किया है.

ते बेठो जीवने उपर चढी, कीडी कुंजर एम बेठी गली ।
एम त्रणे डुंगर ढांकियो, एम गज कीडी पग बांधियो ॥ १६

ऐसा नाम मात्रका मन जब समर्थ (शक्तिशाली) जीवके ऊपर आरूढ़ हो जाए, उसीको चींटी द्वारा हाथीका निगल जाना कहा है. (इस प्रकार चींटीके समान मन हाथी समान जीवको निगल जाता है.) दूसरे ढंगसे कहें तो मनरूपी तिनकेके द्वारा पर्वतरूपी जीव ढक गया है इसी प्रकार चींटीरूपी मनके पाँवसे हाथीरूपी जीव बँध गया है.

जो जीव पोते करे अजवास, तो मने न खमाय प्रकास ।
ते उपर कहुं द्रस्टांत, जो जो पोतानुं वरतांत ॥ १७

यदि जीव स्वयं प्रकाशित हो अर्थात् उसे अपनी पहचान हो जाए तो मन उसके प्रकाशको सहन नहीं कर पाएगा. उसके लिए एक दृष्टान्त देकर कहती हूँ, हे सुन्दरसाथजी ! तुम अब अपने वृत्तान्तको याद करो (व्रजसे रासमें किस प्रकार गए थे ? वहाँ मन कुछ नहीं कर सका. जीव अपने जीवनके साथ पहुँच गया, उस वृतान्तको याद करो).

सुकजीनां कह्यां परमाण, सात सागरनो काढ्यो निरमाण ।
भवसागरनो न आवे छेह, सुकजी एम पाधरुं कहे ॥ १८

शुकदेवमुनिके कथनानुसार उन्होंने सात सागरोंका निरूपण कर निष्कर्ष निकाला है परन्तु भवसागरका तो कोई अन्त ही दिखाई नहीं देता अर्थात् उसका यथार्थ वर्णन सम्भव नहीं है. इस प्रकार शुकदेवमुनि स्पष्ट रूपसे कहते हैं.

हवे पगलां जे भरियां प्रमाण, जो जो जीव तणुं बल जान ।
पहेले फेरे आपण नीसरयां, भवसागर ते केम करी तरयां ॥ १९

ब्रह्मात्माओंने व्रज मण्डलसे रास मण्डलमें जाते हुए जैसे कदम उठाए थे

उसे आत्म-बल समझना चाहिए. व्रज मण्डलसे रासमण्डलमें जाते हुए हम (आत्माएँ) कैसे निकलीं थीं और भवसागरको कैसे पार किया था ?

जेनो नव काढ्यो निरमाण, सुकजीनां वचन प्रमाण ।
गोपद वछ वली सुकजीए कह्यो, भवसागर एम साथने थयो ॥ २०

भवसागर (मायावी संसार) की सीमाका निरूपण तो शुकदेवजीके वचन भी नहीं कर सके पुनः शुकदेवजीने यह भी कहा कि यह भवसागर गोपियोंके लिए गोवत्सपद-गायके बछड़ेके चरण चिह्नके समान हुआ था.

एटलो पण नथी द्रस्टे पड्यो, पग थोभ माटे पुस्तक चढ्यो ।
जीव तणो जो जो बल, खरी वस्त कही नेहेचल ॥ २१

उनकी दृष्टिमें भवसागर इतना बड़ा (गोवत्सपदवत्) भी था ही नहीं किन्तु ग्रन्थमें लिखनेके लिए थोड़ा-सा कह देना पड़ा. वस्तुतः यह आत्म-बल है जो अखण्ड (वस्तुका बल) कहा गया है.

भवसागर केम एटलो थयो, जो जीव खरे जीवनजी ग्रह्यो ।
त्यारे मन एकलो बेसी रह्यो, खोटा मन खोटामां भल्यो ॥ २२

व्रजकी गोपियोंके लिए भवसागर इतना छोटा कैसे हो गया ? कारण कि जीवने अपने सच्चे जीवन- श्रीकृष्णको ग्रहण किया (तभी ऐसा हुआ). तब मायावी मन अकेला पड़ गया और झूठी मायामें लिप्त हो गया.

दूध लीधुं एम जुओ करी, पाणीने मूक्युं परहरी ।
दूध पाणीनो जुओ विचार, जुआ करी ओलखो आधार ॥ २३

इस प्रकार दूधके समान जीवको अलग कर लिया और पानीके समान मनका परित्याग कर दिया अर्थात् ब्रह्म और मायाका निरूपण हुआ. इस प्रकार दूध और पानीके निरूपणको विचार पूर्वक देखो. इन दोनोंको अलग कर धामधनीको पहचानो.

आपण मांहें बेठा छे सही, चरणकमल रहेजो चित ग्रही ।
भरम भाजी ओलखजो धणी, दया आपण उपर अति घणी ॥ २४

धामधनी निश्चित रूपसे हम सबके बीच विराजमान हैं. उनके चरण कमलको

चित्तमें ग्रहण करो. भ्रम (अज्ञानता) को हटा कर धामधनीको पहचानो, क्योंकि हम सब सुन्दरसाथ पर उनकी अधिक दया है.

इन्द्रावती कहे ओलखो आधार, तारतम जीवसुं करो विचार ।
सुफल फेरो थाय संसार, वली वली नहीं आवे आवार ॥ २५

इन्द्रावती कहती है, हमारे जीवनके आधार धामधनीको पहचानो और अन्तःकरणसे तारतम पर विचार करो, ताकि यह मनुष्य जीवन सफल (सार्थक) हो सके. ऐसा अवसर पुनः पुनः प्राप्त नहीं होगा.

श्री भागवतनो सार

सांभलो साथ कहुं विचार, फल वस्त जे आपणो सार ।
ते जोईने आवो घरे, रखे अमल तमने अति चढे ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! तुम सुनो मैं तुम्हें विचारपूर्वक मूल सम्बन्धकी बातें बताती हूँ. हमारी सार वस्तु (मूल तत्त्व) तारतम ज्ञान है. उसे सुन कर (विचार कर) अपने मूल घर परमधाममें आओ. इस मायावी संसारका मद (नशा) तुम पर विशेष रूपसे न चढ़े, इसलिए मैं यह कह रही हूँ.

ए अमलतणो मोटो विस्तार, ते नेठ नव जोवो निरधार ।
आगे आपणने वार्‌या सही, श्रीमुख वाणी धणिए कही ॥ २

इस मायावी नशाका विस्तार बड़ा है. यह माया देखने योग्य नहीं है. हम सब सुन्दरसाथको धामधनीने पहले ही अपने श्रीमुखसे तारतमका रहस्य समझा कर रोका था.

ते माटे तमने देखाडुं सार, आपणां घर ने आपणा आधार ।
विहिला थयानी नहीं आ वार, आहीं तमने नहीं मूकुं निरधार ॥ ३

इसलिए तुम सबको उसकी सार वस्तु, अपना मूल वतन परमधाम और

प्राणाधार धामधनीका दर्शन कराती हूँ. धामधनीसे अलग होनेका यह समय नहीं है. अब मैं तुम्हें निश्चय ही इस मायावी संसारमें रहने नहीं दूँगी.

वेदतणो सार भागवत थयो, तेहनो सार दसमस्कन्ध कह्यो ।
दसमतणां अध्या नेऊं, तेहनो सार काढीने देउं ॥ ४

वेदका सार श्रीमद्भागवत कहलाता है. श्रीमद्भागवतका सार दशमस्कन्ध है. उस दशमस्कन्धमें कुल मिलाकर नब्बे अध्याय हैं. उनका सार तुम्हें कह रही हूँ.

नेऊं मांहें अध्या पांत्रीस, जे व्रज लीला कीधी जगदीस ।
जगदीस वचन एणे ना कहेवाय, एम ना कहुं तो विगत केम थाय ॥ ५

उन नब्बे अध्यायोंमें भी आरम्भके पैंतीस अध्याय मुख्य हैं जिनमें विश्व ब्रह्माण्डके स्वामी श्रीकृष्ण द्वारा व्रज मण्डलमें की गई बाललीलाओंका वर्णन है. श्रीकृष्णको मात्र जगदीश (जगतके स्वामी) नहीं कहा जा सकता, किन्तु ऐसा न कहूँ तो दुनियाँ उनका स्पष्ट वर्णन किस प्रकार समझ पाएँगी.

ते माटे में कह्युं एम, नहीं तो रामत जे कीधी श्रीक्रस्न ।
ए नामनुं तारतम में न कहेवाए, साथ संभारी जुओ जीव मांहे ॥ ६

इसलिए मैंने ऐसा कहा है. व्रज और रासकी लीलाएँ जिन श्रीकृष्ण परमात्माने कीं हैं. उनके नामका रहस्य मुझसे बताया नहीं जा सकता. सुन्दरसाथ उन लीलाओंका स्मरण करते हुए अपने हृदयमें विचार कर लें.

ए आपणां घरनी वात ज थई, अने तमने थाकी हुं कही कही ।
ए घर केम हुं प्रगट करुं, तम थकी नथी कांईए परुं ॥ ७

यह (व्रज तथा रास लीला) तो हमारे मूल घर परमधामकी बात है. मैं तुम्हें यह सब कह-कह कर थक गई. इस मूल घर परमधामको मैं किस प्रकार प्रकट करूँ? क्योंकि तुम किसीसे भी यह अलग नहीं है.

ते माटे में कह्युं घणुंए, नहीं तो एटलुं कहेवुं स्याने पडे ।
आ प्रगट कीधुं ते तम माट, नहीं तो आ वचन कांई नव कहेवात ॥ ८

इसलिए मैंने वारंवार कहा है अन्यथा इतना क्यों कहना पड़ता ? ये सब

रहस्य तुम्हारे लिए ही प्रकट किए हैं. ऐसी बात किसी दूसरेको नहीं कही जाती है.

हवे घर ओलखी ग्रहजो मन, घणुं तमने कह्युं तारतम ।
ए जाणजो मन जीवतणे, पेरे पेरे तमने कह्युं विध घणे ॥ ९

हे सुन्दरसाथजी ! अब परमधामको पहचानकर उसे मनमें ग्रहण करो. मैंने तुमसे कई बार तारतम-ज्ञानकी बातें की है. अब अन्तर्दृष्टि द्वारा अपने आत्माके मूल सम्बन्धको पहचानो. मैंने तुम्हें यह ज्ञान अनेक प्रकारसे दिया है.

ते माटे हुं फरी फरी कहुं, जे माया अमल सवल चढ्युं ।
अमल उतारो प्रकास जोई करी, अने भरम गेहेन मूको पर हरी ॥१०

मैं तुम्हें वारंवार इसलिए कह रही हूँ कि मायाका मद बलवान बन कर तुम्हें प्रभावित (वशीभूत) कर रहा है. सद्‌गुरुके तारतम ज्ञानके प्रकाशके ये वचन सुन कर मायाके इस मदको उतारो और भ्रमरूपी गाढ़ निद्राको छोड़ कर जागृत हो जाओ.

अनेक विधे कह्युं परबोध, हवे रखे रुदे राखो निरोध ।
सुणजो ए अध्या पांत्रीस, जुआ वली कीधां मांहेंथी त्रीस ॥११

हे सुन्दरसाथजी ! मैंने तुम्हें अनेक प्रकारकी शिक्षा (उपदेश) दी है. अब तुम हृदयसे भ्रमके आवरणको हटा दो. अब श्रीमद्भागवतके दशमस्कन्धके पैंतीस अध्यायोंका विवरण सुनो. इन पैंतीस अध्यायोंमेंसे बाल चरित्रके तीस अध्यायोंको अलग माना है.

पंच अध्याई सुकजीए कही, पण परीखत नव सक्यो ते ग्रही ।
प्रस्न चूक्यो थयो अजाण, रास लीला न वरणवी प्रमाण ॥१२

शुकदेवजीने रासलीलाका वर्णन पाँच अध्यायोंमें किया, किन्तु राजा परीक्षित इसे ग्रहण न कर सके. संशयके कारण बीचमें ही प्रश्न पूछ लिया. तब शुकदेवजीका जोश चला गया और रासका समुचित वर्णन न हो सका.

त्यारे हाथ निलाटे नाख्यो सही, सुकजी कहे मुख मांहेंथी रही ।
हुं जोगी तुं राजा थयो, रासतणो सुख नव जाय कह्यो ॥१३

तब शुकदेवजी मस्तकमें हाथ रख कर कहते-कहते रुक गए अर्थात् मुखसे वर्णन नहीं कर सके. हे परीक्षित ! मैं पहलेकी भाँति योगीका योगी ही रह गया और तू राजाका राजा ही रहा. इस प्रकार रासके सुखका वर्णन नहीं किया जाता है.

ए वचन मारे मुखथी नव पडे, न कांई तारे श्रवण संचरे ।
आ जोग नथी आपण बेहु, तो ए लीला सुख केणी पेरे सहुं ॥१४

अब ये वचन मेरे मुखसे नहीं बोले जाते और न ही तेरे कानोंमें उस दिव्य लीला (वाणी) का संचार हो सकेगा. हम दोनों यह अखण्ड सुख प्राप्त करनेके लिए योग्य अधिकारी नहीं हैं. इसलिए इस लीलाका सुख कैसे सहन करूँ ?

एहना पात्र हसे ए जोग, आ लीलानो ते लेसे भोग ।
केसरी दूध न रहे रज मात्र, उतम कनक विना जेम पात्र ॥१५

रासलीलाके जो अधिकारी (योग्यपात्र) होंगे वे ही इस अखण्ड सुखको ग्रहण कर सकेंगे. जिस प्रकार केसरी सिंहिनीका दूध स्वर्ण पात्रके सिवा अन्य पात्रमें नहीं टिक सकता, उसी प्रकार योग्य पात्र (ब्रह्मसृष्टि) के बिना कोई दूसरा रासके सुखका अनुभव नहीं कर सकता.

एह वचन सुणीने राए, पड्यो भोम खाए मुरछाए ।
कम्पमान थई कलकल्यो, रुदन करे रुदे अंतर गल्यो ॥१६

शुकदेवजीके इन वचनोंको सुन कर राजा परीक्षित मूर्छित हो कर पृथ्वी पर गिर गए और घबराहटके कारण काँपने लगे. रोते रोते उनका अन्तःकरण गलित हो गया.

आलोटे दुख पामे मन, अंग मांहें लागी अगिन ।
त्यारे वली सुकजी ओचरया, आंसु लोवरावी बेठा कर्‌या ॥१७

पृथ्वी पर लोटते हुए मनमें अत्यन्त दुःखी हुए. उनके अङ्गोंमें पश्चात्तापकी

अग्नि प्रज्वलित हो रही थी. फिर शुकदेवमुनिने राजाके आँसु पोंछते हुए उन्हें उठा कर बैठाया और बोले–

सांभल राजा द्रढ करी मन, अंतरगते कहेतो वचन ।
ते कहेवावालो उठी गयो, हुं एकलो बेसी रह्यो ॥१८

हे राजन् ! मनको दृढ़ बना कर, एकाग्र चित्त हो कर, मेरा कहना सुनो. मुझसे जो कहलवाने वाली शक्ति थी वह चली गई है. अब मैं उसके अभावमें अकेला ही रह गया हूँ.

हवे पूछीस मुने तुं सुं, तुझ सरीखो बेठो हुं ।
त्यारे परीखत चरण झालीने कहे, स्वामी रखे उतकंठा मारा मनमां रहे॥ १९

हे राजन् ! अब तुम मुझसे क्या पूछोगे ? मैं भी तुम्हारे जैसा ही बन कर बैठा हूँ. तब राजा परीक्षित शुकदेव मुनिके चरण पकड़ कर कहने लगे, हे स्वामीजी ! मेरे हृदयकी उत्कण्ठाको आप बाकी न रहने दें.

मुनीजी हुं घणो दोहेलो थाऊं, रखे अगिन हुं लीधे जाऊं ।
त्यारे भागे आवेस कही पंच अध्याए, पण रास ना वरणव्यो तेणे ताए॥ २०

हे मुनिजी ! मैं अत्यधिक दुःखी हो रहा हूँ. इस दुःखाग्निको ले कर मैं इस दुनियाँसे चला न जाऊँ, इसलिए आप पुनः वर्णन करके सुनाइए. तब आवेश चले जाने पर भी पाँच अध्याय कहे गए, परन्तु इतने मात्रसे रासका पूरा वर्णन नहीं हो पाया.

हवे सुकजीनां वचन हुं केटलां कहुं, में सार काढवा भागवत ग्रह्युं ।
सघलानो सार आ ते रास, जे इन्द्रावती मुख थयो प्रकास ॥२१

हे सुन्दरसाथजी ! शुकदेवमुनिके वचनोंके विषयमें मैं कहाँ तक कहूँ. सार बतानेके लिए श्रीमद्भागवत ग्रहण कर रहा हूँ. सबका सार रास ग्रन्थ है जो इन्द्रावतीके मुखसे प्रकाशित हुआ है.

हवे रास तणो सार तमने कहुं, ते तां आपणुं तारतम थयुं ।
तारतम सार आ छे निरधार, जिहां वसे छे आपणां आधार ॥२२

अब मैं रास ग्रन्थका सार तुम सबको कह रही हूँ. वह तो हमारे अखण्ड

घरका तारतम है. तारतमका सार निश्चय ही यह है कि जहाँ हमारी आत्माओंके आधार धामधनी निवास करते हैं.

घर श्री धाम अने श्रीक्रस्न, ए फल सार तणो तारतम ।
तारतमे अजवालुं अति थाए, आसंका नव रहे मन मांहे ॥ २३

हमारा घर अखण्ड परमधाम तथा हमारे धनी श्रीकृष्ण यही तारतमका सार फल है. इस तारतम ज्ञान द्वारा अत्यन्त प्रकाश फैलता है. जिससे मनमें किसी भी प्रकारकी शंका नहीं रहती है.

मन जीवने पूछे रही, त्यारे जीव फल देखाडे सही ।
ए अजवालुं कीधुं प्रकास, तारतमनां वचन मांहें रास ॥ २४

यदि मन जीवको शान्त भावसे पूछे तो जीव उसे अखण्ड फल दिखाएगा. इस ज्ञानका प्रकाश, 'प्रकाश' ग्रन्थमें किया गया है. तारतम ज्ञानके वचनोंमें रासकी लीलाएँ समायी हुई हैं.

ए अजवालुं जीवने करे, जे जीव घर भणी पगलां भरे ।
पोते पोतानी पूरे साख, ए तारतमतणो अजवास ॥ २५

यह तारतम ज्ञान जीवके हृदयको प्रकाशित कर भ्रम और अज्ञानको दूर करता है. इसके कारण यह जीव अपने घर परमधामके मार्ग पर दृढ़ विश्वासके साथ अग्रसर होता है. तत्पश्चात् जब आत्मा जागृत होकर स्वयं अपनी साक्षी देने लगे तो समझ लेना कि वही तारतम ज्ञानका प्रकाश है.

ते लई धणी आव्या आंहे, साथ संभारी जुओ जीव मांह ।
एणे घरे तेडे आ वल्लभ, बीजाने ए घणुं दुर्लभ ॥ २६

इस तारतम ज्ञानको लेकर धामधनी इस संसारमें आए हैं. हे सुन्दरसाथजी! इस तथ्यको याद करके अपनी अन्तरात्मामें देखो. धामधनी हमें इसी घर-परमधाममें बुला रहे हैं. दूसरे जीवोंके लिए इसकी प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है.

बीजा कहुं छुं एटला माट, जे माया भारे करो छो साथ ।
तारतम पख बीजो कोय नथी, एक आव्या छो तमे घर थकी ॥ २७

तुम सब सुन्दरसाथ मायाको अधिक महत्त्व दे बैठे हो. इसलिए मैं तुम्हें अन्य कहती हूँ. यदि तारतमके आधार पर देखें तो सुन्दरसाथ, ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है. मात्र तुम ही परमधामसे आए हो.

आ माया कीधी ते तम माट, तारतम मांहें पाडी वाट ।
एणी वाटे चालीए सही, श्री वालाजीनां चरण ज ग्रही ॥ २८

तुम्हारे लिए ही इस मायाकी रचना की गई है और तारतम ज्ञानके द्वारा घर-परमधामका मार्ग प्रशस्त हुआ है. इसलिए हम सब सद्गुरुके चरण ग्रहण कर इसी मार्गसे चलें.

एह चरण छे प्रमाण, इन्द्रावती कहे थाओ जाण ।
तमे वचन तणां लेजो अरथ, आपणा जीवनो ए छे ग्रथ ॥ २९

सद्गुरुके ये चरणकमल हमारे लिए यथार्थ आधार (प्रमाण) हैं. इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! इस वास्तविकताको समझ लो. तारतमके इन वचनोंके मर्म (अर्थ) ग्रहण करो. यही हमारे जीवके लिए अमूल्य धन है.

प्रकरण ३३ चौपाई ९९०

अठोतर सो पखनो सार (एक सौ आठ पक्षका सार)

हवे वली कहुं ते सुणो, अठोतर सो पख ज तणो ।
विचारजो जो प्रमाण, एहनो सार काढुं निरवाण ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! अब मैं भक्तिमार्गके १०८ पक्षोंका विवरण दे रही हूँ. इसका श्रवण करो. मैं निश्चय ही उसके सार तत्वका निरूपण करती हूँ. अपनी क्षमताके अनुरूप विचार करना.

माया जीव कोई कोई छे समरथ, ते दोड करे छे कारण अरथ ।
निसंक आपोपा नाख्यां जेणे, निहकरम मारग लीधा तेणे ॥ २

मायाके जीव (जीवसृष्टि) में भी कोई-कोई सामर्थ्यवान् हैं. वे आत्म-

कल्याणके लिए अत्यधिक दौड़ लगाते हैं. उन्होंने परमात्माकी भक्तिके लिए निःसंकोच होकर स्वयंको समर्पित किया है, और निष्काम कर्मका मार्ग अपनाया है.

पुष्ट मरजाद ने परवाह पख, एह तणी कीधी छे लख ।
ते वहेची कीधां नव भाग, चढे पगथी लई वेराग ॥ ३

पुष्ट, मर्यादा और प्रवाह भावको पक्ष कहते हैं. कई लोगोंने इस मार्ग तकका परिचय प्राप्त कर लिया है. उन तीनों भावोंको नवधा भक्तिमें बाँट कर आगे बढ़ें तो वैराग्यके मार्ग पर पहुँचा जा सकता है.

वली कीधां वीस ने सात, चढतो जाय लिए एणी भांत ।
एकासी पख कहेवाय, ते वैकुंठमां पोहोंतो थाय ॥ ४

फिर उपर्युक्त सत्ताइस भावको सत, रज और तम, इन तीनों गुणोंके साथ गुणा करके आगे बढ़ें तो एकासी (३ X ९ X ३ = ८१) पक्ष हो जाते हैं. इन एकासी पक्षोंको वैकुण्ठ तक पहुँचनेका मार्ग कहा गया है.

हवे पख ब्यासीमो जे कह्यो, वल्लभाचारजे ते ग्रह्यो ।
स्यामा वल्लभी एथी जोर, पण बंने रह्यां इंडानी कोर ॥ ५

अब ब्यासीवाँ पक्ष उसे कहते हैं जिसे वल्लभाचार्यजीने स्वीकार किया है. श्यामा (राधा) वल्लभी सम्प्रदायवालोंने इससे भी आगे बढ़नेका प्रयत्न किया. फिर भी वे दोनों इस अण्डाकार ब्रह्माण्डके किनारे तक ही पहुँच सके.

छेक ईंड मांहें कीधुं सही, पण अखंड ते लई सक्यो नहीं ।
पाछा वली पड्या प्रतिबिंब, एहोनी तां एह सनंध ॥ ६

ये दोनों ब्रह्माण्डोंको छेद कर आगे तो बढ़े किन्तु अखण्ड भूमिका वर्णन न कर सके और वापस आकर प्रतिबिम्ब रास लीलामें मग्न होकर रह गए. इन दोनोंका यह विवरण है.

ए उपर वली पख छे एक, सांभलो तेहनुं कहुं विवेक ।
त्रासिमो पख परमाण, जे वासना पांचे ग्रह्यो निरवाण ॥ ७

इसके ऊपर एक और पक्ष है. अब मैं उसका विवरण दे रहा हूँ. उसे सुनिए.

वह तिरासिवाँ पक्ष है. अव्याकृत ब्रह्मके महाकारण शरीरमें (जिसमें प्रणवब्रह्म, पुरुष-प्रकृतिसे पर रास लीलाका प्रतिबिम्ब है) अक्षर ब्रह्मकी पाँच वासनाओंने इसे प्रेम पूर्वक ग्रहण किया है.

पांचे नाम कहुं प्रगट, दऊं सिखामण जाणी घरवट ।
नहीं तो प्रमोध स्याने कहुं, श्री वालाजीनां चरण ज ग्रहुं ॥ ८

इन पाँचों वासनाओंके नाम प्रकट कर रही हूँ. सुन्दरसाथको अपने घरके समझ कर यह विवरण दे रही हूँ, अन्यथा ऐसा उपदेश क्यों दूँ ? प्रियतम धनीके चरण कमलोंको ही क्यों न ग्रहण करूँ ?

पण साथ माटे कहुं फरी फरी, हवे पांचे नाम जो जो चित धरी ।
एक भगवानजी वैकुंठनो नाथ, महादेवजी पण एणे साथ ॥ ९

मैं सुन्दरसाथके लिए वारंवार इनका पुनरावर्तन करती हूँ. इन पाँचोंके नाम अच्छी प्रकारसे चित्तमें धारण कर लो. एक तो वैकुण्ठके अधिपति विष्णु भगवान हैं, और महादेवजी उनके साथ हैं.

सुकजी ने सनकादिक बे, वली कबीर भेलो मांहें ते ।
लखमी नारायण भेला अंग मांहे, एहनो विचार कांई जुओ न थाय ॥ १०

तीसरे और चौथे क्रम पर शुकदेवजी और सनकादि हैं. पाँचवें सन्त कबीरको भी उनमें सम्मिलित किया गया है. लक्ष्मीनारायण और वैकुण्ठनाथ भगवान विष्णु एक ही अङ्ग हैं इसलिए उनकी संख्या इन पाँचोंसे अलग नहीं मानी जाएगी.

ते माटे ए वासना पांच, इंडुं फोडी निकली जुओ द्रष्टांत ।
ए पुरुष प्रकृति ओलंघी गया, अक्षर मांहें जईने भेला थया ॥ ११

इसलिए ये पाँचों वासनाएँ अण्डाकार ब्रह्माण्डकी सीमाको लाँघ कर आगे निकल गईं हैं, और पुरुष-प्रकृति-प्रणव ब्रह्म (अव्याकृतब्रह्म, सुमङ्गला शक्ति आदि) की सीमाओंको पार कर चिद् अक्षर (सबलिक ब्रह्म) में समाहित हो गई हैं.

ए वचन पाधरां प्रगट कहे, जाण होय ते जोइने लहे ।
पख पचवीस ए उपर जेह, तारतमनां वचन छे तेह ॥१२

ये वचन सीधे और स्पष्ट रूपसे कहे गए हैं. जिस किसीको जाननेकी इच्छा हो वह उसका परिचय प्राप्त कर ले. इन तिरासी पक्षोंके ऊपर परमधाम (अखण्ड और अद्वैत भूमिका)के पच्चीस पक्ष हैं, ये तारतमके रहस्यपूर्ण वचन हैं.

एह वचनो मांहें श्री धाम, धणी आपणा ने साथ सर्व स्थान ।
ए तारतमतणो अजवास, धणी बेठा मांहें लई साथ ॥१३

इन तारतमके वचनोंमें ही परमधाम है और इन्हीं वचनोंके द्वारा धामधनी, सुन्दरसाथ तथा परमात्माकी मूल बैठकका परिचय मिलता है. यह सब तारतमका ही प्रकाश है. इससे निश्चय होता है कि धामधनी सुन्दरसाथको लेकर परमधाम-मूलमिलावेमें बैठे हैं.

हवे कां नव ओलखो रे साथ सुजाण, घणुं तेहने कहिए जे होय अजाण।
वचिखिण छो तमे परवीण, गलजो जेम अगिनसुं मीण ॥१४

हे सुज्ञ सुन्दरसाथजी ! अब तुम धामधनीकी पहचान क्यों नहीं करते ? जो अज्ञानी (अनजान) है उसे वारंवार कहना पड़ता है. किन्तु तुम तो दक्ष और निपुण हो, इसलिए तुम भी अग्निके सम्पर्कसे मोमकी भाँति सद्गुरु धनीके वचनोंसे द्रवित हो जाओ,

सनेहसुं सेवा करजो धणी, गलित चित थई अति घणी ।
तमे सेवाए पामसो पार, धणीतणां वचन निरधार ॥१५

प्रेममें मग्न होकर (गलित चित्त होकर) स्नेह पूर्वक धामधनीकी सेवा करो. सेवाके द्वारा तुम भवसागर पार कर परमधाम प्राप्त कर सकते हो. ये सद्गुरु धनीके निर्णायक वचन हैं.

पाछला साथे छे ते आवसे केम, ते जोसे रासतणां वचन ।
चरणे छे ते तो आव्या सही, पण हवे आवसे वचन प्रकासनां ग्रही ॥१६

पीछले सुन्दरसाथ धनीके चरणोंमें कैसे पहुँच पाएँगे ? वे भी रास और

प्रकाशके वचनोंको सुनकर पहुँच जाएँगे. इस समय सद्गुरु धनीके चरणोंमें जो सुन्दरसाथ विद्यमान हैं, वे तो पहुँच ही गए हैं. किन्तु जो शेष रह गए हैं, वे प्रकाशके वचनोंको ग्रहण कर आ जाएँगे.

धणीतणां वचन ग्रह्यां मांहें रास, पाछला पार उतारवा साथ ।
आवसे साथ एणे प्रकास, अंधकारनो कीधो नास ॥ १७

पीछे आने वाले सुन्दरसाथको पार उतारनेके लिए मैंने रासमें धामधनीके वचन ग्रहण किए. वे सुन्दरसाथ इन प्रकाशके वचनोंसे परमधामकी ओर आएँगे क्योंकि तारतमके इन वचनों (प्रकाश) ने अज्ञानान्धकारको नष्ट कर दिया है.

आवसे साथ सकल परवरी, रासतणां वचन चित धरी ।
एह वचन हवे केटलां कहुं, आ लीलानो पार नव लहुं ॥ १८

समस्त सुन्दरसाथ जो देश विदेशमें फैले हैं, वे रासके वचनोंको हृदयमें धारण कर उसी प्रेम मार्गको अपना कर आ पहुँचेंगे. तारतमके इन वचनों (प्रकाश) का महत्त्व कहाँ तक कहूँ ? इस लीलाका कोई पार नहीं है.

ए वचन आहीं छे अपार, पण साथ केटलो करसे विचार ।
ते माटे कांई घणुं न कहेवाय, आ तां पूरतणो दरियाय ॥ १९

तारतम ज्ञानके ये वचन अपार हैं, किन्तु सुन्दरसाथ इन पर कितना विचार करेंगे ? इसलिए ज्यादा नहीं कहा जाता. इन वचनोंका प्रवाह तो समुद्रकी लहरोंकी भाँति मेरे हृदयमें बह रहा है.

एनुं एक वचन विचारसे रही, ते ततखिण घर ओलखसे सही ।
घरनी जे होसे वासना, नहीं मूके ते वचन रासना ॥ २०

जो तारतम वाणीके एक वचन पर भी विचार करेगा, उसे उसी समय मूल घर परमधामकी पहचान हो जाएगी. जो परमधामकी वासना होगी वह रासके इन वचनोंको नहीं छोड़ेगी.

खरी वस्त जे थासे सही, ते रहेसे वचन रासना ग्रही ।
जेम कह्युं छे करसे तेम, ते लेसे फलतणो तारतम ॥ २१

जो सच्ची ब्रह्मात्मा होगी, वे रासके वचन अवश्य ग्रहण करेगी और धनीजीने जो कहा है उसी आदेशका पालन करेगी. ऐसी आत्माएँ तारतमका फल (पूर्णब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्री कृष्ण एवं परमधाम) प्राप्त करेगी.

इन्द्रावती कहे सुणजो साथ, वचन विचारे थासे प्रकास ।
प्रकास करीने लेजो धन, जे में तमने कह्यां वचन ॥ २२

इन्द्रावती कहती है, हे सुन्दरसाथजी ! तुम सब ध्यान पूर्वक सुनो. तारतमके इन वचनों पर विचार करनेसे अन्त:करणमें प्रकाश फैलता है. मैंने तुम्हें जो वचन कहे हैं उनसे अन्तरात्माको प्रकाशित कर श्रीकृष्ण और परमधामरूपी अखण्ड धन प्राप्त करो.

प्रकरण ३४ चौपाई १०१२

गुणनी आसंका-गुणोंके शंसयका निवारण

हवे कांइक हुं मारी करुं, नहीं तो तमने घणुंए ओचरुं ।
वली एक कहुं वचन, रखे आसंका आवे मन ॥ १

इन्द्रावती कहती है, अब मैं अपनी ओरसे कुछ स्पष्टीकरण कर रही हूँ. यदि तुमने पूछा होता तो कुछ अधिक कहती. फिर भी मैं एक दो वचन कह रही हू ताकि तुम सबके मनमें कोई आशंका न रहे.

में धणीतणां गुण लख्या सही, एक आसंका मारा मनमां थई ।
जे ऊंडा वचन कह्यां निरधार, साथ केम करसे विचार ॥ २

मैंने सद्गुरु धनीके गुणोंका उल्लेख तो किया किन्तु मेरे मनमें एक शङ्का शेष रह गई है. कहीं-कहीं मैंने जो गूढ़ (गहन) वचनोंका प्रयोग किया है उन शब्दोंका रहस्य सुन्दरसाथ कैसे समझ पाएँगे ?

जिहां लगे जीव न पूरे साख, तो भले प्रमोध दीजे दस लाख ।
एक वचन नव लागे केमे, जिहां लगे जीव न समझे मने ॥ ३

जब तक आत्मा साक्षी नहीं देती तब तक चाहे दस लाख उपदेश दिए जाएँ, वे कुछ काम नहीं देते. जब तक जीव हृदय पूर्वक समझे नहीं, तब तक

एक वचन भी हम पर किसी भी प्रकारका प्रभाव नहीं डाल सकेगा.

ते माटे एम थाय अमने, रखे आसंका रहे तमने ।
एक परवाही वचन एम कहे, मुखथी कहे पण अरथ न लहे ॥ ४

इसलिए मेरे मनमें ऐसा विचार आया है कि तुम्हारे मनमें किसी भी प्रकारकी आशंका नहीं रहनी चाहिए. व्यक्ति कभी-कभी प्रवाह (आवेश) में अपने मुखसे महत्त्वपूर्ण वचन तो कह देता है परन्तु उनका अर्थ नहीं समझता है.

सोयतणां नाका मंझार, कुंजर कै निकले हजार ।
एनो अरथ पण आवसे सही, तारतम आसंका राखे नहीं ॥ ५

कई लोग कहते हैं कि सूईके छेदसे हजारों हाथी निकल जाते हैं इसका अर्थ यथार्थ रूपमें आगे आएगा, क्योंकि तारतम ज्ञान किसी भी प्रकारकी शङ्का रहने नहीं देता.

में गुण लखतां कही लेखण अणी, रखे आसंका उपजे घणी ।
कथुवाना पगनां प्रमाण, लेखणो घढियो हाथ सुजाण ॥ ६

मैंने सद्गुरु धनीके गुणोंका आलेखन करते समय लेखनीकी बारीकसे बारीक नोंकका वर्णन किया. किन्तु तुम्हारे मनमें शंका न रहे इसलिए मैंने कथुवेकी टाँग जैसी बारीक नोंकवाली लेखनी सावधानी पूर्वक बनाई.

तेह तणी वली कीधियो चीर, गुण जेटली उतारी लीर ।
हवे रखे केहने आसंका रहे, तारतम आसंका नव सहे ॥ ७

फिर उसको भी बीचमेंसे चीरकर धनीजीके जितने गुण लिखे थे, उतने ही उसके भाग किए थे. इस भेदको भी यहाँ स्पष्ट करती हूँ, ताकि किसीके मनमें कोई शङ्का शेष न रह जाए क्योंकि तारतम ज्ञान किसी भी प्रकारकी शङ्का सहन नहीं कर सकता है.

ते उपर एक कहुं विचार, सांभलो साथ मारा सिरदार ।
आ चौद भवन देखो आकार, एहना मूलनो करो विचार ॥ ८

इस विषयमें मैं अपना विचार रख रही हूँ. हे मेरे शिरोमणि सुन्दरसाथजी ! तुम सुनो. इस चौदह लोक ब्रह्माण्डका विस्तार पूर्णरूपसे देखो और इसके मूलका विचार करो.

एणे सुकजी पण सुपनांतर कहे, कोई एहनो जीव एने नव लहे ।
ए सुपन मूल तां छे समरथ, एहनां मूलनो जुओ अरथ ॥ ९

इस ब्रह्माण्डको शुकदेव मुनिने भी स्वप्नवत् कहा है. कोई भी सांसारिक जीव इसका यथार्थ नहीं समझता है. इस स्वप्नका मूल तो शक्तिशाली नींद है. इस मूलका रहस्य (अर्थ) विचार पूर्वक समझो.

सुपन मूल तां निद्रा थई, जुए जागी तां कांईए नहीं ।
एनुं मूल तां न रह्यो लगार, अने कथुवाना पगनो तो कह्यो आकार ॥ १०

स्वप्नका मूल तो निद्रा है. (स्वप्न निद्रासे उत्पन्न होता है.) जागृत होनेके बाद कुछ भी शेष नहीं रहता. इस प्रकार स्वप्नके मूल निद्राका तो लेशमात्र भी अस्तित्व नहीं रहता है किन्तु कथुवेकी टाँगका तो कोई न कोई आकार तो है ही.

मूल विना तमे जुओ विस्तार, केवडो कीधो छे आकार।
तो आनो तो में कह्यो आकार, तेहनो कां नव थाय विस्तार ॥ ११

मूल आधारहीन इस स्वप्नके ब्रह्माण्डका विस्तार देखो कि उसने कैसा और कितना बड़ा आकार धारण किया है. परन्तु कथुवेके पैरके आकारका तो मैंने वर्णन किया है तो उसका विस्तार क्यों नहीं हो सकता ?

एम सोयतणां नाका मंझार, ब्रह्मांड कै निकले हजार ।
हवे एह तणो जो जो अरथ, गुण लखवावालो समरथ ॥ १२

इस प्रकार अक्षरब्रह्मकी पलकरूपी सूईके छिद्रमेंसे हजारों हाथीरूपी ब्रह्माण्ड आ जा सकते हैं अर्थात् उदय और अस्त होते हैं. अब इसके अर्थ पर विचार करो. क्योंकि गुणोंका उल्लेख करनेवाले सद्गुरु धनी समर्थ हैं और वे मेरे हृदयमें विराजमान हैं.

हवे केटलो तमने कहुं विस्तार, एक एह वचन ग्रहेजो निरधार ।
हेत करीने कहुं छु साथ, ओलखजो प्राणनो नाथ ॥ १३

हे मेरे सुन्दरसाथजी ! अब मैं तुम सबको कितने विस्तारसे कहूँ ? तुम मेरे इस एक वचनको निश्चित रूपसे ग्रहण करना. मैं तुम्हें प्रेमपूर्वक कहती हूँ कि प्राणाधार प्राणनाथ सद्गुरु धनीको पहचानो.

गुण लखवावालो ते एह, आपणमां बेठा छे जेह ।
इन्द्रावती कहे आ ते रे ते, जेणे गुण कीधां ते ए रे ए ॥ १४

गुण लिखने वाले ये ही प्रियतम धनी सद्गुरु हैं जो हम सबकी अन्तरात्मामें बैठे हैं. इन्द्रावती कहती हैं कि ये वही हैं, निश्चित रूपसे वही हैं जिन्होंने हम पर उपकार किए हैं.

तारे कहेवुं होय ते कहे रे कहे, लाभ लेवो होय ते ले रे ले ।
तारतम कहे छे आ रे आ, हजार बार कहुं हां रे हां ॥ १५

'हे इन्द्रावती ! तुम्हें जो कहना हो वह कहो, अवश्य कहो. जो लाभ लेना हो वह अवश्य ले लो.' तारतम वाणी कहती है कि ये ही सद्गुरु हैं, ये ही सद्गुरु हैं. एक बार नहीं हजार बार कहती हूँ कि ये वही हैं.

मायासुं करजे ना रे ना, फोकट फेरो मा खा रे खा ।
धणीने चरणे जा रे जा, एवो नहीं लाधे दा रे दा ॥ १६

हे जीव ! मायावी भोगोंको ना कह दो. (मायावी वस्तुओंसे मुँह फेर लो.) व्यर्थ जन्म-मरणके चक्करमें मत पड़ो. धामधानीके चरण कमलोंमें चले जाओ. क्योंकि इसके बाद मानव जीवनका ऐसा सुअवसर मिलने वाला नहीं है.

जो चूक्यो आणे ता रे ता, तो कपालमां लागसे घा रे घा ।
संसारमां नथी कांई सा रे सा, श्री धाम धणी गुण गा रे गा ॥ १७

यदि तुम इस समय इस अवसरको (मनुष्य जीवन, सद्गुरुकी संगत और तारतम ज्ञानकी प्राप्ति) को चूक जाओगे अथवा व्यर्थ ही समय गँवा दोगे तो तुम्हारे सिर पर अनेक घाव लगेंगे. इस संसारमें कोई भी सार वस्तु नहीं है. इसलिए धामधनीके गुणोंका गान करो, यही एक मात्र सार है.

पोतानां पगले था रे था, मा मूके तारो चाह रे चाह ।
तारा जीवने प्रेम तुं पा रे पा, जेम सहु कोई कहे तुंने वाह रे वाह ॥ १८

तुम अपने मार्गको अपनाओ (अर्थात् व्रजसे रासमें जानेके लिए अपनाया गया प्रेमका मार्ग ग्रहण करो) प्रियतम धनीसे मिलनेकी चाह मत छोड़ो. अपने

जीवको धनीजीके प्रेमका पान अवश्य कराओ, सब कोई तुम्हें वाह वाह कहेंगे.

प्रकरण ३५ चौपाई १०३०

गुण केटलां कहुं मारा वाला, अमसुं कीधा अति घणां जी ।
आणी जोगवाईने आणी जिभ्याए, केम कहेवाय वचन तेह तणां जी ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे मेरे प्राणवल्लभ सद्गुरु ! आपने हम पर बहुत उपकार (गुण) किए हैं, मैं उन गुणोंकी प्रशंसा कहाँ तक करूँ ? इस मायावी, झूठे शरीर तथा झूठी वाणी द्वारा उस प्रकारके वचन कैसे कहूँ ?

व्रज तणां सुख आहीं आवीने, अमने अति घणां दीधां जी ।
रास तणी रामतडी रमाडी, आप सरीखडा कीधां जी ॥ २

सद्गुरु धनीने यहाँ आकर हम सब सुन्दरसाथको व्रज मण्डलके सुख विभिन्न प्रकारसे दिए तथा अखण्ड रासकी रामतोंका अनुभव करवा कर अपने समान बनाया.

भगवानजी केरी रामतडी, जोयानी हुती मुने खांत जी ।
नौतनपुरी मांहें आवी करीने, मुने चींधी देखाड्यो द्रष्टांत जी ॥ ३

हम सबने परमधाममें अक्षरब्रह्मका खेल देखनेकी कामना की थी, उसे श्री नवतनपुरी धाममें आकर धनीजीने विभिन्न प्रकारसे दृष्टान्त देकर स्वयं निर्देशित कर मुझे दिखाया.

श्री धामतणां सुख केणी पेरे कहुं, जे तारतमे करी तमे दीधां जी ।
नवतनपुरीमां मनोरथ कीधां, ते विधविधनां मारा सिधां जी ॥ ४

अखण्ड परम धामके सुखोंका वर्णन किस प्रकार करूँ ? हे सद्गुरु ! इसका स्पष्टीकरण आपने तारतम ज्ञान द्वारा कर दिया है. श्री नवतनपुरीधाममें रह कर आपने हमारी सब मनोकामनाएँ पूरी कर दी हैं.

सेहेजल सुखमां झीलतां, दुख न जाणिए कांई जी ।
दुस्तर जल सुपनमां देखी, में जाणी ते घरनी बडाई जी ॥ ५

सहज और अखण्ड प्रेमके सुखोंमें हम परमधाममें आनन्दपूर्वक खेलते थे. वहाँ किसी भी प्रकारका दुःख नहीं जानते थे. इस कठिन और मायावी

संसारमें आकर ही हमने दुःख देखा और इसके अनुभव मात्रसे मूल घर परमधामकी महत्ताका परिचय प्राप्त हुआ.

इन्द्रावती कहे अति उछरंगे, तमे लाड अमारा घणां पाल्या जी ।
निरमल नेत्र करी जीवनां, तमे पडदा पाछा टाल्या जी ॥ ६

इन्द्रावती अत्यन्त उत्साहसे कहती है, हे धामधनी ! आपने हमारे लाड़-प्यारको अच्छी तरह पूर्ण किया. जीवके अन्तःचक्षुको खोलकर अखण्ड तारतम ज्ञान द्वारा उसे निर्मल किया और शरीररूपी आवरणको दूर कर दिया अर्थात् आप शरीर छोड़ कर मेरे हृदयमें विराजमान हुए.

आपोपुं ओलखावी करीने, पोताने पासे तेडी लीधी जी ।
इन्द्रावतीने एकांत सुख दीधां, आप सरीखडी कीधी जी ॥ ७

अपनी पहचान करवा कर सद्गुरु धनीने अपने चरणकमलोंमें बुला लिया. तत्पश्चात् अन्तरात्मामें आकर बैठ गए और इन्द्रावतीको एकान्तमें अनेक सुख देकर अपने समान बना दिया.

प्रकरण ३६ चौपाई १०३७

प्रगटवाणी

हवे सैयरने हुं प्रगट कहुं, आपणो वासा श्री धाममां रहुं ।
अक्षरातीत ते आपणां घर, मूल वैकुंठ मांहें अक्षर ॥ १

अब मैं सुन्दरसाथको प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूपसे कहती हूँ कि हमारा निवासस्थान अक्षरातीत परमधाम है. मूल वैकुण्ठ (नित्य वैकुण्ठ) अक्षर ब्रह्मके अन्तर्गत आता है.

ए वाणी चित धरजो साथ, दया करी कहे प्राणनाथ ।
ए किव करी रखे जाणो मन, श्री धणी लाव्या धामथी वचन ॥ २

इस प्रकट वाणीके वचनोंको तुम सब सुन्दरसाथ ध्यान पूर्वक ग्रहण करो. प्राणोंके आधार प्राणनाथ सद्गुरुधनी दया पूर्वक यह कह रहे हैं. इन वचनोंको कविता मत मानना, क्योंकि धामधनी स्वयं इस वाणीको परमधामसे लाए हैं.

ते तमने कहुं प्रगट करी, मूल वचन लेजो चित धरी ।
हवे तारतम जो जो प्रकास, तिमर मूलथी करुं नास ॥ ३

उसी वाणीको मैं तुम सबके समक्ष प्रकट कर रही हूँ. परमधामके उन मूल वचनोंको तुम चित्तमें धारण करो. अब तारतमके प्रकाशकी ओर देखो. मैं भ्रम और अज्ञानके अन्धकारको मूलसे नाश कर दूँगी.

हवे तमने कहुं मूल ज थकी, अने मोह अहंकार कांई उपनुं नथी ।
न कांई ईश्वर ना मूल प्रकृति, तेणे समे आपणमां वीती ॥ ४

अब मैं तुम्हें मूल परमधामसे ही आरम्भ कर कहती हूँ. जब इस संसारमें मोह और अहङ्कार उत्पन्न नहीं हुए थे. ईश्वर (अक्षरब्रह्मके मनका स्वरूप महाविष्णु) और मूल प्रकृति (अक्षरब्रह्मकी इच्छा) भी उत्पन्न नहीं हुई थी. उस समय परमधाममें हम (ब्रह्मात्माएँ) और धामधनीके बीच जिस प्रकार प्रेम सम्वाद हुआ उसे सुनो.

एणे समे मूल वैकुण्ठनाथ, इछा दरसन करवा साथ ।
साथ तणे मन मनोरथ एह, माया रामत जोइए तेह ॥ ५

उस समय मूल वैकुण्ठाधिपति अक्षरब्रह्मके मनमें ब्रह्मात्माओंके दर्शन करनेकी इच्छा प्रकट हुई और ब्रह्मात्माओंके मनमें भी अक्षरब्रह्म द्वारा निर्मित मायावी खेल देखनेकी इच्छा हुई.

ए वात अमे श्री राजने कही, त्यारे अम बेहु पर आज्ञा थई ।
उपनो मोह सुरत संचरी, तेणे माया रचना करी ॥ ६

हमने श्रीराजजीके समक्ष खेल देखनेकी यह इच्छा व्यक्त की. तब हम दोनोंको (ब्रह्मात्माओंको मायावी खेल देखनेकी तथा अक्षरब्रह्मको परमधामकी लीलाएँ देखनेकी) आज्ञा हुई. इसके परिणाम स्वरूप मोह उत्पन्न हुआ. उसमें अक्षरकी सुरता प्रवाहित हुई, और उसी सुरता-सुमंगला शक्ति द्वारा मायावी खेलकी रचना हुई.

आहीं अक्षरनुं विलस्युं मन, पांच तत्व चौदे भवन ।
एमां विस्नु मन बीजो मननो विलास, रच्यो एह स्वांसनो स्वांस ॥ ७

यहाँ अक्षरब्रह्मका मन विलसित (विस्तृत) हुआ. इसके कारण पाँच तत्त्व

और चौदह लोक उत्पन्न हुए. इसमें अक्षर ब्रह्मके मनके स्वरूप महाविष्णु (आदि नारायण) प्रकट हुए फिर उनके मनके विलास स्वरूप त्रिगुणके अधिपति त्रिदेव उत्पन्न हुए. इस प्रकार श्वास-प्रश्वास द्वारा सृष्टि रचना आरम्भ हुई.

एमां वासना आवी अम तणी, मन इछे पोतानो धणी ।
अक्षर वासना लई आवेस, नंद घेर कीधो प्रवेस ॥ ८

इस प्रकारसे बने हुए ब्रह्माण्डमें हमारी (ब्रह्मात्माओंकी) सुरता आई. यहाँ आते ही अपने धनीसे मिलनेकी इच्छा करने लगी. अक्षरब्रह्मकी वासना (आत्मा) को लेकर श्रीराजजीने आवेश रूपसे गोकुलमें नन्दके घर प्रवेश किया अर्थात् श्रीकृष्णके रूपमें प्रकट हुए.

साथ सुपन एम दीठुं सही, जे गोकल रमियां भेलां थई ।
बेहु सुरत रमियां कै भांत, मन वांछित करी खरी खांत ॥ ९

ब्रह्मआत्माओंने इस प्रकार संसारका खेल देखा. गोकुल (व्रजमण्डल) में श्रीकृष्ण और गोपियोंने मिलकर खेल किए. उन दोनों (सखियोंकी एवं अक्षरब्रह्म) की सुरताओंने विभिन्न प्रकारसे प्रेमानन्द लीलाएँ कीं और अच्छी तरह अपनी मनोकामनाएँ पूरी की.

अग्यारे वरस लगे लीला करी, कालमाया इहांज परहरी ।
जोगमाया करी रमियां रास, आनंद मन आणी उलास ॥ १०

इस प्रकार ग्यारह वर्ष तक गोकुलमें गोपियोंके साथ लीलाएँ की. इसके बाद कालमाया ब्रह्माण्ड (व्रज) का यहीं परित्याग कर दिया. योगमायाका मण्डल (ब्रह्माण्ड) बना कर वृन्दावनमें रास रमण किया. इस प्रकार पूर्ण उल्लास और आनन्दके साथ रास खेला.

रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकलमां अधिक सनेह ।
तामसी उतकंठा रही मन सार, तो आपण आव्या बीजी वार ॥ ११

रास लीला पूर्ण कर ब्रह्मात्माएँ अपने घर (परमधाम) लौट आईं. ब्रह्मात्माओं (सुन्दरसाथ) का मन अत्यन्त प्रेममग्न हो गया, परन्तु तामसी सखियोंके

मनमें दु:ख देखनेकी इच्छा शेष रह गई थी. इसलिए हम सबको दुबारा इस संसार (जागनीके ब्रह्माण्ड) में आना पड़ा.

मारकंडे माया दीठी जेम, घेर बेठां आपण जोइए तेम ।
ते माया सुकजीए वरणव करी, त्रण अध्या कह्या चित धरी ॥१२

जिस प्रकार मार्कण्डेयने माया देखी, उसी प्रकार हम परमधाममें बैठे हुए संसारका यह खेल देख रहे हैं. शुकदेवजीने श्रीमद्भागवतके तीन अध्यायोंमें इस मायाका वर्णन किया है.

हवे प्रीछजो एह द्रष्टांत, एणे पण मागी करी खांत ।
जुओ मायानो वरतांत, रुषी केमे न पाम्यो स्वांत ॥१३

हे सुन्दरसाथजी ! अब इस दृष्टान्तको समझो. मार्कण्डेय ऋषिने भी बड़ी चाहसे माया देखनेकी माँग की थी. इस मायाके वृत्तान्तको तो देखो. जिसमें फँस कर मार्कण्डेय ऋषि इतने दु:खी हो गए कि उनको किसी प्रकारकी शान्ति नहीं मिली.

ततखिण कम्पमान ज थयो, माया मांहें भलीने गयो ।
कल्पांत सात ने छियासी जुग, माया आडी आवी बुध ॥१४

मार्कण्डेय मुनि (जैसे ही मायावी लहरोंमें बहने लगे) तुरन्त ही काँपने लगे और मायामें निमग्न हो गए. इस प्रकार सात कल्प और छियासी युगों तक मार्कण्डेय मुनिकी बुद्धिके लिए यह माया अवरोधक बन गई.

नहीं तो नथी थई अधखिण वार, मारकंड दुख पाम्यो अपार ।
त्यारे मांहें नारायणजी कीधो प्रवेस, देखाडी माया लवलेस ॥१५

अन्यथा अभी आधा क्षण भी बीता नहीं था और मार्कण्डेय मुनिने इतने समयमें ही अपार दु:खोंका अनुभव कर लिया . उस समय भगवान नारायणने सूक्ष्मरूपसे मुनिके अन्त:करणमें प्रवेश कर उन्हें अपनी थोड़ी-सी मायाका दर्शन कराया.

जुए जागी तां तेह ज ताल, दया करी काढ्यो ततकाल ।
मायानी तां एह सनंध, निरमल नेत्रे थईए अंध ॥१६

मार्कण्डेय मुनि जागृत होकर देखते हैं तो वही समय तथा वही सरोवरका

किनारा है, उसी क्षण भगवानने दया कर उन्हें मायाके आवरणसे बाहर निकाला. मायाकी तो यही रीति (स्वभाव) है. निर्मल दृष्टि वालोंको भी वह अन्धा बना देती है.

एणी पेरे अमने रह्यो अंदेस, ते राखे नहीं धणी लवलेस ।
ते माटे वली आ सुपन, इछाए कीधुं उतपन ॥ १७

इस प्रकार रास लीलाके बाद परमधाममें जागृत होने पर भी हमारी कुछ इच्छाएँ शेष रह गईं. धामधनी इन इच्छाओंको भी शेष रहने नहीं देना चाहते थे. इसलिए पुनः इस स्वप्नके तीसरे ब्रह्माण्डको (हमारी इच्छा पूर्तिके लिए) उत्पन्न किया.

अखण्ड थयो कालमाया तणो, अंदेस भाजवाने आपणो ।
केटलीकने उत्कंठा रही, ते माटे सरवने आगना थई ॥ १८

हमारी इच्छा पूर्ण करनेके लिए कालमायाका ब्रह्माण्ड (व्रजकी लीला-अक्षरके चित्त स्वरूप सबलिक ब्रह्ममें) अखण्ड कर दिया. किन्तु इतना होने (व्रज और रासकी लीला देखने) पर भी तामसी सखियोंकी दुःख देखनेकी इच्छा शेष रह गई. इसीलिए सब सखियोंको इस तीसरे ब्रह्माण्डमें आनेकी आज्ञा हुई.

ब्रह्मांड मांहे आवियों एह, मन तणां भाजवा संदेह ।
साथ माहें एक सुन्दरबाई, तेणे श्रीराजे दीधी बडाई ॥ १९

मनकी आकांक्षा पूर्ण करनेके लिए हम सब इस ब्रह्माण्डमें आ गए. ब्रह्मात्माओंमेंसे सुन्दरबाईको श्री राजजीने बड़प्पन (अग्रता) प्रदान किया.

आवेस अंग आपी आधार, दई तारतम उघाड्यां बार ।
घर थकी वचन लई आवियां, ते तां सुंदरबाईने कह्यां ॥ २०

अपने अङ्गस्वरूपा श्री सुन्दरबाईको श्रीराजजीने अपनी आवेश शक्ति दी. तारतम ज्ञान देकर परमधामके अखण्ड सुखोंका द्वार खोल दिया. वे स्वयं अखण्ड परमधामसे तारतमके वचन लेकर आए और सुन्दरबाईको वे वचन कहे.

साथ वचन सांभलियां एह, वासनाए कीधां मूल सनेह ।
ते मांहे एक इन्द्रावती, कहेवाणी सहुमां महामती ॥ २१

सद्गुरुके पाससे सुन्दरसाथने वे वचन सुने और वे उनसे मूल परमधामका जैसा ही प्रेम करने लगे. उन सुन्दरसाथमेंसे एक इन्द्रावतीकी आत्मा थी जो सबमें महामति (उत्तम बुद्धियुक्त) कहलाई.

तारतम अंग थयो विस्तार, उदर आव्या बुध अवतार ।
इछा दया ने आवेस, एणे अंग कीधो प्रवेस ॥ २२

इन्द्रावतीके अंगसे (मुझसे) तारतम ज्ञानका विस्तार हो गया, तथा अक्षरकी जागृत बुद्धि उनके अन्तःकरणमें समा गई. इच्छा (धनीकी आज्ञा), दया (श्यामाजीकी आत्मा) तथा श्री राजजीका आवेश ये सब मिलकर इन्द्रावतीके अङ्गमें समाहित हो गए.

एणी पेरे भाज्यो संदेह, समझ्या सहुए वात ज एह ।
वचन विस्तरियां विवेक, तेणे मली रस थयो एक ॥ २३

इस प्रकार सब सुन्दरसाथका सन्देह दूर किया. सब सुन्दरसाथने उपर्युक्त बातोंका तथ्य समझा. विवेकके साथ उन वचनोंका विस्तार हुआ और सब (तारतम, अक्षरकी बुद्धि, धनीजीकी इच्छा, दया, श्यामाजीकी आत्मा, धनीजीका जोश) मिलकर एक रस हो गए.

साथ मलीने थै जागणी, हरख्यो साथ ने रमियां धणी ।
ए चारे लीला कीधी सही, पण जागणी तो अति मोटी थई ॥ २४

तारतम ज्ञानके प्रकाशमें सुन्दरसाथकी सामूहिक जागनी हुई. जिससे सुन्दरसाथ हर्षित हुआ और अपने धनीके साथ लीला करने लगा. इस प्रकार धामधनीने सुन्दरसाथके साथ चार लीलाएँ (परमधाम, व्रज, रास और जागनीकी) की. उन चारोंमें जागनी लीला महत्त्वपूर्ण मानी गई (क्योंकि इसमें चारों लीलाओंका अनुभव हो सकता है).

इहां साथने थयो उलास, कह्यो न जाय ते विलास ।
ए जागणीनां सुख केणी पेरे कहिए, जाणे श्री धाममां बेठां छैए ॥ २५

यहाँ (इस जागनी लीलामें मूल स्वरूपकी पहचान और व्रज, रास, जागनी

तथा परमधामके अखण्ड सुखका अनुभव हो जाने पर) सुन्दरसाथके अङ्ग प्रत्यङ्गमें उत्साह उभर आया. इस आनन्द विलासका वर्णन नहीं हो सकता है. इस जागनी लीलाके सुखोंकी प्रशंसा कैसे करूँ ? ऐसा अनुभव हो रहा है मानों हम परमधाममें ही बैठे हैं.

मली साथ वातो हरखे करी, जेवी रामत जेणे चित धरी ।
एम करतां द्रष्टे आव्युं धाम, केहनां मनमां रही न हाम ॥ २६

समस्त सुन्दरसाथने एकत्रित होकर प्रसन्न चित्तसे परस्पर बातें की. जिसे जैसी रामत (लीला) का अनुभव हुआ उसने उसीको चित्तमें धारण कर लिया. इतनेमें उन्हें परमधाम दृष्टिगोचर होने लगा. इस प्रकार किसीके मनमें किसी भी प्रकारकी इच्छा (चाहना) शेष नहीं रही.

पछे साथ उठीने बेठा थया, एह वचन आगलथी कह्या ।
इन्द्रावती कहे उठसे अक्षर, लई आनंद पोताने घेर ॥ २७

इसके बाद सुन्दरसाथ जागृत होकर परमधाममें बैठ गए. उपरोक्त लीलाकी कथा मैंने पहलेसे कही है अर्थात् भविष्यवाणी की है. इन्द्रावती कहती है कि अक्षरब्रह्म भी आनन्द मंगल पूर्वक परमधामके प्रेम और आनन्दका अनुभव कर अपने घर अक्षरधाममें जागृत होंगे.

प्रकरण ३७ चौपाई १०६४

श्री प्रकाश ग्रन्थ (गुजराती) सम्पूर्ण

कुल प्रकरण ८४ चौपाई १९७१

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर